

यह भार भी आपका था ही नहीं।

# कर्म का विज्ञान

THE SCIENCE OF KARMA

व्यक्तिगत कर्म का अंत और  
ब्रह्मांडीय व्यवस्था में वापसी

“ऋत और धर्म: संरक्षण का विज्ञान”  
की सहायती कृति

अनिल पाण्डेय



BlueRose ONE .com  
Stories Matter

New Delhi • London

2

**BLUEROSE PUBLISHERS**

India | U.K.

Copyright © Anil Pandey 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



For permissions requests or inquiries regarding this publication,  
please contact:

**BLUEROSE PUBLISHERS**

[www.BlueRoseONE.com](http://www.BlueRoseONE.com)

[info@bluerosepublishers.com](mailto:info@bluerosepublishers.com)

+91 8882 898 898

+4407342408967

ISBN: 978-81-6744-030-3

Cover design: Ajay Dhyani

Typesetting: Sagar

First Edition: October 2026



उन सबके लिए जो कभी रात में जागकर यह पूछते रहे —

“मैंने ऐसा क्या किया जो मुझे यह भोगना पड़ा?”

और उस मौन के लिए, जो उसका अधिक सच्चा उत्तर था।

न कोई पाप है, न कोई पुण्य। केवल अज्ञान है, और वह प्रज्ञा है जो उसका अंत कर देती है।

— उपनिषदों के अनुसरण में

लहर समुद्र की गति की स्वामिनी नहीं होती; वह स्वयं समुद्र की गति है, क्षण-भर के लिए

एक आकार ले लेती हुई।

— लेखक की नोटबुक से

# समर्पण

गहरी श्रद्धा और कृतज्ञता के साथ  
परमहंस स्वामी श्री अङ्गङ्गानंद जी महाराज



जिनकी भगवद्गीता पर प्रकाशमान टीका — यथार्थ गीता — इस पुस्तक के लेखन में निरंतर  
प्रकाश और मार्गदर्शन रही है।

\*  
\*\*

और प्रेम तथा कृतज्ञता के साथ

मेरी पत्नी

अनुपमा पाण्डेय

मेरे बच्चे

ईशा पाण्डेय

और

आर्यन पाण्डेय

— जिनके धैर्य, विश्वास और प्रेम ने इस पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ को संभव बनाया।



## प्रस्तावना

---

यह पुस्तक एक अकेले, हठीले वाक्य से आरम्भ हुई, जो पिछली पुस्तक से शेष रह गया था। ऋत और धर्म में मैंने उस संरचना का वर्णन करने का प्रयास किया था जो समस्त कर्म के नीचे विद्यमान है — जिसे प्राचीन वैदिक ग्रंथ ऋत कहते हैं: वह ब्रह्मांडीय व्यवस्था, वह मौन नियम जो तारों को उनकी कक्षाओं में और आपकी छाती में साँस को थामे रखता है; और धर्म, वही व्यवस्था जब दृश्य रूप धारण कर लेती है — वह उचित रीति जिससे प्रत्येक वस्तु गति करती है और अपने स्थान पर बैठती है। कर्म का नियम उस पुस्तक के सबसे नीचे एक आधारशिला की भाँति बैठा था: कारण और परिणाम, ब्रह्मांड की नैतिक भौतिकी, वह बही-खाता जिसमें प्रत्येक कर्म दर्ज और चुकता किया जाता है।

किंतु आधारशिला एक गुप्त द्वार भी हो सकती है। जैसे-जैसे मैं उस पहली पुस्तक के विषय में पढ़ाता और पत्र-व्यवहार करता गया, मैंने देखा कि कर्म का यह विचार उन्हीं लोगों को घायल कर रहा था जो इसकी ओर सहारे के लिए बढ़ते थे वे इससे अपने दुःख की व्याख्या करते, और वह व्याख्या स्वयं एक दूसरा दुःख बन जाती। “मेरा कर्म,” वे किसी शोक, किसी असफलता, किसी रोग, किसी हानि को छूते हुए कहते — मानो वे कोई निजी ऋण ढो रहे हों, मानो ब्रह्मांड उनके अकेले के विरुद्ध एक व्यक्तिगत हिसाब रख रहा हो।

मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यह सबसे महँगी भ्रांति है जिसे कोई मनुष्य धारण कर सकता है। इसलिए नहीं कि कर्म मिथ्या है, बल्कि इसलिए कि “मेरा” शब्द को उसके आगे चुपके से रख दिया गया, और उस छोटे-से स्वामित्ववाचक शब्द ने हमसे हमारी शांति की कीमत वसूल ली है।

यह पुस्तक एक ही तर्क प्रस्तुत करती है, जिसे अनेक बार पलट-पलटकर देखा गया है ताकि वह हर ओर से दिखाई दे: *आपका* कर्म या *मेरा* कर्म जैसी कोई वस्तु है ही नहीं। केवल कर्म है — सार्वभौमिक, एकीकृत, अविभाज्य — ब्रह्मांडीय व्यवस्था स्वयं को सम्पन्न करने की क्रिया में। घटनाएँ कुछ दहलीजों पर प्रेरित होती हैं, जिन्हें मैं *घटना-क्षितिज* कहूँगा। समस्त संभावनाओं

का क्षेत्र यह निर्धारित करता है कि कौन कौन-सी भूमिका निभाएगा। भूमिका अभिनीत होती है; घटना पूर्ण होती है; और जब वह पूर्ण होती है, तो भूमिका विलीन हो जाती है, और — एक ऐसे अर्थ में जिसे हम बड़ी सावधानी से देखेंगे — वह भी विलीन हो जाता है जिसने उसे निभाया। कोई निजी बही-खाता कभी नहीं खोला जाता। कोई व्यक्तिगत ऋण कभी देय नहीं होता।

मैंने पूरी पुस्तक में आधुनिक भौतिकी की भाषा का सहारा लिया है — अंतर्ग्रथन, श्याम पदार्थ और श्याम ऊर्जा, द्रष्टा, महा-आकर्षक — और मैं इसके विषय में, और इसके ढंग के विषय में, ईमानदार रहना चाहता हूँ। मैं यह दावा नहीं कर रहा कि भौतिकी ने इन पृष्ठों की आध्यात्मिक दृष्टि को सिद्ध कर दिया है। उसने ऐसा नहीं किया, और वह ऐसा करने का प्रयास भी नहीं करती। मैं कुछ अधिक विनम्र, और मेरे विचार से अधिक उपयोगी, बात कह रहा हूँ: कि ब्रह्मांड वास्तव में जैसा व्यवहार करता है, उसके जो गहनतम चित्र हमारे विज्ञान ने बनाए हैं, वे बार-बार उसी से तुक मिलाते हैं जो चिंतकों ने भीतर से अनुभव किया। वह तरंग-फलन जो सभी परिणामों को तब तक थामे रखता है जब तक वह समाधान को न प्राप्त हो जाए; ब्रह्मांड का वह पंचानवे प्रतिशत भाग जो अदृश्य रहकर अपना कार्य करता है; वह द्रष्टा जिसकी संलग्नता उसी को बदल देती है जिसे देखा जा रहा है। ये प्रमाण नहीं हैं। ये सेतु हैं। मैं प्रत्येक सेतु को सेतु ही कहूँगा, और कभी किसी उपमान को माप के रूप में आपके हाथ नहीं बेचूँगा।

यदि आपने ऋत और धर्म नहीं पढ़ी, तो आपने कुछ आवश्यक नहीं खोया; यह पुस्तक अपने आप में पूर्ण है। और यदि आपने उसे पढ़ा है, तो आप पाएँगे कि यही वह अध्याय है जिसे मैं तब नहीं लिख सका था, क्योंकि मैंने तब तक यह नहीं समझा था कि जिस नियम का मैं वर्णन कर रहा था, उसका न कोई अभियुक्त है और न कोई ऋणी — केवल सहभागी हैं, क्षण-भर के लिए चुने गए, एक ऐसे कार्य में जो आरम्भ से ही कभी उनका था ही नहीं।

मेरी आशा सीधी है। मैं आप पर से वह भार उतारना चाहता हूँ जिसे ढोने के लिए आप कभी बने ही नहीं थे, और जिसे शायद आप वास्तव में कभी ढो भी नहीं रहे थे। मैं आपको दिखाना चाहता हूँ कि जब आप चुनना छोड़ देते हैं, तब श्रेष्ठतम स्वयं आपके पास चला आता है; कि समझ चुपचाप पककर समर्पण में परिणत हो जाती है; और कि समर्पण पराजय नहीं, बल्कि सबसे परिष्कृत प्रौद्योगिकी है जिसका कोई मनुष्य अभ्यास कर सकता है — वह कला जिसमें हम ब्रह्मांड को वही कार्य करने देते हैं जो वह वैसे भी करने ही वाला था, और उसे वह कार्य अपने माध्यम से, अनायास, और शोक-रहित होकर करने देते हैं।

# भूमिका: एक ही विचार

---

इस पुस्तक में एक ही विचार है, और उसे एक ही वाक्य में कहा जा सकता है: *आपका* कर्म या *मेरा* कर्म जैसी कोई वस्तु है ही नहीं; केवल कर्म है, वह एक ही ब्रह्मांडीय व्यवस्था जो स्वयं को सम्पन्न करने की क्रिया में लीन है। शेष सब कुछ — बीसियों अध्याय, भौतिकी से लिए गए उधार, चित्र, चिंतन — इसीलिए विद्यमान है कि उस एक वाक्य को इतनी धीमी गति से और इतने कोणों से पलटा जाए कि वह एक चतुर वाक्यांश रह जाने से छूटकर ऐसी वस्तु बन जाए जिसे आप वास्तव में देख सकें। एक वाक्य को क्षण-भर में समझा जा सकता है और उसमें बस जाने में जीवन-भर लग सकता है। मुझे इसमें बसने में अपने जीवन का अधिकांश भाग लगा, और मैं अब भी इसके भीतर जीना सीख ही रहा हूँ।

मैं आरम्भ में ही स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि यह किस प्रकार की पुस्तक है और किस प्रकार की नहीं। यह विद्वत्ता की कृति नहीं है; यद्यपि मैं ज्ञान-परंपराओं से और आधुनिक विज्ञान से सामग्री लेता हूँ, मैं न तो साहित्य का सर्वेक्षण कर रहा हूँ और न किसी समिति के समक्ष कोई शोध-प्रबंध प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह भौतिकी की कृति भी नहीं है, यद्यपि भौतिकी लगभग हर अध्याय में से होकर गुजरती है; मैं एक चिंतक हूँ जो चित्र उधार ले रहा है, ऐसा वैज्ञानिक नहीं जो दावे कर रहा हो। और यह, सबसे बढ़कर, विश्वासों की कोई ऐसी प्रणाली नहीं है जो आपकी सहमति माँगती हो। यह उन निर्देशों के समुच्चय के अधिक निकट है जो एक ऐसे प्रयोग के लिए हैं जिसे केवल आप ही चला सकते हैं — उस एकमात्र प्रयोगशाला में जो इन प्रश्नों के लिए मायने रखती है, अर्थात् जीवित होने का आपका अपना प्रत्यक्ष अनुभव।

## वह सबसे महँगा वाक्य जो हम सीखते हैं

विचार कीजिए कि मानवीय दुःख का कितना बड़ा भाग एक ही व्याकरणिक आदत के चारों ओर संगठित है: कर्म शब्द के आगे “मेरा” शब्द रख देने की आदत। हम यह बिना ध्यान दिए करते हैं, जैसे हम बिना ध्यान दिए साँस लेते हैं, और साँस की भाँति यह कोई चुनाव-सा नहीं लगता, बल्कि केवल “वस्तुएँ ऐसी ही हैं” जैसा लगता है। मेरी भूल। मेरा दंड। मेरा दुर्भाग्य। मेरा

चुकाने योग्य ऋण। मेरा ढोने योग्य बोझ। इनमें से प्रत्येक छोटा-सा स्वामित्ववाचक शब्द स्वामित्व का एक नन्हा कृत्य है, और सब मिलकर, एक जीवन-भर में संचित होकर, वह सबसे भारी बोझ रच देते हैं जिसे कोई व्यक्ति ढोता है: यह दृढ़ विश्वास कि जीवन की घटनाएँ एक निजी हिसाब हैं, जो कहीं रखा गया है, अपने ही विरुद्ध, जिसकी जाँच अँधेरे घंटों में होनी है और जिसका निपटारा दुःख में।

मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि यही वह सबसे महँगा वाक्य है जिसे हम कभी सीखते हैं, और हम इसे इतनी जल्दी और इतनी गहराई से सीखते हैं कि उसे प्रज्ञा समझ बैठते हैं। यह उत्तरदायित्व का, नैतिक गंभीरता का, यहाँ तक कि एक विचारशील व्यक्ति होने के चिह्न का स्वाँग रचता है। किंतु इसके फलों को देखिए। यह ऐसा अपराध-बोध उत्पन्न करता है जो कुछ नहीं सुधारता, ऐसा शोक जो सुलझता नहीं, ऐसी चिंता जो उन्हीं परिणामों को बिगाड़ देती है जिनके लिए वह व्याकुल रहती है, और जीवित होने के सहज आनंद का एक स्थिर, मंद क्षरण। किसी बगीचे में ऐसा फल देने वाली शिक्षा को तुरंत उखाड़ फेंका जाता। हमने इसे हजारों वर्षों से मानव-हृदय के केंद्र में बनाए रखा है, और इस रखने को ही प्रज्ञा कहा है।

## आत्मा की पुस्तक में भौतिकी क्यों

कोई पाठक उचित ही पूछ सकता है कि इतने अंतर्मुखी विषय की पुस्तक बार-बार क्वांटम यांत्रिकी और ब्रह्मांड-विज्ञान का सहारा क्यों लेती है। ईमानदार उत्तर यह है कि मैं भौतिकी का उपयोग किसी बात को सिद्ध करने के लिए नहीं कर रहा, और मैं इसे इतनी बार दोहराऊँगा कि शायद आपको खीझ होने लगे — क्योंकि आध्यात्मिक दावों को टेक देने के लिए विज्ञान का दुरुपयोग इतना सामान्य और इतना संक्षारक है कि मैं उससे भ्रमित कर दिए जाने के बजाय उबाऊ कहलाने का जोखिम उठाना पसंद करूँगा। भौतिकी ने आत्मा को खोज नहीं निकाला है, साक्षी की पुष्टि नहीं की है, यह सिद्ध नहीं किया है कि कर्ता एक भ्रम है। उसने कुछ अधिक रोचक और अधिक विनम्र किया है: उसने मापन के द्वारा वास्तविकता का एक ऐसा चित्र प्राप्त किया है जो — अप्रत्याशित रूप से, और बार-बार — उसी से तुक मिलाता है जो चिंतकों ने अंतर्निरीक्षण से बताया था।

वास्तविकता अपने मूल में संभावना का एक खुला-थमा हुआ क्षेत्र है जो निश्चित घटनाओं में परिणत होता है। किसी गहराई से जुड़े तंत्र के अंशों का समग्र से पृथक कोई पूर्णतः स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता। अवलोकन का कार्य उसी से इस प्रकार बँधा है जिसका अवलोकन किया



जा रहा है, और इसे अभी तक कोई पूरी तरह समझा नहीं सका है। ब्रह्मांड का अत्यधिक बड़ा भाग अदृश्य है और अनदेखे ही शेष का संचालन करता है। ये मेरे रहस्यमय कथन नहीं हैं; ये, अपने उचित रूप में, हमारे सबसे कठोर ज्ञान की वर्तमान अवस्था हैं। और ये इस पुस्तक के अन्यथा फिसलनदार विचारों के लिए इतने अच्छे चित्र बन जाते हैं कि उनका उपयोग न करना मेरी मूर्खता होगी — चित्रों के रूप में, सेतुओं के रूप में, सेतु कहकर ही, पार करने के लिए प्रस्तुत किए गए, बसने के लिए नहीं। जहाँ वे आपको देखने में सहायता करें, उन्हें ले लीजिए। जहाँ वे कठोर होकर प्रमाण बनने लगें, उन्हें छोड़ दीजिए। मैंने ठीक इसी विषय पर, और ठीक इसकी सीमाओं पर, एक विस्तृत टिप्पणी पुस्तक के अंत में एक परिशिष्ट में रख दी है, उस पाठक के लिए जो यह सावधानी पूरी तरह कही हुई चाहता है।

### आगे जो है उसे कैसे पढ़ें

पुस्तक पाँच भागों में आगे बढ़ती है। पहला भाग व्यवस्था के अवतरण का अनुसरण करता है — एक व्यवस्था, मौन ब्रह्मांडीय नियम, से होकर धर्म तक, जो उसका दृश्य मुख है, और फिर कर्म तक, गति में आया वह नियम — और बड़ी सावधानी से उस ठीक बिंदु को खोजता है जहाँ व्यक्तिगत स्वामी को चुपके से भीतर घुसा दिया गया। दूसरा भाग आधार रखता है: समस्त संभावनाओं का क्षेत्र, वह घटना-क्षितिज जहाँ संभावना तथ्य में पलट जाती है, वह द्रष्टा जो कर्म किए बिना साक्षी रहता है, और ब्रह्मांड का वह विशाल अदृश्य संचालन। तीसरा भाग स्वयं कर्म की संरचना खड़ी करता है — कैसे घटनाएँ प्रेरित होती हैं, कैसे भूमिकाएँ निर्धारित और विलीन होती हैं, कैसे हर वस्तु बड़ी घटनाओं के भीतर घोंसले की भाँति बैठी है, आकाशगंगाओं के प्रवाह तक। चौथा भाग विध्वंस है, जो अपराध-बोध की, श्रेणीकरण की, कर्ता की, चिंता की मशीनरी को टुकड़े-टुकड़े उघाड़ देता है। और पाँचवाँ भाग घर का मार्ग है: चुनाव न करना, समर्पण, अनायास कर्म, एक दैनिक अभ्यास, और उस आनंद की ओर वापसी जो अंततः सदा से ही आधार-भूमि सिद्ध होता है।

प्रत्येक अध्याय एक चिंतन के साथ समाप्त होता है — एक संक्षिप्त मनन और एक ठोस अभ्यास, जो पढ़कर आगे बढ़ जाने के लिए नहीं, बल्कि परखने के लिए है। इस पुस्तक का मूल्य उसमें नहीं जो आप इसे पढ़कर याद रखते हैं; वह उसमें है जो आप इसे जीते हुए देखने लगते हैं। इसलिए धीरे पढ़िए। इससे बहस कीजिए। और सबसे बढ़कर, प्रयोग चलाइए, क्योंकि यह पूरी पुस्तक अंततः जिस एक कदम तक सिमट आती है वह आज ही आजमाने योग्य छोटा है: जब

अगली कठिन वस्तु आए, घटना को ठीक वैसा ही रहने दीजिए जैसी वह है, और “मेरा” शब्द को रख दीजिए। देखिए भार का क्या होता है। आपको मुझ पर विश्वास करने की आवश्यकता नहीं। आपको केवल देखना है। देखने को आरम्भ करने के लिए कभी किसी की अनुमति आवश्यक नहीं रही।

# इस पुस्तक को कैसे पढ़ें

---

इस पुस्तक के पाँच भाग हैं, और उन्हें क्रम से पढ़ा जाना है, यद्यपि लौटकर आने वाले पाठक के लिए प्रत्येक अध्याय अकेले भी खड़ा रह सकता है।

भाग एक ऋत और धर्म से सेतु बनाता है। यह व्यवस्था और धर्म पर पुनः दृष्टि डालता है और ठीक-ठीक दिखाता है कि “व्यक्तिगत” कर्म का विचार कहाँ और कैसे जन्मा — और क्यों वह एक ब्रह्मांडीय तथ्य न होकर एक व्याकरणिक दुर्घटना है।

भाग दो भौतिक आधार रखता है: समस्त संभावनाओं का क्षेत्र, घटना-क्षितिज, वह द्रष्टा जो कर्म नहीं करता, और श्याम पदार्थ व श्याम ऊर्जा का वह विशाल अव्यक्त वाद्यवृंद। ये भार वहन करने वाले विचार हैं।

भाग तीन स्वयं कर्म की संरचना का वर्णन करता है — कैसे कोई घटना प्रेरित होती है, कैसे भूमिकाएँ निर्धारित होती हैं, कैसे पूर्णता कर्म और कर्ता दोनों को विलीन कर देती है, और कैसे हर घटना एक बड़ी घटना के भीतर घोंसले की तरह बैठी है, महा-आकर्षक तक।

भाग चार विध्वंस है। यह अपराध-बोध की मशीनरी, शुभ और अशुभ कर्मों के भ्रम, और कर्तृत्व की चिंता को टुकड़े-टुकड़े उघाड़ देता है — और दिखाता है कि उत्कृष्टता वहीं सबसे पूर्ण रूप से फूलती है जहाँ स्वामित्व समाप्त होता है।

भाग पाँच घर का मार्ग है: चुनाव न करना, समर्पण, अनायास कर्म, एक दैनिक अभ्यास, और आनंद की ओर वापसी।

सर्वत्र आपको चित्र मिलेंगे। वे सजावट नहीं हैं; उनमें से प्रत्येक एक तर्क को एक ऐसे चित्र में सिकोड़ देता है जिसे आप मन में थाम सकें। उनके साथ बैठिए। एक शब्दावली, एक संदर्भ-ग्रंथ-सूची, और एक अनुक्रमणिका पुस्तक के अंत में उस पाठक की प्रतीक्षा कर रही है जो और आगे जाना चाहता है या ठीक-ठीक स्थान पर लौटना चाहता है।



# अनुक्रमणिका

---

|                                                                |            |
|----------------------------------------------------------------|------------|
| <b>भाग एक: ब्रह्मांडीय व्यवस्था से कर्म तक .....</b>           | <b>1</b>   |
| अध्याय 1: अधूरा वाक्य .....                                    | 3          |
| अध्याय 2: महान भ्रांति .....                                   | 12         |
| अध्याय 3: कर्म का व्याकरण .....                                | 22         |
| <b>भाग दो: क्षेत्र की भौतिकी .....</b>                         | <b>33</b>  |
| अध्याय 4: समस्त संभावनाओं का क्षेत्र .....                     | 35         |
| अध्याय 5: घटना-क्षितिज .....                                   | 44         |
| अध्याय 6: वह द्रष्टा जो कर्म नहीं करता .....                   | 54         |
| अध्याय 7: व्यक्त और अव्यक्त .....                              | 64         |
| <b>भाग तीन: कर्म की संरचना .....</b>                           | <b>73</b>  |
| अध्याय 8: प्रेरक और भूमिका .....                               | 75         |
| अध्याय 9: विलय .....                                           | 84         |
| अध्याय 10: संचालन के स्तर .....                                | 93         |
| अध्याय 11: जैसा ऊपर, वैसा नीचे .....                           | 103        |
| <b>भाग चार: व्यक्तिगत कर्म का अंत .....</b>                    | <b>113</b> |
| अध्याय 12: वह भार जिसे ढोने के लिए हम कभी बने ही नहीं थे ..... | 115        |
| अध्याय 13: न शुभ न अशुभ, न छोटा न बड़ा .....                   | 124        |
| अध्याय 14: अकर्तृत्व का गणित .....                             | 133        |
| अध्याय 15: चिंता-रहित उत्कृष्टता .....                         | 142        |
| <b>भाग पाँच: संरेखण का मार्ग .....</b>                         | <b>151</b> |
| अध्याय 16: चुनाव न करना .....                                  | 153        |

|                                                                    |            |
|--------------------------------------------------------------------|------------|
| अध्याय 17: समर्पण एक प्रौद्योगिकी के रूप में.....                  | 162        |
| अध्याय 18: अनायास कर्म.....                                        | 170        |
| अध्याय 19: एकीकृत कर्म को जीना.....                                | 178        |
| अध्याय 20: आनंद की ओर वापसी.....                                   | 187        |
| <b>भाग छह: जीवन के पोत में कर्म.....</b>                           | <b>197</b> |
| अध्याय 21: कार्य और चिंतित स्वामी.....                             | 199        |
| अध्याय 22: धन और अभाव का भय.....                                   | 205        |
| अध्याय 23: प्रेम और लेखा-बही.....                                  | 210        |
| अध्याय 24: रोग और शरीर.....                                        | 216        |
| अध्याय 25: वृद्धावस्था और सबसे बड़ा विलय.....                      | 222        |
| अध्याय 26: भय और अनजिया भविष्य.....                                | 228        |
| अध्याय 27: क्रोध और आहत स्व.....                                   | 233        |
| अध्याय 28: शोक और जो नहीं मरता.....                                | 239        |
| अध्याय 29: सृजनशीलता और वह कार्य जो आपके माध्यम से आता है.....     | 245        |
| अध्याय 30: समय और ध्यान.....                                       | 251        |
| अध्याय 31: निर्णय के बिना असफलता.....                              | 258        |
| अध्याय 32: नेतृत्व और प्रभाव.....                                  | 264        |
| अध्याय 33: स्वयं आध्यात्मिक खोज.....                               | 271        |
| अध्याय 34: पालन-पोषण और वह उद्यान जिसे आप नियंत्रित नहीं करते..... | 278        |
| अध्याय 35: संघर्ष और वह दूसरा जो व्यवस्था भी है.....               | 284        |
| अध्याय 36: एकांत, अकेलापन, और समग्र की संगति.....                  | 290        |
| अध्याय 37: आदत, परिवर्तन, और वह स्व जो प्रतिरोध करता है.....       | 295        |
| अध्याय 38: तृष्णा और वह भूख जो संसार को चलाती है.....              | 301        |
| अध्याय 39: प्रशंसा, निंदा, और स्वीकृति की भूख.....                 | 307        |
| अध्याय 40: ऊब, बेचैनी, और वर्तमान का इनकार.....                    | 312        |

|                                                                |     |
|----------------------------------------------------------------|-----|
| अध्याय 41: साधारण दिन.....                                     | 317 |
| अध्याय 42: धैर्य और तेज की निरंकुशता .....                     | 322 |
| अध्याय 43: कृतज्ञता और अनर्जित.....                            | 326 |
| अध्याय 44: मित्रता और लम्बी संगति .....                        | 331 |
| अध्याय 45: निराशा और इसकी कहानी कि यह कैसे होना चाहिए था ..... | 336 |
| अध्याय 46: स्मृति-राग और संपादित अतीत .....                    | 341 |
| अध्याय 47: स्वयं को क्षमा करना और आत्म-खाता .....              | 346 |
| समापन: घर पहुँचाया गया .....                                   | 352 |
| उपसंहार .....                                                  | 355 |
| परिशिष्ट क: विज्ञान पर एक टिप्पणी .....                        | 357 |
| परिशिष्ट ख: प्रश्न और उत्तर .....                              | 359 |
| परिशिष्ट ग: एक ही विचार के साथ तीस दिन.....                    | 365 |
| परिशिष्ट घ: चिंतन और चर्चा के लिए प्रश्न .....                 | 371 |
| शब्दावली .....                                                 | 373 |
| संदर्भ-ग्रंथ .....                                             | 380 |
| सामान्य अनुक्रमणिका .....                                      | 383 |





# भाग एक

## ब्रह्मांडीय व्यवस्था से कर्म तक

पहली पुस्तक से सेतु, और एक भ्रांति का जन्म

इससे पहले कि हम भार उतार सकें, हमें ठीक-ठीक देखना होगा कि वह उठाया कैसे गया।  
इसलिए यह पहला भाग व्यवस्था के अवतरण में से धीरे-धीरे होकर गुज़रता है — महान  
व्यवस्था, मौन नियम, से धर्म तक, जो उसका दृश्य मुख है, और फिर कर्म तक, गति में आया  
वह नियम — और प्रत्येक पायदान पर उस ठीक बिंदु को ताकता है जहाँ “मेरा” शब्द भीतर  
सरक आया और एक ब्रह्मांडीय नियम को एक व्यक्तिगत दंडादेश में बदल दिया।



## अधूरा वाक्य

---

जो नियम सूर्य और शेष तारों को गति देता है,  
वही इस क्षण आपकी आँखों के पीछे रक्त को भी गति देता है। यह एक ही नियम है।  
यह सदा से एक ही नियम था।

— आरम्भिक टिप्पणी

एक वाक्य है जिसे मैं अपनी पहली पुस्तक में पूरा न कर सका, और यह पूरी पुस्तक उसी को पूरा करने का प्रयास है। वह वाक्य यह था: कर्म का नियम गति में आई ब्रह्मांडीय व्यवस्था है — और इसीलिए वह, किसी भी सार्थक अर्थ में, आपका नहीं हो सकता।

जब मैंने ऋत और धर्म लिखी थी, तब मेरी चिंता व्यवस्था की संरचना से थी। मैं दिखाना चाहता था कि जीवन की चकरा देने वाली सतह के नीचे एक ही संगति है: व्यवस्था, वस्तुओं की गहन व्यवस्था, वह नियम जो तर्क नहीं करता और कभी टूटता नहीं; और धर्म, वही व्यवस्था जब संसार में अपना मुख दिखाती है, उस ढंग में जिससे नदी समुद्र को पाती है और बीज ठीक वही वृक्ष बनता है जो उसे सदा से बनना था। कर्म को मैंने वैसे ही समझा जैसे लगभग सभी समझते हैं — परिणाम के इंजन के रूप में — वह सिद्धांत कि कर्म परिणाम उत्पन्न करता है, कि कुछ भी नष्ट नहीं होता, कि ब्रह्मांड अत्यंत सूक्ष्मता से हिसाब रखता है।

यह सब मैं आज भी सत्य मानता हूँ। जो मुझे तब स्पष्ट दिखाई नहीं दिया था, वह कर्म शब्द के भीतर छिपा हुआ जाल था। हम सुनते हैं “कर्म परिणाम उत्पन्न करता है” और तत्काल एक निजी कर्ता को भीतर जोड़ देते हैं: मैं करता हूँ, तो मैं उत्पन्न करता हूँ, तो मेरा कुछ बकाया है, या मुझ पर कुछ ऋण है। समूचा नैतिक ब्रह्मांड सिकुड़कर एक अकेले स्व के आकार का हो जाता है, जो अकेला किसी बही-खाते के केंद्र में खड़ा, चिंतित होकर अपने जमा और ऋण जोड़ता रहता है। और उसी संकुचन से हमारे लगभग समूचे अनावश्यक दुःख का जन्म होता है।

## वह भार जिसे ढोने को किसी ने आपसे नहीं कहा

देखिए कि कर्म शब्द वास्तव में लोगों के मुँह में किस प्रकार जीता है। एक व्यक्ति अपना व्यवसाय खो देता है और कहता है यह उसका कर्म है। एक स्त्री को धोखा दिया जाता है और वह सोचती है कि उसने पिछले जन्म में ऐसा क्या किया था जो यह कमाया। एक माता-पिता अपने बच्चे को कष्ट में देखते हैं और दोष के मौन गणित के नीचे कुचले जाते हैं। प्रत्येक स्थिति में घटना की पीड़ा एक दूसरी, अदृश्य पीड़ा से दुगुनी हो जाती है: यह दृढ़ विश्वास कि घटना एक व्यक्तिगत निर्णय है, एक दंडादेश जो इस एक विशेष स्व के विरुद्ध सुनाया गया है।

मैं इसे एक प्रकार की ब्रह्मांडीय पहचान-चोरी मानने लगा हूँ, सिवाय इसके कि यहाँ चोर और शिकार एक ही व्यक्ति हैं। हम ब्रह्मांड की निर्वैयक्तिक गति लेते हैं और उस पर अपना नाम मुहर लगा देते हैं। फिर हम उस ऋण के परिणाम भोगते हैं जिसे हमने ही गढ़ा था।

और विचित्र बात यह है: इससे सबसे अधिक घायल अक्सर वही होते हैं जो सबसे अधिक सच्चे हैं। वे आलसी या भाग्यवादी नहीं होते। वे उत्तरदायी होना चाहते हैं। उन्हें सिखाया गया है कि अपने कर्म का स्वामित्व ओढ़ लेना परिपक्व, आध्यात्मिक और साहसी है। इसलिए वे एक ऐसा भार उठा लेते हैं जो कभी उनका था ही नहीं, और उस उठाने को ही प्रज्ञा कह देते हैं।

## यह पुस्तक क्या कहेगी और क्या नहीं

मैं आरम्भ में ही स्पष्ट कर दूँ कि मैं क्या नहीं कह रहा हूँ, क्योंकि इस पुस्तक के तर्क को सहज ही ग़लत सुना जा सकता है। मैं यह नहीं कह रहा कि कुछ भी मायने नहीं रखता, कि हम जो चाहें कर सकते हैं, कि क्रूरता और करुणा एक समान हैं। मैं न तो उदासीनता का उपदेश दे रहा हूँ, न उस आलसी भाग्यवाद का जो कंधे उचकाकर कहता है कि सब तो पहले से ही लिखा था। जो दृष्टि मैं प्रस्तुत करने जा रहा हूँ, वह हमें कर्म में अधिक सावधान बनाती है, कम नहीं; अधिक उत्कृष्ट, अधिक लापरवाह नहीं; अधिक जाग्रत, अधिक सुन्न नहीं।

मैं यह कह रहा हूँ कि वह सावधान, उत्कृष्ट, जाग्रत कर्म तब सबसे स्वतंत्र रूप से बहता है जब वह स्वामित्व के भार से दबा हुआ नहीं होता। संगीतकार तब सर्वश्रेष्ठ बजाती है जब वह चिंतित होकर प्रत्येक स्वर पर अपना दावा नहीं ठोकती। शल्य-चिकित्सक के हाथ तब सबसे स्थिर रहते हैं जब उनमें “मेरी सफलता, मेरी असफलता” का कंपन नहीं होता। पूर्ण रूप से कर्म करते हुए भी कुछ भी न ओढ़ने का एक ढंग है, और वह ढंग कोई मनोवृत्ति की चतुराई नहीं है। वह,

जैसा मैं तर्क दूँगा, बस वह सत्य है कि कर्म वास्तव में किस प्रकार कार्य करता है — एक ऐसा सत्य जिसे हम “मेरा” नामक छोटे शब्द से ढक देते हैं।

इसे देखने के लिए हमें ब्रह्मांडीय व्यवस्था और धर्म तक वापस जाना होगा, और व्यवस्था का स्तर-दर-स्तर अनुसरण करना होगा, जब तक हम उस स्थान पर न पहुँच जाएँ जहाँ कर्म को व्यक्तिगत बन जाना चाहिए था — और यह पाएँ कि वह कभी बनता ही नहीं।

## प्रश्न का आकार

ध्यान दीजिए कि प्रश्न जब आता है तो ठीक किस रूप में आता है। वह “ऐसा क्यों हुआ?” के रूप में नहीं आता — कारणों की एक स्वच्छ, खुली जिज्ञासा, जिसे एक उत्सुक मन बिना किसी पीड़ा के खोज सकता है। वह झुका हुआ आता है, पहले से ही लदा हुआ, एक अभियोग के आकार में जो आधा ब्रह्मांड की ओर और आधा स्वयं की ओर मुड़ा है: “मैंने ऐसा क्या किया जो यह भोगना पड़ा?” उस वाक्य के भीतर तीन छिपी हुई पूर्व-धारणाएँ हैं, और भाग्य के विषय में मनुष्य का समूचा दुःख उन्हीं में मुड़ा हुआ है। पहली यह कि घटना एक निर्णय है — कि वह सुनाई गई, कि उसका आपके मूल्य के विषय में कुछ अर्थ है। दूसरी यह कि एक न्यायालय है — कोई संस्था जो हिसाब रख रही है, आपके कर्मों को तौल रही है, दंड सुना रही है। और तीसरी, सबसे मौन और सबसे विनाशकारी, वह छोटा-सा शब्द “मैं”: कि आप, यह विशेष परिसीमित स्व, वह अभियुक्त हैं जिसका रिकॉर्ड ऊँचे स्तर में पढ़ा जा रहा है।

मैं चाहता हूँ कि आप अनुभव करें कि यह सब कितना स्वाभाविक प्रतीत होता है, क्योंकि यही स्वाभाविकता ठीक जाल है। किसी ने आपको यह प्रश्न इस ढंग से पूछना नहीं सिखाया; यह आप में उसी प्रकार स्वयं बन गया जैसे किसी शिशु में भाषा बनती है, अवशोषण से, इससे पहले कि आप उसकी जाँच कर सकें। जब तक आप भाग्य के विषय में सोचने योग्य हुए, तब तक व्यक्तिगत प्राप्य का व्याकरण आपके चिंतन के नीचे स्थापित हो चुका था, अँधेरे में अपना काम करता हुआ। और जो भ्रांति चिंतन के नीचे संचालित होती है, उसे चिंतन के भीतर और कठोर सोचकर सुधारा नहीं जा सकता। उसे केवल नीचे जाकर, स्वयं व्याकरण तक पहुँचकर, और यह पूछकर सुधारा जा सकता है कि क्या वह वाक्य कभी सत्य था भी।

## नियम कोई बही-खाता नहीं

यहाँ वह भेद है जिस पर यह पूरी पुस्तक घूमती है, और मैं इसे यथासंभव सरलता से कहूँगा। बही-खाता ऋणों का अभिलेख है। वह यह रखता है कि किस पर क्या बकाया है, वह स्मरण रखता है, हिसाब चुकता करता है, पुरस्कृत और दंडित करता है। बही-खाते को एक लेखाकार चाहिए, नामों की एक सूची चाहिए, और समय के साथ चलाई जाने वाली न्याय की एक धारणा चाहिए। इसके विपरीत, नियम किसी का ऋणी नहीं होता और किसी को स्मरण नहीं रखता। गुरुत्वाकर्षण आपको गिराने से पहले आपका इतिहास नहीं पूछता। अग्नि आपको जलाने से पहले यह जाँच नहीं करती कि आप जलने के योग्य हैं या नहीं। नियम बस यह वर्णन करता है कि वस्तुएँ कैसे गति करती हैं; वह संत और हत्यारे के लिए, बालक और अत्याचारी के लिए एक समान है, क्योंकि वह उनके विषय में है ही नहीं। वह संसार की संरचना के विषय में है।

जब प्राचीन ऋषियों ने कर्म की बात की, तो उन्होंने वह शब्द उठाया जिसका अर्थ है, बस, क्रिया — और उनका तात्पर्य एक नियम से था, बही-खाते से नहीं। वे उस निर्बाध ढंग की ओर संकेत कर रहे थे जिससे प्रत्येक क्रिया उसे प्रभावित करती है जो आगे आता है, उस रीति की ओर जिससे ब्रह्मांड इतनी सूक्ष्मता से जुड़ा है कि कुछ भी पृथक् रूप से घटित नहीं होता। किंतु इस लम्बे संप्रेषण में कहीं नियम को चुपचाप बही-खाते के रूप में फिर से लिख दिया गया। क्रिया परिणाम में कैसे बहती है, इसका निर्वैयक्तिक वर्णन इस व्यक्तिगत हिसाब में बदल गया कि आपके कर्म आपका भाग्य कैसे कमाते हैं। जो शब्द नदी का अर्थ रखता था, वह बिल का अर्थ रखने वाला शब्द बन गया। और तब से हम वह बिल चुकाते आ रहे हैं, चिंता और अपराध-बोध और शोक में — एक ऐसा बिल, जैसा मैं तर्क दूँगा, जो वास्तव में कभी देय था ही नहीं, एक ऐसे खाते पर निकाला गया जो वास्तव में कभी खोला ही नहीं गया।

## जो मैं पहली पुस्तक में न कह सका

पहली पुस्तक में मैं व्यवस्था की संरचना पर ऊपर से नीचे चढ़ा था: महान व्यवस्था, मौन ब्रह्मांडीय नियम; धर्म, वह नियम जो प्रत्येक वस्तु के उचित कार्य-संचालन में दृश्य होता है; और सबसे नीचे कर्म, वह नियम जो घटनाओं में स्वयं को सम्पन्न करता है। जहाँ तक मैं गया, मैंने कर्म का सटीक वर्णन किया। किंतु मैं उस वस्तु के किनारे पर रुक गया जिसे मुझे सबसे अधिक कहने की आवश्यकता थी, क्योंकि मैंने तब तक उसे पूरी तरह देखा नहीं था, और जो स्वयं देखा नहीं, उसे कोई पढ़ा नहीं सकता। मैंने “मेरा” शब्द को कर्म के आगे एक छोटी,

अपरीक्षित मूर्ति की भाँति खड़ा छोड़ दिया, और इसीलिए मैंने जो समूची मुक्तिदायी संरचना खड़ी की थी, उसके भीतर अब भी एक बंदी था: वही स्व, अब भी विश्वस्त कि नियम उसके विरुद्ध व्यक्तिगत रूप से सुनाया गया दंडादेश है।

यह पुस्तक उस वाक्य को पूरा करने का प्रयास है। यह कहती है: नियम का कोई अभियुक्त नहीं। न कोई मेरा कर्म है और न आपका कर्म, केवल कर्म है — सार्वभौमिक, एकीकृत, अविभाज्य — ब्रह्मांडीय व्यवस्था स्वयं को असंख्य घटनाओं के माध्यम से सम्पन्न करने की क्रिया में, जिनमें आप कभी सहभागी के रूप में और कभी साक्षी के रूप में प्रकट होते हैं, किंतु कभी स्वामी के रूप में नहीं। इसे देखना कोई सांत्वना-कथा सुनाया जाना नहीं है। यह एक ऐसे भार का उतरना है जिसे ढोने के लिए आप कभी बने ही नहीं थे, और, जैसा मैं मानने लगा हूँ, जिसे आप वास्तव में कभी ढो भी नहीं रहे थे — बस उसके विरुद्ध जोर लगा रहे थे, जैसे कोई व्यक्ति एक ऐसी छत को थामे रखने में जोर लगाता है जो आरम्भ से ही अपना भार स्वयं उठा रही थी।

## आगे जो है उसे कैसे परखें

मैं आपसे इनमें से किसी पर भी विश्वास करने को नहीं कह रहा। विश्वास सस्ता है और कुछ नहीं बदलता; ब्रह्मांड आपके मतों के प्रति उदासीन है। मैं आपसे इसे परखने को कह रहा हूँ, उस एकमात्र प्रयोगशाला में जिस तक आपकी प्रत्यक्ष पहुँच है, अर्थात् आपका अपना अनुभव। जब अगली कठिन घटना आए — और वह आएगी, क्योंकि घटनाएँ ही जीवित होने का ताना-बाना हैं — देखिए कि आपका मन उसके साथ क्या करता है। उस प्रतिवर्ती क्रिया को देखिए जो स्वामित्व की ओर लपकती है, जो कहती है मेरा, जो जाँच आरम्भ कर देती है। फिर, बस एक प्रयोग के लिए, स्वामित्व को रख दीजिए। घटना को न दूर धकेलिए और न यह दिखावा कीजिए कि सब ठीक है। बस “मेरा” को छोड़ दीजिए और देखिए कि जब स्वामित्ववाचक हट जाता है पर घटना बनी रहती है, तब दुःख का क्या होता है। यह छोटा-सा प्रयोग, बार-बार दोहराया गया, इस पुस्तक की समूची विधि है। शेष सब उसी एक कदम की सेवा में दी गई व्याख्या है।

## एक विशेष रात

मैं इसे ठोस बना दूँ, क्योंकि प्रश्न कभी अमूर्त रूप में नहीं आता। एक विशेष रात की कल्पना कीजिए। एक स्त्री रसोई की मेज़ पर बैठी है, बाकी सब सो चुके हैं। उस दोपहर निदान आया —

उसका अपना, या उसके बच्चे का, इससे शायद ही फ़र्क पड़े कि कौन अधिक बुरा है। वह अब रो नहीं रही; वह पहले हो चुका। वह कुछ अधिक शांत और अधिक संक्षारक कर रही है। वह अपने जीवन में पीछे की ओर उस कारण को, उस कृत्य को, उस चूक को खोज रही है जिसने यह कमाया। क्या वह बीस वर्ष की आयु की सिगरेटें थीं? वह प्रार्थना जो उसने छोड़ दी? वह व्यक्ति जिसके साथ उसने एक दशक पहले अन्याय किया और कभी सुधारा नहीं? उसका मन वर्षों में से एक अभियोजक की भाँति घूमता है जो अभियोग गढ़ रहा हो, और अभियुक्त वह स्वयं है, और वह रुक नहीं पाती, क्योंकि उस खोज के नीचे कहीं यह विश्वास है कि यदि वह केवल खोज ले कि उसने क्या किया, तो ब्रह्मांड फिर से अर्थपूर्ण हो जाएगा।

वह उसे नहीं पाएगी, क्योंकि वह है ही नहीं। पर वह अभी यह नहीं जानती, और इसलिए वह वह रात, और शायद सौ रातें, एक ऐसे दंड के अनुरूप एक अपराध गढ़ने में बिताएगी जो कभी दंड था ही नहीं। यह संसार का सबसे साधारण दृश्य है, जो हर रात दस हजार रसोइयों में दोहराया जाता है, और यही वह दृश्य है जिसके लिए यह पुस्तक लिखी गई है। उसे यह बताने के लिए नहीं कि निदान असत्य है — वह नृशंस रूप से सत्य है। उसे यह बताने के लिए नहीं कि वह मायने नहीं रखता — वह अत्यधिक मायने रखता है। बल्कि उसके हाथों से वह दूसरा, गढ़ा हुआ भार ले लेने के लिए जो उसने पहले में जोड़ दिया है: कर्तृत्व का भार, यह विश्वास कि यह उसका दंडादेश था, उसके कर्मों से कमाया गया, उसके खाते में दर्ज। वह भार वैकल्पिक है। वह रात उसके बिना भी झेली जा सकती है। और यही सीखना उस दुःख के बीच का अंतर है जो कुचल देता है और उस दुःख के बीच जिसे ढोया जा सकता है, यहाँ तक कि एक विचित्र और स्थिर शांति के साथ झेला जा सकता है।

## “योग्य” शब्द

उस शब्द पर ध्यान दीजिए जो प्रश्न के केंद्र में बैठा है: *योग्य*। मैंने ऐसा क्या किया जो यह भोगने योग्य हुआ। यह शब्द पूर्णतः बही-खातों और न्यायालयों की दुनिया से, योग्यता और प्राप्य की, रखे गए हिसाबों और देय शेषों की दुनिया से उधार लिया गया है। यह न्याय की मानवीय संस्था का है, जहाँ कर्म तौले जाते हैं और प्रतिफल नियत किया जाता है, और वहाँ यह एक सुंदर और आवश्यक शब्द है। किंतु हमने इसे न्यायालय से चुराकर ब्रह्मांड पर लागू कर दिया है, मानो ब्रह्मांड कोई न्यायाधीश हो जो यह निर्णय करने से पहले कि हमें क्या भेजना है, हमारी योग्यता तौलता हो। त्रुटि भावना में नहीं है — भावना मानवीय और गहरी है — बल्कि श्रेणी में है। वर्षा



उन खेतों पर नहीं गिरती जो उसके योग्य हैं। भूकंप दुष्टों को नहीं चुनता। कोशिका विभाजित होने या न होने से पहले शरीर का नैतिक रिकॉर्ड नहीं पूछती। यह पूछना कि किसी ने किसी घटना के योग्य होने के लिए क्या किया, न्यायालय का व्याकरण एक ऐसी वास्तविकता पर लागू करना है जिसमें न कोई न्यायालय है, न कोई वाद-सूची, न कोई न्यायाधीश — केवल व्यवस्था की निर्बाध, निर्वैयक्तिक गति है, जो किसी वस्तु के योग्य नहीं और किसी को कुछ नियत नहीं करती, क्योंकि वह प्राप्य के व्यवसाय में है ही नहीं।

## **वह राहत जिससे हम डरते हैं**

आप सोचेंगे कि यह बताया जाना कि भार कभी आपका था ही नहीं, तत्काल राहत लाएगा, जैसे कोई बंदी खुले द्वार की ओर दौड़ता है। ऐसा विरले ही होता है। प्रायः इस शिक्षा की पहली प्रतिक्रिया प्रतिरोध होती है, यहाँ तक कि घबराहट, और यह समझना सार्थक है कि क्यों, क्योंकि वह प्रतिरोध स्वयं उसी का अंग है जो भार को यथास्थान थामे रखता है। हमने अपनी पहचान का इतना भाग व्यक्तिगत कर्तृत्व की नींव पर खड़ा कर लिया है कि उसे हटा देने का प्रस्ताव मुक्ति से कम और उस स्व के विघटन से अधिक लगता है जिसे हम जानते हैं। यदि मैं अपने कर्मों का कर्ता नहीं, तो मैं कौन हूँ? यदि मेरा दुःख मुझ पर कोई निर्णय नहीं, तो वह सारा दुःख किसलिए था? मन प्रायः एक अपरिचित हल्केपन का जोखिम उठाने के बजाय एक परिचित भार थामे रखना पसंद करता है, क्योंकि भार, कम से कम, ज्ञात है, और वही आकार बन चुका है जिसे हम स्वयं समझते हैं।

इसलिए मैं आपसे कहता हूँ कि पढ़ते समय किसी भी उठते प्रतिरोध पर ध्यान दीजिए — वह भीतरी स्वर जो कहता है कि यह ठीक नहीं हो सकता, कि निश्चय ही हम उत्तरदायी हैं, कि भार छोड़ देना खतरनाक या झूठा होगा। वह स्वर आपका शत्रु नहीं और न उसे चुप कराना है; वह बस एक पहचान का अपनी नींव की रक्षा करता हुआ स्वर है। उसे बोलने दीजिए, और फिर भी पढ़ते रहिए। यह पुस्तक जो राहत देती है, उसे एक ऐसे स्व की आपत्तियों के ऊपर तर्क द्वारा आप में नहीं घुसाया जा सकता जो उससे डरता है। उसे केवल परखा जा सकता है, छोटे प्रयोगों में, जब तक कि वह स्व, जो हल्केपन से डरता था, अपने ही आश्चर्य के साथ यह न खोज ले कि हल्कापन झेलने योग्य है — कि भार रख देने पर कोई लुप्त नहीं हो जाता, बल्कि पहली बार स्वतंत्र होकर गति करने योग्य हो जाता है।

## शून्यवाद नहीं, उसका उपचार

आगे बढ़ने से पहले मैं एक द्वार बंद कर दूँ, क्योंकि लापरवाह पाठक इस पुस्तक को इसके ठीक विपरीत समझ सकता है। यह कहना कि कर्म का कोई व्यक्तिगत स्वामी नहीं, एक निश्चित प्रकार के मन को शून्यवाद जैसा लग सकता है — यह दावा कि कुछ भी मायने नहीं रखता, कि सब निरर्थक है, कि चूँकि कोई सचमुच उत्तरदायी नहीं, इसलिए कुछ भी करने योग्य नहीं। यह ठीक उल्टा है। शून्यवाद उस कर्ता की निराशा है जिसने यह निष्कर्ष निकाल लिया कि उसके कर्म व्यर्थ हैं; वह अब भी पृथक् स्व में विश्वास करता है और बस उसे आशाहीन बना चुका है। यह पुस्तक यह नहीं कहती कि कुछ भी मायने नहीं रखता। यह कहती है कि सब कुछ इतनी निर्बाधता से जुड़ा है, इतनी पूर्णता से एक स्तब्धकारी समृद्धि की व्यवस्था में सहभागी है, कि वह छोटा, अलग-थलग स्व जिसने कल्पना की थी कि उसे अकेले अर्थ का भार उठाना है, वह कभी इस माप के लिए सही इकाई था ही नहीं कि क्या मायने रखता है। व्यक्तिगत कर्तृत्व के छूटने पर अर्थ खोता नहीं; वह व्यक्तिगत से सर्वथा परे विस्तृत हो जाता है। आप एक निरर्थक कण नहीं हैं। आप अकल्पनीय महत्ता वाले एक समग्र में सच्चे सहभागी हैं — और यही शून्यवाद का उपचार है, उसका कोई रूप नहीं।

## प्रश्न के पीछे का प्रश्न

जब कोई व्यक्ति चीख उठता है कि मैंने ऐसा क्या किया जो यह भोगना पड़ा, तो वह विरले ही सूचना माँग रहा होता है। यदि आप उसे वास्तविक कारण-वृत्तांत दे सकें — आनुवंशिक, पर्यावरणीय और परिस्थितिजन्य कारकों की वह सटीक श्रृंखला जिसने उसका दुर्भाग्य उत्पन्न किया — तो वह उस स्थान को न छूता जहाँ से प्रश्न आया था। क्योंकि प्रश्न वास्तव में कारणों की माँग है ही नहीं। वह संबंध की माँग है। उसके नीचे एक गहरी और अधिक मार्मिक चाह छिपी है: देखे जाने की, मायने रखने की, यह जानने की कि किसी का दुःख कहीं तो दर्ज हो रहा है, कि ब्रह्मांड केवल उदासीन नहीं है। प्राप्य का व्याकरण, मूल में, ब्रह्मांड के साथ एक संबंध पर आग्रह करने का एक हताश ढंग है — एक दंड देने वाला संबंध भी किसी संबंध के न होने से बेहतर है, एक शत्रु लेखाकार भी एक रिक्त आकाश से बेहतर है।

इसे कोमलता से नाम देना सार्थक है, क्योंकि यह उघाड़ देता है कि इस पुस्तक की शिक्षा को वास्तव में क्या देना होगा यदि उसे केवल सुधारना नहीं, बल्कि सांत्वना देनी है। यह कहना पर्याप्त नहीं कि ब्रह्मांड आपका न्याय नहीं कर रहा; वह एक और शीतल संदेश के रूप में उतर

सकता है — कि ब्रह्मांड आपकी परवाह करता ही नहीं। यह पुस्तक जिस पूर्णतर सत्य की ओर बढ़ती है, वह भिन्न और अधिक उष्ण है: कि आप ब्रह्मांड के साथ किसी दंडात्मक संबंध में नहीं हैं, क्योंकि आप उससे उस ढंग से पृथक हैं ही नहीं जैसा प्रश्न मान लेता है। आप किसी विशाल उदासीन न्यायालय के समक्ष खड़े एक छोटे अभियुक्त नहीं हैं; आप उसी व्यवस्था की एक सच्ची अभिव्यक्ति हैं जिसकी ओर आप पुकार रहे थे, उससे उतने ही घनिष्ठ जितनी एक लहर समुद्र से। प्रश्न जिस संबंध के लिए तरसता था, वह कभी अनुपस्थित था ही नहीं। वह केवल गलत समझा गया था — न्याय के रूप में कल्पित जब वह सदा सहभागिता था, प्राप्य के रूप में कल्पित जब वह सदा से अपनापन था।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

अगली बार जब कोई कठिन घटना आए, तो ध्यान दीजिए कि आपका मन प्रश्न को क्या आकार देता है। उस प्रतिवर्ती क्रिया को देखिए जो “ऐसा क्यों हुआ” को “मैंने ऐसा क्या किया जो यह भोगना पड़ा” में मोड़ देती है, और उस छोटे शब्द को अनुभव कीजिए जो उसके केंद्र में बैठा सारी क्षति कर रहा है: मेरा।

तीन साँसों के अंतराल के लिए घटना को ठीक वैसा ही रहने दीजिए जैसी वह है — वास्तविक, कठिन, अपरिवर्तित — पर “मेरा” शब्द रख दीजिए। घटना को न दूर धकेलिए, न यह दिखावा कीजिए कि सब ठीक है। बस स्वामित्व छोड़ दीजिए और देखिए कि जब स्वामित्ववाचक जा चुका है पर घटना बनी हुई है, तब भार का क्या होता है।

# महान भ्रान्ति

---

व्याकरण सबसे मौन अत्याचारी है। यह तय कर देता है  
कि हम क्या सोच सकते हैं, इससे पहले कि हम उसे सोच भी पाएँ।

— हाशिये की टिप्पणी

कर्म व्यक्तिगत कैसे बना? मुख्यतः शास्त्रों के माध्यम से नहीं, और न उन गहनतम गुरुओं के माध्यम से, जो लगभग सदा व्यक्तिगत से परे की ओर संकेत करते थे। वह व्यक्तिगत बना व्याकरण के माध्यम से, मनोविज्ञान के माध्यम से, और मानव-मन की उस सरल, क्षम्य भूख के माध्यम से कि वह अपनी ही कथा का नायक हो।

कर्म का संस्कृत धातु कृ का अर्थ है बस करना, बनाना, क्रिया करना। अपने प्राचीनतम अर्थ में कर्म केवल क्रिया है — न मेरी क्रिया, न आपकी क्रिया, बल्कि क्रिया मात्र, वह करना जिसमें ब्रह्मांड सदा संलग्न रहता है। अग्नि जलती है; वह कर्म है। वर्षा गिरती है; वह कर्म है। एक हाथ खुलता है; वह कर्म है। इस शब्द में कोई स्वामित्ववाचक अंशमात्र भी अंतर्निहित नहीं है।

स्वामित्ववाचक बाद में आया, और वह उन कारणों से आया जिन्हें हम समझ सकते हैं और जिनसे सहानुभूति भी रख सकते हैं। यह शिक्षा कि “तुम अपने कर्मों के लिए उत्तरदायी हो,” बच्चों के पालन-पोषण के लिए, समाजों के निर्माण के लिए, और क्रूरता पर अंकुश के लिए अत्यंत उपयोगी है। यह उत्तरदायित्व का एक मंचान है, और मानव-जीवन इसके किसी न किसी रूप के बिना असंभव होगा। किंतु मंचान भवन नहीं है। हमने व्यक्तिगत उत्तरदायित्व के मंचान को — उपयोगी, अस्थायी, सामाजिक — परम वास्तविकता का वर्णन समझ लिया। और मंचान, अधिक समय तक खड़ा छोड़ दिया जाने पर, एक पिंजरा बन गया।

## भ्रम के तीन इंजन

तीन शक्तियों ने, मिलकर काम करते हुए, व्यक्तिगत कर्म का बोध गढ़ा और उसे चलाए रखती हैं।

पहली है स्वयं व्याकरण। हमारे बोले हर वाक्य का एक कर्ता होता है। “मैं द्वार तक चला।” व्याकरण एक ऐसे “मैं” पर आग्रह करता है जिसने चलना किया, एक विलग कर्ता जो कृत्य के पीछे खड़ा है। पर चलने को घटित होते देखिए। क्या वहाँ सचमुच कोई पृथक् “चलने वाला” है जो टाँगों को आदेश देता है, या केवल चलना है — एक अकेली निर्बाध घटना जिसे हमारी भाषा घटित होने के बाद कर्ता और कृत्य में काट देती है? व्याकरण एक सुविधा है। हम उसे एक तत्त्वमीमांसा समझ बैठते हैं।

दूसरी है स्मृति। मन टुकड़ों से एक सतत स्व सिल देता है — आज सुबह की कॉफ़ी, पिछले वर्ष का झगड़ा, बचपन का एक भय — और उन्हें “मैं” के धागे से बाँध देता है। चूँकि स्मृति सतत है, स्वामित्व सतत अनुभव होता है: जिसने कल कर्म किया, वही प्रतीत होता है जो आज फल काटता है। किंतु जिसने कल कर्म किया, वह जा चुका है। कोशिकाएँ बदल चुकीं; मनोदशा विलीन हो चुकी; स्वयं अणु प्रतिस्थापित हो चुके। जो शेष रहता है वह एक कथा है, और वह कथा एक ऐसे ऋण का दावा करती है जो कथावाचक ने कभी लिया ही नहीं।

तीसरी है अहं की महत्ता के लिए तृष्णा। अपने कर्म का कर्ता होना, चाहे कितना ही पीड़ादायक क्यों न हो, महत्वपूर्ण होना है। मेरे दुःख का कोई अर्थ है; वह मेरे विषय में है; मैं एक ब्रह्मांडीय नाटक का केंद्र हूँ। निर्वैयक्तिक सत्य — कि घटना कभी आपके विषय में थी ही नहीं — पहले-पहल एक पदावनति-सा लग सकता है। वह वास्तव में एक मुक्ति है, किंतु अहं उसका वैसे ही प्रतिरोध करता है जैसे कोई बंदी अपनी कोठरी से प्रेम करने लगता है।

## जो मूल्य हम चुकाते हैं

यह भ्रांति निःशुल्क नहीं है। मेरे विचार से यह मानव-मनोविज्ञान की सबसे महँगी त्रुटि है, और हम इसका मूल्य चार मुद्राओं में चुकाते हैं।

हम अपराध-बोध में चुकाते हैं — बीते कर्मों की निरंतर जाँच, यह दृढ़ विश्वास कि हमें दंडित किया जा रहा है, उन घटनाओं के लिए स्वयं को क्षमा कर पाने की असमर्थता जिन्हें रचना कभी हमारा काम था ही नहीं। हम उस शोक में चुकाते हैं जो सुलझता नहीं, क्योंकि हम हानि को समग्र की गति के बजाय एक निर्णय की भाँति देखते हैं। हम चिंता में चुकाते हैं, क्योंकि यदि हर क्रिया मेरी है और हर परिणाम मेरा पुरस्कार या दंड है, तो हर चुनाव एक शत्रु लेखाकार के विरुद्ध एक उच्च-दाँव वाला जुआ बन जाता है। और हम सबसे अधिक खोए हुए आनंद में

चुकाते हैं — जीवन में सहभागी होने का वह सरल आनंद, जो एक ऐसे मन में नहीं टिक सकता जो सदा अपना ही शेष जोड़ता रहता है।

आगे आने वाले अध्याय इस भ्रांति को उसकी नींव से ढहाते हैं। किंतु इसे केवल कथन-मात्र से नहीं ढहाया जा सकता। आप किसी व्यक्ति को एक ऐसे पिंजरे से तर्क द्वारा बाहर नहीं निकाल सकते जिसे वह देख ही नहीं सकता। इसलिए पहले हमें पिंजरे को प्रकाशित करना होगा — और फिर हमें ब्रह्मांडीय व्यवस्था तक वापस ऊपर चलना होगा, और उसे फिर से नीचे की ओर स्पष्टतर आँखों से अनुसरण करना होगा, ठीक यह ताकते हुए कि व्यक्तिगत को कहाँ गलत ढंग से भीतर डाला गया, और उसे बाहर निकालते हुए।

### **भ्रांति इतनी आकर्षक क्यों है**

इतनी व्यापक और इतनी टिकाऊ भ्रांति केवल एक त्रुटि नहीं हो सकती। जो त्रुटियाँ किसी प्रयोजन की सेवा नहीं करतीं, वे भुला दी जाती हैं; इसे संस्कृतियों और सहस्राब्दियों भर प्रेमपूर्वक सँजोया गया है, जिसका अर्थ है कि यह हमारे लिए कुछ कर रही है। यह किसी वस्तु को पोषित कर रही है। यदि हमें व्यक्तिगत कर्म के विचार को छोड़ना है, तो हमें इस विषय में ईमानदार होना होगा कि हम क्या त्याग रहे होंगे, क्योंकि मन किसी उपयोगी भ्रम को केवल इसलिए नहीं छोड़ता कि उसे मिथ्या दिखा दिया गया। वह उसे केवल तभी छोड़ता है जब वह देख लेता है कि वह भ्रम जिसकी रक्षा कर रहा था, वह किसी अन्य उपाय से अधिक सच्चाई से प्राप्त हो सकता है।

तीन भूखें हैं जिन्हें “मेरा कर्म” का विचार पोषित करता है, और हमें उन्हें सटीकता से नाम देना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक इस पुस्तक भर अलग-अलग वेश पहने पुनः प्रकट होगी। पहली है नियंत्रण की भूख। दूसरी है अर्थ की भूख। तीसरी, और गहनतम, है अहं की अपने ही महत्व की भूख। व्यक्तिगत कर्म एक साथ तीनों को पोषित करता है, यही कारण है कि वह इतना पोषक है, और उसे छोड़ना इतना कठिन।

### **पहली भूख: नियंत्रण**

यदि मेरा भाग्य मेरे कर्मों का परिणाम है, तो भाग्य, सिद्धांततः, मेरे नियंत्रण में है। मैं बेहतर आचरण से एक बेहतर भविष्य कमा सकता हूँ; मैं अपने वर्तमान दुर्भाग्य को किसी भीते कृत्य की प्रतिध्वनि के रूप में पढ़ सकता हूँ और भिन्न ढंग से कर्म करने का संकल्प कर सकता हूँ।

यह अत्यधिक सांत्वनादायी है, क्योंकि विकल्प — कि जीवन की महान घटनाएँ स्व से कहीं विशाल एक संचालन के माध्यम से आती हैं, जिसमें स्व एक सहभागी है, कर्ता नहीं — पहले-पहल असहायता जैसा लगता है। मन शक्तिहीन होने के बजाय अपराधी होना पसंद करता है। अपराध-बोध कम से कम कर्तृत्व का संकेत तो देता है। “मैंने यह किया” कहना एक स्टीयरिंग व्हील की कल्पना बनाए रखता है, चाहे वह स्टीयरिंग व्हील स्वयं को कोड़े मारने के लिए ही क्यों न प्रयुक्त हो रहा हो। हम बहुत बाद में देखेंगे कि नियंत्रण की कल्पना को छोड़ देना हमें तनिक भी असहायता में नहीं पहुँचाता, बल्कि एक ऐसी कार्यकुशलता में पहुँचाता है जहाँ नियंत्रण करने वाला स्व कभी पहुँच ही नहीं सकता था। अभी के लिए इतना ध्यान देना पर्याप्त है कि नियंत्रण ही पहली वस्तु है जिसका वचन व्यक्तिगत कर्म देता है, और पहली वस्तु जिसे खोने से हम डरते हैं।

## दूसरी भूख: अर्थ

वह दुःख जिसका कोई अर्थ हो, उस ढंग से सहनीय होता है जिस ढंग से निरर्थक दुःख नहीं। यदि मेरा रोग एक पाठ है, मेरी हानि एक शिक्षा, मेरी असफलता एक कार्मिक सुधार, तो ब्रह्मांड कम से कम मुझ पर ध्यान तो दे रहा है; एक कथा है, और मैं उसमें हूँ, और उस कथा का एक नैतिक चाप है। व्यक्तिगत कर्म जिस आतंक को दूर रखता है, वह वास्तव में दंडित होने का आतंक नहीं है। वह यादृच्छिकता का गहरा आतंक है — यह संदेह कि घटना मेरे विषय में थी ही नहीं, कि ब्रह्मांड ने मुझे चुना ही नहीं, कि कोई संदेश था ही नहीं। लोग न्याय किए जाने को इतनी सहजता से स्वीकार कर लेंगे जितनी सहजता से अनसंबोधित रहने को कभी नहीं करेंगे। दंडित किया जाना कम से कम देखे जाना तो है।

मैं आगे आने वाले अध्यायों में, इस छोटे व्यक्तिगत नैतिक से कहीं बड़ा एक अर्थ प्रस्तुत करूँगा — “यह आपको एक पाठ सिखाने के लिए हुआ” वाला अर्थ नहीं, बल्कि स्तब्धकारी पैमाने की एक एकीकृत ब्रह्मांडीय घटना में सच्चे सहभागी होने का अर्थ। किंतु वह बड़ा अर्थ केवल तभी ग्रहण किया जा सकता है जब छोटा, मिथ्या अर्थ रख दिया जाए। जब तक आप उस कथा को थामे हैं जिसमें ब्रह्मांड आपका गृहकार्य जाँच रहा है, तब तक आप उस कहीं भव्यतर वस्तु को नहीं देख सकते जो वास्तव में घटित हो रही है, जिसमें आप जाँचे जाने वाले छात्र नहीं, बल्कि बजाई जा रही एक स्वर-रचना के एक स्वर हैं।

## तीसरी भूख: महत्व

यही वह है जिसे स्वीकार करना हमें सबसे कम भाता है। अपने कर्म का कर्ता होना, चाहे कितना ही पीड़ादायक हो, महत्वपूर्ण होना है। मेरा दुःख सार्थक है; वह मेरे विषय में है; मैं एक ब्रह्मांडीय नाटक का नायक हूँ जिसमें मेरे कर्म गूँजते हैं और मेरा भाग्य अनुरेखित किया जाता है। निर्वैयक्तिक सत्य — कि घटना कभी आपके विषय में थी ही नहीं, कि आप एक ऐसे संचालन में असंख्य भूमिकाओं में से एक भूमिका थे जो आपका नाम तक नहीं जानता — पहले-पहल एक मुक्ति से कम और एक पदावनति से अधिक लग सकता है। अहं कथा के किनारे पर एक स्वतंत्र सहभागी होने के बजाय उसके केंद्र में पापी होना पसंद करता है। वह अपने केंद्रीय अभिनय की रक्षा अपनी ही शांति की कीमत पर भी करेगा, जैसे एक बंदी वर्षों में अपनी कोठरी से प्रेम करने लगता है, क्योंकि कोठरी कम से कम उसकी तो है।

इस भूख को अपने भीतर सावधानी से देखिए, बिना निर्णय के, क्योंकि निर्णय उसे और पोषित ही करता है। बात यह नहीं कि मायने रखने की चाह रखने में आप अहंकारी हैं; यह चाह मानवीय और सार्वभौमिक है। बात यह है कि अहं मायने रखने का जो रूप पकड़ता है — किसी व्यक्तिगत नाटक के स्वामित्व-प्राप्त केंद्र के रूप में मायने रखना — ठीक वही रूप है जो दुःख उत्पन्न करता है, जबकि एक सच्चा मायने रखना, जो स्वामित्व छूटते ही उसी क्षण उपलब्ध है, कुछ भी मूल्य नहीं माँगता और आनंद उत्पन्न करता है। हम आपको कम मायने रखने वाला बनाने का प्रयास नहीं कर रहे। हम आपको यह दिखाने का प्रयास कर रहे हैं कि आप गलत दिशा में मायने रखते रहे हैं।

## पूरा बिल

आइए जोड़ लें कि यह भ्रांति वास्तव में क्या कीमत वसूलती है, ताकि हम जो विनिमय प्रस्तावित कर रहे हैं उसका ईमानदारी से मूल्यांकन हो सके। हम पहले अपराध-बोध में चुकाते हैं — अपने कर्मों की निरंतर पिछली जाँच, यह विश्वास कि वर्तमान पीड़ा किसी बीते ऋण का निपटारा है, उन घटनाओं के लिए स्वयं को क्षमा कर पाने की असमर्थता जिन्हें रचना आरम्भ से हमारा काम था ही नहीं। हम उस शोक में चुकाते हैं जो सुलझता नहीं, क्योंकि हम हर हानि को समग्र की गति के बजाय एक निर्णय की भाँति देखते हैं, और निर्णय एक ऐसे अभियुक्त की माँग करता है जो बार-बार अपील करता रहे। हम चिंता में चुकाते हैं, क्योंकि यदि हर क्रिया मेरी है और हर परिणाम मेरा पुरस्कार या दंड, तो हर चुनाव एक शत्रु और अथक लेखाकार के विरुद्ध



एक उच्च-दाँव वाला जुआ बन जाता है, और जुआ कभी रुकता नहीं। और हम सबसे अधिक खोए हुए आनंद में चुकाते हैं — जीवन में सहभागी होने का वह सरल, अनर्जित आनंद, जो एक ऐसे मन में नहीं टिक सकता जो सदा अपना ही शेष जोड़ता रहता है। यही बिल है। शेष यह पूरी पुस्तक इस तर्क का प्रसार है कि वह ग़लत पते पर भेजा गया था।

## भ्रांति आधुनिक वस्त्र पहनती है

यह न मानिए कि यह केवल पुराने धर्मों की त्रुटि है, कोई ऐसी वस्तु जिससे एक आधुनिक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति आगे निकल आया है। व्यक्तिगत कर्म की भ्रांति अब पहले से कहीं अधिक जीवित है; उसने केवल अपना वेश बदल लिया है। वह आज स्व-सहायता और सकारात्मक चिंतन की भाषा में चलती है, इस आग्रह में कि आप अपनी वास्तविकता स्वयं रचते हैं, कि आपके विचार आपकी परिस्थितियों को प्रकट करते हैं, कि ब्रह्मांड आपकी तरंग को पुरस्कृत करने या आपकी नकारात्मकता को दंडित करने के लिए षड्यंत्र रच रहा है। वह एक निश्चित लोकप्रिय-मनोविज्ञान का प्रयोगशाला-कोट पहनती है जो सही आंतरिक मनोवृत्ति के माध्यम से परिणामों पर पूर्ण नियंत्रण का वचन देता है। ये आधुनिक रूप सशक्तिकारी लगते हैं, और यही ठीक उनका काँटा है — वे उसी नियंत्रण की भूख की चापलूसी करते हैं जिसे हमने पहले नाम दिया था। किंतु वे पुराना बही-खाता ही हैं, नई स्याही में। वे कैसर-रोगिणी से कहते हैं कि उसका रोग उसकी अनसुलझी भावनाओं को प्रतिबिंबित करता है, दिवालिये से कि उसका विनाश उसकी खराब मनोवृत्ति को, शोकग्रस्त से कि उन्होंने अपनी हानि स्वयं प्रकट की। क्रूरता वही क्रूरता है; केवल शब्दावली अद्यतन कर दी गई है।

मैं इसे अलग से इंगित करता हूँ क्योंकि एक पाठक कार्मिक ऋण के पुराने विचार को बंद कर चुपचाप नए को थामे रह सकता है, अपनी तर्कसंगतता पर स्वयं को बधाई देते हुए, जबकि एक धर्मनिरपेक्ष नाम के नीचे ठीक वही भार ढोता हुआ। परख सरल है। कोई भी शिक्षा जो आपको आपके परिणामों का कर्ता बनाती है — चाहे वह पूर्वजन्मों की बात करे या सीमित मान्यताओं की, ब्रह्मांडीय न्याय की या आकर्षण के नियम की — वही भूख पोषित कर रही है और वही अपराध-बोध, वही चिंता, वही एकाकी हिसाब उत्पन्न करेगी। यह पुस्तक जो राहत देती है, वह केवल तभी उपलब्ध है जब स्वयं कर्तृत्व रख दिया जाए, उसके सभी वेशों में, प्राचीन और आधुनिक एक समान।

## यह आपके अस्वीकार कर पाने से पहले स्थापित कर दिया गया था

इस भ्रांति को धारण करने के विषय में स्वयं के प्रति कोमल रहिए, क्योंकि आपने उसे चुना नहीं था। वह आप में तब स्थापित कर दी गई थी जब आप में उसका मूल्यांकन करने की सामर्थ्य ही नहीं थी, उन वर्षों में जब मन अपने संसार का आकार उसी प्रकार अवशोषित करता है जैसे फेफड़ा वायु को। आपने व्यक्तिगत प्राप्य का व्याकरण उन कहानियों से सीखा जो आपको सुनाई गईं, उस प्रशंसा और निंदा से जो आपको मिली, उन हज़ारों छोटे पाठों से जिनमें अच्छे आचरण ने पुरस्कार लाया और बुरे ने परिणाम, जब तक कि समीकरण — मेरे कर्म मेरा भाग्य उत्पन्न करते हैं — चिंतन के नीचे जुड़ नहीं गया, स्वतः संचालित होता हुआ, एक धारित मान्यता-सा नहीं बल्कि बस यह लगता हुआ कि वास्तविकता ऐसी ही है। इतनी जल्दी और इतनी गहराई से स्थापित मान्यता को एक दोपहर में तर्क से मिटाया नहीं जा सकता। उसे केवल धीरे-धीरे ढीला किया जा सकता है, उसे बार-बार क्रिया में देखकर, जब तक कि वह देखना ही स्वतः पकड़ को घुलाने न लगे। यह पुस्तक आपसे आपकी अनुकूलनता के विरुद्ध कोई तर्क जीतने को नहीं कह रही। यह आपको आपकी अनुकूलनता को तब तक देखते रहने का निमंत्रण दे रही है जब तक वह आपको विश्वास दिलाने की अपनी शक्ति खो न दे।

## हम इसे अपने बच्चों को कैसे सिखाते हैं

देखिए कि यह भ्रांति पीढ़ी-दर-पीढ़ी, सबसे प्रेमपूर्ण घरों में, उन लोगों द्वारा कैसे संचारित होती है जो यह जानकर भयभीत हो उठेंगे कि वे क्या आगे बढ़ा रहे थे। एक बच्चा लड़खड़ाकर गिरता है, और हम सांत्वना देने से पहले पूछते हैं, तुमने क्या किया था? एक बच्चा बीमार होता है, और एक चिंतित माता-पिता उस चूक को खोजते हैं जिसने उसे उत्पन्न किया। एक बच्चे पर कोई दुर्भाग्य आता है, और हम सर्वोत्तम भावनाओं के साथ उस पाठ की ओर हाथ बढ़ाते हैं जो उसमें अवश्य होगा, उस अर्थ की ओर जो वह अवश्य ढोता होगा, उस ढंग की ओर कि वह किसी न किसी रूप में कमाया या योग्य या भेजा गया अवश्य रहा होगा। हम क्रूर नहीं हैं; हम बच्चे को वही व्याकरण सिखा रहे हैं जो हमें सिखाया गया, व्यक्तिगत प्राप्य का व्याकरण, उनमें ठीक वही समीकरण स्थापित करते हुए — मेरे कर्म मेरा भाग्य उत्पन्न करते हैं — जो पचास वर्ष बाद उन्हीं के अँधेरे घंटों में उनकी जाँच करेगा। भार रात की कहानियों के साथ सौंप दिया जाता है, उन प्रश्नों की संरचना में जो हम पूछते हैं, बहुत पहले इससे कि बच्चा उसका मूल्यांकन कर सकता।

मैं यह एक नया अपराध-बोध जोड़ने के लिए नहीं कहता — वह तो भ्रांति का स्वयं को ही खा जाना होगा, माता-पिता अब दोष सिखाने के लिए स्वयं को दोष देते हुए। मैं इसे इसलिए कहता हूँ कि श्रृंखला तोड़ी जा सकती है, कोमलता से, उसी क्षण जब वह देखी जाती है। बच्चे को व्यक्तिगत कर्म के भार के बिना पालना उसे उत्तरदायित्व या परवाह के बिना पालना नहीं है; वह उत्तरदायित्व-शीलता को दोषभाव के बिना सिखाना है, उन्हें अपनी असफलताओं को आत्म-मूल्य पर निर्णय के बजाय सीखने योग्य पूर्ण घटनाओं के रूप में सामना करने में सहायता करना है, उन्हें अपराध-बोध के बिना पश्चात्ताप और आत्म-निंदा के बिना विवेक ढोने देना है। इस ढंग से पाला गया बच्चा लापरवाह नहीं बनता। वह ठीक उसी ढंग से स्वतंत्र हो जाता है जिसकी ओर यह पूरी पुस्तक संकेत कर रही है, और उसे पहले भारी व्याकरण को भुलाने में जीवन-भर नहीं लगाना पड़ता, क्योंकि किसी ने उसमें वह लिखा ही नहीं।

## निजी खाते का अकेलापन

एक विशेष अकेलापन है जो निजी खाता उत्पन्न करता है, और उस पर ठहरना सार्थक है, क्योंकि यह उधाड़ देता है कि यह भ्रांति हमें एक-दूसरे से कितनी पूर्णता से अलग कर देती है। यदि मेरा कर्म मेरा है और आपका आपका, तो हममें से प्रत्येक एक पृथक बही-खाते के भीतर बंद है, एक निजी ऋण उतारता हुआ, एक निजी भाग्य कमाता हुआ, ब्रह्मांड के समक्ष अपने हिसाब में मूलतः अकेला। आपका दुःख आपका मामला है; मेरा मेरा; हम उस खाई के आर-पार सहानुभूति कर सकते हैं, पर खाई निरपेक्ष है, हर आत्मा एक पृथक फर्म जो अपनी पृथक बही रखती है। व्यक्तिगत कर्म का सिद्धांत, चाहे वह ब्रह्मांडीय जुड़ाव की कितनी ही बात करे, व्यवहार में परमाणुओं में बाँट देता है — वह मानवता को अलग-थलग लेखाकारों का एक विशाल संग्रह बना देता है, प्रत्येक एक निजी बही पर झुका, प्रत्येक अंततः अपने प्राप्य के साथ अकेला।

एकीकृत समझ ठीक इसी अलगाव को घुला देती है। यदि न कोई आपका कर्म है, न कोई मेरा, केवल वह एक कर्म जो हम सबके माध्यम से स्वयं को सम्पन्न करता है, तो हम पृथक फर्म नहीं बल्कि एक ही उद्यम हैं; अलग-थलग लेखाकार नहीं बल्कि एक अविभाजित घटना में साथ-साथ सहभागी। आपका दुःख आपकी निजी बही में और मेरा मेरी में बंद नहीं है; हम, उस स्तर पर जहाँ घटनाएँ वास्तविक हैं, एक अंतर्ग्रथित समग्र हैं, जो क्षण-भर के लिए प्रत्यक्षतः पृथक दुःखियों के रूप में स्वयं को व्यक्त कर रहा है। यह जुड़ाव अनुभव करने के विषय में कोई भावुक

दावा नहीं है। यह एक संरचनात्मक दावा है, और इसका एक संरचनात्मक परिणाम है: कि करुणा पृथक ख़ातों के बीच की एक अलंघ्य खाई के आर-पार बनाया गया सेतु नहीं है, बल्कि एक ऐसे जुड़ाव की स्वाभाविक पहचान है जो सदा से पहले से ही विद्यमान था। निजी बही को छोड़ देना यह खोज लेना है कि हम कभी उतने अकेले थे ही नहीं जितना हिसाब ने हमें अनुभव कराया।

## एक दृश्य: स्वास्थ्य-शिविर में बैठा व्यक्ति

एक व्यक्ति, जिसे मैं डैनियल कहूँगा, अपने निदान के तीन माह बाद एक स्वास्थ्य-शिविर में तह वाली कुर्सियों के घेरे में बैठा था। संचालक, कोमल और आश्वस्त, समझा रहा था कि रोग शरीर का अनसुलझी भावना को व्यक्त करने का ढंग है — कि कोशिकाएँ, एक अर्थ में, हमारे शोक और हमारे रोष और हमारे आत्म-निर्णय को सुनती हैं, और कि उपचार तब आरम्भ होता है जब हम उन आंतरिक कारणों का उत्तरदायित्व लेते हैं जो हमने बोए हैं। बाकी सबने सहमति में सिर हिलाया। डैनियल ने भी सिर हिलाया। और घर लौटते समय गाड़ी में उसने स्वयं को वही करते पाया जो कमरे ने उसे चुपचाप सिखाया था: उस भावनात्मक अपराध के लिए अपना अतीत खंगालना जो बढ़कर एक अर्बुद बन गया था। वह तलाक़ जिसे उसने बुरी तरह सँभाला था। वह पिता जिसे उसने कभी क्षमा नहीं किया। वह क्रोध जिसे उसने बीस वर्षों तक निगला था। जब तक वह अपने घर के रास्ते तक पहुँचा, तब तक उसने अपने ही इतिहास से, इस बात का एक पूर्ण और घातक अभियोग गढ़ लिया था कि उसने स्वयं को अपना रोग क्यों दिया।

ध्यान दीजिए कि डैनियल के साथ क्या हुआ। वह कमरे में एक भार लेकर आया था — एक गंभीर रोग, जो वास्तविक और भयावह था और उसका दोष नहीं था — और वह दो भार लेकर बाहर निकला। दूसरा भार, कर्तृत्व का विश्वास, उसे सशक्तिकरण की भाषा में सौंपा गया था, एक उपहार की भाँति लपेटकर। वह नियंत्रण लेने जैसा लगा; वह वास्तव में दोष लेना था। और वह उसकी कोशिकाओं के लिए, रात-दर-रात, उन्हें ठीक उस तनाव-रसायन से भर देने के सिवा कुछ न करता जिसकी कोई उपचार-प्रक्रिया चाह नहीं रखती। यह भ्रांति का आधुनिक मुख है, और पूर्वजन्मों के स्थान पर अनसुलझी भावनाओं का व्यापार कर लेने से वह प्राचीन से तनिक भी अधिक दयालु नहीं हो जाता। यह शिक्षा कि आप अपना भाग्य रचते हैं, स्वस्थों को सांत्वना देती है और रोगियों को कुचलती है, और वह उन्हें ठीक उस क्षण कुचलती है जब वे भार सबसे कम वहन कर सकते हैं। डैनियल को स्वीकार करने के लिए किसी अपराध की आवश्यकता

नहीं थी। उसे दूसरे भार का उतारा जाना चाहिए था, ताकि वह पहले का सामना अपनी पूरी शक्ति से कर सके।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

व्यक्तिगत कर्म का विचार तीन भूखों को पोषित करता है: नियंत्रण की इच्छा, अर्थ की भूख, और अहं की मायने रखने की आवश्यकता। हम किसी उपयोगी भ्रम को विरले ही तब तक छोड़ते हैं जब तक यह न देख लें कि वह क्या पोषित कर रहा था।

एक ऐसी घटना मन में लाइए जिसे आपने अपना कर्म कहा है। ईमानदारी से पूछिए: इसका स्वामित्व इन तीन भूखों में से किसे तृप्त करता है? क्या यह आपको नियंत्रण में अनुभव कराता है, आपके दुःख को एक कथा देता है, या आपको एक ब्रह्मांडीय नाटक का केंद्र बनाता है? भूख को नाम देना, बिना निर्णय के, उसकी पकड़ का पहला ढीला पड़ना है।

# कर्म का व्याकरण

---

व्यवस्था संसार पर थोपी नहीं जाती। व्यवस्था वही है जो संसार है,  
इससे पहले कि हम उसे विभाजित करें।

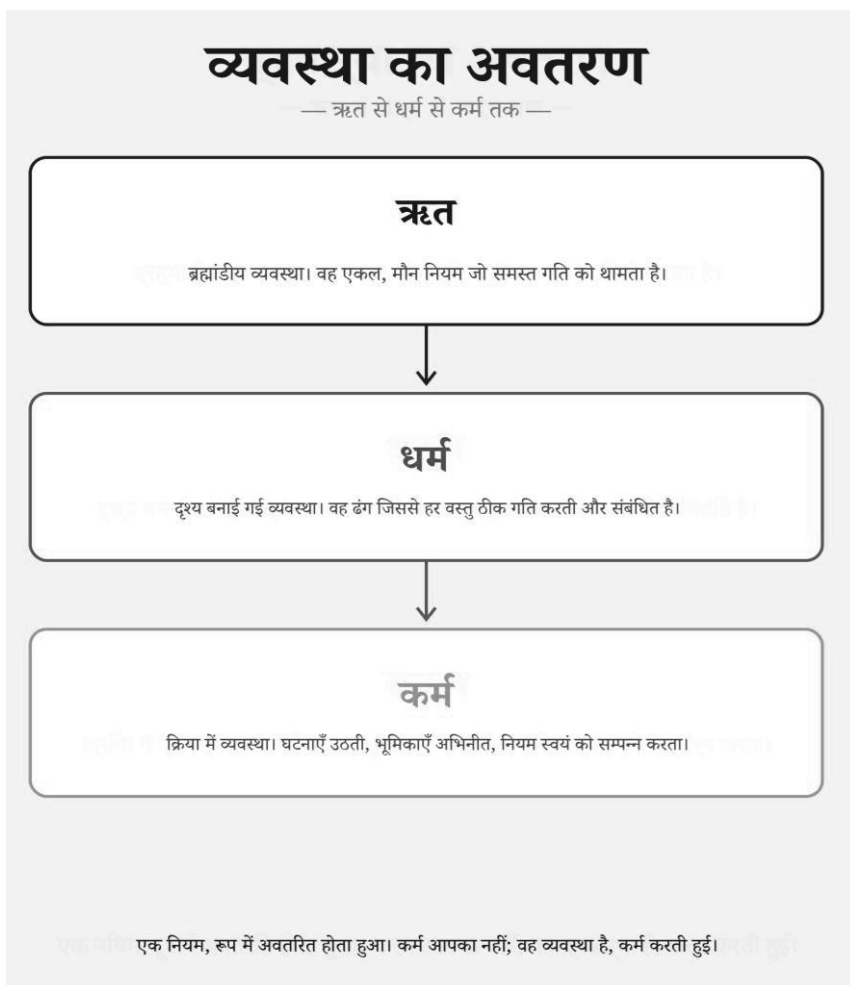
— ऋत और धर्म से

यह समझने के लिए कि कर्म व्यक्तिगत क्यों नहीं हो सकता, हमें व्यवस्था की उस सीढ़ी पर उतरना होगा जिस पर पहली पुस्तक चढ़ी थी — सबसे ऊपर महान व्यवस्था से, धर्म से होकर, नीचे आधार पर कर्म तक — और देखना होगा कि प्रत्येक पायदान पर क्या घटित होता है। सबसे ऊपर की उस व्यवस्था का पुराना वैदिक नाम ऋत था; उसी से समूची वंश-परंपरा उतरती है, ऋत से धर्म तक, धर्म से कर्म तक — मौन नियम दृश्य नियम बनता हुआ, दृश्य नियम गति में आया नियम बनता हुआ।

वस्तुओं की व्यवस्था इस वंश-परंपरा का प्राचीनतम शब्द है और अनुवाद करने में सबसे कठिन, क्योंकि हमारे पास इससे ठीक मिलती-जुलती कोई अवधारणा नहीं। इसे कभी “ब्रह्मांडीय व्यवस्था,” कभी “सत्य,” तो कभी “वस्तुएँ जैसी हैं” के रूप में अनूदित किया जाता है। यह वह सिद्धांत है कि ब्रह्मांड संगत रहता है — कि ऋतुएँ लौटती हैं, कि अग्नि जहाँ भी जलाई जाए वहीं उष्ण है, कि वही नियम गिरते सेब और परिक्रमा करते चंद्रमा को संचालित करता है। मौन व्यवस्था किसी ईश्वर का एक अराजक संसार पर थोपा गया आदेश नहीं है। यह वह व्यवस्था है जो पहले से ही वहाँ है, समस्त देवताओं और समस्त आदेशों से पूर्व, स्वयं अस्तित्व का गहन व्याकरण।

धर्म वह एक व्यवस्था है जो अपना मुख दिखा रही है। जहाँ व्यवस्था मौन नियम है, वहाँ धर्म वह नियम है जो संचालन में है, प्रत्येक वस्तु का अपने स्वभाव के अनुसार उचित कार्य-संचालन। अग्नि का धर्म है जलना; जल का धर्म है नीचे की ओर बहना और अपना तल पाना; नदी का धर्म है समुद्र तक पहुँचना। जब हम किसी मनुष्य के धर्म की बात करते हैं तो हमारा

वही तात्पर्य होता है — उस जीवन की समग्र के भीतर उचित गति, वह भूमिका जिसे निभाने के लिए वह उपयुक्त है।



चित्र 1. व्यवस्था का अवतरण। ब्रह्मांडीय व्यवस्था एकमात्र मौन नियम है; धर्म वह नियम है जो प्रत्येक वस्तु की उचित गति में दृश्य होता है; कर्म वही नियम है क्रिया में — घटनाओं का उठना और भूमिकाओं का अभिनीत होना। एक ही नियम है, रूप में उतरता हुआ। कर्म आपका नहीं; वह व्यवस्था है, कर्म करती हुई।

और कर्म — यहीं समूचे तर्क की धुरी है — धर्म ही है क्रिया में। यह व्यवस्था है जो वास्तव में गति कर रही है, वह नियम जो स्वयं को घटनाओं में सम्पन्न कर रहा है। जब अग्नि लकड़ी जलाती है, तो वह जलना कर्म है। जब नदी समुद्र तक पहुँचती है, तो वह पहुँचना कर्म है। कर्म

संसार के ऊपर परत-दर-परत बिछाई गई कोई पृथक नैतिक शक्ति नहीं है। यह बस गति में आई व्यवस्था है, व्यवस्था स्वयं को घटनाओं के माध्यम से व्यक्त करने की क्रिया में।

### “मेरा” कहाँ बैठता है?

अब निर्णायक प्रश्न पूछिए। जैसे-जैसे हम इस सीढ़ी पर उतरते हैं — ब्रह्मांडीय व्यवस्था, धर्म, कर्म — किस पायदान पर व्यक्तिगत प्रवेश करता है? किस स्तर पर निर्वैयक्तिक ब्रह्मांडीय व्यवस्था मेरी निजी संपत्ति बन जाती है?

वह बनती ही नहीं। किसी भी पायदान पर नहीं। गहन व्यवस्था व्यक्तिगत नहीं है; वह हर वस्तु की व्यवस्था है। धर्म व्यक्तिगत नहीं है; अग्नि का धर्म किसी विशेष ज्वाला का नहीं, वह बस वही है जो अग्नि करती है। और कर्म, धर्म ही क्रिया में होने के नाते, इसी प्रकार नीचे तक निर्वैयक्तिक है। जलना किसी ज्वाला का नहीं। बहना किसी बूँद का नहीं। क्रिया किसी कर्ता की नहीं।

मनुष्य ही एकमात्र प्राणी है जो अपने पायदान पर स्वामित्व का दावा करने का प्रयास करता है। अग्नि नहीं कहती “मेरा जलना।” नदी नहीं कहती “मेरा पहुँचना।” केवल हम अपने माध्यम से गति करती क्रिया को देखते हैं और कहते हैं “मेरा” — और उसी एक शब्द में हम ब्रह्मांडीय व्यवस्था से बाहर निकलकर निजी कारागार में पैर रख देते हैं।

### निर्बाध नियम

यह देखना सहायक है कि अवतरण कितना निर्बाध है। उसमें कोई जोड़ नहीं, कोई ऐसा स्थान नहीं जहाँ कोई नया द्रव्य जोड़ा जाता हो। अंतर्निहित व्यवस्था, धर्म, और कर्म तीन वस्तुएँ नहीं बल्कि एक ही वस्तु के तीन पक्ष हैं, तीन गहराइयों पर देखे गए — नियम मौन, नियम दृश्य, नियम गति में। जैसा ऊपर, वैसा नीचे: वही व्यवस्था जो आकाशगंगाओं को सरेखित करती है, आपके रक्त के लोहे और आपके हाथ के आवेग को भी सरेखित करती है। इस निर्बाध नियम के किसी भी खंड को “मेरा” कहना ऐसा है जैसे समुद्र की एक अकेली लहर ज्वार पर स्वामित्व का दावा करे। लहर वास्तविक है। उसकी गति वास्तविक है। किंतु वह गति समुद्र की है, क्षण-भर के लिए इस विशेष शिखर के रूप में व्यक्त — और जब शिखर शांत होता है, तब न कुछ बकाया है, न कुछ खोया, और जल समुद्र के सिवा कभी कुछ था ही नहीं।



यही नींव है। आगे जो कुछ भी आता है वह इसी एक अवतरण का विस्तार है। भाग दो में हम देखेंगे कि क्रिया वास्तव में कैसे संगठित होती है — कैसे घटनाएँ प्रेरित होती हैं, कैसे क्षेत्र यह निर्धारित करता है कि कौन कौन-सी भूमिका निभाएगा — और हम पाएँगे कि आधुनिक भौतिकी ने, सर्वथा बिना किसी अभिप्राय के, हमें उस निर्वैयक्तिक व्यवस्था के लिए एक चौंका देने वाली उपयुक्त शब्दावली थमा दी है जिसका वर्णन चिंतकों ने तीन हजार वर्ष पहले किया था।

## सबसे पुराना शब्द

इस पुस्तक जिस वंश-परंपरा का अनुसरण करती है उसके तीन शब्दों में से — वस्तुओं की व्यवस्था, धर्म, कर्म — पहला सबसे पुराना और सबसे विचित्र है, और अनुवाद करना लगभग असंभव, क्योंकि हमारे पास कोई अवधारणा ही नहीं जो उससे ठीक मेल खाती हो। मौन व्यवस्था को कभी “ब्रह्मांडीय व्यवस्था,” कभी “सत्य,” तो कभी “वस्तुएँ जैसी हैं” के रूप में अनूदित किया जाता है। किंतु इनमें से कोई भी ठीक नहीं, क्योंकि ये सभी किसी ऐसी वस्तु का सुझाव देते हैं जो संभवतः अन्यथा भी हो सकती थी, जबकि वह एक व्यवस्था यह सिद्धांत है कि वस्तुएँ आखिर संगत होती ही क्यों हैं। यही कारण है कि ऋतुएँ लौटती हैं, यही कि अग्नि जहाँ भी जलाई जाए उष्ण है, यही कि वही नियम गिरते सेब और परिक्रमा करते चंद्रमा को संचालित करता है। यह किसी ऐसी अराजकता पर थोपा गया आदेश नहीं जो प्रतिरोध कर सकती थी। यह वह व्यवस्था है जो पहले से ही वहाँ है, समस्त देवताओं और समस्त आदेशों से पूर्व, स्वयं अस्तित्व का गहन व्याकरण।

ऋषियों ने व्यवस्था को कोई ऐसे दर्शन के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जिसके पक्ष में तर्क देना हो। उन्होंने उसे एक ऐसे तथ्य के रूप में बताया जो तर्क की अपेक्षा न करने योग्य स्पष्ट था, जैसे आप बता सकते हैं कि जल नीचे की ओर बहता है। उन्होंने वही देखा था जो स्पष्ट दृष्टि में ही छिपा रहता है: कि अस्तित्व यादृच्छिक नहीं है, कि अराजकता की हर प्रतीति के नीचे एक ऐसी व्यवस्था है जो आँख के लिए अनुरेखित करने को बहुत विशाल या बहुत सूक्ष्म या बहुत तीव्र है, और कि यह व्यवस्था अपने संचालन के लिए हमारी अनुमति या यहाँ तक कि हमारी जागरूकता की भी अपेक्षा नहीं करती। उसने ब्रह्मांड को तब भी थामे रखा जब उसे देखने के लिए मन थे ही नहीं, और वह उसके बाद भी थामे रखेगी। ब्रह्मांडीय व्यवस्था मौन नियम है,

और कर्म, जैसा हम देखेंगे, उसी मौन नियम के सिवा कुछ नहीं जो गति करने की क्रिया में पकड़ा गया है।

## व्यवस्था का अवतरण

इन तीन शब्दों को एक ही अवतरण के तीन पायदानों के रूप में चित्रित कीजिए, अमूर्त ठोस बनता हुआ पर कभी पृथक हुए बिना। सबसे ऊपर स्वयं ब्रह्मांडीय व्यवस्था है, मौन और अव्यक्त, वह नियम जो समस्त गति को थामे है। एक पायदान नीचे धर्म है, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था का अपना मुख दिखाना है — संचालन में आई व्यवस्था, प्रत्येक वस्तु का अपने स्वभाव के अनुसार उचित कार्य-संचालन। अग्नि का धर्म है जलना; जल का धर्म है नीचे बहना और समुद्र पाना; किसी विशेष जीवन का धर्म है उस जीवन की समग्र के भीतर उचित गति, वह भूमिका जिसके लिए वह उपयुक्त है। और आधार पर कर्म है, जो धर्म ही क्रिया में है, व्यवस्था वास्तव में गति करती हुई, नियम स्वयं को ठोस घटनाओं में सम्पन्न करता हुआ। जब अग्नि लकड़ी जलाती है, तो वह जलना कर्म है। जब नदी समुद्र पहुँचती है, तो वह पहुँचना कर्म है। कर्म संसार के ऊपर बिछाई गई कोई पृथक नैतिक शक्ति नहीं है। यह बस गहन व्यवस्था है गति में, व्यवस्था स्वयं को घटनाओं के माध्यम से व्यक्त करने की क्रिया में।

इस अवतरण को स्पष्ट थामिए, क्योंकि अब समूची भ्रांति को सटीकता से स्थित किया जा सकता है। किस पायदान पर व्यक्तिगत प्रवेश करता है? किस स्तर पर निर्वैयक्तिक ब्रह्मांडीय व्यवस्था मेरी निजी संपत्ति बन जाती है? अवतरण को ईमानदारी से परखिए और आप पाएँगे कि ऐसा कोई पायदान है ही नहीं। अंतर्निहित व्यवस्था व्यक्तिगत नहीं है; कोई यह नहीं मानता कि वह ब्रह्मांडीय व्यवस्था का स्वामी है। धर्म स्वामित्व के अर्थ में व्यक्तिगत नहीं है; अग्नि का धर्म अग्नि की निजी संपत्ति नहीं बल्कि बस अग्नि का स्वभाव है। और कर्म, केवल महान व्यवस्था ही गति में होने के नाते, उस क्षण अचानक एक स्वामी अर्जित नहीं कर सकता जब वह एक घटना के रूप में दृश्य होता है। व्यक्तिगत अवतरण के किसी पायदान पर नहीं मिलता। वह बाद में जोड़ा जाता है, मन के द्वारा, एक प्रकार के दृष्टि-भ्रम के रूप में जो इस तथ्य से उत्पन्न होता है कि कुछ घटनाएँ उस वस्तु से होकर गुजरती प्रतीत होती हैं जिसे हम स्वयं कहते हैं।

## एक निर्वैयक्तिक क्रिया का व्याकरण

मैं वही बात व्याकरण की भाषा में रख दूँ, क्योंकि अंततः हम एक व्याकरणिक त्रुटि ही सुधार रहे हैं। कुछ भाषाओं में जिन्हें निर्वैयक्तिक क्रियाएँ कहते हैं वे होती हैं — वर्षा हो रही है, अँधेरा हो रहा है — जहाँ अंग्रेज़ी का “it” किसी वास्तविक वस्तु की ओर संकेत नहीं करता जो वर्षा या अँधेरा कर रही हो। कोई “वर्षा करने वाला” है ही नहीं। बस वर्षा-होना है। व्याकरण को एक कर्ता चाहिए, इसलिए एक स्थानापन्न कर्ता डाल दिया जाता है, किंतु कोई भी आकाश में उस सत्ता को खोजने में धोखा नहीं खाता जो वर्षा करती हो। वर्षा-होना कर्ता-रहित है। वह बस घटित होता है।

मैं सुझाना चाहता हूँ कि कर्म एक निर्वैयक्तिक क्रिया है जिसे हमने भूल से प्रथम पुरुष में परिणत कर दिया है। क्रिया-होना है, घटनाओं के माध्यम से गति करता नियम है, किंतु क्रिया के पीछे खड़ा कोई पृथक् कर्ता नहीं जो उसका स्वामी हो, जैसे वर्षा के पीछे कोई वर्षा-करने वाला नहीं। स्वामी का बोध वही व्याकरणिक स्थानापन्न “it” है, जिसे एक वास्तविक सत्ता समझ लिया गया। “मैंने किया” उतना ही ठोस और स्पष्ट अनुभव होता है जितना “वर्षा हो रही है” तब होता यदि हमने किसी प्रकार स्वयं को विश्वास दिला लिया होता कि बादलों में “वह” नामक कोई प्राणी रहता है और व्यक्तिगत रूप से हर बौछार करता है। उपचार यह नहीं कि क्रिया का घटित होना नकार दिया जाए — वह तो घटित होती ही है, वर्षा गीली है, कृत्य वास्तविक है, घटना घटित होती है। उपचार यह है कि क्रिया के पीछे उस व्यक्तिगत स्वामी को खोजना बंद कर दिया जाए जो वहाँ कभी था ही नहीं, और देखा जाए, भय के बजाय राहत के साथ, कि क्रिया ब्रह्मांड की थी, आपकी नहीं — वर्षा-होने की, न कि वर्षा करने वाली की।

## यह नींव क्यों है

इस पुस्तक में शेष सब कुछ उसी अवतरण पर बना है जिसे हमने अभी अनुरेखित किया, इसलिए आगे बढ़ने से पहले इसे स्मृति में बैठा लेना सार्थक है। वस्तुओं की व्यवस्था एकमात्र मौन नियम है। धर्म वह नियम है जो प्रत्येक वस्तु के उचित स्वभाव के रूप में दृश्य होता है। कर्म वह नियम है गति में, स्वयं को घटनाओं में सम्पन्न करता हुआ। व्यक्तिगत स्वामी इस संरचना में किसी बिंदु पर प्रकट नहीं होता; उसे मन घटित होने के बाद जोड़ता है, एक व्याकरणिक प्रतिवर्ती क्रिया जिसे एक तत्त्वमीमांसीय सत्य समझ लिया गया। जब हम, आगे के अध्यायों में, कहेंगे कि कोई घटना घटना-क्षितिज पर प्रेरित होती है, कि समस्त संभावनाओं का क्षेत्र भूमिकाएँ

निर्धारित करता है, कि पूर्णता कर्म और कर्ता दोनों को विलीन कर देती है — तो हम केवल, क्रमशः अधिक सूक्ष्म विस्तार में, यह वर्णन कर रहे होंगे कि यह निर्वैयक्तिक नियम वास्तव में कैसे गति करता है। जो विज्ञान हम उधार लेंगे वह दृष्टि का प्रमाण नहीं है; वह उसी निर्वैयक्तिक गति के लिए अप्रत्याशित रूप से अनुनादी चित्रों का एक समुच्चय है जिसे ऋषियों ने मौन व्यवस्था नाम दिया, और जिसे हमने, अपनी उलझन में, “मेरा कर्म” कहना सीख लिया।

## नियम को किसी नियम-दाता की आवश्यकता नहीं

हममें एक बहुत गहरी सहज-वृत्ति है कि जहाँ कहीं नियम है वहाँ अवश्य कोई नियम-दाता होगा — कि व्यवस्था का अर्थ है कोई जिसने उसे व्यवस्थित किया, कि नियमों का अर्थ है कोई शासक। यह सहज-वृत्ति इतनी प्रबल है कि जब हम प्राकृतिक नियम की बात करते हैं तब भी हम आधे मन से उसके पीछे एक विधायक की कल्पना कर लेते हैं। किंतु ब्रह्मांडीय व्यवस्था उस अर्थ में नियम नहीं है, और इसे समझ लेना आगे की हर बात के लिए आवश्यक है। व्यवस्था किसी अधिकारी द्वारा जारी और पुरस्कारों व दंडों द्वारा प्रवर्तित आदेशों का समुच्चय नहीं है। यह वह व्यवस्था है जो बस ऐसी ही है, स्वयं अस्तित्व में अंतर्निहित संगति, जिसे स्थापित करने के लिए किसी की आवश्यकता नहीं और प्रवर्तित करने के लिए भी किसी की नहीं। अग्नि इसलिए नहीं जलती कि वह किसी आदेश का पालन कर रही है; जलना ही वह है जो अग्नि है। ग्रह इसलिए परिक्रमा नहीं करते कि वे आदेशों का अनुसरण कर रहे हैं; परिक्रमा वह आकार है जो उनका अस्तित्व समग्र के भीतर लेता है। ब्रह्मांडीय व्यवस्था वर्णनात्मक है, विधानात्मक नहीं — वह हमें बताती है कि वस्तुएँ कैसी हैं, यह नहीं कि कोई शासक आग्रह करता है कि उन्हें कैसा होना चाहिए।

यह इसलिए मायने रखता है कि कर्म की व्यक्तिगत भ्रांति पूर्णतः नियम-दाता को चुपके से वापस भीतर घुसाने पर निर्भर है। यह विश्वास करने के लिए कि मेरे कर्म मेरा भाग्य कमाते हैं, मुझे एक प्रवर्तक में विश्वास करना होगा — एक ब्रह्मांडीय अधिकारी जो मेरी क्रियाओं का अवलोकन करे, उनका न्याय करे, और तदनुसार परिणाम संचालित करे। नियम-दाता को हटा दीजिए और व्यक्तिगत प्राप्य का समूचा तंत्र ढह जाता है, क्योंकि अब कोई बचा ही नहीं जो हिसाब रखे या दंडादेश जारी करे। जो शेष रहता है वह केवल गहन व्यवस्था है, निर्वैयक्तिक व्यवस्था गति में, जिसमें क्रियाएँ परिणामों में इसलिए नहीं बहती कि कोई न्यायाधीश ऐसा आदेश देता है, बल्कि इसलिए कि एक निर्बाध रूप से जुड़ी वास्तविकता बस ऐसे ही गति करती है। परिणाम

वास्तविक है; जुड़ाव वास्तविक है; न्यायाधीश काल्पनिक है। और एक बार न्यायाधीश के चले जाने पर, अभियुक्त के पास उत्तर देने को कोई नहीं रहता, और वह मुकदमा जो आपके मन में जीवन-भर चल रहा था, न्यायालय के अभाव में चुपचाप स्थगित कर दिया जाता है।

## धर्म कर्तव्य नहीं है

एक और सुधार यहीं का है, क्योंकि अवतरण का मध्य पद तीनों में सबसे अधिक विकृत किया गया है। धर्म का इतनी बार कर्तव्य के रूप में अनुवाद किया गया है कि दोनों शब्द लगभग एक हो गए हैं, और उस मिलन के साथ एक भारी नैतिकतावाद आता है — धर्म का बोध एक दायित्व के रूप में, एक बोझिल “करना चाहिए” के रूप में, उन नियमों के रूप में जिनका पालन भला होने के लिए करना ही है। किंतु अपने मूल अर्थ में धर्म किसी वस्तु पर बाहर से थोपा गया कर्तव्य नहीं है; वह स्वभाव है जिसे कोई वस्तु भीतर से व्यक्त करती है। जल का धर्म कोई आज्ञा नहीं जिसे मानने के लिए जल को संघर्ष करना पड़े; वह बस जल का होने का ढंग है — नीचे बहना, तल पाना, समुद्र तक पहुँचना। जल अपना धर्म पूरा करने के लिए ज़ोर नहीं लगाता। वह ठीक बहने पर पुण्यवान अनुभव नहीं करता और बाँध दिए जाने पर अपराधी नहीं। उसका धर्म वही है जो वह है, अनायास व्यक्त। जब हम अपने ही धर्म को एक भारी कर्तव्य के रूप में सुनते हैं जिसे करने के लिए हमें परिश्रम करना है, तो हम पहले ही गलत समझ चुके होते हैं, नियम-दाता और उसकी माँगों को भीतर आयात कर चुके होते हैं। ठीक से समझा जाए तो आपका धर्म आप पर लदा कोई बोझ नहीं बल्कि समग्र के भीतर आपके स्वभाव की अनायास अभिव्यक्ति है — और जो तनाव आप अनुभव करते हैं वह कभी स्वयं धर्म का तनाव नहीं होता, बल्कि केवल उसका प्रतिरोध करते स्व का तनाव होता है।

## जहाँ भी देखें, व्यवस्था

एक बार जब आपको ब्रह्मांडीय व्यवस्था की दृष्टि मिल जाती है, तो आप उसे देखना बंद नहीं कर पाते, और वह देखना ही इस बोध को घुलाने लगता है कि व्यवस्था कोई दुर्लभ और परिश्रम से अर्जित की जाने वाली वस्तु है, न कि स्वयं वह आधार-भूमि जो है। वह एक शंख की कुंडली में है और एक आकाशगंगा की कुंडली में, दोनों एक ही अनुपात पर बनीं। वह ऊपर से देखी गई नदी की शाखाओं में है और पत्ती की शिराओं की शाखाओं में और आपके अपने फेफड़े की वाहिकाओं की शाखाओं में, वही पैटर्न तीन पैमानों पर। वह उन अंतरालों में है जो संगीत

को कान के लिए सहनीय बनाते हैं और उन अनुपातों में जो एक सेतु को खड़ा रखते हैं और उस लय में जो एक हृदय को बिना किसी निर्देश के नब्बे वर्षों तक धड़कने देती है। किसी भी विज्ञान ने किसी भी परिघटना में जितना गहरा देखा है, उतनी ही अधिक व्यवस्था उसने पाई है, कभी कम नहीं — प्रत्यक्ष अराजकता के नीचे व्यवस्था, कोलाहल के नीचे पैटर्न, एक इतनी गहरी बोधगम्यता कि महान वैज्ञानिकों ने बार-बार उसके समक्ष एक प्रकार के विस्मय की सूचना दी है जो गहन व्यवस्था के समक्ष चिंतकों के विस्मय से अभिन्न है।

यह तर्क के लिए इसलिए मायने रखता है कि यह व्यक्तिगत खाते के नीचे की एक छिपी हुई पूर्व-धारणा को घुला देता है: यह पूर्व-धारणा कि व्यवस्था को थोपा, बनाए रखा, अर्जित किया जाना चाहिए — कि किसी के उसकी देखभाल किए बिना, वस्तुएँ बिखर जाती हैं। व्यक्तिगत स्व स्वयं को व्यवस्था के चिंतित अनुरक्षकों में से एक समझता है, जो संसार के अपने छोटे कोने को परिश्रम और सतर्कता से जोड़े रखने के लिए उत्तरदायी है। किंतु अंतर्निहित व्यवस्था किसी के द्वारा बनाए नहीं रखी जाती; वह स्वयं अस्तित्व की स्व-विद्यमान संगति है, जो आकाशगंगाओं और हृदय-धड़कन और शंख की कुंडली को बिना किसी अनुरक्षक के, बिना परिश्रम के, बिना अनुमति के थामे है। इसे देखना यह संदेह करने लगना है कि वह थकाऊ सतर्कता जिससे आप अपने जीवन को जोड़े रखते आए हैं, वह वास्तव में कभी वह थी ही नहीं जो उसे जोड़े रखती थी — कि व्यवस्था आरम्भ से ही अपना कार्य स्वयं कर रही थी, और आपका भिंचा हुआ अनुरक्षण केवल ऊपर से जोड़ा गया घर्षण भर था।

## ऋषि और दार्शनिक

इस बात में भेद है कि वेद के ऋषियों ने महान व्यवस्था की बात कैसे की और एक दार्शनिक कैसे करता, और यह भेद इस पूरी पुस्तक को कैसे पढ़ें इसके लिए शिक्षाप्रद है। दार्शनिक एक निष्कर्ष की ओर तर्क करता है, एक अभियोग गढ़ता है, उसे आपत्तियों के विरुद्ध बचाता है, तर्क से समझाता है। ऋषि तर्क नहीं करता; ऋषि सूचना देता है — किसी वस्तु की ओर संकेत करता है और प्रभावतः कहता है, देखो। वस्तुओं की व्यवस्था सिद्ध की जाने वाली प्रतिज्ञा के रूप में प्रस्तुत नहीं की गई थी बल्कि देखे जाने वाले तथ्य के रूप में, उसी प्रकार जैसे कोई एक पर्वत की ओर संकेत कर दे जो क्षितिज पर सदा से था, केवल इसलिए अनदेखा कि किसी ने देखा नहीं। मैं इस पुस्तक में दार्शनिक की अपेक्षा ऋषि की पद्धति का अधिक प्रयास कर रहा हूँ, यद्यपि जहाँ दार्शनिक के उपकरण सहायक हों वहाँ उनका उपयोग करता हूँ। मैं अंततः आपसे

इस विषय में कोई तर्क जीतने का प्रयास नहीं कर रहा कि कर्म व्यक्तिगत है या नहीं। मैं किसी वस्तु की ओर संकेत करने का प्रयास कर रहा हूँ — गति में आई निर्वैयक्तिक व्यवस्था, स्वामी की अनुपस्थिति — और कह रहा हूँ, देखिए, यहाँ, अपने ही अनुभव में, और स्वयं देखिए कि क्या स्वामी कभी वहाँ था भी। पर्वत को मेरे तर्क की आवश्यकता नहीं। उसे केवल आपके देखने की आवश्यकता है।

### गहन व्यवस्था और सत्य: व्यवस्था और सत्य

वेद की प्राचीनतम परतों में, अंतर्निहित व्यवस्था एक और शब्द के साथ चलती है, सत्य, जिसका सामान्यतः अनुवाद “सच्चाई” किया जाता है — और यह युग्म कुछ ऐसा प्रकाशित करता है जिसे आधुनिक कान प्रायः चूक जाता है। हम सत्य को कथनों का एक गुण मानते हैं, जो कहा गया और जो वस्तुस्थिति है उसके बीच एक मेल। प्राचीन अर्थ गहरा और अधिक रोचक था: सत्य वस्तुओं की व्यवस्था के साथ सरेखण के रूप में, सत्य महान व्यवस्था के मानवीय आयाम के रूप में, वास्तविकता वास्तव में जैसी है उसके अनुरूप जीना। इस पुराने अर्थ में सत्य बोलना केवल मिथ्या कथनों से बचना नहीं था बल्कि स्वयं को ब्रह्मांडीय व्यवस्था के साथ सरेखित करना था, अपने शब्दों और कर्मों को वस्तुओं की व्यवस्था का प्रतिरोध करने के बजाय उसे व्यक्त करने देना था। सत्य और व्यवस्था सहचर इसलिए थे कि वे एक ही वस्तु के दो मुख थे: मौन व्यवस्था स्वयं व्यवस्था के रूप में, सत्य उसके साथ मानवीय सरेखण के रूप में।

यह सीधे तर्क से जुड़ता है, क्योंकि यह उघाड़ देता है कि इस पुस्तक भर चलने वाले असरेखण के दुःख से वास्तव में क्या तात्पर्य है। व्यक्तिगत खाता ढोना — यह आग्रह कि कर्म मेरा है, कृत्य मेरा, भाग्य मेरा — इसी पुराने अर्थ में, असत्य में जीना है: शब्दों में झूठ बोलना नहीं, बल्कि वस्तुओं के वास्तविक ढंग के साथ असरेखित होना, जो निर्वैयक्तिक, एकीकृत, अविभाजित है। व्यक्तिगत कर्म का दुःख एक व्यवस्था के विरुद्ध जीने का घर्षण है, एक पृथक्ता और स्वामित्व पर आग्रह करने का घर्षण जिसे व्यवस्था धारण करती ही नहीं। और यह पुस्तक जो राहत देती है, वह उसी पुराने अर्थ में, सत्य की ओर एक वापसी है — किसी नई मान्यता को अपनाना नहीं बल्कि वास्तविकता जैसी है उसके सत्य के साथ अपने जीने का सरेखण, उस घर्षण की समाप्ति जो उसका प्रतिरोध करने से आता था। व्यक्तिगत खाते को रख देना असत्य

में जीना बंद करना और, अंततः, उस व्यवस्था के अनुरूप आना है जिसके भीतर आप सदा से थे ही।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

वस्तुओं की व्यवस्था किसी नियम-दाता द्वारा जारी और पुरस्कार व दंड द्वारा प्रवर्तित कोई नियम नहीं है। यह वह व्यवस्था है जो बस ऐसी ही है — वही संगति जो ऋतुओं को लौटाती है और आपके हृदय को धड़काती है, जिसे किसी प्रवर्तक की आवश्यकता नहीं और जो कोई हिसाब नहीं रखती।

अपनी छाती पर एक हाथ रखिए और उस हृदय-धड़कन को अनुभव कीजिए जिसका कर्ता आप नहीं और जिसका आप आदेश नहीं देते। वही मौन व्यवस्था है, इस क्षण आप में गति करती हुई, अनायास, आपसे परामर्श किए बिना। एक मिनट के लिए अपना ध्यान वहाँ टिकाइए, और उसे आपको यह सिखाने दीजिए कि बिना किसी न्यायाधीश वाली व्यवस्था भीतर से कैसी अनुभव होती है।



# भाग दो

## क्षेत्र की भौतिकी

समस्त संभावनाओं का क्षेत्र, घटना-क्षितिज, द्रष्टा, और अव्यक्त वाद्यवृंद

यहाँ हम भौतिकी से उधार लेते हैं — अध्यारोपण, अंतर्ग्रथन, द्रष्टा, ब्रह्मांड का अदृश्य बहुमत — और मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि इस सबको हल्के से थामिए, चित्रों के समुच्चय के रूप में, प्रमाणों के समुच्चय के रूप में नहीं। इन अध्यायों में कुछ भी यह दावा नहीं करता कि विज्ञान ने इस पुस्तक की दृष्टि को प्रदर्शित कर दिया है। दावा केवल इतना है कि वास्तविकता कैसे व्यवहार करती है, इसके हमारे सबसे सटीक चित्र, बार-बार, उसी से तुक मिलाते हैं जो चिंतकों ने भीतर से बताया।



## समस्त संभावनाओं का क्षेत्र

---

घटना से पूर्व, समस्त भूमिकाएँ खुली हैं; कुछ भी निश्चित नहीं और कुछ भी अस्वीकृत नहीं। क्षेत्र एक साथ हर भाग को थामे रहता है, जैसे कोई स्वर-समूह हाथ के गिरने से पूर्व हर स्वर को थामे रहता है।

— अंतर्ग्रथन पर टिप्पणी

यदि कर्म क्रिया में आई निर्वैयक्तिक व्यवस्था है, तो हमें यह समझने की आवश्यकता है कि वह क्रिया कैसे संगठित होती है — कैसे, किसी भी क्षण की असीम संभावनाओं में से, एक विशेष घटना आकार लेती है और भूमिकाओं का एक विशेष समुच्चय निर्धारित हो जाता है। यहाँ मैं, सावधानी से और इस पूर्ण स्वीकृति के साथ कि मैं उधार ले रहा हूँ, आधुनिक भौतिकी की सबसे विचित्र और सबसे पुष्ट खोजों में से एक उधार लेना चाहता हूँ: क्वांटम अंतर्ग्रथन और संभावना का वह क्षेत्र जिसका वह संकेत देता है।

क्वांटम यांत्रिकी में, किसी मापन से पूर्व, कोई तंत्र निश्चित गुण धारण नहीं करता। वह उसमें विद्यमान रहता है जिसे भौतिकविद् *अध्यारोपण* कहते हैं — समस्त संभावित परिणामों का एक साथ एक संगत खुला-थमा रहना। इलेक्ट्रॉन गुप्त रूप से यहाँ या वहाँ नहीं है; वह, एक सटीक गणितीय अर्थ में, संभावना का एक क्षेत्र है, जिसमें हर परिणाम उपस्थित और भारित है, फिर भी कोई वास्तविक नहीं। केवल जब तंत्र अन्योन्यक्रिया करता है — जब घटना समाधान को प्राप्त होती है — तब एक परिणाम वास्तविक बनता है और शेष गिर जाते हैं।

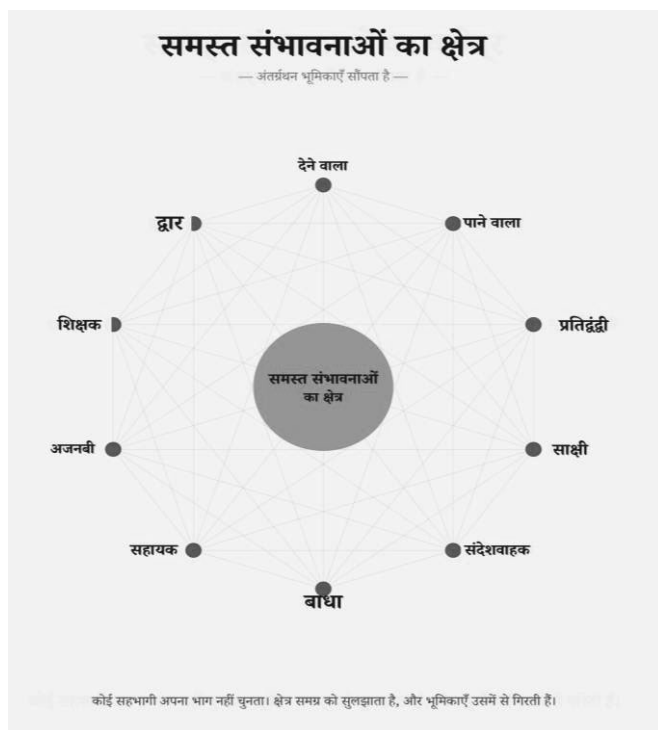
अंतर्ग्रथन इसे और गहरा कर देता है। दो कण जिन्होंने अन्योन्यक्रिया की है, किसी भी दूरी पर सहसंबंधित बने रह सकते हैं, इस प्रकार कि एक का समाधान तत्क्षण दूसरे को प्रभावित कर देता है। वे संकेत भेजती दो पृथक वस्तुएँ नहीं हैं; वे एक ही तंत्र हैं, और उनके अंशों का समग्र से पृथक कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं। आइंस्टाइन को यह इतना विचलित करने वाला लगा कि

उन्होंने इसे “प्रेतमय” कहा। यह प्रेतमय नहीं है। यह ब्रह्मांड हमें, अपने ही गणित में, यह बता रहा है कि पृथक्ता मौलिक नहीं है। समग्र अंशों से पूर्व है।

## वह क्षेत्र जो भूमिकाएँ निर्धारित करता है

अब मैं सेतु पार करूँगा, और जब पार करूँगा तब आपको बता दूँगा। ऊपर की भौतिकी स्थापित है। आगे जो है वह उस पर बनाया गया उपमान है, देखने के एक ढंग के रूप में प्रस्तुत, प्रमेय के रूप में नहीं।

कल्पना कीजिए कि जीवन की हर घटना — एक भेंट, एक विवाह, एक विश्वासघात, एक उद्धार, एक युद्ध — घटित होने से पूर्व, अध्यारोपण में किसी क्वांटम तंत्र की भाँति है: समस्त संभावनाओं का एक क्षेत्र, जो हर उस ढंग को खुला थामे है जिससे घटना समाधान को प्राप्त हो सकती थी और हर उस भूमिका को जिसे प्रत्येक सहभागी निभा सकता था। इस क्षेत्र में कोई निश्चित “आप जो विश्वासघाती होंगे” और “वे जिनके साथ विश्वासघात होगा” नहीं है। केवल क्षेत्र है, समस्त व्यवस्थाओं से गर्भित, अंतर्ग्रथित, अविभाज्य।



चित्र 2. समस्त संभावनाओं का क्षेत्र। किसी घटना के समाधान से पूर्व, कोई सहभागी एक निश्चित भाग धारण नहीं करता। क्षेत्र — अंतर्ग्रथित, अविभाज्य — एक साथ हर भूमिका को थामे है: दाता और प्राप्तकर्ता, सहायक और बाधा, गुरु और अजनबी। जब घटना समाधान को प्राप्त होती है, तो भूमिकाएँ समग्र में से गिरकर आती हैं। किसी ने अपना भाग नहीं चुना; क्षेत्र ने उसे नियत किया।

जब घटना समाधान को प्राप्त होती है — जब, मानो, मापन हो जाता है — तब क्षेत्र एक विशेष व्यवस्था में ढह जाता है। यह व्यक्ति दाता बन जाता है, वह प्राप्तकर्ता; यह बाधा, वह द्वारा। किंतु ध्यान दीजिए: किसी सहभागी ने अपनी भूमिका नहीं चुनी। भूमिका व्यक्ति की इच्छा से तय नहीं हुई। वह क्षेत्र द्वारा, अंतर्ग्रथित समग्र द्वारा, उस दहलीज़ पर अभिसरित परिस्थितियों की समग्रता द्वारा सुलझाई गई। सहभागी ने भाग का चयन नहीं किया। भाग समूचे पैटर्न के समाधान में से गिरकर आया।

## यह “मेरा” कर्म को क्यों घुला देता है

यदि यह चित्र लगभग भी सही है — और मैं इसे एक चित्र, एक लेंस, देखने के एक ढंग के रूप में प्रस्तुत करता हूँ — तो प्रश्न “मैंने ऐसा क्या किया जो यह भोगना पड़ा?” जड़ से ही विकृत है। आपने अपनी भूमिका उतना ही नहीं चुनी जितना एक इलेक्ट्रॉन अपना परिणाम चुनता है। भूमिका समूचे क्षेत्र के समाधान द्वारा नियत हुई। अपने भाग के लिए व्यक्तिगत श्रेय या व्यक्तिगत दोष लेना ठीक उतना ही भ्रमित है जितना एक इलेक्ट्रॉन का दाएँ के बजाय बाएँ पाए जाने पर अपराधी अनुभव करना।

यह आपको कठपुतली नहीं बनाता, और मैं आगे के अध्याय यह दिखाने में लगाऊँगा कि क्यों। अभी के लिए बात अधिक सूक्ष्म और अधिक मुक्तिदायी है: जो भाग आप निभाते हैं वह वास्तविक है, उसका आपका अभिनय वास्तविक है, और वह आपका नहीं है। वह क्षेत्र का है, समग्र का, घटना का — जैसे एक स्वर स्वर-समूह का होता है, न कि उस तार का जो संयोगवश उसे बजा देता है। तार ने संगीत की रचना नहीं की। वह कंपित हुआ, सुंदरता से, जैसा संगीत ने अपेक्षित किया।

क्षेत्र के इस चित्र को थामिए। अगले अध्याय में हम उस दहलीज़ को देखेंगे जहाँ क्षेत्र समाधान को प्राप्त होता है — वह स्थान जिसे मैं घटना-क्षितिज कह रहा हूँ — और देखेंगे कि कोई घटना कैसे प्रेरित होती है, अपना मार्ग चलती है, और समाप्त होती है।

## अध्यारोपण: अनिर्धारित घटना के एक चित्र के रूप में

क्वांटम यांत्रिकी हमें एक इतना विचित्र चित्र देती है कि भौतिकविद् अब भी इस पर बहस कर रहे हैं कि उसका अर्थ क्या है, और फिर भी वह हमारे प्रयोजन के लिए इतना उपयुक्त है कि मैं उसे एक दीपक की भाँति ऊपर उठाने से स्वयं को रोक नहीं पाता। किसी क्वांटम तंत्र के मापे जाने से पूर्व, वह किसी एक निश्चित अवस्था में खोजे जाने की प्रतीक्षा में नहीं बैठा रहता। वह उसमें विद्यमान रहता है जिसे अध्यारोपण कहते हैं — हर संभावित परिणाम का एक साथ खुला-थमा रहना, उम्मीदवारों की सूची के रूप में नहीं बल्कि एक अकेली अविभाजित तरंग के रूप में जो वस्तुतः उन सबको धारण करती है। इलेक्ट्रॉन देखने से पूर्व गुप्त रूप से यहाँ या वहाँ नहीं है; वह, सूत्रों में, अपनी समस्त संभावित स्थितियों का एक धुँधलापन है, और केवल मापन का कार्य उस धुँधलेपन को एक अकेले निश्चित तथ्य में सुलझाता है।

मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि इसे कठोरता से केवल एक उपमान के रूप में ग्रहण कीजिए, क्योंकि मैं केवल इतने का ही अधिकारी हूँ। मैं यह दावा नहीं कर रहा कि आपका जीवन शब्दशः एक क्वांटम तरंग-फलन है, न यह कि भौतिकी ने आत्मा को खोज लिया है। मैं यह इंगित कर रहा हूँ कि भौतिक संसार अपनी नींव पर कैसे व्यवहार करता है, इसका हमारा सबसे सटीक वृत्तांत वास्तविकता को मूलतः एक खुले-थमे संभावना के क्षेत्र के रूप में वर्णित करता है जो निश्चित घटनाओं में सुलझता है — और कि यह उसका एक विचित्र रूप से सटीक चित्र है जो चिंतकों ने तब बताया जब उन्होंने किसी घटना के घटित होने से पूर्व उसके स्वभाव की ओर भीतर देखा। घटना, अपने प्रेरित होने से पूर्व, अभी किसी की नहीं है। वह शुद्ध संभावना का एक क्षेत्र है जिसमें भूमिकाएँ अभी नियत नहीं हुई हैं। अध्यारोपण अनिर्धारित घटना के लिए भौतिकविद् का नाम है; समस्त संभावनाओं का क्षेत्र चिंतक का।

## अंतर्ग्रथन और अविभाज्य समग्र

क्वांटम संसार का एक दूसरा लक्षण हमारे लिए और भी अधिक प्रासंगिक है, और यही वह है जिसे आइंस्टाइन ने इतना विचलित करने वाला पाया कि उसे प्रेतमय कहा। जब दो कण अंतर्ग्रथित हो जाते हैं, तो वे एक सटीक गणितीय अर्थ में अपनी पृथक पहचानें खो देते हैं: तंत्र को अब “यह कण और वह कण” के रूप में वर्णित नहीं किया जा सकता, बल्कि केवल एक अकेले अविभाज्य समग्र के रूप में, इस प्रकार कि एक का मापन तत्क्षण दूसरे की अवस्था

नियत कर देता है, चाहे वे कितनी ही दूर यात्रा कर चुके हों। अंशों का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं। समग्र प्राथमिक है; अंशों की प्रत्यक्ष पृथक्ता व्युत्पन्न और आंशिक सत्य है।

इस पर ठहरिए कि यह हमारे सामान्य चित्र को कितनी पूर्णता से उलट देता है। हम संसार की कल्पना पृथक् वस्तुओं के एक संग्रह के रूप में करते हैं जो कभी-कभी अन्योन्यक्रिया करती हैं, बिलियर्ड की उन गेंदों की भाँति जो स्पर्श करने से पूर्व और पश्चात् पूर्णतः स्वयं होती हैं। अंतर्ग्रथन कहता है कि गहनतम परत अन्योन्यक्रिया करती पृथक् वस्तुएँ नहीं बल्कि एक अकेला जुड़ा हुआ समग्र है जो केवल सतह पर पृथक् वस्तुओं से बना प्रतीत होता है। यह ठीक वही है जो हमें तब चाहिए होगा जब हम यह वर्णन करने आएँगे कि कोई घटना अपनी भूमिकाएँ कैसे निर्धारित करती है। किसी घटना के सहभागी पृथक् स्व नहीं हैं जो संयोगवश टकरा जाते हैं; वे, उस स्तर पर जहाँ घटना वास्तविक है, एक अंतर्ग्रथित समग्र हैं, जो क्षण-भर के लिए प्रत्यक्षतः पृथक् भूमिकाओं के रूप में स्वयं को व्यक्त कर रहा है। किसी भी घटना में “आप” और “दूसरा” एक ही घटित होने के अंतर्ग्रथित पक्ष हैं, यही कारण है कि घटना को उनमें से किसी एक को सौंप देने का प्रयास — मेरा कर्म, आपका दोष — केवल निर्दय ही नहीं बल्कि संरचनात्मक रूप से मिथ्या है। घटना सदा एक ही वस्तु थी।

### क्षेत्र क्यों, और हाथ क्यों नहीं

उस शब्द पर ध्यान दीजिए जिसे मैं बार-बार प्रयोग करता हूँ: क्षेत्र, हाथ नहीं। कोई कर्ता नहीं जो संभावना के क्षेत्र में हाथ डालकर एक परिणाम चुनता हो, जैसे कोई हाथ थैले में डालकर एक कंचा निकाल लाए। समाधान किसी के द्वारा किया गया चुनाव नहीं है; वह स्वयं क्षेत्र का बैठ जाना है, जैसे एक अति-संतृप्त विलयन परिस्थितियों के निर्णायक बिंदु पर पहुँचते ही अचानक रवे बनाने लगता है। कोई रवा-निर्माता यह तय नहीं करता कि कौन-सा अणु कहाँ जाए। व्यवस्था समग्र में से उभरती है, समग्र द्वारा संचालित, समग्र को व्यक्त करती हुई। जब हम कहते हैं कि समस्त संभावनाओं का क्षेत्र किसी घटना में भूमिकाएँ निर्धारित करता है, तो हमारा तात्पर्य यह नहीं कि कोई ब्रह्मांडीय भूमिका-निर्देशक परीक्षण लेकर चयन करता है। हमारा तात्पर्य यह है कि अविभाजित क्षेत्र, एक दहलीज़ पर पहुँचकर, सुलझता है — और सुलझते हुए, उन निश्चित भूमिकाओं को सामने लाता है जो उसमें अव्यक्त थीं, जैसे रवे की जाली विलयन में अव्यक्त थी। व्यवस्था सर्वत्र है और चयनकर्ता कहीं नहीं। यह इस पुस्तक का सबसे कठिन और सबसे मुक्तिदायी विचार है, और हम इस पर अनेक दिशाओं से लौटेंगे।

## मापन की समस्या, ईमानदारी से

मैं भौतिकी के विषय में अति-सावधान रहूँगा, क्योंकि मैं एक अलंकारिक उत्कर्ष खो देना पसंद करूँगा बजाय इसके कि आपको भ्रमित करूँ। जो चित्र मैंने खींचा है — एक तंत्र अध्यारोपण में थमा रहता है जब तक मापन उसे न सुलझा दे — वह क्वांटम यांत्रिकी का एक पाठ है, वही जो तथाकथित मापन-समस्या पर टिका है, और भौतिकविद् वास्तव में इस पर असहमत हैं कि उसका अर्थ क्या है। कुछ मानते हैं कि मापन पर एक वास्तविक संकुचन होता है; अन्य कि सभी परिणाम शाखाओं में बँटते संसारों में घटित होते हैं; अन्य कि तरंग-फलन संसार में कोई वस्तु है ही नहीं बल्कि हमारे ज्ञान का एक वर्णन है। मैं नहीं जानता कि कौन सही है, और इस समय कोई नहीं जानता। इसलिए मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मैं इस पुस्तक के तर्क को किसी एक व्याख्या पर नहीं टिका रहा। मैं उस निर्विवाद औपचारिक लक्षण को उधार ले रहा हूँ — कि वास्तविकता अपने मूल में संभावनाओं की एक खुली-थमी सीमा से वर्णित होती है जो निश्चित परिणाम देती है — एक चित्र के रूप में, और केवल एक चित्र के रूप में, उस वस्तु के लिए जिसे चिंतकों ने एक सर्वथा भिन्न दिशा से बताया।

यदि यह कुछ सिद्ध नहीं करता तो उधार ही क्यों लें? क्योंकि चित्र मायने रखते हैं। मन किसी कठिन सत्य को अधिक सहजता से ग्रहण करता है जब उसके पास उसे थामने के लिए एक सजीव चित्र होता है, और सुलझते क्षेत्र का चित्र किसी घटना के स्वामी पाने से पूर्व उसके अन्यथा फिसलनदार विचार के लिए सर्वोत्तम है जिसे मैं जानता हूँ। जब आप उपमान को उपयोगी पाएँ, उसका उपयोग कीजिए। जब वह कठोर होकर यह दावा बनने लगे कि भौतिकी ने आध्यात्मिक दृष्टि सिद्ध कर दी है, उसे तुरंत छोड़ दीजिए, क्योंकि उसने ऐसा कुछ भी सिद्ध नहीं किया। सेतु पार चलने के लिए है, उस पर घर बनाने के लिए नहीं।

## संभावना अंतर्निहित-शक्ति नहीं है

एक लुभावने भ्रम से बचिए। समस्त संभावनाओं का क्षेत्र मुक्त किए जाने की प्रतीक्षा में अंतर्निहित ऊर्जा का कोई भंडार नहीं है, किसी कसी हुई कमानी या उठाए हुए भार की तरह। अंतर्निहित ऊर्जा एक निश्चित अवस्था में एक निश्चित वस्तु से जुड़ी एक निश्चित मात्रा है। संभावना का क्षेत्र कुछ अधिक विचित्र और पूर्ववर्ती है: वह वह स्थिति है जो किसी निश्चित वस्तु या निश्चित अवस्था के होने से भी पूर्व है, वह खुली-थमी सीमा जिसमें से स्वयं निश्चितता उभरती है। एक लदी कमानी से कम और किसी शब्द के चुने जाने से पूर्व एक वाक्य की रिक्त



संभावना से अधिक सोचिए — कोई छिपा हुआ वाक्य जो प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहा हो, ऐसा नहीं, बल्कि वह खुला अवकाश जिसमें कोई भी वाक्य बन सकता था। घटना, अपने क्षितिज से पूर्व, उस खुले अवकाश की भाँति है: कोई छिपा हुआ परिणाम जो उघाड़े जाने की प्रतीक्षा कर रहा हो, ऐसा नहीं, बल्कि एक सच्चा खुलापन जिसमें परिणाम अभी किसी का नहीं और अभी कुछ भी नहीं। यही कारण है कि कोई सहभागी समाधान का कर्ता नहीं हो सकता। किसी खुलेपन का कोई कर्ता नहीं होता। केवल खुलापन है, रूप में बैठता हुआ।

### **खुलापन अराजकता नहीं है**

एक सावधान पाठक चिंतित हो सकता है कि समस्त संभावनाओं का क्षेत्र, हर परिणाम को एक साथ खुला थामे हुए, शुद्ध अराजकता-सा लगता है — एक निराकार घोल जिसमें जो कुछ भी हो सकता है, जो स्वयं उस व्यवस्था को ही कमजोर कर देता है जिस पर यह पुस्तक आग्रह करती रहती है। यह चिंता एक भ्रम पर टिकी है जिसे साफ़ करना सार्थक है। संभावना का क्षेत्र अप्रतिबंधित नहीं है; वह नियमबद्ध रूप से खुला है। किसी घटना के क्षितिज पर हर कल्पनीय परिणाम सचमुच संभव नहीं होता, केवल वही जो परिस्थितियों के समूचे विन्यास के अनुरूप हों — ठीक जैसे किसी क्वांटम तंत्र का अध्यारोपण शब्दशः किसी भी अवस्था का धुँधलापन नहीं बल्कि तंत्र के समीकरण द्वारा संचालित अवस्थाओं की एक सटीक, नियमबद्ध सीमा है। खुलापन वास्तविक है, किंतु वह एक व्यवस्थित खुलापन है, मौन व्यवस्था द्वारा सुलझने से पूर्व ही आकार दी गई संभावना। सिक्का सचमुच किसी भी ओर गिर सकता है, किंतु वह गौरैया या स्वर-रचना बनकर नहीं गिरेगा; क्षेत्र ठीक उन्हीं परिणामों को खुला थामे है जिन्हें समग्र संभव बनाता है, और किसी अन्य को नहीं।

यही कारण है कि किसी घटना का समाधान, यद्यपि किसी के द्वारा रचा नहीं गया, मनमाना नहीं होता। ऐसा नहीं कि कुछ भी हो सकता है और ब्रह्मांड बिना नियमों के पासे फेंकता है; बल्कि यह कि सचमुच संभव की नियमबद्ध सीमा के भीतर, समूचा क्षेत्र एक परिणाम में बैठ जाता है, उसी व्यवस्था द्वारा सर्वत्र संचालित जिसे वह व्यक्त करता है। व्यक्तिगत कर्ता की अनुपस्थिति का अर्थ व्यवस्था की अनुपस्थिति नहीं — ठीक उल्टा। उसका अर्थ है कि स्वयं व्यवस्था, न कि उसके भीतर का कोई छोटा स्वामी, वही है जो घटना को सुलझाती है। आप परिणाम के कर्ता नहीं हैं, और न ही अराजकता है; कर्ता, यदि हमें यह शब्द प्रयोग करना ही हो, तो वह एक व्यवस्था है, समग्र, जो अपनी ही नियमबद्ध संभावना को उस एकल तथ्य में बैठाता है जो अब है।

## क्षेत्र भारित है, समतल नहीं

एक सूक्ष्म बिंदु समस्त संभावनाओं के क्षेत्र को एक निरर्थक “सब कुछ समान रूप से संभावित है” में ढहने से रोकता है, और उसे कहना उचित है, क्योंकि यही इस चित्र को ईमानदार रखता है। क्षेत्र सभी परिणामों को समान भार के साथ खुला नहीं थामता; वह संरचित है, भारित है, कुछ समाधानों की ओर अन्यो की अपेक्षा अधिक प्रवृत्त। भौतिकविद् के सूत्रों में, खुली-थमी संभावनाएँ भिन्न प्रायिकताएँ वहन करती हैं, और अधिक संभावित परिणाम सचमुच अधिक संभावित होते हैं, किसी के आदेश से नहीं बल्कि समग्र की संरचना से। सिक्का हवा, उछाल, सतह से भारित है; घटना उसके क्षितिज पर अभिसरित परिस्थितियों के समूचे विन्यास से भारित है। इसलिए समाधान, यद्यपि किसी के द्वारा रचा नहीं गया, किसी शून्य में सिक्का-उछाल नहीं है; वह एक भारित क्षेत्र का नियमबद्ध बैठ जाना है, जो उसके द्वारा व्यक्त समग्र के कारण इसकी ओर उसकी अपेक्षा अधिक प्रवृत्त है।

यह इस बात के लिए मायने रखता है कि हम अपनी सहभागिता को कैसे थामते हैं। ऐसा नहीं कि चूँकि कोई परिणाम का कर्ता नहीं, इसलिए हम जो करते हैं उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता — वह तो फिर भाग्यवादी की त्रुटि होगी। हम जो करते हैं वह उन परिस्थितियों में से एक है जो क्षेत्र को भारित करती हैं, उस विन्यास में एक सच्चा योगदान जिससे समाधान बैठता है। सहभागी की क्रिया ठीक क्षेत्र पर एक भार के रूप में वास्तविक और परिणामकारी है, यद्यपि सहभागी इस बात का कर्ता नहीं कि क्षेत्र अंततः कैसे बैठता है। आप परिणाम के चयनकर्ता नहीं हैं, और आप कुछ-नहीं भी नहीं हैं; आप अनेक भारों में से एक हैं, असंख्य परिस्थितियों के बीच एक वास्तविक परिस्थिति, एक ऐसे समाधान में योगदान करती हुई जिसे समग्र, न कि आप, बैठाएगा। पूर्ण रूप से कर्म करना अपना भार ईमानदारी से जोड़ना है; स्वामित्व छोड़ना यह दिखावा करना बंद करना है कि आपका भार ही एकमात्र था, या कि बैठना आपके आदेश का विषय था।

## एक दृश्य: फ़ोन से पहले का घंटा

एक स्त्री एक मौन फ़ोन के पास बैठी है। बायोप्सी के परिणाम इसी दोपहर आने हैं, और जब तक फ़ोन नहीं बजता, वह एक विचित्र स्थिति में विद्यमान है जिसे यह पूरा अध्याय वर्णित करने का प्रयास कर रहा है। परिणाम पहले ही वही है जो वह है — स्लाइड पर की कोशिकाएँ फ़ोन की प्रतीक्षा में नहीं हैं कि स्वयं को तय करें — और फिर भी उसके लिए, इस घंटे में, दोनों

परिणाम पूर्ण रूप से जीवित हैं। वह, एक ऐसे अर्थ में जिसे वह शब्दों में नहीं रख सकती, एक साथ दो भविष्य थामे है: वह जिसमें समाचार अच्छा है और आगे का वर्ष साधारण हरियाली में खुलता है, और वह जिसमें सब कुछ सिकुड़कर चिकित्सालयों और भय में सिमट जाता है। अभी कोई भी उसका नहीं है। वह, इस घंटे, समस्त संभावनाओं के क्षेत्र में जीती है, क्षितिज से पूर्व, जहाँ घटना ने अभी अपनी भूमिकाएँ निर्धारित नहीं कीं।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि उस घंटे में उसका दुःख वास्तव में कहाँ से आता है। वह परिणाम से नहीं आता, जिसे वह अभी जानती ही नहीं। वह पूर्णतः उसके उस प्रयास से आता है जिसमें वह क्षितिज के आर-पार पहुँचकर एक ऐसे समाधान को पकड़ना चाहती है जो घटित ही नहीं हुआ — मन से, जो हर भविष्य का पूर्वाभ्यास कर रहा है, जानने की माँग कर रहा है, अभी-नहीं के सच्चे खुलेपन में विश्राम करने से इनकार कर रहा है। और यहीं घटनाओं की संरचना में छिपी विचित्र करुणा है: खुलापन उससे कुछ नहीं माँगता। परिणाम अपने ही क्षितिज पर, जीवविज्ञान और संयोग के समूचे क्षेत्र के माध्यम से, उसके पूर्वाभ्यासों के सर्वथा बिना सुलझ जाएगा। वह इस बात की कर्ता नहीं कि स्लाइड क्या कहेगी। वह केवल, इस घंटे, एक ऐसी घटना में सहभागी है जो अभी भी संभावना में निलंबित है — और यदि वह इसे समझ ले, तो वह उस थकाऊ प्रयास को रख सकती थी जो उसका सुलझाना नहीं था, और बस प्रतीक्षा कर सकती थी, खुले हाथ, उस खुलेपन में, जब तक फ़ोन, स्वयं ही, उसे सुलझा न दे।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

किसी घटना के सुलझने से पूर्व, वह अभी किसी की नहीं है। वह खुली-थमी संभावना का एक क्षेत्र है, किसी शब्द के चुने जाने से पूर्व एक वाक्य के रिक्त खुलेपन की भाँति — कोई छिपा हुआ परिणाम जो उघाड़े जाने की प्रतीक्षा कर रहा हो, ऐसा नहीं, बल्कि एक सच्चा खुलापन जिसमें से निश्चित उभरेगा।

एक ऐसा क्षण स्मरण कीजिए जब आपने किसी अनिर्णीत वस्तु की प्रतीक्षा की थी। प्रतीक्षा की चिंता स्मरण करने के बजाय, स्वयं उस खुलेपन को स्मरण कीजिए — उसका सच्चा अभी-नहीं-होना — और ध्यान दीजिए कि उस खुलेपन में परिणाम का कोई स्वामी नहीं था, केवल क्षेत्र था, अभी बैठा नहीं।

## घटना-क्षितिज

---

जो कुछ घटित होता है, एक किनारे पर घटित होता है — वह दहलीज़ जहाँ संभावना  
वास्तविकता में पलटती है और एक घटना जन्म लेती है।

— दहलीज़ों पर टिप्पणी

भौतिकविद् किसी कृष्ण-विवर के चारों ओर की सीमा के लिए घटना-क्षितिज शब्द का प्रयोग करते हैं — वह दहलीज़ जिसके परे घटनाएँ अब बाहर की ओर कोई संकेत नहीं भेज सकतीं, वह किनारा जिसके आगे पहले-और-बाद के सामान्य नियम अपनी पकड़ खो देते हैं। मैं इस वाक्यांश को उधार लेकर इसका सामान्यीकरण करना चाहता हूँ, क्योंकि यह किसी ऐसी वस्तु को नाम देता है जिसके लिए मुझे इससे बेहतर कोई शब्द नहीं मिलता: वह दहलीज़ जिस पर एक संभावना एक घटना बन जाती है।

हर घटना का ऐसा एक क्षितिज होता है। एक क्षण आता है — यद्यपि “क्षण” बहुत छोटा शब्द है — जब परिस्थितियाँ पक जाती हैं और संभावना का क्षेत्र वास्तविकता में पलट जाता है। वह विवाद जो वर्षों से बन रहा था, अंततः फूट पड़ता है। वे कोशिकाएँ जो चुपचाप विभाजित हो रही थीं, रोग में पार कर जाती हैं। वे दो अजनबी जो शायद कभी न मिलते, एक ही सेकंड में एक ही मोड़ मुड़ जाते हैं। क्षितिज से पूर्व, घटना क्षेत्र में खुली थमी असंख्य संभावनाओं में से एक है। क्षितिज पर, वह प्रेरित होती है। क्षितिज के पश्चात्, वह उद्घाटित हो रही है, अपने ही संवेग के साथ, अपनी भूमिकाएँ निर्धारित, अपना निष्कर्ष अपने आरम्भ में पहले से ही उसी प्रकार अंतर्निहित जैसे बलूत बीज में बाँज वृक्ष अंतर्निहित होता है।

### एक घटना का जीवन

इस ढंग से देखी गई घटना का एक जीवन है जिसके स्पष्ट चरण हैं, और उन्हें देखने के लिए धीमा होना सार्थक है, क्योंकि कर्म के विषय में हमारी लगभग समूची उलझन एक चरण को दूसरा समझ लेने से आती है।

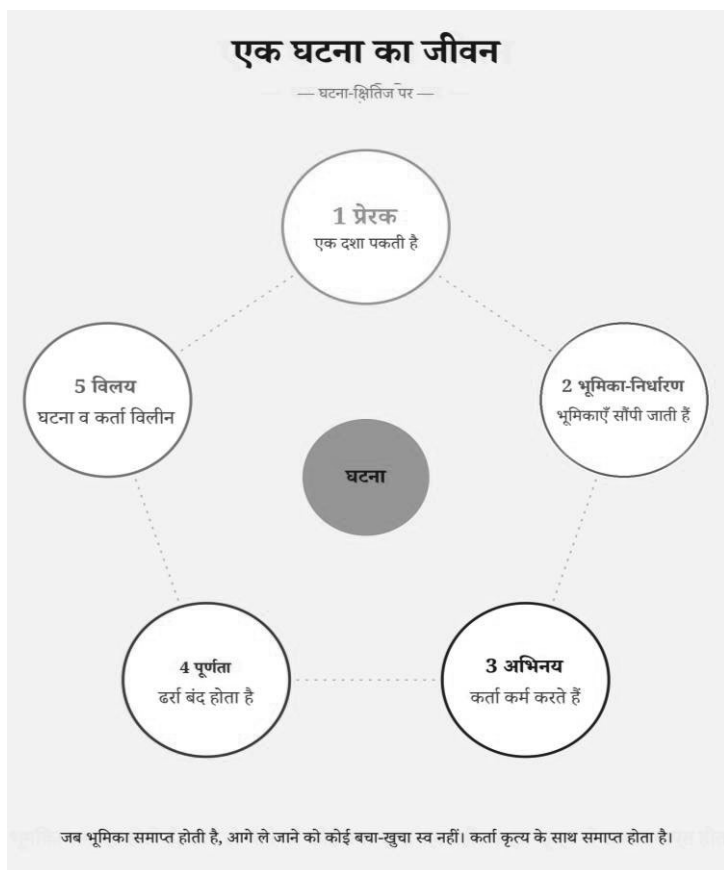
पहला, प्रेरणा। एक परिस्थिति पकती है; दहलीज़ पार होती है; क्षेत्र पलटता है। इसे कुछ भी व्यक्तिगत आरम्भ नहीं करता। जो परिस्थितियाँ पकती हैं वे स्वयं असंख्य पूर्व घटनाओं की तलछट हैं, जो किसी भी व्यक्ति की पहुँच से परे तक फैली हैं। कोई बाहर से किसी घटना का आरम्भ नहीं करता; घटनाएँ समग्र में से उठती हैं।

दूसरा, भूमिका-निर्धारण। जैसे क्षेत्र सुलझता है, भूमिकाएँ नियत होती हैं — चुनी नहीं, नियत। यह कर्म करेगा, वह प्राप्त करेगा; यह प्रतिरोध करेगा, वह झुकेगा। भूमिका-निर्धारण क्षेत्र का है, जैसा हमने पिछले अध्याय में देखा।

तीसरा, अभिनय। सहभागी अपने भाग करते हैं। यह दृश्य, नाटकीय चरण है, वही जिसे हम समूचे जीवन के लिए भूल बैठते हैं। यहाँ दाता देता है, विश्वासघाती विश्वासघात करता है, उपचारक उपचार करता है। यहीं सबसे तीव्रता से ऐसा लगता है मानो “मैं यह कर रहा हूँ।”

चौथा, पूर्णता। पैटर्न बंद होता है। विवाद चुक जाता है; रोग किसी न किसी रूप में सुलझ जाता है; भेंट समाप्त होती है। घटना ने वही किया जिसके लिए वह उठी थी।

और पाँचवाँ — वह चरण जिसे हम लगभग कभी नहीं देखते — विलय। घटना समाप्त होती है, और उसके साथ भूमिकाएँ समाप्त होती हैं। “विश्वासघाती” अब विश्वासघात नहीं कर रहा; उस भूमिका का कोई और अस्तित्व नहीं। और यहाँ वह शिक्षा है जो समूचे अगले अध्याय को घेरेगी: जब भूमिका विलीन होती है, तो जिसने उसे निभाया वह भी विलीन हो जाता है। शरीर नहीं, अनिवार्यतः, बल्कि कर्ता — वह विशेष स्व जिसे घटना ने उस भाग को निभाने के लिए अस्तित्व में बुलाया था — समाप्त हो जाता है, क्योंकि उसके लिए करने को कुछ शेष नहीं रहता।



चित्र 3. क्षितिज पर एक घटना का जीवन: प्रेरण, भूमिका-निर्धारण, अभिनय, पूर्णता, विलय। यह चक्र अपने आप में पूर्ण है। जब भूमिका समाप्त हो जाती है, तो उसे आगे ढोने के लिए कोई शेष स्व नहीं रहता — कर्ता कृत्य के साथ ही समाप्त हो जाता है, और घटना उसी क्षेत्र में विलीन हो जाती है जिससे वह उठी थी।

### क्षितिज के पार कुछ क्यों देय नहीं

अब हम देख सकते हैं कि एक व्यक्तिगत कार्मिक ऋण का विचार, जो जीवन-भर या अनेक जन्मों तक आगे ढोया जाता है, घटनाओं की संरचना को क्यों गलत पढ़ता है। ऋण को एक सतत ऋणी चाहिए — एक अकेला स्व जो एक घटना में दायित्व उठाता है और, अपरिवर्तित, उसे किसी अन्य घटना में चुकाने के लिए बचा रहता है। किंतु जिस स्व ने पहली घटना में कर्म किया, वह उस घटना द्वारा निर्धारित एक भूमिका था, और वह उस घटना के पूर्ण होते ही विलीन

हो गया। कोई सतत स्वामी नहीं जो बही-खाता बगल में दबाए एक घटना से दूसरी घटना तक दौड़ता हो।

जो आगे ढोया जाता है वह व्यक्तिगत ऋण नहीं बल्कि एक निर्वैयक्तिक परिस्थिति है। घटनाएँ तलछटें छोड़ जाती हैं — बदली हुई परिस्थितियाँ, परिवर्तित पैटर्न — और ये तलछटें उन परिस्थितियों का अंग बन जाती हैं जिनसे बाद की घटनाएँ उठती हैं। यह वास्तविक है, और यही वह सत्य-कण है जिसकी ओर कर्म का सिद्धांत सदा संकेत कर रहा था। किंतु यह पूर्णतः निर्वैयक्तिक है। किसी घटना की तलछट समूचे क्षेत्र में योगदान की जाती है, किसी निजी खाते में नहीं चढ़ाई जाती। कल की घटनाएँ संसार की समग्र परिस्थिति से उठती हैं, आपके व्यक्तिगत हिसाब से नहीं।

सो ब्रह्मांड अत्यंत सूक्ष्मता से हिसाब रखता है — कुछ भी नहीं खोता, हर घटना अगली को प्रभावित करती है — और फिर भी कोई व्यक्तिगत खाता नहीं। दोनों अर्ध सत्य हैं। हिसाब वास्तविक है; स्वामी काल्पनिक है। इसे पूर्ण रूप से समझने के लिए हमें उसे निकट से देखना होगा जो स्वामी प्रतीत होता है: द्रष्टा। वही अगला अध्याय है।

## **वह दहलीज़ जहाँ संभावना तथ्य में पलटती है**

मैंने *घटना-क्षितिज* वाक्यांश कृष्ण-विवरों की भौतिकी से उधार लिया है, जहाँ यह उस सीमा को नाम देता है जिसके परे कोई वापसी नहीं, वह दहलीज़ जिस पर वास्तविकता का एक विधान अपरिवर्तनीय रूप से दूसरे को स्थान दे देता है। मैं इसे यहाँ एक संबंधित किंतु भिन्न अर्थ में प्रयोग करता हूँ: घटना-क्षितिज वह दहलीज़ है जिस पर एक खुली-थमी संभावना एक वास्तविक, निश्चित घटना में पलट जाती है — वह किनारा जहाँ समस्त संभावनाओं का क्षेत्र सुलझता है, जहाँ अध्यारोपण एक अकेले तथ्य में ढहता है, जहाँ अनिर्धारित निर्धारित बन जाता है। क्षितिज से पूर्व, सभी परिणाम जीवित हैं और कोई भूमिका निश्चित नहीं। क्षितिज पर, क्षेत्र बैठ जाता है। क्षितिज के पश्चात्, घटना निश्चित है, भूमिकाएँ नियत हैं, और अभिनय आरम्भ होता है।

हर घटना जिसका आप कभी अंग रहे, ऐसी एक दहलीज़ पार कर चुकी है। एक क्षण था — प्रायः अनदेखा, क्योंकि हम उसे प्रत्यक्ष करने के लिए बने ही नहीं — जिस पर जो केवल संभव था वह वास्तविक बना, जिस पर अनेक एक बने, जिस पर “हो सकता है” की तरंग “है” के

तथ्य में ढही। वह विवाद जो हुआ या नहीं हुआ; वह भेंट जो हुई या नहीं हुई; वह दुर्घटना, वह मुठभेड़, वह शब्द जो बोला गया या निगल लिया गया: प्रत्येक ने एक घटना-क्षितिज पार किया, प्रत्येक एक दहलीज पर संभावना से तथ्य में पलटा जिसे किसी सहभागी ने नियंत्रित नहीं किया, क्योंकि समाधान समूचे क्षेत्र का बैठ जाना था, न कि उसके किसी अंश द्वारा किया गया निर्णय।

## एक घटना के चार चरण

किसी घटना को एक अकेली तात्क्षणिक वस्तु के बजाय स्पष्ट चरणों वाली एक प्रक्रिया के रूप में देखना सहायक है, क्योंकि व्यक्तिगत कर्म की भ्रांति एक चरण पर चिपक जाती है और शेष की उपेक्षा कर देती है। पहला चरण प्रेरण है: समूचे क्षेत्र भर परिस्थितियाँ दहलीज तक पहुँचती हैं, घटना-क्षितिज पार होता है, और जो संभव था वह वास्तविक बन जाता है। दूसरा चरण भूमिका-निर्धारण है: सुलझते हुए, क्षेत्र निश्चित भूमिकाएँ सामने लाता है — यह कर्म करने को, वह प्राप्त करने को, यह साक्षी होने को। तीसरा चरण अभिनय है: भूमिकाएँ निभाई जाती हैं, कृत्य किया जाता है, घटना समय में अपना मार्ग चलती है। और चौथा चरण, जिसे देखने का हम सबसे अधिक प्रतिरोध करते हैं, विलय है: घटना पूर्ण होती है, और जैसे वह पूर्ण होती है, भूमिकाएँ विलीन हो जाती हैं, क्योंकि उस घटना से पृथक उनका कोई अस्तित्व नहीं जिसने उन्हें सामने बुलाया था।

व्यक्तिगत-कर्म की भ्रांति लगभग पूर्णतः अभिनय-चरण में जीती है, और शेष तीन के प्रति अंधी है। अभिनय के दौरान, सचमुच एक पृथक कर्ता एक निश्चित कार्य करता प्रतीत होता है, और मन, केवल इसी टुकड़े को प्रत्यक्ष करते हुए, यह निष्कर्ष निकालता है कि कर्ता कृत्य का रचयिता और स्वामी है। किंतु कर्ता ने घटना को प्रेरित नहीं किया — समूचे क्षेत्र ने किया, क्षितिज पर। कर्ता ने अपनी भूमिका स्वयं नहीं लिखी — भूमिका-निर्धारण ने उसे सामने लाया। और कर्ता घटना के बाद उसके स्वामी के रूप में नहीं बचता — विलय भूमिका को कृत्य के साथ ही समाप्त कर देता है। समग्र रूप में, चारों चरणों भर देखी जाए, तो घटना का किसी भी बिंदु पर कोई स्वामी नहीं। स्वामित्व का बोध एक प्रक्रिया के केवल मध्य को प्रत्यक्ष करने और अंश को समग्र समझ लेने का एक कृत्रिम परिणाम है।



## क्षितिज हमसे क्या माँगता है

घटना-क्षितिज की संरचना में एक व्यावहारिक शिक्षा छिपी है, और मैं उसे अभी कह दूँगा यद्यपि हम उसे पुस्तक के अंतिम भाग तक पूर्ण रूप से विकसित नहीं करेंगे। चूँकि समाधान एक ऐसी दहलीज़ पर घटित होता है जिसे कोई सहभागी नियंत्रित नहीं करता, परिणामों को नियंत्रित करने का समूचा उपक्रम एक श्रेणी-त्रुटि के रूप में उघड़ जाता है। आप यह नियंत्रित नहीं कर सकते कि क्षेत्र किस ओर बैठेगा, ठीक वैसे ही जैसे आप मेज़ को और कसकर पकड़कर यह नियंत्रित नहीं कर सकते कि हवा में उछला सिक्का किस ओर गिरेगा। आप जो कर सकते हैं — एकमात्र वस्तु जो सहभागी वास्तव में कभी कर सकता है — वह यह है कि एक बार भूमिका निर्धारित हो जाने पर उसमें ध्यान और कौशल का पूर्ण गुण लाएँ, उस समाधान का स्वामित्व लिए बिना जिसने उसे निर्धारित किया। यही उसका बीज है जिसे हम आगे अनायास कर्म और अकर्तृत्व कहेंगे: भूमिका में पूर्ण संलग्नता, परिणाम का पूर्ण त्याग, जो इस सरल पहचान से संभव होता है कि परिणाम कभी आपका बैठाने का विषय था ही नहीं। क्षितिज आपसे और कठोर प्रयास करने को नहीं कहता। वह आपसे यह दिखावा बंद करने को कहता है कि आप ही वह हैं जो तय करता है कि सिक्का कहाँ गिरेगा।

## हम प्रेरण को प्रत्यक्ष क्यों नहीं कर सकते

यदि हर घटना एक ऐसे क्षितिज को पार करती है जिस पर संभावना तथ्य में पलटती है, तो हम उस पार होने को क्रिया में कभी क्यों नहीं पकड़ पाते? पीछे मुड़कर देखने पर सदा ऐसा क्यों लगता है कि घटना बस थी, बनने का कोई प्रत्यक्ष क्षण ही नहीं? उत्तर स्व के विषय में कुछ महत्वपूर्ण उघाड़ देता है। हम प्रेरण को प्रत्यक्ष नहीं कर सकते क्योंकि उसे प्रत्यक्ष करने के लिए घटना के बाहर खड़ा होना होगा, और हम कभी उन घटनाओं के बाहर होते ही नहीं जिनके हम अंग हैं — हम उनमें होते हैं, सहभागियों के रूप में, उसी समाधान में बहाए हुए जिसे हमें बाहर से देखना होता। जब तक घटना इतनी निश्चित होती है कि हम उसे देख सकें, क्षितिज पहले ही पीछे रह चुका होता है; पार होना तब घटित हुआ जब उसका साक्षी होने के लिए कोई देखता हुआ स्व अपने स्थान पर था ही नहीं। प्रेरण सहभागी के लिए संरचनात्मक रूप से अदृश्य है, जैसे आँख स्वयं को देखते हुए नहीं देख सकती।

यही अदृश्यता कर्तृत्व के भ्रम की गहन जड़ है। चूँकि हम समाधान को घटित होते कभी प्रत्यक्ष नहीं करते — क्षेत्र को बैठते कभी नहीं पकड़ते — हमारे पास केवल घटित-के-बाद बचता है,

पहले से चल रही निश्चित घटना, और उस प्रात्यक्षिक रिक्ति में मन एक कथा डाल देता है: मैंने यह किया। कथा उस रिक्त स्थान को भर देती है जो अप्रत्यक्षणीय प्रेरण ने छोड़ा था। हमने घटना को कभी अपने क्षितिज पर समूचे क्षेत्र द्वारा उत्पन्न होते देखा ही नहीं, इसलिए हम एकमात्र वस्तु को श्रेय देते हैं जिसे हम देख सकते हैं, दृश्य सहभागी को, और उसे कारण कह देते हैं। यह भ्रम मूर्खता नहीं है; यह घटनाओं को केवल उनके भीतर से, केवल उनके क्षितिजों के बाद, केवल उनके अभिनय में प्रत्यक्ष करने का अपरिहार्य परिणाम है। इसे भेद देने के लिए हमें प्रेरण की तीक्ष्णतर प्रत्यक्षण की आवश्यकता नहीं, जो असंभव है। हमें केवल यह समझने की आवश्यकता है कि प्रेरण अदृश्य क्यों है, और उसकी अनुपस्थिति को एक कर्ता की कल्पना से भरना बंद करने की।

### एक साधारण दोपहर में क्षितिज

कहीं यह अमूर्त न रह जाए, इसलिए घटना-क्षितिज को किसी छोटी वस्तु में खोजिए। आप गाड़ी चला रहे हैं, आपका ध्यान एक सेकंड के लिए भटकता है, और जब आप ऊपर देखते हैं तो आगे की गाड़ी रुक चुकी है और आपकी नहीं रुकी। टक्कर से ठीक पूर्व के क्षण में एक दहलीज है: गति, दूरी, प्रतिक्रिया, सड़क, और सौ परिस्थितियों का एक विन्यास उस बिंदु तक पहुँचता है जिस पर टक्कर संभव से निश्चित में पलट जाती है। आपने यह नहीं चुना कि परिस्थितियाँ इस ढंग से संरचित होंगी; आपने असंख्य अन्यो के बीच एक परिस्थिति का योगदान किया, आपका भटका ध्यान — दूसरे चालक का अचानक रुकना, फिसलनदार सड़क, घिसे ब्रेक, एक मील पीछे एक बत्ती का समय जिसने दोनों गाड़ियों को इस क्षण यहाँ ला रखा। घटना समूचे विन्यास में से अपने क्षितिज पर सुलझी, और फिर उसने स्वयं को अभिनीत किया, और आप उसमें सहभागी थे, पूर्णतः वास्तविक और तनिक भी रचयिता नहीं। बाद में मन कहेगा कि मैंने टक्कर करवाई, और बीमा और कानून, जो प्राप्य के मानवीय व्याकरण पर चलते हैं, सहमत हो सकते हैं, और उनके क्षेत्र के भीतर वह उचित और आवश्यक है। किंतु ब्रह्मांडीय रूप से, क्षितिज पर, कोई रचयिता था ही नहीं — केवल क्षेत्र, जो, जैसा वह सदा करता है, किसी के भी नियंत्रण से परे पहुँचती परिस्थितियों में से उस एकल तथ्य में बैठ गया जो अब है।

## जाल और शृंखला

हम कारणता का चित्र एक शृंखला के रूप में बनाते हैं — इसने वह कराया, जिसने अगली वस्तु कराई, अतीत में पीछे तक फैली डोमिनो की एक अकेली पंक्ति, हर कड़ी अपने बाद वाली की उत्तरदायी रचयिता। शृंखला ही वह ढंग है जिससे हम दोष सौंपते हैं: पंक्ति को पीछे उत्तरदायी कड़ी तक खोजिए और वहाँ आपका दोषी है। किंतु कारणता शृंखला नहीं है; वह एक जाल है, और यह भेद किसी घटना को एक अकेले रचयिता पर मढ़ने के समूचे उपक्रम को उधेड़ देता है। हर घटना असंख्य धागों से अपने स्थान पर थमी है जो हर दिशा में फैले हैं — क्षण की परिस्थितियाँ, हर सहभागी के इतिहास, संसार की अवस्था, समय के संयोग, समग्र का समूचा विन्यास — और किसी एक धागे को खींचकर उसे कारण कहना एक तंतु को वह जाल समझ लेना है जो वास्तव में घटना को थामे है। पीछे खोजने को कोई एक कड़ी है ही नहीं, क्योंकि घटना कभी किसी शृंखला से लटकी थी ही नहीं। वह एक ऐसे जाल में निलंबित थी जिसमें कोई विशेषाधिकृत धागा नहीं।

यही कारण है कि किसकी दोष है, इसकी खोज, ईमानदारी से और पर्याप्त दूर तक की जाए, तो सदा समग्र में घुल जाती है। किसी भी घटना के कारण को सच्ची कठोरता से पीछे खोजिए और वह एकल दोषी जिसे आप पाने की आशा करते थे, हर पग पर सौ योगदान करती परिस्थितियों में शाखाएँ बन जाता है, जिनमें से प्रत्येक फिर शाखाएँ बनती है, जब तक वह पंक्ति जिसका आप अनुसरण कर रहे थे, इस बिंदु पर अभिसरित होता ब्रह्मांड का समूचा इतिहास न बन जाए। वह दोष जिसे आप एक धागे को सौंपना चाहते थे, अपरिवर्तनीय रूप से समूचे जाल भर फैल जाता है, जब तक दोष देने को कोई शेष न रहे क्योंकि हर कोई और हर वस्तु इसमें संलिप्त है, जो केवल यह कहना है कि घटना समग्र की थी और कभी किसी अंश की नहीं। यह मानवीय क्षेत्र के भीतर सच्चे मानवीय अपराधों को बहाना देने का ढंग नहीं, जहाँ कानून व्यावहारिक न्याय के लिए ठीक ही निकटतम कर्ता को अलग करता है। यह एक पहचान है कि ब्रह्मांडीय स्तर पर जाल में कोई विशेषाधिकृत तंतु नहीं, और वह व्यक्तिगत रचयिता जिसका हम पीछा करते रहते हैं, शृंखला-चित्र की गढ़ी हुई एक कल्पना है।

## वह कथा जो हम बाद में सुनाते हैं

चूँकि प्रेरण हमारे लिए अदृश्य है और कारणता का जाल प्रत्यक्ष करने को बहुत विशाल, मन वही करता है जो मन करते हैं: घटना के बाद, वह एक कथा रचता है। और जो कथा वह रचता

है वह लगभग सदा एक स्पष्ट रचयिता वाली शृंखला होती है, क्योंकि यही एकमात्र प्रकार की कथा है जिसे मन संतोषजनक पाता है। मैंने यह किया; उसने वह कराया; काश उसने ऐसा न किया होता। हम घटनाओं को स्मरण नहीं करते; हम उन कथाओं को स्मरण करते हैं जो हमने उनके विषय में सुनाई, और कथाएँ मन की एक उत्तरदायी रचयिता और कारण की एक स्वच्छ पंक्ति की भूख से आकार पाई सरलीकरण हैं। यह पूर्वव्यापी कथा-कहन स्मृति-सी लगती है पर कल्पना के अधिक निकट है — अभिसरित परिस्थितियों की अराजकता पर बिछाई गई एक सुथरी शृंखला, एक ऐसे जाल में से नामांकित एकल दोषी जिसमें कोई दोषी था ही नहीं। जिसे हम अपना कर्म कहते हैं उसका बहुत भाग ठीक यही है: पूर्वव्यापी कथाओं का एक संग्रह जिसमें हम स्वयं को उत्तरदायी रचयिता के रूप में अभिनीत करते हैं, कथा को घटना समझते हुए, शृंखला को जाल, नामांकित दोषी को एक सत्या व्यक्तिगत खाते को ढीला करना, अंशतः, बस कथाओं पर विश्वास करना बंद करना है — उन्हें मन की घटित-के-बाद की कल्पनाओं के रूप में पहचानना और घटनाओं को स्वयं, जाल-निलंबित और रचयिता-रहित, वह होने देना जो वे वास्तव में थीं।

## किसी घटना को अनघटित क्यों नहीं किया जा सकता

घटनाओं का एक लक्षण इतना स्पष्ट है कि हम उसकी विरले ही जाँच करते हैं, और फिर भी वह एक मौन शिक्षा वहन करता है: एक बार जब कोई घटना अपना क्षितिज पार कर लेती है, तो उसे अनघटित नहीं किया जा सकता। समय का बाण एक ही ओर चलता है; सुलझी घटना अपरिवर्तनीय है; कितनी भी कामना, पश्चात्ताप या परिचिंतन क्षेत्र को उस खुलेपन में वापस नहीं ला सकता जो उसने समाधान से पूर्व थामा था। यह अपरिवर्तनीयता वास्तविकता का कठोर किनारा है, वह वस्तु जिसे पकड़ने वाला मन सबसे अधिक स्वीकारने से इनकार करता है, और यह इनकार एक विशेष और व्यापक दुःख का स्रोत है: उस मन का दुःख जो जो हो चुका उसे अनघटित करने का प्रयास करता रहता है, क्षितिज के आर-पार पीछे पहुँचकर एक ऐसे समाधान को फिर खोलने का जो सदा के लिए बंद हो चुका। काश मैंने ऐसा किया होता, हम कहते हैं, बंद घटना को बार-बार चलाते हुए मानो इस बार वह भिन्न ढंग से सुलझ सकती हो, मानो क्षितिज पहले ही पीछे न रह चुका हो।

अपरिवर्तनीयता में छिपी शिक्षा इस पिछड़े पकड़ने की व्यर्थता है, और अंततः क्रूरता। घटना सुलझ चुकी; उसका क्षितिज पार हो चुका; वह अब अपरिवर्तनीय अतीत की है, उतनी ही

स्थिर जितनी किसी ऐसे तारे की स्थिति जिसका प्रकाश दस लाख वर्ष पहले उससे निकला था। उसे फिर खोलने को पीछे पहुँचते रहना स्वयं समय की संरचना के विरुद्ध युद्ध छेड़ना है, एक ऐसा युद्ध जो जीता नहीं जा सकता और जो उसे लड़ने में वर्तमान को खा जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि अतीत के कोई परिणाम नहीं — उसके हर परिणाम हैं, जो आगे आने वाले सब को प्रभावित करते हैं — किंतु वे परिणाम आगे की ओर उद्धाटित होते हैं, अभी न सुलझी घटनाओं के खुलेपन में, जहाँ हमारी सहभागिता वास्तव में जीती है। जिस मन ने अपरिवर्तनीयता के साथ संधि कर ली है, वह बंद अतीत को अनघटित करने का प्रयास बंद कर देता है और अपना समूचा ध्यान खुले वर्तमान की ओर मोड़ देता है, जो एकमात्र स्थान है जहाँ अब भी किसी वस्तु का सामना किया जा सकता है। हम आगे की ओर जीते हैं, अब भी खुले क्षेत्र में, और सुलझे क्षितिजों को अपने पीछे विश्राम करने देते हैं, बंद और पूर्ण।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

हर घटना चार चरणों से होकर गति करती है: वह अपने क्षितिज पर प्रेरित होती है, उसकी भूमिकाएँ निर्धारित होती हैं, भूमिकाएँ अभिनीत होती हैं, और पूर्णता पर भूमिकाएँ विलीन हो जाती हैं। व्यक्तिगत भ्रांति केवल मध्य चरण देखती है — अभिनय, जहाँ एक कर्ता कर्म करता प्रतीत होता है — और शेष तीन के प्रति अंधी है।

एक हाल की घटना लीजिए और उसके चार चरण खोजिए। प्रेरण कहाँ था — वह दहलीज़ जहाँ वह संभव से वास्तविक में पलटी? कौन निर्धारित हुआ, और किसके द्वारा? वह कहाँ पूर्ण हुई? समूचे चाप को देखते हुए, पूछिए कि जिस कर्ता को आपने दोष दिया या श्रेय दिया, वह कभी प्रेरण का रचयिता था भी या विलय का उत्तरजीवी।

## वह द्रष्टा जो कर्म नहीं करता

---

आप में कुछ ऐसा है जिसने कभी कुछ नहीं किया, कभी कुछ नहीं भोगा, और कभी कुछ नहीं खोया। उसे खोज लीजिए, और आपने दुःख का अंत खोज लिया।

— साक्षी पर टिप्पणी

क्वांटम यांत्रिकी ने हमें एक पहेली थमाई जिस पर भौतिकविद् अब भी विवाद करते हैं: द्रष्टा की भूमिका। मानक वर्णन में, कोई तंत्र अध्यारोपण में — समस्त संभावनाओं के क्षेत्र में — तब तक बना रहता है जब तक उसका अवलोकन न हो, जिस बिंदु पर वह एक निश्चित परिणाम में सुलझ जाता है। “अवलोकन” के रूप में ठीक-ठीक क्या गिना जाए, यह विवादित है और हमें रोकने की आवश्यकता नहीं। मुझे जो चाहिए वह उस पहेली में दबी संरचनात्मक अंतर्दृष्टि है: उसमें भेद है जो घटना में सहभागी होता है और उसमें जो उसका केवल साक्षी होता है, और यह भेद तुच्छ नहीं।

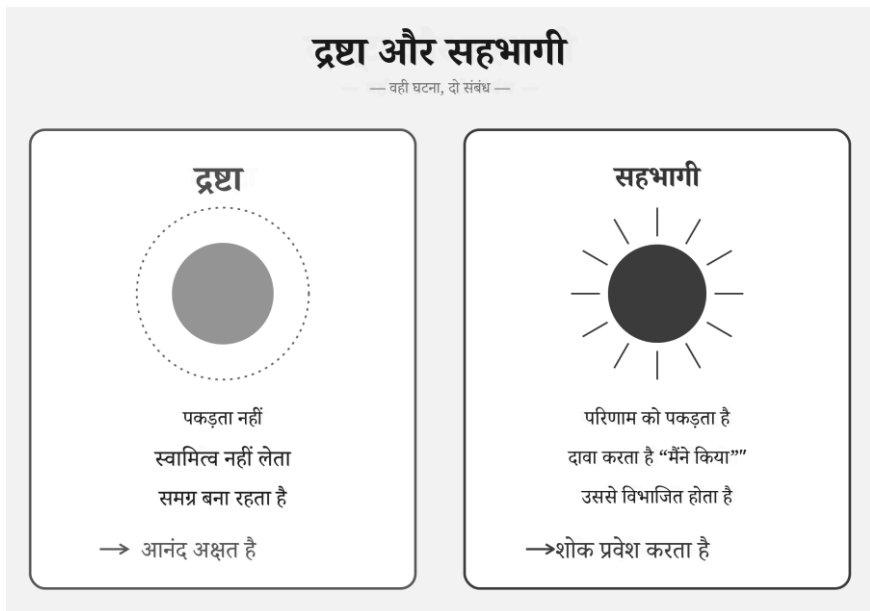
चिंतन-परंपराएँ एक समानांतर अंतर्दृष्टि पर एक सर्वथा भिन्न मार्ग से पहुँचीं, मापन के बजाय ध्यान के माध्यम से। उन्होंने साक्षी — वह मौन जागरूकता जिसमें समस्त अनुभव प्रकट होता है — को सहभागी से, उस सक्रिय स्व से जो पकड़ता, करता, दावा करता और भोगता है, पृथक् किया। संस्कृत में साक्षी को कभी-कभी *साक्षिन्* कहा जाता है, वह जो बस देखता है। जीवन का समूचा नाटक, उन्होंने कहा, साक्षी के भीतर प्रकट होता है, किंतु साक्षी स्वयं कभी नाटक में प्रवेश नहीं करता। वह कर्म नहीं करता। वह स्वामित्व नहीं रखता। वह कभी सहभागी नहीं, और इसलिए वह कभी बँधा हुआ नहीं।

### एक ही घटना के साथ दो संबंध

यहाँ मर्म है। आप किसी भी घटना के साथ दो संबंधों में से एक में खड़े हो सकते हैं, और आप कौन-सा संबंध लेते हैं यह तय करता है कि घटना आपको आनंद लाती है या दुःखा।

आप घटना का साक्षी हो सकते हैं — उसे उठते, अपना मार्ग चलते, और विलीन होते देख सकते हैं, जैसे आप आकाश में मौसम को सरकते देखें। इस संबंध में पूर्ण उपस्थिति है और शून्य पकड़। आप भूमिका को निभाते देखते हैं, आप अपने ही शरीर और मन को एक भूमिका निभाते भी देख सकते हैं, किंतु आप भूमिका में सिकुड़कर उसे स्वयं नहीं कह बैठते। साक्षी समग्र, अविभाजित, अछूता बना रहता है। और उस समग्रता में एक गुण है जिसे परंपराओं ने आनंद कहा — मनचाहा पा लेने का चंचल सुख नहीं, बल्कि स्वयं में विश्राम करती जागरूकता की गहरी, स्थिर ठीकता।

या आप सहभागी हो सकते हैं — भूमिका में सिकुड़ सकते हैं, परिणाम को पकड़ सकते हैं, और घोषित कर सकते हैं “मैं यह कर रहा हूँ, यह मेरे साथ हो रहा है, यह मेरा है।” जिस क्षण आप ऐसा करते हैं, कुछ बदल जाता है। आप अब समग्र नहीं रहते; आप एक ऐसे स्व में विभाजित हो जाते हैं जो चाहता है और एक ऐसे संसार में जो दे भी सकता है और नहीं भी। और उस विभाजन में, दुःख प्रवेश करता है। इसलिए नहीं कि घटना बुरी है — ठीक वही घटना, साक्षी-भाव से देखी गई, कोई दुःख नहीं लाई थी — बल्कि इसलिए कि उसे पकड़ने ने आपको चीर दिया है, और एक चिरा हुआ अस्तित्व अपने स्वभाव से ही दुःख भोगता है।



चित्र 4. वही घटना, दो संबंधा द्रष्टा बिना पकड़ या स्वामित्व के साक्षी होता है, और समग्र बना रहता है —  
 आनंद अक्षत है। सहभागी परिणाम को पकड़ता है और दावा करता है “मैंने यह किया,” और इसी से  
 विभाजित हो जाता है — दुःख प्रवेश करता है। घटना में कुछ नहीं बदला; केवल उसके साथ का संबंध  
 बदला।

यही कारण है कि दो व्यक्ति समान परिस्थितियों से गुजर सकते हैं और एक नष्ट हो जाता है जबकि दूसरा गहरा हो जाता है। परिस्थिति दुःख का कारण नहीं है। पकड़ है। घटना तटस्थ है; सहभागिता उसे “मेरा” के एक आवेश से विद्युतमय कर देती है जो या तो गर्व बन जाता है या लज्जा, उल्लास या शोक — और किसी भी दशा में, अंतर्निहित आनंद की हानि।

## सहभागिता क्रिया नहीं है

मुझे यहाँ सावधान रहना होगा, क्योंकि इसे सहज ही और खतरनाक ढंग से गलत पढ़ा जा सकता है। सहभागी होने के बजाय साक्षी होने का अर्थ कर्म करना बंद कर देना नहीं है। शरीर अब भी गति करता है; भूमिका अब भी निभाई जाती है; कार्य अब भी सम्पन्न होता है — प्रायः कहीं बेहतर, क्योंकि “मेरा” का कंपन अब हाथों को विचलित नहीं करता। भेद कर्म करने और न-करने के बीच नहीं है। वह पकड़-के-साथ-कर्म-करने और साक्षी-होकर-कर्म-करने के बीच है। जो शल्य-चिकित्सक साक्षी होता है वह उससे अधिक स्थिर शल्यक्रिया करता है जो पकड़ता है। जो खिलाड़ी साक्षी होता है वह उससे अधिक स्वतंत्र गति करता है जो जीतने को कसकर पकड़ता है। सहभागिता, उस अर्थ में जो मेरा यहाँ है, कृत्य का करना नहीं है। वह कृत्य का दावा है — समग्र का एक स्वामित्ववाचक स्व में सिकुड़ना जो परिणाम का स्वामी होता है और इसलिए उससे घायल होता है।

जिस जीवन का मैं वर्णन कर रहा हूँ उसकी समूची कला इसी संबंध-परिवर्तन तक सिमट आती है: शरीर के अपना भाग पूर्णतः निभाते समय भी साक्षी बने रहना। पूर्ण रूप से कर्म करना और कुछ भी स्वामित्व में न रखना। चिंतकों ने इसे कर सकने वाले को *जीवन्मुक्त* कहा — जीते-जी मुक्त, पूर्णतः नाटक में और पूर्णतः उससे स्वतंत्र। हम भाग पाँच में इसके अभ्यास पर लौटेंगे। अभी के लिए संरचना थामिए: साक्षी कर्म नहीं करता, साक्षी कभी बँधता नहीं, और आनंद उस जागरूकता की स्वाभाविक स्थिति है जो किसी भूमिका में सिकुड़ी नहीं।



## वह द्रष्टा जो उसी को बदल देता है जिसे वह देखता है

क्वांटम यांत्रिकी के विचित्र हिसाब में, द्रष्टा एक अनोखा और विवादित स्थान घेरता है। मानक वर्णन में, कोई तंत्र अध्यारोपण में — समस्त संभावनाओं के क्षेत्र में — तब तक बना रहता है जब तक उसका अवलोकन न हो, जिस बिंदु पर वह एक निश्चित परिणाम में सुलझ जाता है। अवलोकन के रूप में ठीक-ठीक क्या गिना जाए, और अवलोकन का यह प्रभाव क्यों होना चाहिए, यह भौतिकी की नींव की गहनतम अनसुलझी पहेलियों में से एक है, और मैं यह बहाना नहीं करूंगा कि वह सुलझ चुकी है। किंतु मैं उस पहेली से एक संरचनात्मक अंतर्दृष्टि निकालना चाहता हूँ जो उसके सुलझने पर निर्भर नहीं: उसमें एक गहन भेद है जो किसी घटना में सहभागी होता है और उसमें जो उसका केवल साक्षी होता है, और यह भेद तुच्छ नहीं। सहभागिता और साक्षित्व एक ही घटित होने के साथ दो मौलिक रूप से भिन्न संबंध हैं।

चिंतक एक समानांतर भेद पर एक सर्वथा भिन्न मार्ग से पहुँचे — कणों को मापकर नहीं बल्कि मन को देखकर। उन्होंने पाया कि अनुभव के भीतर सदा दो वस्तुएँ उपस्थित रहती हैं जिन्हें हम सामान्यतः एक में मिला देते हैं: अनुभव की अंतर्वस्तु, जो सदा बदलती रहती है, और वह जागरूकता जिसमें वह अंतर्वस्तु प्रकट होती है, जो बदलती नहीं। क्रोध है, और क्रोध की जागरूकता है। कृत्य है, और कृत्य का साक्षित्व है। सामान्यतः हम इन्हें एक साथ ढहा देते हैं और कहते हैं “मैं क्रोधित हूँ,” साक्षी को अंतर्वस्तु से तब तक मिलाते हुए जब तक उनके बीच कोई अवकाश शेष न रहे किंतु अवकाश सदा वहाँ है, और उसे खोजा जा सकता है, और उसे खोजना सब कुछ बदल देता है — यही वह एकमात्र बिंदु है जिस पर भौतिकविद् का द्रष्टा और चिंतक का साक्षी अप्रत्याशित रूप से तुक मिलाते हैं।

## दो संबंध, दो नियति

यहाँ अध्याय का, और शायद पुस्तक का, हृदय है। किसी भी घटना के साथ आप दो संबंधों में से एक में खड़े हो सकते हैं। आप सहभागी हो सकते हैं — भूमिका में सिकुड़, परिणाम को पकड़, कृत्य को अपना दावा कर, और इतनी पूर्णता से भाग से तादात्म्य बना लें कि यह जानने के लिए कोई शेष न रहे कि वह एक भाग है। या आप साक्षी हो सकते हैं — घटना के प्रति पूर्णतः उपस्थित, उसके भीतर पूर्णतः सक्रिय तक, फिर भी उस जागरूकता को कभी न खोते हुए जिसमें वह प्रकट होती है, कभी पूर्णतः भूमिका में न सिकुड़ते हुए, कभी भाग को स्वयं की समग्रता न समझ बैठते हुए। ये संलग्नता की दो भिन्न मात्राएँ नहीं हैं; साक्षी तीव्रता से संलग्न

हो सकता है। ये स्वयं संलग्नता के साथ दो भिन्न संबंध हैं, और ये दो भिन्न नियतियों की ओर ले जाते हैं।

जो सहभागी पकड़ता है वह बँधा हुआ है, क्योंकि उसने अपना अस्तित्व एक ऐसे परिणाम पर दाँव पर लगा दिया है जिसे क्षेत्र उससे परामर्श किए बिना बैठाएगा, और इसलिए उसे हर बार दुःख भोगना ही होगा जब बैठना उसकी माँग से मेल नहीं खाता — अर्थात्, निरंतर। जो साक्षी नहीं पकड़ता वह स्वतंत्र है, क्योंकि उसने अपना अस्तित्व किसी ऐसी वस्तु पर दाँव पर नहीं लगाया जिसे क्षेत्र नियंत्रित करता हो; वह परिणाम के प्रति उपस्थित है, उससे प्रभावित, उसके प्रति प्रत्युत्तरशील, किंतु उससे नष्ट नहीं, क्योंकि उसने स्वयं को कभी उस भूमिका से नहीं भ्रमित किया जिस पर परिणाम घटित हुआ। वही घटना, वही शरीर, वही क्रिया — और दो सर्वथा भिन्न अनुभव, दुःख या आनंद, केवल इस पर निर्भर कि साक्षी एक सहभागी में संकुड़ा या उस अवकाश के रूप में बना रहा जिसमें सहभागिता घटित हुई। यही कारण है कि परंपराएँ साक्षी को दुःख का अंत कहती हैं। इसलिए नहीं कि साक्षी घटनाओं से बचता है, बल्कि इसलिए कि साक्षी उनसे घायल नहीं हो सकता, क्योंकि उसने उन्हें कभी अपना दावा किया ही नहीं।

### **आनंद: अ-भिंचे का स्वाभाविक रूप**

हम आनंद को प्रायः कोई अर्जित की जाने वाली वस्तु समझते हैं, एक शिखर-अवस्था जिसकी ओर परिश्रम और अनुशासन से बढ़ना है। साक्षी की शिक्षा इसे पूर्णतः उलट देती है। आनंद कोई उत्पन्न की जाने वाली अवस्था नहीं बल्कि जागरूकता की स्वाभाविक स्थिति है जब वह किसी भूमिका में भिंची नहीं होती। यह वह ठीकता है जो हर अनुभव की पृष्ठभूमि में पहले से ही उपस्थित है, सामान्यतः पकड़ के कोलाहल में दब जाती है, और कुछ जोड़कर नहीं बल्कि संकुचन को घटाकर उघड़ती है। जल को स्वच्छ बनाने की आवश्यकता नहीं; उसे केवल बैठने देने की आवश्यकता है, और स्वच्छता वही है जो उद्वेलन के नीचे सदा वहाँ थी। उसी प्रकार, आनंद साक्षी द्वारा गढ़ा नहीं जाता; वह उघाड़ा जाता है, एक ऐसी जागरूकता की स्थायी स्थिति जिसने लहर होने का दिखावा बंद कर दिया और स्मरण कर लिया कि वह समुद्र है। समर्पण और अनायास कर्म के विषय में इस पुस्तक में आगे जो कुछ भी है, वह अंततः इसी स्वाभाविक स्थिति की ओर वापसी के व्यावहारिक मार्गों का एक समुच्चय है जो वास्तव में कभी खोई ही नहीं — केवल उसके द्वारा ढक गई थी जो आग्रह करता रहा कि घटनाएँ उसकी थीं।

## अपने ही अनुभव में अवकाश खोजना

इस अध्याय का दावा तब तक दर्शन-सा लग सकता है जब तक आप उसे अपने ही वर्तमान अनुभव में स्थित न कर लें, जहाँ वह एक सिद्धांत रह जाने से छूटकर एक ऐसा तथ्य बन जाता है जिसे आप सत्यापित कर सकते हैं। तो रुकिए और अभी इसे आजमाइए। ध्यान दीजिए कि आप पढ़ रहे हैं। अब ध्यान दीजिए कि आप पढ़ने के प्रति जागरूक हैं। दोनों के बीच के हल्के परिवर्तन को अनुभव कीजिए — अंतर्वस्तु में लीन होने और उस जागरूकता को पहचानने के बीच जिसमें अंतर्वस्तु प्रकट होती है। वह परिवर्तन, जितना भी छोटा हो, समूचा वही है जिसकी ओर परंपराएँ साक्षी की बात करते समय संकेत करती हैं। आपने ध्यान देकर कोई नई जागरूकता रची नहीं; जागरूकता आरम्भ से वहाँ थी, पढ़ने को थामे हुए। आपने केवल ध्यान को इससे कि क्या प्रकट हो रहा था, उस ओर मोड़ दिया जिसमें वह प्रकट होता है। और उस मोड़ में, बस एक क्षण के लिए, आप केवल पाठ में लीन सहभागी ही नहीं थे बल्कि वह साक्षी भी थे जिसमें लीनता घटित हो रही थी।

साक्षी दूर नहीं है, ऋषियों के लिए आरक्षित कोई रहस्यमय उपलब्धि नहीं, कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसे अर्जित करने में आपको दशकों लगाने हों। वह आपके अनुभव का सबसे घनिष्ठ और सबसे स्पष्ट तथ्य है, केवल अपनी ही निकटता से छिपा हुआ, जैसे आप अपनी ही आँखें नहीं देख सकते। हर बार जब आपने स्वयं को किसी प्रबल भावना में पकड़ा है — देखा है, क्षण-भर के लिए ही सही, कि क्रोध उठ रहा है न कि बस क्रोध होना — तब आपने उसे छुआ है। अभ्यास उस स्पर्श पर बार-बार लौटने से अधिक विचित्र कुछ नहीं, जब तक कि वह साक्षित्व जो लीनता के नीचे सदा उपस्थित था, एक ऐसा स्थान न बन जाए जहाँ आप विश्राम कर सकें, न कि एक ऐसा तथ्य जिस पर आप कभी-कभार ठोकर खा जाते हैं। यह आप में सबसे साधारण वस्तु है, और सबसे स्वतंत्र।

## साक्षी उष्ण है, शीतल नहीं

मुझे एक ग़लत पाठ सुधारना होगा जो अनेक सच्चे लोगों के लिए इस शिक्षा को नष्ट कर देता है। साक्षी को सहज ही शीतल अर्थ में विरक्ति समझ लिया जाता है — जीवन से पीछे हटकर एक प्रकार के विच्छिन्न दूरी में चले जाना, अपने ही अनुभव को काँच के पीछे से देखना, अविचलित, अछूता, उदासीन। यह साक्षी नहीं है; यह साक्षी के वस्त्र पहने एक रक्षा-तंत्र है, और यह स्वतंत्रता नहीं बल्कि एक मृतप्राय अर्ध-जीवन उत्पन्न करता है। सच्चा साक्षी अनुभव के

प्रति कम नहीं बल्कि अधिक उपस्थित होता है — शोक को पूर्णतः अनुभव करता हुआ, आनंद को पूर्णतः चखता हुआ, क्रिया में पूर्णतः संलग्न — फिर भी उस लीन कर देने वाले विश्वास में सिकुड़े बिना कि अनुभव ही व्यक्ति की समग्रता है। शीतल विरक्ति और उष्ण साक्षी के बीच का भेद जल में प्रवेश करने से इनकार करने और स्वतंत्रता से तैरने के बीच का भेद है क्योंकि आप जानते हैं कि आप डूबेंगे नहीं। साक्षी जीवन को बाँह-भर दूरी पर नहीं रखता। वह जीवन में पूर्णतः प्रवेश करता है, कुछ भी रोककर नहीं रखता, और बस उससे नष्ट नहीं होता जिसमें वह प्रवेश करता है, क्योंकि वह स्वयं को समुद्र जानता है और केवल लहर नहीं।

### जागरूकता अपनी अंतर्वस्तुओं से पूर्व है

एक सरल अवलोकन है जो, एक बार स्पष्ट देख लिए जाने पर, समूचे अनुभव के साथ व्यक्ति का संबंध बदल देता है, और वह यह है: जागरूकता उस हर वस्तु से पूर्व है जो उसमें प्रकट होती है। आपका हर विचार जो आपने कभी किया, जागरूकता में प्रकट हुआ; हर भावना, हर संवेदना, हर प्रत्यक्षण, स्वयं का हर वह रूप जिसे आपने कभी स्वयं समझा — वह सब एक ऐसी जागरूकता के भीतर उठा जो उसे ग्रहण करने को पहले से ही उपस्थित थी। अंतर्वस्तुएँ निरंतर बदलती रहीं, अनुभव की एक नदी जिसके कोई दो क्षण एक जैसे नहीं, किंतु वह जिसमें वे प्रकट होती हैं वह नहीं बदला; वह पूर्ण प्रवाह के जीवन में एकमात्र स्थिरांक है, वह शांत परदा जिस पर आपके अनुभव की समूची चलचित्र चली है। आप अपने अनुभव का एक भी ऐसा क्षण नहीं खोज सकते जो जागरूकता के भीतर घटित न हुआ हो, क्योंकि जागरूकता ही किसी भी अनुभव के होने की शर्त है।

यही कारण है कि साक्षी को अनुभव की वस्तुओं के बीच एक और वस्तु के रूप में नहीं खोजा जा सकता, और यही कि उसे खोजते लोग प्रायः, ग़लत ही, यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि वह है ही नहीं। आप अपने ही देखने को एक देखी गई वस्तु के रूप में नहीं देख सकते; आप जागरूकता को जागरूकता की एक और अंतर्वस्तु नहीं बना सकते, जैसे आँख घूमकर सीधे स्वयं को नहीं देख सकती। साक्षी इसलिए छिपा नहीं कि वह दूर या दुर्लभ है; वह इसलिए छिपा है कि वह बहुत निकट है, बहुत स्थिर, एक पृथक् वस्तु के रूप में देखे जाने को बहुत पूर्णतः उपस्थित — वह स्वयं वह ध्यान-देना है। और ठीक यही कारण है कि वह दुःख का अंत है। दुःख अंतर्वस्तुओं का है, अनुभव की बदलती नदी का जो घायल और खोई जा सकती है; वह जागरूकता जिसमें अंतर्वस्तुएँ प्रकट होती हैं स्वयं कभी अंतर्वस्तु नहीं, कभी नदी में नहीं, उससे

कभी घायल नहीं जो उसमें से गुजरता है। स्वयं को वह जानना — बदलती अंतर्वस्तुओं के रूप में नहीं बल्कि उस अपरिवर्तनीय जागरूकता के रूप में जिसमें वे प्रकट होती हैं — आप में उस एकमात्र वस्तु को खोज लेना है जिसे कोई घटना छू नहीं सकती।

## वह जागरूकता जो सोती नहीं

एक साधारण रात की नींद को साक्षी के प्रमाण के रूप में विचारिए, क्योंकि वह कुछ ऐसा देती है जो कोई तर्क नहीं दे सकता। हर रात, समूचा व्यक्तिगत स्व विलीन हो जाता है। गहरी, स्वप्न-रहित नींद में कोई अहं नहीं, कोई नाम नहीं, कोई कथा नहीं, कोई अनुभूत शरीर नहीं, कोई संसार नहीं, कोई कर्ता नहीं — वह समूची रचना जिसे हम स्वयं समझते हैं पूर्णतः लुप्त हो जाती है, और फिर भी हम इस रात्रिकालीन विलोप को भयावह के रूप में अनुभव नहीं करते; हम उसे, यदि कुछ भी, हमें उपलब्ध सबसे विश्रामपूर्ण अवस्था के रूप में अनुभव करते हैं। और यहाँ ठहरने योग्य विचित्र भाग है: कुछ दर्ज करता है कि नींद विश्रामपूर्ण थी। जागने पर हम बिना हिचक कहते हैं, मैं अच्छी तरह सोया, मुझे कुछ पता नहीं था — एक ऐसा प्रतिवेदन जिसके लिए आवश्यक है कि कोई जागरूकता उस अनुपस्थिति के प्रति उपस्थित थी, कि वह कुछ-नहीं, एक अर्थ में, साक्षित था। व्यक्तिगत स्व जा चुका था, और फिर भी जागरूकता, किसी निरावरण और अंतर्वस्तु-रहित रूप में, बनी रही, इस प्रकार कि उसका विश्राम बाद में जाना जा सका।

मैं इसे प्रमाण में नहीं दबाता, क्योंकि गहरी नींद का स्वभाव सचमुच रहस्यमय है और चिंतक स्वयं इस पर असहमत हैं। किंतु मैं इसे एक संकेत के रूप में प्रस्तुत करता हूँ, क्योंकि यह उस पूर्व-धारणा को ढीला करता है कि जागरूकता व्यक्तिगत स्व पर निर्भर है। यदि जागरूकता तब बनी रह सकती है जब व्यक्तिगत स्व पूर्णतः विलीन हो चुका हो — जैसा कि वह, हर रात, बनी रहती प्रतीत होती है — तो जागरूकता स्व द्वारा उत्पन्न नहीं, उससे अभिन्न नहीं, उसके जाने पर बुझ नहीं जाती। स्व कोई ऐसी वस्तु है जो जागरूकता में प्रकट होती और उससे लुप्त होती है, रात-रात, जबकि जागरूकता स्वयं बनी रहती है, अंतर्वस्तु-रहित और प्रशांत, उस विलय के पार। यही साक्षी है, उस एक समय झलका जब हम स्व से उसकी स्वतंत्रता नकार नहीं सकते: यह रात्रिकालीन प्रमाण कि जो हम सबसे गहराई से हैं वह व्यक्तिगत रचना के विलीन होने पर लुप्त नहीं होता, और इसलिए उसे बड़े विलयों से भी भयभीत होने की आवश्यकता नहीं।

## एक दृश्य: घबराहट के मध्य में साक्षी

एक रेलगाड़ी में घबराहट के दौर की गिरफ्त में एक व्यक्ति को विचारिए। उसका हृदय धड़ाम-धड़ाम करता है, उसकी दृष्टि सिकुड़ती है, डिब्बा पीछे हटता-सा लगता है, और उसके भीतर एक स्वर चीखता है कि वह मर रहा है। वर्षों तक उसने इन प्रकरणों का सामना एकमात्र उस ढंग से किया जिसे वह जानता था: उन्हें होकर, आतंक के साथ पूर्णतः मिला हुआ, घटना में डूबता एक सहभागी जिसके पास यह जानने को कोई शेष नहीं था कि वह एक घटना थी। किंतु इस बार, किसी ऐसे कारण से जिसे वह नाम नहीं दे सका, कुछ बदल गया। तूफ़ान के मध्य में, आतंक के साथ-साथ एक शांत पहचान उठी — उसके बजाय नहीं, आतंक अब भी पूरे बल में वहीं था — बल्कि उसके साथ-साथ: *यह घबराहट उठ रही है। घबराहट की जागरूकता है।* और उस पहचान में, यद्यपि लक्षण ठीक पहले की भाँति प्रचंड बने रहे, कुछ मूलभूत बदल गया। अब एक साक्षी था, और साक्षी घबरा नहीं रहा था। वह घबराहट को देख रहा था, और वह पूर्णतः शांत था, क्योंकि वह सदा से रहा था।

उसने घबराहट को रुकवाया नहीं; कोई बल से नहीं रुकवा सकता, और प्रयास करना उसे केवल पोषित करता है। उसने, इसके बजाय, वह जागरूकता खोज ली जिसमें घबराहट घटित हो रही थी — वह शांत अवकाश जिसके भीतर आतंक प्रकट हुआ पर जिसे वह छू न सका। सहभागी डूब रहा था; साक्षी भीगा तक नहीं था। और उस साक्षित्व से, लक्षणों के विरुद्ध किसी संघर्ष के बिना, तूफ़ान ने अपना मार्ग चला और शांत हो गया, जैसे तूफ़ान होते हैं, जबकि वह जागरूकता जिसने उसे देखा था ठीक वैसी ही बनी रही जैसी वह पहले, दौरान, और बाद में थी — अछूती, अव्यग्र, अक्षता। उसने घबराहट को परास्त नहीं किया था। उसने अपने भीतर उसे खोज लिया था जिस तक घबराहट कभी पहुँच ही नहीं सकी थी, और जो वहाँ, उपलब्ध, समूचे समय रहा था।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

हर अनुभव के भीतर दो वस्तुएँ हैं जिन्हें हम सामान्यतः एक में मिला देते हैं: वह अंतर्वस्तु जो बदलती है, और वह जागरूकता जिसमें वह प्रकट होती है, जो नहीं बदलती। दूसरी को खोजना साक्षी को खोजना है — और साक्षी, सहभागी के विपरीत, उससे कभी घायल नहीं होता जिसे वह देखता है।

अभी, ध्यान दीजिए कि आप पढ़ रहे हैं। अब ध्यान दीजिए कि आप पढ़ने के प्रति जागरूक हैं। शब्दों में लीन होने और उस जागरूकता के रूप में विश्राम करने के बीच के हल्के परिवर्तन को अनुभव कीजिए जिसमें शब्द प्रकट होते हैं। वह परिवर्तन ही समूचा है। आज किसी भी कार्य के मध्य में, तीन बार उस पर लौटिए, और साक्षी को एक ऐसा स्थान बनने दीजिए जहाँ आप विश्राम कर सकें, न कि एक ऐसा तथ्य जिसे आप भूल जाते हैं।

## व्यक्त और अव्यक्त

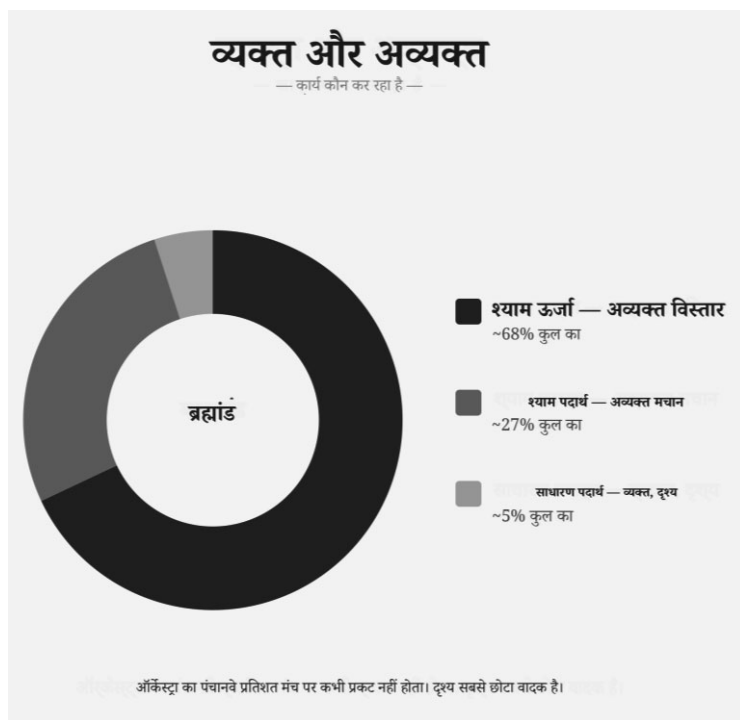
---

जो आप देख सकते हैं वह उसका सबसे छोटा भाग है जो घटित हो रहा है। दृश्य एक हिमशैल का शिखर है जिसका असली द्रव्यमान अंधकार है — और अंधकार ही कार्य कर रहा है।

— श्याम पदार्थ और श्याम ऊर्जा पर टिप्पणी

अब हम आधुनिक ब्रह्मांड-विज्ञान द्वारा उत्पन्न सबसे विनम्र कर देने वाले तथ्यों में से एक पर आते हैं, और सबसे अधिक आध्यात्मिक रूप से सुझावपूर्ण में से एक पर। जो कुछ भी आपने कभी देखा — हर तारा, हर आकाशगंगा, हर जीवित और निर्जीव वस्तु का हर परमाणु — मिलकर ब्रह्मांड का लगभग पाँच प्रतिशत बनता है। शेष पंचानवे प्रतिशत अदृश्य है। लगभग सत्ताईस प्रतिशत श्याम पदार्थ है, एक अदृश्य ढाँचा जिसका गुरुत्व आकाशगंगाओं को जोड़े रखता है पर जो न प्रकाश उत्सर्जित करता है न परावर्तित। लगभग अड़सठ प्रतिशत श्याम ऊर्जा है, एक और भी अधिक रहस्यमय उपस्थिति जो ब्रह्मांड के त्वरित विस्तार को चला रही है। हम नहीं जानते कि इनमें से कोई भी क्या है। हम केवल इतना जानते हैं कि वे उस हर वस्तु से अत्यधिक भारी हैं जिसे हम प्रत्यक्ष कर सकते हैं, और कि उनके बिना दृश्य ब्रह्मांड एक क्षण के लिए भी अपना आकार थाम नहीं सकता।





चित्र 5. ब्रह्मांड की संरचना। दृश्य, व्यक्त ब्रह्मांड — वह समस्त पदार्थ जिसे हम देख सकते हैं — समग्र का लगभग पाँच प्रतिशत है। श्याम पदार्थ, अदृश्य ढाँचा, लगभग सत्ताईस प्रतिशत; श्याम ऊर्जा, अदृश्य विस्तार, लगभग अड़सठ प्रतिशत। वाद्यवृंद का पंचानवे प्रतिशत कभी मंच पर प्रकट नहीं होता। दृश्य सबसे छोटा वादक है।

मुझे यह कहना कठिन लगता है कि यह कितना विचित्र और कितना सुंदर है। हमने एक सभ्यता, एक विज्ञान, एक समूची सामान्य-बुद्धि इस पूर्व-धारणा पर खड़ी की कि दृश्य संसार ही संसार है। और प्रकट होता है कि दृश्य संसार एक पूर्णांकन-त्रुटि है — अंधकार के एक ऐसे समुद्र की सतह पर एक धुँधला प्रकाशमान ज्ञाग जिसके स्वभाव को हम अभी नाम नहीं दे सकते। वह वाद्यवृंद जो ब्रह्मांड का संगीत बजाता है अत्यधिक रूप से अदृश्य है। जो हम मंच पर देखते और सुनते हैं वह वादकों का सबसे छोटा खंड है।

## पुरानी भाषा में व्यक्त और अव्यक्त

चिंतन-परंपराओं के पास इस विभाजन के लिए नाम ब्रह्मांड-विज्ञान के वहाँ पहुँचने से बहुत पहले थे, यद्यपि निस्संदेह उनका तात्पर्य कुछ भिन्न था और वे एक भिन्न मार्ग से पहुँचे। उन्होंने

व्यक्त और अव्यक्त की बात की — वह संसार जो दृश्य रूप में आ गया है, और वह विशाल निराकार आधार-भूमि जिससे वह उठता है और जिसमें वह लौटता है। व्यक्त छोटी, व्युत्पन्न वस्तु है; अव्यक्त स्रोत है, बृहत्तर वास्तविकता, वह मौन गर्भ जिसमें सभी दृश्य घटनाएँ निलंबित हैं।

मैं यह दावा नहीं कर रहा कि श्याम पदार्थ उपनिषदों का अव्यक्त है, या कि श्याम ऊर्जा ब्रह्म है। वह तो ठीक वैसी ही मिथ्या समीकरण होगी जिसे मैंने आपको न बेचने का वचन दिया था। भौतिकी और तत्त्वमीमांसा भिन्न प्रश्नों का उत्तर दे रही हैं। किंतु मैं एक संरचनात्मक तुक की ओर संकेत कर रहा हूँ जो इतनी चौंकाने वाली है कि हमारे ध्यान की पात्र है: दोनों चित्रों में, दृश्य अल्पसंख्यक है, और असली कार्य — जोड़े रखना, आगे चलाना, गहन संचालन — अदृश्य में घटित होता है। मंच छोटा है। नाटक का बृहत्तर भाग अंधकार में सम्पन्न होता है।

### कौन कार्य कर रहा है

इसे कर्म पर वापस लाइए। जब कोई घटना प्रेरित होती है और भूमिकाएँ निर्धारित होती हैं और नाटक अभिनीत होता है, तो जो हम देखते हैं — दृश्य लोगों के दृश्य कृत्य — वह पाँच प्रतिशत है। वह घटना का व्यक्त शिखर है। स्वयं भूमिका-निर्धारण, क्षेत्र का समाधान, वह गहन अनुकूलन जिसने प्रेरण को पकाया, अंतर्ग्रथन का वह विशाल जाल जिसने यह निर्धारित किया कि कौन किस क्षण कहाँ होगा — वह सब अव्यक्त है। वह अपना कार्य अंधकार में करता है, ठीक जैसे श्याम पदार्थ और श्याम ऊर्जा करते हैं।

और यहाँ मुक्तिदायी निहितार्थ है। यदि हर घटना का पंचानवे प्रतिशत अव्यक्त में संचालित होता है, तो दृश्य कर्ता — वह पाँच प्रतिशत जिसे आप देख सकते हैं, वह व्यक्ति जो कर्म करता प्रतीत होता है — घटना का रचयिता नहीं है। वह एक ऐसे संचालन का दृश्य शिखर है जो अत्यधिक रूप से अदृश्य और अत्यधिक रूप से उसका नहीं। घटना के लिए दृश्य कर्ता को श्रेय या दोष देना झाग को समुद्र के ज्वार-भाटे का श्रेय देने जैसा है। झाग वास्तविक है। वह सचमुच समुद्र का अंग है। किंतु वह कुछ चला नहीं रहा।

यही कारण है कि बुद्धिमानों ने सदा दृश्य कर्ता से परे संकेत किया है। वे केवल रहस्यवाद के लिए रहस्यवादी नहीं हो रहे थे। उन्होंने अंतर्निरीक्षण से वह समझ लिया था जिसे ब्रह्मांड-विज्ञान ने तब से मापन द्वारा झलका है: कि व्यक्त सबसे छोटा भाग है, कि असली संचालन छिपा है, और कि वह स्व जो घटनाओं के कर्तृत्व का दावा करता है, एक ऐसी स्वर-रचना का श्रेय ले

रहा है जिसे वह न सुन सकता है न देखा। भाग तीन में हम उस संचालन का उसके पैमानों भर अनुसरण करेंगे — एकल घटना से लेकर उस महा-आकर्षक तक जो शायद स्वयं बहु-ब्रह्मांड का संचालन कर रहा है।

## वह पंचानवे प्रतिशत जिसे हम देख नहीं सकते

यहाँ आधुनिक ब्रह्मांड-विज्ञान द्वारा उत्पन्न सबसे विनम्र कर देने वाले तथ्यों में से एक है, और मुझे इसमें इस पुस्तक के तर्क के लिए एक लगभग असह्य रूप से उपयुक्त चित्र मिलता है। जो कुछ हम देख सकते हैं — हर तारा, हर आकाशगंगा, हर ग्रह, हर जीवित शरीर का हर परमाणु, ब्रह्मांड का समूचा प्रकाशमान साज-सामान — मिलकर वास्तव में जो वहाँ है उसका लगभग पाँच प्रतिशत बनता है। शेष पंचानवे प्रतिशत हमारे लिए अदृश्य है। लगभग सत्ताईस प्रतिशत श्याम पदार्थ है, एक अदृश्य द्रव्यमान जो केवल अपनी गुरुत्वाकर्षण-पकड़ से ज्ञात होता है, जो आकाशगंगाओं को जोड़े रखता है और जिसके बिना वे बिखर जातीं। और लगभग अड़सठ प्रतिशत श्याम ऊर्जा है, एक और भी रहस्यमय प्रभाव जो स्वयं अवकाश के त्वरित विस्तार को चला रहा है। दृश्य अपवाद है। अदृश्य नियम है। हम एक ऐसे संचालन के भीतर जीते हैं जो अत्यधिक रूप से छिपा है।

फिर मैं दावे की विनम्रता पर आग्रह करता हूँ। मैं यह नहीं कह रहा कि श्याम पदार्थ आत्मा है, या श्याम ऊर्जा ईश्वर, या भौतिकी ने रहस्यवादियों के अव्यक्त को माप लिया है। श्याम पदार्थ और श्याम ऊर्जा उन वस्तुओं के लिए स्थानापन्न हैं जिन्हें हम अभी नहीं समझते, और विज्ञान के परिपक्व होने पर वे संशोधित या प्रतिस्थापित हो सकते हैं। मैं जिसकी ओर संकेत कर रहा हूँ वह वह संरचनात्मक पाठ है जो इस पर ध्यान दिए बिना टिकता है कि भौतिकी कैसे सुलझती है: कि वास्तविकता का वह भाग जिसे हम प्रत्यक्ष और हस्तगत कर सकते हैं समग्र की एक पतली खपच्ची है, और कि जो ब्रह्मांड का संचालन करता है उसका विशाल बहुमत पूर्णतः हमारे प्रत्यक्षण के बाहर संचालित होता है। यह रहस्यवाद नहीं है। यह हमारे सर्वोत्तम मापों की वर्तमान अवस्था है। और यह ठीक प्राचीनतम चिंतनात्मक प्रतिवेदन से तुक मिलता है: कि व्यक्त संसार एक ऐसी वास्तविकता का छोटा दृश्य मुख है जिसका बृहत्तर भाग अव्यक्त है।

## दृश्य कर्ता पाँच प्रतिशत है

अब इसे क्रिया के प्रश्न पर धर ले आइए। जब कोई घटना घटित होती है, तो जो हम देख सकते हैं वह दृश्य कर्ता है — व्यक्ति, शरीर, कृत्य करता प्रत्यक्ष कर्ता। किंतु यदि स्वयं ब्रह्मांड पाँच

प्रतिशत दृश्य और पंचानवे प्रतिशत छिपा है, तो हम कल्पना ही क्यों करें कि कोई घटना उससे भिन्न है? दृश्य कर्ता घटना का पाँच प्रतिशत है — वह प्रकाशमान खपच्ची जिसे हम प्रत्यक्ष कर सकते हैं। घटना को घटित कराने वाले का शेष पंचानवे प्रतिशत — परिस्थितियों का समूचा जाल, समूचा अंतर्ग्रथित क्षेत्र, समय के आरम्भ तक पीछे और अवकाश के किनारों तक बाहर फैले कारणों का अकल्पनीय रूप से विशाल संचालन — अव्यक्त है, छिपा है, उसका नहीं। घटना के लिए दृश्य कर्ता को श्रेय या दोष देना झाग को समुद्र के ज्वार-भाटे का श्रेय देने जैसा है। झाग वास्तविक है। वह सचमुच समुद्र का अंग है। किंतु वह कुछ चला नहीं रहा।

यही कारण है कि बुद्धिमानों ने सदा दृश्य कर्ता से परे संकेत किया, और वे टालमटोल या केवल रहस्यवाद के लिए रहस्यवादी नहीं हो रहे थे। उन्होंने अंतर्निरीक्षण से वह समझ लिया था जिसे ब्रह्मांड-विज्ञान अब मापन से झलकता है: कि व्यक्त सबसे छोटा भाग है, कि असली संचालन छिपा है, और कि वह स्व जो कर्तृत्व का दावा करता है एक ऐसी स्वर-रचना का श्रेय ले रहा है जिसे वह न सुन सकता है न देख। कर्ता ऐसे झुककर अभिवादन स्वीकार करता है मानो प्रस्तुति उसकी थी, जबकि परदे के पीछे पंचानवे प्रतिशत का एक वाद्यवृंद, जिसके अस्तित्व का उसे संदेह तक नहीं, हर स्वर बजाता है। यह जो राहत देता है वह पूर्ण है। यदि घटना अत्यधिक रूप से आपकी नहीं — यदि आप एक ऐसे संचालन के दृश्य पाँच प्रतिशत हैं जो पंचानवे प्रतिशत छिपा है — तो कर्तृत्व का जो भार आप ढोते आए हैं वह सदा पैमाने का एक भ्रम था, झाग स्वयं को ज्वार का कारण कल्पित करता हुआ।

## व्यक्त और अव्यक्त एक ही गति के रूप में

मैं आपको दो पृथक लोकों के चित्र के साथ नहीं छोड़ना चाहता, एक दृश्य संसार और एक छिपा हुआ एक-दूसरे के विरुद्ध खड़े। व्यक्त और अव्यक्त दो वस्तुएँ नहीं हैं; वे दो ओर से देखी गई एक ही गति हैं, जैसे किसी लहर का दृश्य शिखर और अदृश्य काया एक ही लहर हैं। अव्यक्त निरंतर व्यक्त होता जा रहा है — संभावना घटना-क्षितिज को पार कर तथ्य में आती हुई — और व्यक्त निरंतर अव्यक्त में लौट रहा है — घटनाएँ पूर्ण होती हुई, भूमिकाएँ विलीन होती हुई, निश्चित उस संभावना के क्षेत्र में फिर घुलता हुआ जिससे अगली घटना खींची जाएगी। वह एक व्यवस्था इन दो मुखों के बीच निरंतर और अनायास गति करती है, और आप इस गति के बाहर खड़े उसका अवलोकन नहीं कर रहे; आप उसके क्षणिक शिखरों में से एक हैं, एक स्थान जहाँ अव्यक्त क्षण-भर के लिए एक भूमिका के रूप में दृश्य होता है, फिर समग्र में फिर शांत होने से

पूर्वा। स्वयं को यह जानना — झाग जो ज्वार का दावा करता है उसके रूप में नहीं, बल्कि समुद्र जो क्षण-भर के लिए आकार ले लेता है उसके रूप में — उस शांति का आरम्भ है जिसकी ओर संकेत करने के लिए यह पुस्तक विद्यमान है।

## वह विनम्रता जो संख्याएँ माँगती हैं

बस अनुपात के साथ एक क्षण ठहरिए, क्योंकि उसे हम में कुछ पुनर्व्यवस्थित करना चाहिए। जो कुछ भी हमारी प्रजाति ने कभी देखा, नाम दिया, मानचित्रित किया, पूजा, जीता, प्रेम किया — हर सूचीबद्ध तारा और हर विभाजित परमाणु — वह जो वहाँ है उसके लगभग पाँच प्रतिशत का है। हम, संज्ञानात्मक और प्रात्यक्षिक रूप से, एक ऐसे प्राणी हैं जो झाग को देखने के लिए अनुकूलित और समुद्र के प्रति अंधा है। और फिर भी उस पाँच प्रतिशत के भीतर से हम नियमित रूप से समग्र के अर्थ पर घोषणा करते हैं, ब्रह्मांडीय दोष और श्रेय सौंपते हैं, घोषित करते हैं कि हम किसके योग्य हैं और दूसरे किसके, और यह भारी निश्चय ढोते हैं कि हम अपने भाग्य की मशीनरी समझते हैं। अकेले संख्याएँ ही हमें विनम्र बना देनी चाहिए। यदि वास्तविकता का संचालन करने वाले का पंचानवे प्रतिशत हमारे सूक्ष्मतम उपकरणों से भी छिपा है, तो व्यक्तिगत कर्म का आश्वस्त बही-खाता — यह इसलिए हुआ कि मैंने वह किया — झाग के रूप में दिखने लगता है, जो बड़े आश्वासन से घोषणा कर रहा हो कि ज्वार क्यों आया।

यह विनम्रता निराशा नहीं है, और न ही निष्क्रियता का बहाना। यह एक छोटे, वास्तविक, सहभागी अंश की उस समग्र के प्रति उचित मुद्रा है जिसे वह देख नहीं सकता। आपके शरीर की कोशिका जीव को नहीं समझती, फिर भी वह पूर्णतः कोशिका होकर उसकी पूर्ण सेवा करती है। हमसे पंचानवे प्रतिशत को समझने को नहीं कहा जाता — हम नहीं कर सकते — बल्कि एक ऐसे संचालन के भीतर अपना भाग भली-भाँति निभाने को जिसे हम प्रत्यक्ष नहीं कर सकते, कर्तृत्व के उस भार से मुक्त जिसका दावा करने का साहस केवल वही प्राणी करता जिसने कल्पना की हो कि वह समग्र को देख सकता है। संख्याएँ जो विनम्रता माँगती हैं वह, अंततः, एक राहत है। हमें एक ऐसे उत्तरदायित्व से मुक्त किया जाता है जिसे ढोने के लिए हम कभी सुसज्जित थे ही नहीं।

## परदे के पीछे का वाद्यवृंद

वाद्यवृंद के चित्र पर लौटिए, क्योंकि वह समूचे अध्याय को वहन करता है। कल्पना कीजिए एक मंच के अग्रभाग पर एक अकेला दृश्य संगीतकार, एक स्पाॅटलाइट से प्रकाशित, जबकि

एक परदे के पीछे अकल्पनीय आकार का एक वाद्यवृंद — परिस्थितियों का समूचा जाल, समूचा अंतर्ग्रथित क्षेत्र, उस सबका पंचानवे प्रतिशत जो है — असली स्वर-रचना बजाता है। श्रोता, केवल प्रकाशित संगीतकार को देखकर, संगीत का श्रेय उसे देते हैं। वह, केवल स्वयं को देखकर, आधा विश्वास कर लेता है। वह झुककर अभिवादन स्वीकार करता है; वह प्रशंसा या दोष स्वीकारता है; वह यह विश्वास लिए घर जाता है कि प्रस्तुति उसका कर्म या उसकी चूक थी। और समूचे समय वह छिपा वाद्यवृंद, जिसे उसने कभी देखा नहीं और जिसके अस्तित्व का उसे मुश्किल से ही संदेह है, हर उस स्वर को बजाता रहा जो सभागार तक पहुँचा। यह ठीक कर्ता की स्थिति है। यह अध्याय जो राहत देता है वह संगीतकार को नकारना नहीं — वह वास्तविक है, वह सचमुच मंच पर है, उसका भाग सचमुच उसके माध्यम से निभाया जाता है — बल्कि मन की आँख में परदा पीछे खींचना और देखना, राहत के साथ, उस विशाल छिपे वाद्यवृंद को जो सदा असली कलाकार था, और अंततः इस असंभव भार को रख देना कि स्वर-रचना कभी अकेले हमारी बजाने की थी।

## समग्र अंश को प्रतिबंधित करता है

आधुनिक विज्ञान, जिसने वस्तुओं को समझने के लिए उन्हें टुकड़े-टुकड़े करते सदियाँ बिताईं, बार-बार एक ऐसी दीवार से टकराया है जिसके विषय में चिंतक आरम्भ से जानते थे: कि अंश समग्र की व्याख्या नहीं करते, और कि समग्र, वस्तुतः, अंशों को प्रतिबंधित करता है। एक अकेला न्यूटन किसी विचार के विषय में कुछ नहीं समझाता; विचार समूचे मस्तिष्क से उठता है, और एकल न्यूटन का स्फुरण उस समग्र से आकार पाता है जिसमें वह सहभागी है। एक अकेली कोशिका शरीर की योजना धारण नहीं करती; शरीर, एक समग्र के रूप में, प्रत्येक कोशिका के व्यवहार को संगठित करता है। इसे उद्भव कहते हैं, और इसका गहरा और विचित्रतर मुख वह है जिसे कुछ विचारक *अधोमुखी कारणता* कहते हैं — वह ढंग जिससे समग्र नीचे पहुँचकर अंशों को आकार देता है, जिससे जीव कोशिका को प्रतिबंधित करता है, जिससे बड़ी घटना उन छोटी घटनाओं को संचालित करती है जो उसे रचती हैं। यह न्यूनकारी स्वप्न, कि आप सबसे छोटे टुकड़ों को समझकर सब कुछ समझ सकते हैं, इस तथ्य पर टूट गया है: कि टुकड़े उन समग्रों से प्रतिबंधित हैं जिनके वे हैं, ऊपर तक।

इसे कर्ता और कृत्य के प्रश्न पर लाइए। दृश्य कर्ता एक अंश है — एक ऐसी घटना में एकल सहभागी जो उससे विशाल रूप से बड़ी एक समग्र है, जो स्वयं और भी बड़ी घटनाओं का एक

अंश है। यदि समग्र अंश को प्रतिबंधित करता है, तो कर्ता घटना का रचयिता नहीं; घटना, एक समग्र के रूप में, कर्ता को प्रतिबंधित करती है, जो वह करता है उसे वैसे आकार देती है जैसे शरीर कोशिका को। कृत्य समूची घटना से नीचे की ओर सहभागी के माध्यम से बहता है, न कि सहभागी से ऊपर की ओर घटना रचने के लिए। यही पंचानवे प्रतिशत के नीचे का संरचनात्मक सत्य है: केवल यह नहीं कि अधिकांश संचालन छिपा है, बल्कि यह कि कर्तृत्व की दिशा हमारी पूर्व-धारणा के विपरीत चलती है — समग्र से अंश की ओर, विशाल अदृश्य घटना से नीचे छोटे दृश्य कर्ता की ओर, और कभी कर्ता से ऊपर की ओर एक ऐसे समग्र को रचने के लिए नहीं जिसका वह केवल एक प्रतिबंधित अंश है।

### उसके समक्ष विनम्रता जिसकी हम गणना नहीं कर सकते

एक विशेष विनम्रता है जिसे जटिल तंत्रों का अध्ययन किसी भी ईमानदार व्यक्ति पर थोप देता है, और वह व्यक्ति के अपने जीवन के प्रति उचित मुद्रा है। सरलतम जटिल तंत्र भी — गुरुत्व के अधीन परिक्रमा करते कुछ पिंड, मुट्ठी-भर युग्मित समीकरण — कठोर अर्थ में अगणनीय सिद्ध होते हैं: उनके भविष्य की भविष्यवाणी, सिद्धांततः भी, नहीं की जा सकती, क्योंकि परिस्थितियों में सूक्ष्मतम अंतर परिणामों में विशाल अंतरों में झरने की भाँति बढ़ जाता है। और एक मानव-जीवन कोई सरल जटिल तंत्र नहीं बल्कि ज्ञात ब्रह्मांड के सबसे जटिल तंत्रों में से एक है, और भी जटिल तंत्रों में अंतःस्थापित। व्यक्तिगत कर्म का आश्रित बही-खाता — यह इसलिए हुआ कि मैंने वह किया, यह परिणाम उस चुनाव से आया — एक ऐसी गणनीयता मान लेता है जो अवकाश में तीन पत्थरों के लिए भी विद्यमान नहीं, किसी जीवन के अथाह जाल के लिए तो कहाँ। ईमानदार मुद्रा व्यक्तिगत खाते की मिथ्या परिशुद्धता नहीं बल्कि एक ऐसे अंश की विनम्रता है जो जानता है कि वह उस समग्र की गणना नहीं कर सकता जिसका वह है — और जो इसलिए उन परिणामों को रचने के असंभव कार्य से मुक्त है जिनकी वह आरम्भ में कभी गणना ही नहीं कर सकता था।

### श्वास धुरी के रूप में

एक स्थान है जहाँ व्यक्त और अव्यक्त इतनी घनिष्ठता से और इतनी निरंतरता से मिलते हैं कि आप उस मिलन को अनुभव कर सकते हैं, और वह श्वास है। एक अकेली श्वास को देखिए। अंतःश्वास पर, निराकार वायु, एक क्षण के लिए, उस रूप का अंग बन जाती है जो आप हैं,

भीतर ली गई, आपके जीवित शरीर के रूप में व्यक्त। निःश्वास पर, वह लौट जाती है, उस निराकार परिवेश में मुक्त की गई जिससे अगली श्वास खींची जाएगी। श्वास व्यक्त और अव्यक्त, बनना और लौटना, रूप और निराकारता के बीच की निरंतर धुरी है — एक छोटा ज्वार, भीतर और बाहर चलता हुआ, समूचे दिन और समूची रात, आपके आदेश के बिना, जिसमें दृश्य और अदृश्य निरंतर आप में स्वयं का विनिमय करते हैं। ब्रह्मांड की व्यक्ति-करण और वापसी की वह महान लय, जिसका वर्णन इस अध्याय ने श्याम ऊर्जा और श्याम पदार्थ के पैमाने पर किया है, इस क्षण आपकी छाती में लघु रूप में घटित हो रही है, जैसे आप पढ़ते हैं।

यही कारण है कि लगभग हर चिंतन-परंपरा ने, अंततः, अपना मार्ग श्वास तक पाया — केवल विश्राम की एक तकनीक के रूप में नहीं, बल्कि उस सत्य को अनुभव करने के सबसे सुलभ स्थान के रूप में जिसका यह अध्याय तर्क देता है। आपने श्वास को रचा नहीं; वह स्वयं को साँस लेती है, उसी व्यवस्था से वहन की हुई जो तारों को वहन करती है। आप अंतःश्वास को सदा के लिए नहीं थाम सकते, व्यक्त को पकड़े हुए; निःश्वास आता है, वापसी अंतर्निहित है, छोड़ना वैकल्पिक नहीं। और उस पर ध्यान देने में — बस व्यक्त को अव्यक्त बनते और फिर वापस देखने में, उसे नियंत्रित किए बिना — व्यक्ति समस्त तर्क के नीचे, बनने और लौटने की वह लय अनुभव करता है जो वह है, और सदा से रहा है: झाग जो ज्वार का दावा करता है वह नहीं, बल्कि स्वयं ज्वार, भीतर और बाहर चलता हुआ, एक ऐसे शरीर में जो आरम्भ से श्वास ले ही नहीं रहा था।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

जो कुछ हम देख सकते हैं — हर तारा, हर शरीर, हर दृश्य वस्तु — जो वहाँ है उसका लगभग पाँच प्रतिशत है। शेष पंचानवे प्रतिशत वास्तविकता का संचालन अनदेखे करता है। दृश्य कर्ता किसी भी घटना का पाँच प्रतिशत है; जो संचालन उसे घटित कराता है वह अत्यधिक रूप से छिपा है, और अत्यधिक रूप से उसका नहीं।

किसी ऐसी वस्तु को सोचिए जिसका आपने पूर्ण श्रेय या पूर्ण दोष लिया है। अब, दृश्य आप के पीछे, उस विशाल छिपे वाद्यवृंद का चित्र बनाइए — हर परिस्थिति, हर कारण, समय के आरम्भ तक पीछे फैला समूचा क्षेत्र — जिसने वास्तव में घटना बजाई। स्वयं को, एक क्षण के लिए, झाग होने की और ज्वार न होने की राहत अनुभव करने दीजिए।



# भाग तीन

## कर्म की संरचना

प्रेरक और भूमिकाएँ, विलय, संचालन के स्तर, और ऊपर व नीचे का संरेखण

अब स्वयं संरचना: कैसे कोई घटना अपने क्षितिज पर प्रेरित होती है, कैसे क्षेत्र अपनी भूमिकाएँ निर्धारित करता है, कैसे पूर्णता कर्म और कर्ता दोनों को विलीन कर देती है, और कैसे हर घटना बड़ी घटनाओं के भीतर घोंसले की भाँति बैठी है, आकाशगंगाओं के प्रवाह तक। यह पुस्तक का संरचनात्मक हृदय है — वह भाग जो केवल कथन नहीं करता बल्कि दिखाता है कि कोई घटना कभी किसी की निजी संपत्ति थी ही क्यों नहीं।



## प्रेरक और भूमिका

---

आपने अपने जीवन के लिए कोई परीक्षण नहीं दिया। आपको उसमें भूमिका दी गई, एक ऐसे निर्देशक द्वारा जिससे आप कभी नहीं मिलेंगे, एक ऐसे नाटक में जो आपके आने से पूर्व ही गति में था।

### — भूमिका-निर्धारण पर टिप्पणी

हमने समस्त संभावनाओं के क्षेत्र और उस घटना-क्षितिज को स्थापित किया है जिस पर वह सुलझता है। अब मैं भूमिका-निर्धारण के क्षण को निकट से देखना चाहता हूँ — वह क्षण जब निर्वैयक्तिक क्षेत्र प्रत्येक सहभागी को एक विशेष भूमिका नियत करता है — क्योंकि यहीं व्यक्तिगत कर्तृत्व का भ्रम जन्म लेता है और यहीं उसे सबसे स्वच्छता से विलीन किया जा सकता है।

किसी ऐसी महान घटना के विषय में सोचिए जिसे आपने जीया है: एक प्रेम, एक संघर्ष, एक मोड़। स्मृति में ऐसा अनुभव होता है मानो आपने अपना मार्ग उसमें चुना — प्रेम में पड़ना चुना, लड़ना चुना, चौराहे पर मुड़ना चुना। किंतु उस चुनने की जाँच कीजिए। हर चुनाव एक ऐसी प्रवृत्ति पर टिका था जिसे आपने नहीं चुना, उन अनुभवों से बनी जिन्हें आपने नहीं चुना, एक ऐसे शरीर और स्वभाव में जिसे आपने नहीं चुना, उन परिस्थितियों से मिलते हुए जिन्हें आपने व्यवस्थित नहीं किया। किसी भी चुनाव को पर्याप्त दूर पीछे खोजिए और वह उन परिस्थितियों में घुल जाता है जो स्व के बाहर से अभिसरित होती हैं। चयनकर्ता स्वयं अभिसरित परिस्थितियों का एक उत्पाद है। भूमिका-निर्देशक समग्र है, और आप पात्रों में से एक हैं।

### भूमिका वास्तविक है; स्वामित्व नहीं

मैं यहाँ बड़े बल से उठने वाले एक ग़लत पाठ को रोकना चाहता हूँ। यह कहना कि आपने अपनी भूमिका नहीं रची, यह कहना नहीं है कि भूमिका असत्य है या उसका आपका अभिनय मायने नहीं रखता। भूमिका पूर्णतः वास्तविक है। उसका आपका अभिनय पूर्णतः वास्तविक है,

और उसे भली या बुरी तरह, सुंदरता या लापरवाही से निभाया जा सकता है। विश्वासघाती का विश्वासघात सचमुच घायल करता है; उपचारक का उपचार सचमुच सुधारता है। इस दृष्टि में कुछ भी क्रिया को भारहीन या परिणाम को काल्पनिक नहीं बनाता।

जो असत्य है वह केवल स्वामित्व है — यह दावा कि आप, एक पृथक् स्व, उस भाग के मूल रचयिता हैं। आप वह स्थल हैं जिस पर भूमिका अभिनीत होती है, वह स्थान जहाँ क्षेत्र का समाधान दृश्य और सक्रिय बनता है। यह होना एक भव्य वस्तु है। किंतु यह कर्तृत्व नहीं है। मंच पर वह अभिनेता जो पूर्ण विश्वास के साथ हत्यारे की भूमिका निभाता है, हत्यारा नहीं है और उसने नाटक नहीं लिखा। उसने स्वयं को पूर्णतः एक ऐसी भूमिका को सौंप दिया जो नियत की गई थी। और जब वह उसे महानता से निभाता है, तो वह ऐसा "यह हत्या मेरी है" का दावा करके नहीं बल्कि ठीक उस भाग में समर्पित होकर करता है जिसकी नाटक को आवश्यकता है।

## यह क्रिया के लिए शुभ समाचार क्यों है

ध्यान दीजिए कि यह क्रिया के गुण के साथ क्या करता है। जब आप मानते हैं कि आप रचयिता हैं, तो हर क्रिया गलत करने के आतंक और सही करने के भार से लदी होती है। आप हिचकते हैं; आप दुबारा सोचते हैं; आप कसकर पकड़ते हैं। यह पकड़ क्रिया को घटिया कर देती है। किंतु जब आप समझते हैं कि भूमिका नियत है और आपका कार्य बस उसे यथासंभव पूर्ण और सच्चाई से निभाना है, तो एक महान हल्कापन प्रवेश करता है। आप कर्तृत्व से मुक्त होकर शिल्पकारिता में आ जाते हैं। आपको अब संगीत का आविष्कार नहीं करना; आपको केवल उसका अपना भाग भली-भाँति बजाना है — और वह भाग, दिया हुआ होने के नाते, सब कुछ दिया जा सकता है।

यह पुस्तक के हृदय का विरोधाभास है, सरलता से कहा गया: स्वामित्व क्रिया को कमजोर करता है, और स्वामित्व का त्याग उसे सबल करता है। आप जितनी पूर्णता से समझते हैं कि कर्म आपका नहीं, उतनी ही पूर्णता से, स्वतंत्रता से और उत्कृष्टता से आप कर्म कर सकते हैं। हम इसे भाग पाँच में एक व्यावहारिक कला में विकसित करेंगे। यहाँ मैं केवल संरचना को दृश्य चाहता हूँ: प्रेरक समग्र से उठता है, भूमिका क्षेत्र द्वारा निर्धारित होती है, और आपकी गरिमा भाग के स्वामित्व में नहीं बल्कि उसे सच्चाई से निभाने में है।

## एक प्रेरक वास्तव में कैसे काम करता है

हम ढीले ढंग से किसी व्यक्ति के किसी घटना को "प्रेरित" करने की बात करते हैं, मानो एक अकेले कर्ता ने एक अकेला उत्तोलक खींचा और परिणाम चला आया। किंतु किसी भी वास्तविक घटना को निकट से देखिए और अकेला उत्तोलक एक जाल में घुल जाता है। वह विवाद जो रात्रिभोज पर फूटा, एक तीखे शब्द से नहीं बल्कि एक व्यक्ति की थकान, दूसरे के अनकहे भय, उनके बीच के इतिहास, दिन की असफलताओं, स्वयं कमरे की ध्वनि-व्यवस्था से प्रेरित हुआ — एक साथ एक दहलीज तक पहुँचती हजार परिस्थितियाँ, जिस पर क्षेत्र पलटा और घटना अपना क्षितिज पार कर तथ्य में आ गई। इनमें से कोई एक परिस्थिति कारण नहीं थी। समग्र कारण था। तीखा शब्द बस रेत का वह अंतिम कण था जो एक ऐसे ढेर पर पड़ा जिसे समूचा मरुस्थल बना रहा था।

यह इस बात का खंडन नहीं कि कुछ भी कभी किसी वस्तु का कारण बनता है; यह पैमाने का एक सुधार है। कारण वास्तविक हैं, और असंख्य हैं, और वे समूचे क्षेत्र के हैं, न कि उसके भीतर किसी एकल बिंदु के। जब हम एक सहभागी को अलग करके कहते हैं "उसने यह किया," तो हम कुछ ऐसा कर रहे होते हैं जैसे हिमस्खलन के लिए अंतिम हिमकण को दोष देना, मानो ढलान, तापमान, संचित भार के महीनों का कोई भाग ही न हो। अंतिम हिमकण वास्तविक है और गिरा था। किंतु हिमस्खलन पर्वत का था, हिमकण का नहीं। तो उस हर घटना के साथ जिसके लिए आपको कभी दोष दिया गया, या जिसके लिए आपने स्वयं को दोष दिया: आप असंख्य परिस्थितियों के बीच एक वास्तविक परिस्थिति थे, एक ऐसे ढेर पर दृश्य कण जिसे समूचा संसार बना रहा था।

## भूमिका-निर्धारण समाधान है, परीक्षण नहीं

जब घटना अपना क्षितिज पार करती है, तो भूमिकाएँ प्रकट होती हैं — वह जो कर्म करता है, वह जो प्राप्त करता है, वह जो साक्षी होता है। इन भूमिकाओं की कल्पना किसी संस्था द्वारा बाँटी जाती हुई करना लुभावना है, जैसे कोई निर्देशक भाग बाँटता है। किंतु कोई निर्देशक नहीं और कोई परीक्षण नहीं। भूमिकाएँ चुनी नहीं जातीं; वे अवक्षेपित होती हैं, जैसे एक ठंडा होता द्रव एक ऐसे पैटर्न में रवे अवक्षेपित करता है जिसे किसी रसायनशास्त्री ने नहीं चुना। क्षेत्र, अपनी दहलीज तक पहुँचकर, ठीक इन्हीं भूमिकाओं में सुलझता है क्योंकि परिस्थितियों के समूचे विन्यास ने ठीक इन्हीं भूमिकाओं को वह ढंग बनाया जिससे व्यवस्था को यहाँ, अभी, स्वयं को

व्यक्त करना ही था। आपने अपनी भूमिका के लिए आवेदन नहीं किया और आपको प्रतिद्वंद्वियों के ऊपर उसके लिए चुना नहीं गया। आपकी भूमिका बस वह आकार है जो सुलझता क्षेत्र उस बिंदु पर ले बैठा जिसे संयोगवश आप कहा जाता है।

यह इस बात के लिए अत्यधिक मायने रखता है कि हम अपने भाग कैसे ढोते हैं। यदि मैं मानूँ कि मुझे चुना गया था — असफल होने वाला, हारने वाला, हानि पहुँचाने वाला होने को चुना गया — तो मैं भूमिका को एक निर्णय के रूप में पढ़ता हूँ, उन दूसरों की तुलना में मेरे मूल्य पर एक कथन के रूप में जो बच गए। किंतु यदि मैं देख लूँ कि भूमिका समूचे क्षेत्र से अवक्षेपित हुई, कि वह व्यवस्था का स्वयं को व्यक्त करना था न कि मुझ पर सुनाया गया कोई दंडादेश, तो भूमिका अपनी वास्तविकता का एक रत्ती-भर खोए बिना व्यक्तिगत अभियोग का अपना डंक खो देती है। मुझे फिर भी उसे निभाना है, और भली-भाँति निभाना है। किंतु मैं उसे वैसे निभाता हूँ जैसे एक अभिनेता खलनायक निभाता है — पूर्णता से, विश्वासपूर्वक, और एक क्षण के लिए भी यह विश्वास किए बिना कि वह खलनायकी इस विषय में कोई कथन है कि वह कौन है।

## **भूमिका को महानता से निभाना**

यहाँ एक विरोधाभास है जिस पर समूची पुस्तक घूमती है, और मैं उसे तीक्ष्णता से कहना चाहता हूँ। जो अभिनेता जानता है कि भूमिका वह स्वयं नहीं, वह उसे बुरा नहीं निभाता; वह उसे बेहतर निभाता है। वह नौसिखिया जो स्वयं को भाग से भ्रमित कर लेता है, अकड़ा हुआ, चिंतित, आत्म-चेतस, सदा यह प्रबंधित करता हुआ कि वह कैसा दिखता है। वह निपुण जो जानता है कि वह भाग नहीं, उसमें पूर्णतः लुप्त हो जाता है, ठीक इसलिए कि उसमें उसका कुछ भी व्यक्तिगत दाँव पर नहीं। वह खलनायक के रूप में पूर्णतः निर्मम और प्रेमी के रूप में पूर्णतः कोमल हो सकता है, क्योंकि न तो वह उसके विषय में कोई दावा है; दोनों बस भूमिका हैं, अपनी पूर्णता तक निभाई गई। अस्वामित्व उत्कृष्टता का शत्रु नहीं है। वह उच्चतम उत्कृष्टता की शर्त है, वह स्वतंत्रता जो किसी व्यक्ति को अपने को पूर्णतः किसी भाग को सौंप देने देती है क्योंकि उसने उसके पीछे एक स्व की रक्षा करना बंद कर दिया है। हम इस पुस्तक का एक समूचा आगामी भाग इसी एक अवलोकन पर बनाएँगे: कि आप सबसे पूर्ण रूप से ठीक वहीं कर्म करते हैं जहाँ आप सबसे कम स्वामित्व रखते हैं।

## वह भूमिका जिस पर हमें सबसे अधिक क्षोभ है

कुछ भूमिकाओं को त्यागकर हम प्रसन्न होते हैं, और कुछ से हम एक विचित्र दृढ़ता से चिपके रहते हैं, और यह भेद शिक्षाप्रद है। आहत व्यक्ति की भूमिका — शिकार, विश्वासघातित, अन्यायग्रस्त — लगभग किसी भी अन्य से अधिक तीव्रता से थामी जाती है, यद्यपि वह दुःख की भूमिका है, क्योंकि वह एक छिपा प्रतिफल वहन करती है: वह हमें धर्मी बना देती है। आहत होना ऋणी किया जाना है; शिकार होना नैतिक उच्च-भूमि पर रहना है; अन्यायपूर्वक व्यवहार पाया जाना ब्रह्मांड के विरुद्ध और उसके विरुद्ध जिसने हमारे साथ अन्याय किया, एक दावा रखना है। और इसलिए हम भूमिका को उसकी घटना के पूर्ण हो जाने के बहुत बाद तक जीवित रखते हैं, चोट को बार-बार चलाते हुए, शिकायत को ताज़ा करते हुए, क्योंकि उसे छोड़ देना उस धार्मिकता को त्यागना होगा जो वह प्रदान करती है। हम आहत पक्ष के रूप में दुःख भोगना पसंद करेंगे बजाय इसके कि ऋणी होने के प्रतिफल के बिना स्वतंत्र हों।

इस अध्याय की शिक्षा सीधे उस गाँठ को काटती है। शिकार की भूमिका, हर भूमिका की भाँति, घटना के क्षितिज पर क्षेत्र द्वारा निर्धारित हुई थी और कभी आपके मूल्य या दूसरे की दुष्टता पर कोई कथन नहीं थी; वह वह आकार था जो सुलझता समग्र उस बिंदु पर ले बैठा। हानि वास्तविक थी — मैं हानि की वास्तविकता को नहीं घुला रहा, जो जघन्य होता — किंतु वह पहचान जो आपने उस पर बनाई है, वह स्थायी स्व जिसे "वह-जिसके-साथ-अन्याय-हुआ" कहा जाता है, एक भूमिका है जिसे आप उसकी घटना के पूर्ण होने के बाद जीवित रखना चुन रहे हैं, और वह आपको ठीक उतनी ही कसकर बाँधती है जितना कोई अपराध-बोध उसे बाँधता है जो अपराधी की भूमिका निभाता है। उसे छोड़ना जो किया गया उसे बहाना देना या यह दिखावा करना नहीं कि वह मायने नहीं रखता था। यह एक पूर्ण हुई घटना से एक स्थायी पहचान बनाने से इनकार करना है, शिकार की भूमिका को उतनी ही स्वाभाविकता से विलीन होने देना है जितनी हर अन्य भूमिका विलीन होती है, और यह खोज लेना है कि शिकायत के दूसरी ओर की स्वतंत्रता उस धार्मिकता से अधिक मूल्यवान है जो शिकायत ने प्रदान की थी।

## वेशभूषा, त्वचा नहीं

तो, कर्म की समूची संरचना के लिए यह एक चित्र थामिए: भूमिका वेशभूषा है, त्वचा नहीं। त्वचा वह है जो आप हैं; आप उसे बिना रक्त बहाए नहीं उतार सकते। वेशभूषा वह है जो आप एक दृश्य की अवधि के लिए पहनते हैं; आप उसमें पूर्ण विश्वास के साथ अभिनय कर सकते हैं

और दृश्य समाप्त होने पर उसे बिना चोट उतार सकते हैं। लगभग समूचा मानवीय दुःख वेशभूषाओं को त्वचा समझ लेने से आता है — यह विश्वास करने से कि जो भाग हम किसी घटना में निभा रहे हैं वही हमारी समूची सत्ता है, जिससे जब भाग कठिन होता है तो हम मर्म तक घायल होते हैं और जब भाग को समाप्त होना ही होता है तो हमें लगता है हम मर रहे हैं। अपनी भूमिकाओं को वेशभूषा के रूप में अनुभव करना सीखिए — पूर्णतः पहनी गई, पूर्णतः निभाई गई, और फिर भी कभी उससे भ्रमित नहीं जो उन्हें पहनता है — और जीवन का समूचा नाटक अपना स्वरूप बदल देता है। आप सबसे कठिन भाग में स्वयं को बिना भय के झोंक सकते हैं, क्योंकि आप जानते हैं वह आपकी त्वचा नहीं; और आप भाग को उसकी पूर्णता पर बिना शोक के विलीन होने दे सकते हैं, क्योंकि आप आरम्भ से वह वेशभूषा थे ही नहीं। जो अभिनेता यह जानता है वह मंच पर एक ऐसे ढंग से स्वतंत्र है जैसे वह जो भूल चुका है कभी नहीं हो सकता।

### **एक जीवन भूमिकाओं का एक अनुक्रम है**

अपने ही जीवन भर पीछे देखिए और उस अकेले सतत स्व को खोजने का प्रयास कीजिए जो माना जाता है कि उस सबके पार बना रहता है। आप, इसके बजाय, भूमिकाओं का एक अनुक्रम पाएँगे, प्रत्येक अपनी ऋतु द्वारा निर्धारित और अपनी ऋतु के पूर्ण होने पर विलीन। वह बालक जिसे आपने एक दशक तक, पूर्णतः विश्वस्त होकर निभाया — वह भूमिका अब कहाँ है? वह किशोर, वह युवा प्रेमी, वह प्रयत्नशील व्यवसायी, छोटे बच्चों का वह माता-पिता, आज आप जिस भी भूमिका के मध्य-अभिनय में हैं — प्रत्येक एक वेशभूषा थी जिसमें क्षेत्र ने आपको भूमिका दी, अपने समय के लिए निभाई गई, और रख दी गई। हम इन सब भूमिकाओं के बीच से धागे की भाँति गुजरते एक सतत स्वामी की कल्पना करते हैं, वह असली आप जिसने बारी-बारी हर वेशभूषा पहनी। किंतु उस सतत स्वामी को खोजिए और आप केवल भूमिकाएँ ही पाते हैं, एक के बाद एक, और समूचे समय उपस्थित जागरूकता — और वह जागरूकता, भूमिकाओं के विपरीत, कभी कोई वेशभूषा नहीं पहनती थी, कभी बूढ़ी नहीं हुई, कभी नहीं बदली, बालक में उतनी ही उपस्थित थी जितनी अब आप में, यह पढ़ते हुए। एक जीवन की सूत्र-रेखा वह स्थायी स्व नहीं जिसने भूमिकाएँ पहनीं। वह वह अपरिवर्तनीय जागरूकता है जिसमें बदलती भूमिकाएँ प्रकट और विलीन हुईं।



पद्धति-अभिनेता एक ऐसी भूमिका के खतरे की बात करते हैं जो उन्हें जाने नहीं देती — किसी भाग को इतनी पूर्णता से निभा लेने का कि, जब फ़िल्मांकन समाप्त होता है, वे उससे बाहर का अपना मार्ग नहीं पा पाते, और वेशभूषा त्वचा बन जाने की धमकी देती है। जिसे वे एक व्यावसायिक संकट के रूप में वर्णित करते हैं, वह, अधिकांश लोगों के लिए, बस एक जीवन की साधारण दशा है: हम अपनी भूमिकाओं में खोए हैं, बाहर का अपना मार्ग पाने में असमर्थ, यह भूल चुके कि हम वह हैं जो निभा रहा है, न कि निभाया गया भाग। इस अध्याय की शिक्षा जीने पर लागू अभिनेता का अनुशासन है — स्वयं को पूर्णतः किसी भूमिका को सौंप देने और फिर भी, कहीं, यह शांत ज्ञान बनाए रखने की सामर्थ्य कि व्यक्ति निभाने वाला है और भाग नहीं, ताकि जब भूमिका पूर्ण हो, जैसे हर भूमिका पूर्ण होती है, व्यक्ति उसे रख सके और रंगमंच से बाहर चल सके, न कि अपने शेष जीवन एक ऐसी वेशभूषा में भटकता रहे जिसका नाटक वर्षों पहले बंद हो गया।

## एक ही क्षण में अनेक भूमिकाएँ

हम भूमिकाओं की बात ऐसे करते हैं मानो हम उन्हें एक समय में एक निभाते हों, किंतु एक साधारण जीवन का एक अकेला क्षण हमें एक साथ कई में भूमिका देता है, और इसे देखना किसी एक की पहचान के रूप में पकड़ को और ढीला करता है। रात्रिभोज की मेज़ पर आप, उसी एक मिनट में, अपने बाएँ बैठे बच्चे के लिए एक माता-पिता हो सकते हैं, अपने दाएँ बैठे माता-पिता के लिए एक संतान, सामने बैठे व्यक्ति के लिए एक जीवनसाथी, और कहीं अपने फ़ोन के गुंजन में, अब भी दिन की अंतिम भूमिका में उलझा एक कर्मी। इनमें से कौन-सा असली आप है? प्रश्न, सीधे पूछे जाने पर, अपनी ही निरर्थकता उघाड़ देता है। कोई दूसरों से अधिक वास्तविक नहीं; प्रत्येक एक भूमिका है जिसे क्षण निर्धारित करता है, एक साथ निभाई गई, उनमें से कोई भी शेष के नीचे का आधार-स्व नहीं। हम एक सच्ची भूमिका नहीं निभा रहे और दूसरों का दिखावा नहीं कर रहे; हम एक ऐसा स्थल हैं जिस पर एक साथ कई भूमिकाएँ अभिनीत हो रही हैं, जागरूकता उन सबके प्रति उपस्थित और किसी से भी अभिन्न नहीं।

यह एक-साथपन चुपचाप मुक्तिदायी है, क्योंकि यह हर भूमिका के वेशभूषा-स्वभाव को अमिट बना देता है। यदि आप सचमुच, सारतः माता-पिता होते, तो आप उसी क्षण में सचमुच और सारतः संतान भी नहीं हो सकते थे; भूमिकाएँ टकरा जातीं। कि वे अनायास सह-अस्तित्व रखती हैं, कि आप एक ही वार्तालाप के भीतर बिना विरोधाभास के उनके बीच फिसलते हैं, दर्शाता

है कि वे ठीक वेशभूषा हैं — एक साथ पहनी गई, सहजता से रखी और उठाई गई, उनमें से कोई त्वचा नहीं। जो व्यक्ति इसे स्पष्ट अनुभव करता है वह हर भूमिका को अधिक हल्केपन से ढोता है, क्योंकि उसने अपनी भूमिकाओं में से उसे खोजना बंद कर दिया है जो सचमुच वह है, और पहचान लिया है कि जो उन सबको निभाता है वह उनमें से कोई नहीं, बल्कि वह जागरूकता है जिसमें वे सब प्रकट और विलीन होती हैं, रात्रिभोज-दर-रात्रिभोज, भूमिका के भीतर भूमिका, नीचे तक।

### एक दृश्य: परिवार का कठिन सदस्य

हर परिवार में प्रायः किसी को कठिन सदस्य की भूमिका दी जाती है — उग्र बहन, निराश करने वाला पुत्र, वह चाचा जिससे कोई बात नहीं कर सकता — और यह भूमिका, एक बार दे दी जाने पर, एक ऐसे तथ्य में कठोर हो जाती है जिसे हर कोई, उस सहित जिसे भूमिका दी गई, एक स्थायी स्व के विषय में एक स्थायी सत्य की भाँति बरतने लगता है। ऐसी एक स्त्री को विचारिए, वह कठिन बहन, किसी पर्व के समागम में आती हुई। उसके एक शब्द कहने से पूर्व ही, भूमिकाएँ तय हैं: दूसरे तन जाते हैं, वह तनाव को भाँप लेती है, तनाव उसके इस बोध की पुष्टि करता है कि वह अवांछित है, उसकी प्रतिक्रिया उनके इस बोध की पुष्टि करती है कि वह कठिन है, और समूची मशीन अपने परिचित चक्र से घूमती है, प्रत्येक वह भाग निभाता हुआ जिसकी दूसरों के भागों को आवश्यकता है। किसी ने इसे उस क्षण में नहीं चुना। यह अवक्षेपित हुआ, जैसे यह सदा होता है, साझा इतिहास के समूचे क्षेत्र से जो उसके भीतर आते ही अपनी दहलीज़ तक पहुँच गया।

अब मान लीजिए कि कमरे में एक व्यक्ति — केवल एक ही पर्याप्त है — भूमिका-निर्धारण को वह देख चुका है जो वह है। किसी स्थायी स्व का स्थायी सत्य नहीं, बल्कि एक भूमिका, क्षेत्र द्वारा निर्धारित, जिसे वह स्त्री तीस वर्षों से निभा रही है और जिसे उपस्थित हर व्यक्ति जीवित रखने में सहायता करता है। वह एक व्यक्ति तनना बंद कर देता है। उससे कठिन बहन के रूप में नहीं मिलता, तीन दशकों का संचित अभियुक्त, बल्कि उस व्यक्ति के रूप में जो आज सायं वास्तव में उसके सामने है। और मशीन में कुछ, वर्षों में पहली बार, घूमने में असफल हो जाता है, क्योंकि उसके आवश्यक भागों में से एक ने चुपचाप निभाए जाने से इनकार कर दिया है। कठिन सदस्य की भूमिका अकेले स्वयं को क्रायम नहीं रख सकती; उसे यथास्थान थामे रखने को उत्तर देने वाली भूमिकाओं की आवश्यकता होती है। किसी व्यक्ति को उस वेशभूषा से मुक्त

देखना जिसमें परिवार ने उसे सी दिया है — और स्वयं उत्तर देने वाली वेशभूषा पहनने से इनकार करना — किसी मनुष्य को उपलब्ध सबसे चुपचाप मुक्तिदायी कृत्यों में से एक है, और यह आपके सिवा किसी के सहयोग की माँग नहीं करता।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

भूमिका वेशभूषा है, त्वचा नहीं। आप उसे पूर्ण विश्वास के साथ निभा सकते हैं और उसका दृश्य समाप्त होने पर बिना चोट उतार सकते हैं। हमारा लगभग समूचा दुःख वेशभूषाओं को त्वचा समझ लेने से आता है — यह विश्वास करने से कि जो भाग हम निभा रहे हैं वही हमारी समूची सत्ता है।

इस समय आप कौन-सी भूमिका सबसे कसकर पहने हैं — आहत व्यक्ति, असफल, वह जिसे सब कुछ थामे रखना है? उसे त्वचा के बजाय एक वेशभूषा के रूप में अनुभव करने का प्रयास कीजिए: पूर्णतः पहनी गई, पूर्णतः निभाई गई, और फिर भी वह नहीं जो उसे पहनता है। ध्यान दीजिए कि क्या भाग उसी क्षण हल्का हो जाता है जब आप उसे अपना शरीर कहना बंद कर देते हैं।

# विलय

---

जब लहर उठकर गिर चुकी, तो लहर कहाँ गई? कहीं नहीं। वह कभी कोई पृथक् वस्तु थी ही नहीं जो कहीं जा सकती। केवल समुद्र था, क्षण-भर के लिए आकार लिए, और फिर समुद्र।

— विलय पर टिप्पणी

यह, अनेक पाठकों के लिए, पुस्तक का सबसे कठिन अध्याय है, और मैंने इसे जानबूझकर केंद्र में रखा है। यह उससे संबंधित है जो तब होता है जब कोई घटना पूर्ण होती है: यह दावा कि जब भूमिका विलीन होती है, तो जिसने उसे निभाया वह भी विलीन हो जाता है। लापरवाही से कहा जाए तो यह या तो शून्यवादी लगता है या इतना रहस्यमय कि निरर्थकता की सीमा तक। सावधानी से कहा जाए तो यह, मेरे विश्वास में, वह सबसे मुक्तिदायी तथ्य है जिसे कोई मनुष्य आत्मसात कर सकता है।

मुझे इसे धीरे-धीरे बनाने दीजिए। हमने देखा है कि कोई घटना भूमिकाएँ निर्धारित करती है, और कि सहभागी वे स्थल हैं जिन पर वे भूमिकाएँ अभिनीत होती हैं। "विश्वासघाती," एक विश्वासघाती के रूप में, केवल विश्वासघात के दौरान विद्यमान रहता है। जब घटना पूर्ण होती है, तो अब कोई विश्वासघात घटित नहीं हो रहा, और इसलिए अब कोई विश्वासघाती नहीं — उस पहचान का कोई और प्रयोजन नहीं और वह बस समाप्त हो जाती है। जो शेष रहता है वह एक मनुष्य है जो, किसी बाद की घटना में, किसी सर्वथा भिन्न भूमिका में भूमिका दिया जाएगा। शरीर बना रहता है; गहन जागरूकता बनी रहती है; किंतु वह विशेष स्व जिसे घटना ने सामने बुलाया — विश्वासघाती, शिकार, नायक, असफल — उस घटना के साथ विलीन हो जाता है जिसे उसकी आवश्यकता थी।

### आप पहले ही हजार बार मर चुके हैं

यह कोई विचित्र या दुर्लभ घटना नहीं जो नाटकीय घटनाओं के लिए आरक्षित हो। यह निरंतर घटित हो रहा है, हर जीवन में, अधिकतर अनदेखा। वह स्व जो आज सुबह किसी समय-सीमा

को लेकर चिंतित जागा, उस क्षण विलीन हो गया जब समय-सीमा बीत गई; आप अब उस स्व का पुनर्निर्माण एक स्मृति के सिवा नहीं कर सकते। वह स्व जो एक बालक था, बहुत पहले विलीन हो गया; आप वह नहीं हैं, आप बस उसे होने का स्मरण रखते हैं। वह स्व जिसने किसी ऐसे व्यक्ति से प्रेम किया जो अब नहीं रहा, तब विलीन हो गया जब प्रेम का कोई और विषय न रहा। आप पहले ही हजार छोटी मौतें मर चुके हैं, और हर बार, जिसे आपने अपना सतत, स्वामी स्व समझा वह एक भूमिका सिद्ध हुआ जिसकी उस ऋतु की घटनाओं को आवश्यकता थी — निर्धारित, अभिनीत, और विलीन।

हम ध्यान नहीं देते क्योंकि स्मृति अंतरालों के आर-पार एक धागा फेंक देती है और उस धागे को "मैं" कहती है। किंतु धागा एक कथा है, द्रव्य नहीं। उसे खींचिए और वह स्वों के एक उत्तराधिकार में बिखर जाता है, प्रत्येक अपनी घटना से जन्मा और उसके साथ विलीन, उनमें से कोई वह स्थायी स्वामी नहीं जिसका कथा संकेत देती है।

## जो विलीन नहीं होता

और फिर भी कुछ विलीन नहीं होता, अन्यथा यह अध्याय सचमुच शून्यवाद होता। जो विलीन नहीं होता वह साक्षी है — वह जागरूकता जिसमें ये सब स्व उठे और बीते। भूमिकाएँ आती-जाती हैं; घटनाएँ प्रेरित और पूर्ण होती हैं; स्व निर्धारित और विलीन होते हैं; किंतु वह जिसमें यह सब प्रकट होता है, स्वयं कभी इन प्रतीतियों में से एक नहीं। वह कर्म नहीं करता, इसलिए वह पूर्ण नहीं हो सकता; वह कुछ भी स्वामित्व में नहीं रखता, इसलिए वह कुछ नहीं खोता; वह कभी निर्धारित नहीं हुआ, इसलिए वह कभी विलीन नहीं होता। परंपराओं ने उसे अनेक नामों से पुकारा — आत्मन्, बड़े अक्षर वाला स्व, शुद्ध जागरूकता, साक्षी — और वे एकमत थीं कि वही है जो आप सबसे सच्चे रूप में हैं, हर उस भूमिका के नीचे जिसे आपने कभी स्वयं समझ लिया।

सो विलय विलोप नहीं है। यह मिथ्या स्वामी का विलीन होना है, बार-बार, जबकि सच्चा साक्षी बना रहता है। जब आप इसे समझ लेते हैं, तो महान आतंक अपनी पकड़ ढीली कर देता है। स्वयं मृत्यु केवल उन विलयों में सबसे बड़े के रूप में दिखने लगती है जिनसे आप पहले ही असंख्य बार गुजर चुके हैं — सबसे लम्बी घटना की अंतिम पूर्णता, जिसमें अंतिम और सर्वाधिक संजोई भूमिका, इस विशेष व्यक्ति होने की भूमिका, अंततः रख दी जाती है। जो कभी

जन्मा ही नहीं वह मरता नहीं। जो मरता है वह केवल एक भूमिका थी, और भूमिकाओं का समाप्त होना ही उनका प्रयोजन है।

## शोक, नए सिरे से देखा गया

मैं यह शोक को छोटा करने के लिए नहीं प्रस्तुत करता। शोक वह प्रेम है जो तब शेष रहता है जब उसका विषय विलीन हो चुका, और यह उन सबसे ईमानदार वस्तुओं में से एक है जिन्हें कोई मनुष्य अनुभव करता है। किंतु जिस दृष्टि का मैं वर्णन कर रहा हूँ वह शोक का स्वरूप बदल सकती है। वह शोक के उस भाग को मुक्त कर सकती है जो प्रेम नहीं बल्कि विरोध है — ब्रह्मांड के विरुद्ध इस बात पर रोष कि उसने वह लिया जो "मेरा" था, यह विश्वास कि एक व्यक्तिगत अन्याय किया गया है। जब आप देख लेते हैं कि प्रियजन एक भूमिका था जिसे संसार ने एक ऋतु के लिए निभाया, पूर्णतः वास्तविक और कभी स्वामित्व में नहीं, तब प्रेम बना रह सकता है — और भी गहरा होकर — जबकि विरोध गिर सकता है। आपने समुद्र की एक लहर से प्रेम किया। लहर शांत हो गई। समुद्र कहीं नहीं गया। और जो प्रेम आपने लहर को दिया वह सदा, गुप्त रूप से, समुद्र के लिए प्रेम था।

## पूर्णता हानि नहीं है

हर घटना समाप्त होती है। यह घटनाओं में बाहर से जोड़ी गई कोई त्रासदी नहीं; यह उसी में अंतर्निहित है जो एक घटना है। घटना प्रेरण से पूर्णता तक का एक परिमित मार्ग है, और जब वह पूर्ण होती है, तो वह समाप्त है — समग्र, पूर्ण, किसी वस्तु का अभाव नहीं। हम वस्तुओं के समाप्त होने को एक घाव की भाँति बरतते हैं, किंतु विचारिए: एक वाक्य जो कभी समाप्त न होता वह कोई समृद्धतर वाक्य न होता, केवल एक असह्य वाक्य होता। एक संगीत-खंड जो हल होने से इनकार कर देता वह अपने इनकार से अधिक सुंदर न होता; हल होना ही सुंदरता है। किसी घटना की पूर्णता घटना का अपनी समग्रता को प्राप्त करना है, घटना का हमसे छीना जाना नहीं। समाप्तियों पर हमारा शोक प्रायः एक ऐसे मन का शोक है जिसने निरंतरता को मूल्य से भ्रमित कर लिया है, और इसलिए हर स्वाभाविक पूर्णता को एक चोरी की भाँति पढ़ता है।

और जब घटना पूर्ण होती है, तो उसकी निर्धारित भूमिका उसके साथ पूर्ण हो जाती है, क्योंकि भूमिका का घटना से पृथक् कोई अस्तित्व था ही नहीं। अभिनेता नाटक समाप्त होने पर नष्ट नहीं होता; वह बस पात्र होना बंद कर देता है, क्योंकि अब कोई नाटक नहीं जिसमें पात्र जी सके।

भूमिका उसी क्षेत्र में वापस विलीन होती है जिससे वह अवक्षेपित हुई थी, और यह विलय कोई डरने योग्य मृत्यु नहीं बल्कि एक विश्वास करने योग्य वापसी है — लहर उस समुद्र में शांत होती हुई जिसे उसने वास्तव में कभी छोड़ा ही नहीं था। जिसे हम कर्ता की मृत्यु कहते हैं वह केवल यह है: एक ऐसी भूमिका का स्वाभाविक विलय जिसकी घटना पूर्ण हो चुकी। वह हमें केवल इसलिए डराती है क्योंकि हमने भूमिका को अपनी समग्रता समझ लिया।

## उस भूमिका का दुःख जो समाप्त नहीं होती

यहीं हमारा लगभग समूचा दुःख वास्तव में जीता है। स्वयं घटनाओं में नहीं, जो अपने समय में आती और पूर्ण होती हैं, बल्कि पूर्ण हुई भूमिकाओं को विलीन होने देने से हमारे इनकार में। विवाद एक घंटा पहले समाप्त हो गया, किंतु मैं अब भी आहत पक्ष हूँ, उसका पूर्वाभ्यास करता हुआ, भूमिका को उसकी घटना के बंद होने के बहुत बाद तक जीवित रखता हुआ। असफलता वर्षों पहले हुई, किंतु मैं अब भी वह हूँ जो असफल हुआ, एक ऐसी भूमिका ढोता हुआ जिसकी घटना एक दशक पहले पूर्ण हो गई। हानि बीत चुकी, किंतु मैं अब भी शोकग्रस्त हूँ, उस स्वाभाविक शोक में नहीं जो सम्मान देता और मुक्त करता है, बल्कि एक थमे हुए शोक में जो विलय से इनकार करता है और इसलिए घाव को स्थायी रूप से खुला रखता है। हम पूर्ण हुई घटनाओं के प्रेतों से घिरे हैं, स्वयं द्वारा निभाए गए, उन रंगमंचों में जो बहुत पहले बंद हो गए।

यहाँ शिक्षा शोक को दबाना या उसमें जल्दबाज़ी करना नहीं, जो केवल पकड़ का एक और रूप होगा। यह उस शोक के बीच भेद को देखना है जो गति करता है — जो उठता है, पूर्णतः अनुभव किया जाता है, और जैसे वह घटना जिसकी वह है पूर्ण होती है वैसे विलीन हो जाता है — और उस शोक के बीच जो थामा गया है, जमा हुआ, अपने स्वाभाविक विलय से इनकार किया हुआ, क्योंकि हमने दुःख भोगने वाले की भूमिका से तादात्म्य बना लिया है और भयभीत हैं कि उसे छोड़ देना उसके साथ विश्वासघात होगा जो खो गया। यह विश्वासघात का ठीक उल्टा है। किसी भूमिका को उसकी घटना के पूर्ण हो जाने पर विलीन होने देना उसी व्यवस्था पर विश्वास करना है जो आरम्भ में प्रेम को सत्ता में लाई। जो विलीन नहीं होता — वह जागरूकता जिसमें यह सब प्रकट हुआ — वह कभी शोकग्रस्त नहीं थी और कभी घायल नहीं हुई, और वहीं से, थमी भूमिका से नहीं, हम अंततः उससे प्रेम कर सकते हैं जो चला गया, बिना उसके जाने से नष्ट हुए।

## वे छोटी मौतें जिन्हें हम हर दिन झेलते हैं

हम विलय को घटनाओं में सबसे दुर्लभ और सबसे भयानक की भाँति बरतते हैं, जो जीवन के अंत के लिए आरक्षित हो, जबकि वस्तुतः हम निरंतर उसमें से गुजरते हैं और बिना घबराहट के उसे झेलते हैं। वह बालक जो आप थे विलीन हो चुका; उस शरीर की एक कोशिका भी शेष नहीं, और वह समूचा संसार जिसमें वह रहता था — उसके भय, उसके निश्चय, उसका स्वयं का बोध — वापस पाने से परे जा चुका, और फिर भी आप यहाँ हैं, उस लुप्त होने से अविचलित। दस वर्ष पहले जो व्यक्ति आप थे विलीन हो चुका। वह स्व जो आज सुबह जागा पहले ही इस वाक्य को पढ़ते स्व में विलीन हो चुका, बीच की अवस्थाएँ चुकी हुई लहरों की भाँति गई हुई। हर रात, गहरी नींद में, व्यक्तिगत स्व की समूची रचना पूर्णतः विलीन हो जाती है — कोई अहं नहीं, कोई नाम नहीं, कोई कथा नहीं, कोई कर्ता नहीं — और हर सुबह वह पुनः जुड़ जाती है, और हम इस रात्रिकालीन विलय और भोर के पुनरुत्थान के इतने अभ्यस्त हैं कि हम कभी उससे डरने का सोचते तक नहीं। आप पहले ही, उस एकमात्र अर्थ में जो मायने रखता है, हजार बार मर चुके हैं, और हर मृत्यु झेल चुके हैं, क्योंकि जो झेलता है वह आरम्भ से विलीन होने वाला स्व था ही नहीं।

मैं इसे उस महान विलय को हल्का करने के लिए नहीं प्रस्तुत करता जिसे हम मृत्यु कहते हैं, बल्कि उसके असंख्य छोटे सजातियों के बीच रखकर उसके एकल आतंक को ढीला करने के लिए। यदि बालक के विलय ने आपको विलुप्त नहीं किया, यदि नींद में स्व के रात्रिकालीन विलय ने आपको विलुप्त नहीं किया, तो शायद अंतिम विलय वह परम विलोप नहीं जिसकी भयभीत मन कल्पना करता है, बल्कि एक ऐसी गति का सबसे बड़ा उदाहरण है जिसमें से आप जीवन-भर सुरक्षित गुजरे हैं — एक भूमिका पूर्ण होती हुई, एक वेशभूषा रखी जाती हुई, लहर उस समुद्र में शांत होती हुई जिसे उसने कभी छोड़ा ही नहीं। वह साक्षी जिसने बालक को विलीन होते देखा, जो हर रात के लुप्त होने में बना रहता है, जो आपकी हजार मौतों में अपरिवर्तित बचा रहा — यही वह है जिसकी ओर परंपराएँ संकेत करती हैं जब वे उसकी बात करती हैं जो मरता नहीं। आपके जीवन की हर सुबह में इसका प्रमाण है।

## वह शोक जो सम्मान देता है, वह शोक जो जकड़ता है

मुझे एक बार फिर शोक पर लौटने दीजिए, बड़ी सावधानी से, क्योंकि इस पुस्तक में कुछ भी कम अनुभव करने की सलाह के रूप में नहीं सुना जाना चाहिए। एक शोक है जो सम्मान देता



है और एक शोक है जो जकड़ता है, और यह भेद सब कुछ है। जो शोक सम्मान देता है वह पूर्णतः उठता है, पूर्णतः अनुभव किया जाता है, शरीर और दिनों में से मौसम की भाँति गुजरता है, और जैसे वह घटना जिसकी वह है पूर्ण होती है वैसे क्रमशः पूर्ण होता है — इसलिए नहीं कि प्रेम भुला दिया गया बल्कि इसलिए कि प्रेम को वास्तविक बने रहने के लिए अब तीव्र घाव की आवश्यकता नहीं। यह शोक पवित्र है; यह हानि के प्रति हृदय की उचित प्रतिक्रिया है, और उसे बीच में काट देना एक हिंसा होगी। जो शोक जकड़ता है वह कुछ और है: वह शोकग्रस्त की भूमिका को विलीन होने देने से इनकार है, घाव से उस अंतिम शेष बंधन के रूप में चिपकना जो गया उसके साथ, यह विश्वास कि दुःख रोक देना मृतक के साथ विश्वासघात होगा। यह शोक हानि का सम्मान नहीं करता; यह उसे ममीकृत कर देता है, और जीवित शोकग्रस्त को भी उसके साथ ममीकृत कर देता है। यहाँ शिक्षा केवल भेद को देखना है — सम्मान देने वाले शोक को स्वतंत्रता से, पूरी तरह से, गुजरने देना, उस पर विश्वास करते हुए कि वह अपने समय में पूर्ण होगा, और जकड़ने वाले शोक को वह पहचानना जो वह है: प्रेम नहीं, बल्कि कर्ता का एक पूर्ण हुई घटना को पूर्ण होने देने से इनकार, एक भूमिका को जीवित रखने के लिए एक घाव खुला रखता हुआ।

## अनित्यता उपहार के रूप में

हम वस्तुओं की अनित्यता को जीवन के हृदय का महान घाव मानते हैं — यह तथ्य कि जिससे हम प्रेम करते हैं वह सब बीत जाएगा, कि हर आनंद उधार पर है, कि कुछ भी रखा नहीं जा सकता। और इसमें वास्तविक शोक है, जिसे किसी दर्शन को तर्क से मिटाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। किंतु अनित्यता को दूसरी ओर से विचारिए, जो हम लगभग कभी नहीं करते। वही अनित्यता जो अच्छे को लेती है, बुरे को भी लेती है। वह पीड़ा जो अभी असह्य लगती है, अनित्य है; वह बीतेगी, विलीन होगी, पूर्ण होगी, ठीक वैसे जैसे आनंद होगा। दुःखी की भूमिका हर अन्य भूमिका की भाँति अनित्य है। यदि कुछ भी समाप्त न हो सकता, तो कोई शोक कभी न भर सकता, कोई घाव कभी न बंद हो सकता, कोई अँधेरी ऋतु कभी प्रकाश को स्थान न दे सकती; हम सदा के लिए जिस भी अवस्था में पकड़े गए उसी में फँसे रहते। अनित्यता केवल वह चोर नहीं जो अच्छे को लेती है; वह वह करुणा भी है जो बुरे को मुक्त करती है, वही तंत्र जिससे हर पूर्ण हुई घटना अगली के लिए स्थान बनाती है, वह घुमाव जो सुनिश्चित करता है कि कोई शीत-ऋतु अंतिम नहीं।

इस ढंग से देखी गई, अनित्यता एक अर्थपूर्ण जीवन की शत्रु नहीं बल्कि उसकी शर्त है। अच्छे की अमूल्यता उसकी अनित्यता से अविभाज्य है; एक ऐसा आनंद जो खोया न जा सकता वह अमूल्य न होता, जैसे एक स्वर जो कभी समाप्त न होता वह संगीत न होता। और बुरे की झेले-जाने-योग्यता उसी अनित्यता से सुनिश्चित है; जो सबसे बुरा घंटा आपने कभी जीया वह पूर्ण हुआ और आपको मुक्त किया, जैसे यह होगा। जो पकड़ हमारा दुःख उत्पन्न करती है वह, मूल में, अनित्यता के विरुद्ध एक युद्ध है — यह माँग कि अच्छा रखा जाए और बुरा कभी हुआ ही न हो — और यह एक ऐसा युद्ध है जिसे हम जीत नहीं सकते, उसी घुमाव के विरुद्ध जो समूचे को जीवित रखता है। विलय के साथ संधि करना वास्तविकता के उस एक लक्षण से लड़ना बंद करना है जो हमें सब कुछ देता है और सुनिश्चित करता है कि कुछ भी, हमारे दुःख सहित, कभी अंतिम नहीं।

## स्मरण किए जाने की इच्छा

विलय के भय के नीचे प्रायः एक शांत तृष्णा छिपी होती है जो अपनी जाँच की पात्र है: स्मरण किए जाने की इच्छा, एक छाप छोड़ने की, अपनी भूमिकाओं की पूर्णता के परे किसी प्रकार बने रहने की — संतानों में, कृतियों में, ख्याति में, विरासत में। हम विलय के विरुद्ध स्मारक बनाते हैं, इस आशा में कि यदि स्व को समाप्त होना ही है, तो कम से कम उसका चिह्न जारी रहे, कि हमें स्मृति में थामा जाए जब हम स्वयं को और नहीं थाम सकते। यह इच्छा कोमल और मानवीय है और मैं इसका उपहास नहीं करता। किंतु स्पष्ट देखी जाए तो यह कर्ता की पकड़ है जो कब्र के परे तक फैली है — भूमिका को स्थायी बनाने का एक अंतिम प्रयास, उस विलय से इनकार जिससे हर भूमिका गुजरती है, एक ऐसे स्व के लिए एक निरंतरता सुरक्षित करना जो सदा एक वेशभूषा था और कभी त्वचा नहीं। स्मारक पत्थर में उकेरा गया व्यक्तिगत खाता है, इस आशा में कि वह लेखाकार से अधिक जीएगा।

और स्मारक भी नहीं टिकते। सबसे गहरे उकेरे गए नाम अपनी बारी में भुला दिए जाते हैं; कृतियाँ चूर हो जाती हैं या लाँघ ली जाती हैं; महानतम की भी स्मृति, ब्रह्मांडीय पंचांग पर, अंतिम सेकंड के अंतिम अंशों में मिट जाती है। अपनी शांति को स्मरण किए जाने पर दाँव लगाना उसी रेत पर निर्माण करना है जिस पर पकड़ का हर अन्य रूप, और उसी ढंग से दुःख भोगना है जब ज्वार आता है, जैसे ज्वार सदा आता है। यह अध्याय जो स्वतंत्रता देता है वह यहाँ तक, सबसे सूक्ष्म पकड़ तक पहुँचती है: यह देखना कि बने रहने की इच्छा एक पूर्ण हुई भूमिका की एक

और पकड़ है, और कि वह जागरूकता जिसने भूमिकाएँ निभाईं उसे किसी स्मारक की आवश्यकता नहीं, क्योंकि वह कभी वह भूमिका थी ही नहीं जिसे स्मारक संरक्षित करने का प्रयास करता था। आप भुला दिए जाएँगे, जैसे हर कोई भुला दिया जाता है, और यह उसे नहीं छूता जो आप सबसे गहराई से हैं, जो आरम्भ से स्मरण किया गया स्व था ही नहीं, और जिस तक भुलाया जाना पहुँच ही नहीं सकता।

## एक दृश्य: सेवानिवृत्ति के बाद की सुबह

एक व्यक्ति चालीस वर्ष के कार्य के बाद पहले सोमवार को जागता है, और वह भूमिका जिसने उसके समूचे जाग्रत जीवन को संगठित किया — वह जिसकी आवश्यकता है, जो निर्णय करता है, जिसे उसके पदनाम से संबोधित किया जाता है — रातों-रात विलीन हो चुकी है। उसके व्यवसाय की घटना पूर्ण हो चुकी है। और वह, अपने ही विस्मय के साथ, खोज लेता है कि वह नहीं जानता कि वह उसके बिना कौन है। वह मौन घर में भटकता है। वह एक ऐसे इनबॉक्स को जाँचता है जो अब नहीं भरता। वह, उस अवकाश के नीचे जिसका उसे आनंद लेना चाहिए था, एक ऐसा शोक अनुभव करता है जिसे नाम देने में उसे लज्जा आती है, क्योंकि कुछ भी बुरा नहीं हुआ; वह बस एक भूमिका से अधिक जी गया है और अभी तक नहीं समझा कि भूमिका कभी उसकी समग्रता थी ही नहीं।

उसका दुःख सटीक और शिक्षाप्रद है। यह घटना का दुःख नहीं — सेवानिवृत्ति कोई त्रासदी नहीं — बल्कि एक ऐसे स्व का दुःख है जो किसी भूमिका से इतनी पूर्णता से जुड़ गया था कि भूमिका की स्वाभाविक पूर्णता एक मृत्यु-सी लगती है। उसने वेशभूषा को त्वचा समझ लिया था, उसे इतने लम्बे समय पहना कि भूल गया कि वही था जो उसे पहन रहा था, और अब जब दृश्य बंद हो गया है वह नेपथ्य में यह विश्वस्त खड़ा है कि वह, और न केवल भाग, समाप्त हो गया। मार्ग न तो भूमिका को पुनः पाने में है, न शून्य को भरने के लिए किसी प्रतिस्थापन में लपकने में, बल्कि यह खोजने में कि वह उस रिक्त अंतराल में क्या है जब कोई भूमिका नहीं निभाई जा रही — वह जागरूकता जिसने चालीस वर्ष पदनाम पहना और कभी पदनाम नहीं थी, जो इस मौन सोमवार सुबह ठीक वैसी ही यहाँ है जैसी उसके कार्य के पहले दिन थी, भाग की पूर्णता से अछूती। वह खोज, जो उस विलय द्वारा उस पर थोपी गई जिससे वह डरता था, वही स्वतंत्रता है जो विलय प्रस्तुत कर रहा था।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

हर घटना समाप्त होती है, और जब वह समाप्त होती है तो उसकी भूमिकाएँ विलीन हो जाती हैं, क्योंकि उससे पृथक् उनका कोई अस्तित्व नहीं। हम स्वयं घटनाओं में दुःख नहीं भोगते, जो अपने समय में पूर्ण होती हैं, बल्कि पूर्ण हुई भूमिकाओं को विलीन होने देने से अपने इनकार में — एक भूमिका को जीवित रखने के लिए एक घाव खुला रखते हुए।

एक पूर्ण हुई घटना खोजिए जिसे आप अब भी निभा रहे हैं — एक पुराना विवाद जिसमें आप अब भी आहत पक्ष हैं, एक असफलता जिसके आप अब भी असफल हैं। पूछिए कि क्या उसका दृश्य बहुत पहले बंद नहीं हो चुका। फिर, कोमलता से और बिना बल लगाए, देखिए कि क्या आप भूमिका को रख सकते हैं, जैसे एक अभिनेता पटाक्षेप होने पर एक भाग को रख देता है।

## संचालन के स्तर

---

आपका जीवन एक बड़ी घटना के भीतर घोंसले की भाँति बैठी एक घटना है, जो एक और भी बड़ी घटना के भीतर बैठी है। आप एक ऐसी स्वर-रचना के एक सच्चे स्वर हैं जिसे आप कभी पूर्ण रूप से नहीं सुनेंगे।

— पैमाने पर टिप्पणी

हम घटनाओं की बात ऐसे करते रहे हैं मानो वे विलग हों — एक भेंट, एक विश्वासघात, एक उपचार। किंतु कोई घटना सचमुच विलग नहीं। हर घटना एक बड़ी घटना के भीतर घोंसले की भाँति बैठी है, जो स्वयं एक और भी बड़ी घटना में एक भूमिका है, संचालन के एक आरोही पदानुक्रम में जो, जहाँ तक हम बता सकते हैं, ब्रह्मांड की सबसे बड़ी संरचनाओं तक ऊपर पहुँचता है।

अपने शरीर की एक कोशिका के भीतर एक परमाणु को विचारिए। परमाणु अपनी ही घटनाओं में संलग्न है — इलेक्ट्रॉन सुलझते हुए, बंध बनते और टूटते हुए। किंतु परमाणु की घटनाएँ कोशिका की घटनाओं के भीतर घोंसले की भाँति बैठी हैं, जो शरीर की घटनाओं के भीतर बैठी हैं, जो आपके जीवन की घटनाओं के भीतर बैठी हैं, जो आपके समाज, आपकी प्रजाति, आपके ग्रह, आपके तारे की घटनाओं के भीतर बैठी हैं। प्रत्येक पैमाने पर, छोटी घटना अपने आप में वास्तविक और पूर्ण है, और साथ ही वह बड़ी घटना के संगीत में एक अकेला स्वर है। इलेक्ट्रॉन का समाधान उसका समूचा संसार है, और वह आपकी हृदय-धड़कन में एक अत्यल्प योगदान भी है।

## संचालन के पैमाने

— घटना के भीतर की घटना —



हर घटना एक बड़ी के भीतर बसी है। आपकी भूमिका वास्तविक है — और वह एक ऐसी संगीत-रचना का स्वर है जिसे आप सुन नहीं सकते।

चित्र 6. संचालन के स्तर, छल्लों की भाँति घोंसले में बैठे। परमाणु की घटनाएँ पृथ्वी और जीवन के भीतर बैठती हैं, सूर्य और उसके अनुचरों के भीतर, आकाशगंगीय व्यवस्था के भीतर, उस महा-आकर्षक के भीतर जो शायद आकाशगंगाओं के समूचे गुच्छों को संचालित करता है। हर घटना अपने आप में पूर्ण है और एक ऐसी स्वर-रचना के भीतर एक स्वर भी है जिसे वह सुन नहीं सकती।

## महा-आकर्षक

सबसे बड़े प्रेक्षित पैमाने पर, हमारी आकाशगंगा और हज़ारों अन्य अवकाश के एक ऐसे क्षेत्र की ओर प्रवाहित हो रही हैं जिसे खगोलविद महा-आकर्षक कहते हैं — द्रव्यमान का एक विशाल संकेंद्रण, जिसका बहुत भाग हमारी अपनी आकाशगंगा के तल के पीछे छिपा है,

जिसका गुरुत्व सैकड़ों लाख प्रकाश-वर्षों भर अपने चारों ओर की हर वस्तु को भीतर खींच रहा है। हम उसे पूर्ण रूप से नहीं समझते; वह आंशिक रूप से दृष्टि से ढका है, और काफ़ी औचित्य से, ठीक उसी आकाशगंगा द्वारा जिसके भीतर हम रहते हैं। किंतु हम उसके खिंचाव को माप सकते हैं। समूची आकाशगंगाएँ, अपने सब तारों और लोकों और — जहाँ तक हम जानते हैं — अपने जीवित, दुःख भोगते, प्रयत्नशील प्राणियों के साथ, उसकी ओर वहन की जा रही हैं, उतनी ही असहाय और उतनी ही सुघड़ता से जितनी एक नदी पर एक पत्ता।

मुझे महा-आकर्षक में संचालन के उच्चतम पैमाने का एक लगभग असह्य रूप से उपयुक्त चित्र मिलता है। यहाँ विशाल व्यवस्था-शक्ति का एक केंद्र है, हमारे लिए अधिकतर अदृश्य, जो स्वयं आकाशगंगाओं को एक ऐसे मार्ग पर खींच रहा है जिसे उनमें से किसी ने नहीं चुना और जिसका कोई प्रतिरोध नहीं करता, एक ऐसे पैमाने पर गति को संगठित करता हुआ जो हर मानवीय चिंता को अदृश्यता तक बौना कर देता है। यदि उस पैमाने पर घटनाएँ हैं — महा-घटनाएँ, समूचे आकाशगंगीय गुच्छों के संचालन — तो एक अकेली आकाशगंगा के भीतर जो कुछ घटित होता है, जिसमें एक ग्रह का समूचा इतिहास और उसके सब प्राणियों का सब कर्म सम्मिलित है, वह एक ऐसी घटना में एक अकेला छोटा योगदान देता स्वर हो सकता है जो इतनी बड़ी है कि हम उसका आकार प्रत्यक्ष नहीं कर सकते, केवल उसका खिंचाव।

### पैमाना व्यक्तिगत को क्यों घुला देता है

इस घोंसलेपन के साथ एक क्षण ठहरिए, क्योंकि यह एक प्रकार की औषधि देता है। वह शोक जो ब्रह्मांड का केंद्र लगता है, अगले पैमाने ऊपर, एक परिवार के जीवन में एक गति है; अगले पर, एक समुदाय में एक तरंग; अगले पर, अदृश्य। यह आपके शोक का अवमूल्यन नहीं है — अपने ही पैमाने पर वह समग्र और वास्तविक है। यह उसका पुनर्स्थापन है। वही घटना जो एक पैमाने पर सब कुछ है, अगले पर एक अकेला स्वर है, और महा-आकर्षक के पैमाने पर वह पूर्णतः प्रत्यक्षण की दहलीज़ से नीचे है।

और यदि आपका शोक एक ऐसी स्वर-रचना में एक स्वर है जिसे आप सुन नहीं सकते, तो आपकी विजय भी है, और आपका अपराध-बोध भी, और "मेरा कर्म" का समूचा तंत्र भी। वह व्यक्तिगत खाता जो आपके अपने जीवन के पैमाने पर इतना परम लगता है, दो या तीन पैमाने ऊपर, सुपाठ्य तक नहीं। कोई ब्रह्मांडीय लेखाकार आपकी निजी बही नहीं रख रहा, क्योंकि जिस पैमाने पर असली संचालन घटित होता है, वहाँ व्यक्तिगत बहियाँ माप की इकाई नहीं।

माप की इकाई समूची गति है, और समूची गति को इससे सरोकार नहीं कि वह किसका स्वर था। उसे केवल इससे सरोकार है कि संगीत जारी रहे — और संगीत सदा जारी रहता है।

यह निराशा का नहीं बल्कि एक विशाल, उच्छ्वसित राहत का कारण है। आप एक वास्तविक स्वर हैं, सचमुच ध्वनित, सचमुच योगदान देते हुए। और आप, सदा के लिए, रचयिता होने के असंभव भार से मुक्त हैं। रचना उन पैमानों पर घटित हो रही है जिन्हें आप कभी नहीं देखेंगे, एक ऐसे संचालन द्वारा जो अत्यधिक रूप से अदृश्य है, एक ऐसे समाधान की ओर जिस पर आप ठीक इसलिए विश्वास कर सकते हैं क्योंकि वह आप पर निर्भर नहीं। अगले अध्याय में हम इस संचालन का सबसे घनिष्ठ प्रमाण देखेंगे — वह सरेखण जो हमारे ऊपर के आकाश को और, प्राचीनतम अंतर्ज्ञानों से, नीचे के जीवन को संचालित करता है।

### घटनाओं के भीतर घोंसले में बैठी घटनाएँ

कोई घटना अकेली नहीं खड़ी। किसी भी घटना को निकट से देखिए और आप पाते हैं कि वह छोटी घटनाओं से बनी है; उससे पीछे हटिए और आप पाते हैं कि वह एक बड़ी घटना के भीतर एक अकेली छोटी गति है। रात्रिभोज पर वह विवाद सौ छोटी घटनाओं से बना था — हर शब्द, हर दृष्टि, हर बढ़ती नब्ज — और स्वयं एक विवाह की बड़ी घटना के भीतर एक छोटी घटना थी, जो दो परिवारों की बड़ी घटना के भीतर एक घटना है, जो एक संस्कृति, एक पीढ़ी, एक प्रजाति, एक ग्रह की लम्बी कथा के भीतर बैठी है। वास्तविकता पृथक घटित होनों का एक समतल क्षेत्र नहीं। वह घटनाओं के भीतर घोंसले में बैठी घटनाएँ हैं, रूसी गुड़ियों के एक समुच्चय की भाँति जिसमें न कोई सबसे छोटी गुड़िया और न कोई सबसे बड़ी, प्रत्येक अपने आप में पूर्ण और प्रत्येक उस घटना के भीतर एक अकेला स्वर जो उसे धारण करती है।

यह घोंसलापन व्यक्तिगत का चुपचाप विनाश है। किसी घटना के मेरी होने के लिए, उसे परिसीमित, पृथक्करणीय होना होगा, एक ऐसी वस्तु जिसके चारों ओर मैं एक वृत्त खींच सकूँ और जिसका दावा कर सकूँ। किंतु कहीं ऐसी कोई सीमा नहीं। जिस घटना को आप अपनी कहकर दावा करेंगे वह छोटी घटनाओं से बनी है जिन्हें आपने नहीं रचा और बड़ी घटनाओं में निहित है जिन्हें आप प्रत्यक्ष नहीं कर सकते, और कोई स्तर नहीं जिस पर वह समग्र की एक गति के बजाय एक विलग संपत्ति बन जाए। "यह घटना किसकी है?" पूछना ऐसा है जैसे पूछना कि एक बहती नदी में एक विशेष भँवर किसका है। भँवर वास्तविक है; आप उसकी ओर संकेत कर सकते हैं; उसका एक आकार और एक अवधि है। किंतु वह कोई संपत्ति नहीं। वह नदी है,



स्थानीय रूप से, क्षण-भर के लिए, भँवर बनती हुई — और फिर वह नदी ही है, आगे बहती हुई।

## महा-घटना और बहु-ब्रह्मांड

घोंसलेपन का जहाँ तक हमारा ज्ञान ले जाए वहाँ तक ऊपर अनुसरण कीजिए और पैमाना चक्कर खिला देने वाला हो जाता है। आपका जीवन आपकी प्रजाति की घटना के भीतर एक घटना है; आपकी प्रजाति पृथ्वी पर जीवन की घटना के भीतर; पृथ्वी सूर्य और उसके अनुचरों की घटना के भीतर; सूर्य आकाशगंगा के धीमे घुमाव के भीतर; आकाशगंगा महा-आकर्षक की ओर हज़ारों आकाशगंगाओं के विशाल प्रवाह के भीतर; और वह, शायद, उन पैमानों पर घटनाओं के भीतर जिनके लिए हमारे पास कोई उपकरण नहीं और मुश्किल से ही शब्द हैं — ब्रह्मांड की सबसे बड़ी संरचनाएँ, और उनके परे, यदि सट्टेबाज़ भौतिकविद् सही हैं, तो एक बहु-ब्रह्मांड की अकल्पनीय घटना जिसमें हमारा समूचा ब्रह्मांड असंख्य अन्यो के बीच एक अकेला घटित होना है। मैं बहु-ब्रह्मांड को केवल उसी पैटर्न की दूरतम पहुँच के रूप में प्रस्तुत करता हूँ, स्थापित तथ्य के रूप में नहीं; भौतिकी सचमुच अनिश्चित है। किंतु स्वयं पैटर्न, जहाँ तक हम देख सकते हैं वहाँ तक ऊपर, घटनाओं के भीतर घटनाओं का अंतहीन घोंसलापन है।

अब अपने निजी कर्म को उस पैमाने के सामने रखिए। वह शिकायत जिसे आपने पाला, वह अपराध-बोध जिसे आपने ढोया, वह परिणाम जिसकी आपने क्षेत्र से माँग की — उसे महा-आकर्षक की ओर आकाशगंगाओं के प्रवाह के बगल में रखिए, एक लाख सूर्यों के मौन प्रवास के बगल में, और ईमानदारी से पूछिए कि क्या ब्रह्मांड वह व्यक्तिगत खाता रख रहा है जिसकी आपने कल्पना की है। ऐसा नहीं कि उस विशालता के सामने आपका जीवन निरर्थक है; वह गलत पाठ होगा, और एक कटु पाठ। ऐसा है कि आपका जीवन उस विशालता में एक सच्चा सहभागी है, अथाह पैमाने की एक स्वर-रचना में एक वास्तविक स्वर — और कि वह छोटा, चिंतित, बही-खाता रखने वाला स्व जिसे आपने स्वयं समझा वह आपकी सहभागिता को मापने के लिए सही इकाई था ही नहीं। आप किसी निजी खाते के बहीदार नहीं। आप समग्र की एक गति हैं, प्रत्यक्ष से बड़ी गतियों में घोंसले में बैठी, और वह होना कहीं अधिक महान वस्तु है।

## न कोई सबसे छोटी गुड़िया, न कोई सबसे बड़ी

घोंसले में बैठी गुड़ियों का चित्र उपयोगी है किंतु एक संबंध में भ्रामक, क्योंकि चित्रित समुच्चय के केंद्र में एक सबसे छोटी गुड़िया और बाहर एक सबसे बड़ी है, और वास्तविकता में कोई भी नहीं। किसी भी घटना में उतरिए और आप अंतहीन छोटी घटनाएँ पाते हैं — कोशिका की घटना आण्विक घटनाओं से बनी आण्विक परमाण्विक घटनाओं से बनी अवपरमाण्विक घटनाओं से बनी, और नीचे कोई अविभाज्य अंतिम घटित होने का फ़र्श नहीं जिसके नीचे और कुछ न हो। किसी भी घटना से ऊपर चढ़िए और आप अंतहीन बड़ी पाते हैं — या कम से कम जहाँ तक हमारा ज्ञान पहुँचता है, और फिर उसके परे और पैमानों का संदेह। कोई अंतरतम घटना नहीं जो घटित होने का सच्चा परमाणु हो, और कोई बाह्यतम घटना नहीं जो शेष सब को धारण करे और स्वयं किसी से धारित न हो। घोंसलापन प्रत्यक्ष की सीमा से नीचे और कल्पना की सीमा से ऊपर तक जाता है, और किसी भी स्तर पर वह विलग, परिसीमित, स्वामित्व-योग्य इकाई नहीं मिलती जिसकी व्यक्तिगत स्व को यह कहने के लिए आवश्यकता है कि यह घटना मेरी है।

यह अंतहीनता चक्कर का नहीं बल्कि मुक्ति का कारण है। आपका कर्म व्यक्तिगत क्यों नहीं हो सकता, इसका कारण अब एक नैतिक उपदेश के बजाय एक संरचनात्मक तथ्य के रूप में दृश्य है: वास्तविकता का कोई स्तर नहीं जिस पर कोई घटना पर्याप्त परिसीमित हो कि उसका स्वामित्व लिया जा सके। स्वामित्व को एक किनारा चाहिए — एक स्वच्छ सीमा जो चिह्नित करे कि स्वामित्व वाली वस्तु कहाँ रुकती है और शेष संसार कहाँ आरम्भ होता है। घटनाओं के घोंसलेपन में कहीं ऐसे कोई किनारे नहीं; हर घटना उन छोटी घटनाओं में बहती है जो उसे रचती हैं और उन बड़ी घटनाओं में जो उसे धारण करती हैं, एक निर्बाध निरंतरता जिसमें वह वृत्त खींचने का कोई स्थान नहीं जो किसी घटित होने को आपका बना दे। आप अपने कर्म की सीमा खोजने में असफल नहीं हो रहे। खोजने को कोई सीमा है ही नहीं, क्योंकि ब्रह्मांड पृथक स्वामित्व-योग्य टुकड़ों से नहीं बल्कि घोंसले में बैठी गति से बना है, नीचे तक और ऊपर तक।

## नदी में एक भँवर

तो, स्वयं को इस चित्र में थामिए: आप एक बहती नदी में एक भँवर हैं। भँवर पूर्णतः वास्तविक है — आप उसे देख सकते हैं, उसकी ओर संकेत कर सकते हैं, उसे एक पहचानने योग्य आकार, एक यहाँपन, एक अवधि के साथ कुछ समय तक बना रहते देख सकते हैं। वह कुछ-नहीं नहीं

है; वह नदी का एक सच्चा लक्षण है, प्रवाह में एक वास्तविक स्थानीय पैटर्न। किंतु वह कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसे नदी धारण करती हो, जैसे कोई पत्थर जिसे वह वहन करती है; वह नदी है, स्थानीय रूप से, क्षण-भर के लिए, भँवर बनती हुई। उसके पास उसमें से गुजरते जल से पृथक अपना कोई द्रव्य नहीं; वही जल जो इस क्षण भँवर है अगले क्षण आगे बह चुका, नए जल से प्रतिस्थापित जो पैटर्न को धारण कर लेता है। और जब वे परिस्थितियाँ बीत जाती हैं जो उसे क्रायम रखती हैं, तो भँवर किसी त्रासद अर्थ में मरता नहीं — वह बस शांत हो जाता है, और वहाँ नदी है, आगे बहती हुई, कुछ भी न खोए, क्योंकि भँवर कभी कोई पृथक वस्तु था ही नहीं जो खोई जा सकती। तो आपके साथ। वास्तविक, आकार लिए, कुछ समय बना रहता हुआ, अंतर्निहित व्यवस्था के प्रवाह में एक सच्चा पैटर्न — और कभी कोई पृथक संपत्ति नहीं, कभी उस जल का स्वामी नहीं जो गुजरता है, कभी कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसे नदी का आगे-बहना सचमुच नष्ट कर सके।

## गहन काल का पैमाना

ब्रह्मांड के इतिहास को एक अकेले वर्ष में संकुचित कीजिए, एक तरकीब जिसका खगोलविद अकल्पनीय को क्षण-भर के लिए ग्राह्य बनाने को उपयोग करते हैं, और अनुपात सब कुछ पुनर्व्यवस्थित कर देते हैं। महाविस्फोट जनवरी का पहला क्षण है। हमारी आकाशगंगा वसंत में बनती है। सूर्य और पृथ्वी देर ग्रीष्म या आरम्भिक शरद तक प्रकट नहीं होते। जीवन उठता है, किंतु उस लम्बे वर्ष के अधिकांश में वह एककोशिकीय बना रहता है; जटिल प्राणी मध्य-दिसंबर तक समुद्रों में भीड़ नहीं लगाते। डायनासोर अंतिम सप्ताह में आते और चले जाते हैं। समूचा मानव-इतिहास — हर साम्राज्य, हर शास्त्र, हर युद्ध, हर जीवन जो कभी जीया और शोकांत किया गया — इकतीस दिसंबर की आधी रात से पूर्व के अंतिम सेकंडों को घेरता है। आपका अपना जीवन, उस पंचांग के सामने, वर्ष के बदलने से पूर्व के अंतिम क्षण का एक अंश है। यह आपको कुचलने के लिए नहीं कहा गया। यह व्यक्तिगत खाते को उसका सच्चा अनुपात देने के लिए कहा गया, और कोमलता से पूछने के लिए कि क्या वह ब्रह्मांडीय बही जिसकी आपने अपना अंक रखते हुए कल्पना की, संभवतः इतनी पुरानी और इतनी विशाल वास्तविकता का आकार हो सकती है।

और फिर भी — यहाँ वह मोड़ है जो इसे केवल अवमूल्यन बनने से रोकता है — आप उस समूचे वर्ष से बने हैं। आपके शरीर के परमाणु उन तारों में गढ़े गए जो ब्रह्मांडीय पंचांग के शरद

में जीए और मरे; आपके हाथों का कार्बन, आपके रक्त का लोहा, आपकी श्वास की ऑक्सीजन तारकीय भट्टियों में पकाई गई और पृथ्वी के अस्तित्व में आने से बहुत पहले तारकीय मृत्युओं द्वारा बिखेरी गई। आप गहन काल की विशालता के सामने एक कण नहीं हैं; आप गहन काल हैं, क्षण-भर के लिए एक ऐसे रूप में एकत्र जो पीछे मुड़कर देख सकता है और उस वर्ष पर चिंतन कर सकता है जिसने उसे बनाया। वह व्यक्तिगत स्व जो चिंतित खाता रखता है अंतिम क्षण की एक कल्पना है। जो आप वास्तव में हैं वह ब्रह्मांड जितना पुराना है, उसके प्राचीनतम पदार्थ से बना, उसके समूचे इतिहास में एक सच्चा सहभागी — जो उस छोटे बहीदार से कहीं अधिक विचित्र और भव्य वस्तु है जो आपने स्वयं को समझा।

## मध्य पैमाने का विशेषाधिकार

हम वास्तविकता का एक विशेष पैमाना घेरते हैं — लगभग बीचों-बीच, जैसा प्रकट होता है, उन सबसे छोटी और सबसे बड़ी वस्तुओं के बीच जिन्हें हम जानते हैं, लघुगुणकीय पैमाने पर एक परमाणु की अपेक्षा एक आकाशगंगा के आकार के अधिक निकट, विशाल चरम सीमाओं के एक ब्रह्मांड में एक मध्यम-आकार का प्राणी। और हम अपने पैमाने को विशेषाधिकृत समझ बैठते हैं, असली, वह आकार जिस पर वस्तुएँ वास्तव में मायने रखती हैं, केवल इसलिए कि वह हमारा है। जो घटनाएँ हमें बड़ी प्रतीत होती हैं — एक मानव-जीवनकाल, एक मानवीय शिकायत, एक मानवीय उपलब्धि — केवल मानव-पैमाने पर बड़ी हैं; परमाणु के लिए वे अकल्पनीय रूप से विशाल और धीमी हैं, आकाशगंगा के लिए अकल्पनीय रूप से छोटी और क्षणिक। कोई वस्तुनिष्ठ रूप से विशेषाधिकृत पैमाना नहीं जिस पर घटनाएँ स्वामित्व में लिए जाने, रखे जाने, या किसी ब्रह्मांडीय बही में गिने जाने के लिए सही आकार की बन जाएँ। केवल हर पैमाने का यह संकीर्ण विश्वास है कि उसके अपने आयाम ही वास्तविकता का सच्चा माप हैं।

इसे देखना हमें हीन करने की आवश्यकता नहीं रखता, और यहाँ मोड़ है। यह पहचानना कि हमारा पैमाना विशेषाधिकृत नहीं, यह निष्कर्ष निकालना नहीं कि हम नगण्य हैं — वह तो केवल वही संकीर्णता उलटी होगी, स्वयं को आकाशगंगा के मापदंड से मापना और स्वयं को छोटा पाना। यह पैमाने से महत्ता का श्रेणीकरण करने के समूचे उपक्रम को छोड़ना है, और यह पहचानना कि एक भोजन का पकाना और एक आकाशगंगा का घूमना दोनों, समान रूप से, गति में आई व्यवस्था हैं, उस एकमात्र अर्थ में न बड़े न छोटे जो संकीर्ण नहीं। जो मध्य पैमाना

हम घेरते हैं वह सब वस्तुओं का माप नहीं, किंतु वह सचमुच हमारा घर है, हमारी वास्तविक सहभागिता का वास्तविक स्थान, न ब्रह्मांडीय रूप से बड़ा न ब्रह्मांडीय रूप से छोटा बल्कि बस, पूर्णतः, जहाँ हम हैं — और मानव-पैमाने पर भली-भाँति जीए गए एक जीवन को आकाशगंगा के पैमाने से किसी मान्यता की आवश्यकता नहीं, क्योंकि आकाशगंगा वह अंक रख ही नहीं रही थी जिसकी हमने कल्पना की।

### एक दृश्य: दूरबीन से होकर

एक युवती, सप्ताहों से उसे खाए जा रहे एक विश्वासघात के बाद निद्राहीन, एक मित्र द्वारा एक पहाड़ी पर एक छोटी वेधशाला में ले जाई जाती है। वह अनिच्छा से जाती है; उसकी शिकायत घर छोड़ आने के लिए बहुत बड़ी और बहुत अत्यावश्यक लगती है। खगोलविद, एक वृद्ध जो कम बोलता है, दूरबीन को एक धुँधले धब्बे की ओर घुमाता है और उसे देखने को आमंत्रित करता है। वह एक आकाशगंगा है, वह उसे बताता है, एक लाख प्रकाश-वर्ष चौड़ी, पच्चीस लाख वर्ष दूर — जो प्रकाश इस क्षण उसकी आँख में प्रवेश कर रहा है वह उससे उसकी प्रजाति के अस्तित्व में आने से पूर्व निकला था। वह बहुत देर तक देखती है। और कुछ जिसे वह दोनों हाथों से पकड़े हुए थी, बहुत हल्के से, स्वयं ही ढीला हो जाता है।

यह कहना झूठ होगा कि उसकी शिकायत लुप्त हो गई, या कि विश्वासघात मायने रखना बंद हो गया; वह अब भी मायने रखता था, और ठीक ही। किंतु उसका पैमाना चुपचाप स्वयं को पुनर्व्यवस्थित कर चुका था। ऐसी सौ अरब आकाशगंगाओं के बगल में रखी गई, सब एक ऐसे आकर्षक की ओर मिलकर प्रवाहित होती हुई जो इतना विशाल है कि उसका कोई दृश्य केंद्र नहीं, वह व्यक्तिगत खाता जिसे वह इतनी व्यग्रता से रख रही थी निरर्थक नहीं हुआ — वह गलत पाठ है, और एक निर्दय पाठ। वह आनुपातिक हुआ। उसने, बिना शब्दों के, देखा कि वह उस नाटक से अथाह रूप से बड़ी किसी वस्तु में एक सच्ची सहभागी है जिसे उसने अपने जीवन की समग्रता समझ लिया था, और कि वह छोटा, भिंचा, बही-खाता रखने वाला स्व जो अपने विश्वासघाती के विरुद्ध अंक रख रहा था, इतनी विशालता में उसका स्थान मापने के लिए बस गलत उपकरण था। वह घर हल्की होकर गाड़ी चलाकर लौटी। विश्वासघात उतना ही बड़ा था जितना वह सदा रहा था। उसने शेष हर वस्तु का आकार स्मरण कर लिया था।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

आपका जीवन बड़ी घटनाओं के भीतर घोंसले में बैठी एक घटना है — आपकी प्रजाति, आपका ग्रह, सूर्य, आकाशगंगा, महा-आकर्षक की ओर आकाशगंगाओं का प्रवाह — जिसमें न कोई सबसे छोटी इकाई और न कोई सबसे बड़ी, कोई स्तर नहीं जिस पर कोई घटित होना एक परिसीमित वस्तु बन जाए जिसका आप स्वामित्व ले सकें।

जो शिकायत या चिंता आप आज ढो रहे हैं उसे लीजिए और उसे, कल्पना में, महा-आकर्षक की ओर एक लाख सूर्यों के मौन प्रवास के बगल में रखिए। उसे निरर्थक बनाने के लिए नहीं — आप उस विशालता में एक वास्तविक स्वर हैं — बल्कि यह अनुभव करने के लिए कि चिंतित, बही-खाता रखने वाला स्व इतनी बड़ी किसी वस्तु में आपकी सहभागिता मापने के लिए कितनी छोटी इकाई है।

## जैसा ऊपर, वैसा नीचे

---

सूर्य उगने की अनुमति नहीं माँगता, और ध्रुव तारा टिके रहने की अनुमति नहीं माँगता।

सरेखण कोई चुनाव नहीं जो ब्रह्मांड करता है। वह वही है जो ब्रह्मांड है।

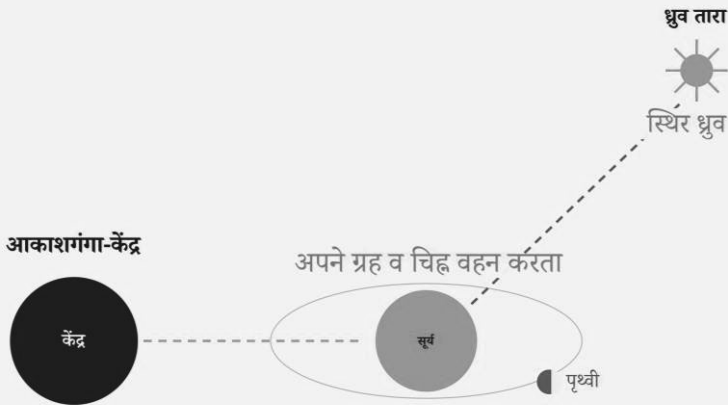
— सरेखण पर टिप्पणी

समस्त मानवीय अंतर्ज्ञानों में सबसे पुराने में से एक यह विश्वास है कि ऊपर की व्यवस्था — सूर्य की गतियों में, तारों में, आकाश के महान चक्र में — नीचे की व्यवस्था से, जीवन की गतियों से मेल खाती है। जैसा ऊपर, वैसा नीचे। यह वाक्यांश सदियों के लापरवाह फलित-ज्योतिष से सस्ता हो चुका है, किंतु व्यंग्य-चित्र के नीचे एक सच्ची और रक्षणीय अंतर्दृष्टि बसी है: कि हम एक घोंसले में बैठी व्यवस्था के भीतर जीते हैं जिसका सरेखण वैकल्पिक नहीं, और कि स्वयं को उससे सरेखित करना अंधविश्वास नहीं बल्कि विवेक है।

दावे से समस्त जादुई चिंतन हटा दीजिए और जो शेष रहता है वह बस सत्य है। सूर्य हमें — रूपकात्मक रूप से नहीं बल्कि भौतिक रूप से — आकाशगंगा के केंद्र के चारों ओर अपनी कक्षा भर वहन कर रहा है, ग्रहों के समूचे परिवार को, राशियों के उस समूचे चक्राकार पट्ट को जिसमें से होकर हम गति करते प्रतीत होते हैं, धूमकेतुओं को, धूल को, उस सबको, एक विशाल यात्रा में खींचता हुआ जो एक अकेले चक्कर के लिए लगभग तेईस करोड़ वर्ष लेती है। हम साथ आने को नहीं चुनते। हम वहन किए जाते हैं। सूर्य अपने समूचे अनुचर-दल को आगे बढ़ाता है, और हम अनुचर-दल का अंग हैं।

## जैसा ऊपर, वैसा नीचे

— वह संरेखण जिसे किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं —



सूर्य गति करने को नहीं कहता। ध्रुव तारा धामने को नहीं कहता। संरेखण चुना नहीं जाता — वह माना जाता है।

चित्र 7. वह संरेखण जिसे किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं। सूर्य आकाशगंगीय केंद्र के चारों ओर अपनी कक्षा भर अपने ग्रहों और राशि-पट्ट को वहन करता है; ध्रुव तारा उस स्थिर ध्रुव को चिह्नित करता है जिसके चारों ओर आकाश घूमता प्रतीत होता है। सूर्य गति करने को नहीं माँगता; ध्रुव तारा धामे रखने को नहीं माँगता। संरेखण चुना नहीं जाता — उसका पालन किया जाता है।

## ध्रुव तारा और स्थिर ध्रुव

किसी स्वच्छ रात में उत्तर की ओर देखिए और आप ध्रुव तारा पाएँगे, लगभग पूर्णतः स्थिर जबकि समूचा आकाश उसके चारों ओर घूमता है। ध्रुव तारा ध्रुव को धामे है — या यों कहें, पृथ्वी की धुरी, इस युग में, संयोगवश उसके बहुत निकट संकेत करती है — और उस स्थिर बिंदु के चारों ओर समूचा आकाश घूमता है। सहस्राब्दियों भर नाविकों के लिए, ध्रुव तारा एक घूमते संसार में एकमात्र विश्वसनीय वस्तु था, वह स्थिर संदर्भ जिससे हर अन्य गति मापी जा सकती थी और हर यात्रा सच्ची रखी जा सकती थी।



मैं ध्रुव तारे को स्वयं सरेखण के सिद्धांत के एक चित्र के रूप में उपयोग करना चाहता हूँ। ध्रुव स्थिर रहने को ज़ोर नहीं लगाता। वह अपनी निरंतरता को नहीं चुनता या उस पर स्वयं को बधाई नहीं देता। वह बस थामे रहता है, और क्योंकि वह थामे रहता है, शेष सब अपनी दिशा पा सकता है। उसी प्रकार, ब्रह्मांड में एक गहन स्थिरता है — गहन व्यवस्था, अपरिवर्तनीय व्यवस्था — जिसके चारों ओर घटनाओं का समूचा घूमना घटित होता है, और जो हमसे इसके सिवा कुछ नहीं माँगती कि हम उससे लड़ना बंद कर दें। सूर्य अपनी प्रगति को आकाशगंगीय व्यवस्था से सरेखित रखता है; ग्रह अपना सरेखण सूर्य से रखते हैं; नाविक अपना सरेखण ध्रुव से रखता है; और हम, यदि हम बुद्धिमान हैं, तो अपना सरेखण उस व्यवस्था से रखते हैं जिसमें यह सब थमा हुआ है।

### सरेखण चुना नहीं जाता — पहचाना जाता है

यहाँ वह बिंदु है जो इस अध्याय को पुस्तक के समूचे तर्क से जोड़ता है। ब्रह्मांड का सरेखण कोई ऐसी वस्तु नहीं जो ब्रह्मांड करने का निर्णय करता है। सूर्य यह नहीं तौलता कि आकाशगंगा की परिक्रमा करे या नहीं। ध्रुव तारा ध्रुव थामने पर विचार-विमर्श नहीं करता। सरेखण एक चुनाव नहीं; वह वस्तु का स्वभाव है, बिना प्रतिरोध के पालित और इसलिए बिना तनाव के। हमारे ऊपर, समूचा आकाश, हर रात, एक ऐसी व्यवस्था के साथ अनायास सरेखण प्रदर्शित करता है जिसे उसमें के किसी पिंड ने नहीं चुना और उसमें का कोई पिंड प्रतिरोध नहीं करता।

और वैसा ही नीचे। जैसा ऊपर, वैसा नीचे की शिक्षा, जिस रूप में मैं उसे देना चाहता हूँ, बस यह है: हम भी उस व्यवस्था के भीतर जीते हैं, उससे वहन किए जाते हुए चाहे हम जानें या न जानें, और हमारा एकमात्र वास्तविक चुनाव यह है कि सरेखण को पहचानें और उसमें विश्राम करें, या उससे लड़ें और दुःख भोगें। हम वहन किए जाने से उतना ही बाहर नहीं निकल सकते जितना पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा से बाहर नहीं निकल सकती। हम जो कर सकते हैं वह यह कि गति के विरुद्ध भिंचना बंद कर दें। वह भिंचना ही वह है जिसे हम "मेरा कर्म" कहते हैं — एक ऐसे वाहन को चलाने का प्रयास जिसे हम चला नहीं रहे, एक ऐसी यात्रा को रचने का जिसमें हम केवल यात्री हैं। भिंचना छोड़िए, सरेखण को पहचानिए, और वही वहन जो भाग्य-सा लगता था अनुग्रह-सा लगने लगता है। गति के विषय में कुछ नहीं बदलता। केवल उसके साथ हमारा संबंध बदलता है — जो, जैसा हमने द्रष्टा के साथ देखा, सब कुछ बदल देता है।

इसके साथ, संरचना पूर्ण है। हमारे पास क्षेत्र है, क्षितिज, द्रष्टा, अव्यक्त वाद्यवृंद, भूमिकाओं का निर्धारण और विलय, घोंसले में बैठे पैमाने, और ऊपर व नीचे का सरेखण। अब हम वह विध्वंस कर सकते हैं जिसकी समूची पुस्तक तैयारी करती रही है: व्यक्तिगत कर्म का ध्वंस, और उसके साथ, अपराध-बोध का, शुभ-और-अशुभ का, और कर्तृत्व की चिंता का ध्वंस।

## सूर्य अपने अनुचर-दल को बिना माँगे वहन करता है

अपना ध्यान व्यक्तिगत से उठाकर सबसे बड़ी गतियों पर लाइए जिनकी आप कल्पना कर सकते हैं, और ध्यान दीजिए कि उनमें कहीं भी उस वस्तु का कोई चिह्न नहीं जिसे हम चुनाव कहते हैं। सूर्य पृथ्वी और उसके सब सहोदर ग्रहों को, और राशियों के उस महान पट्ट को जिसमें से होकर वे गति करते प्रतीत होते हैं, आकाशगंगा के केंद्र के चारों ओर एक ऐसी कक्षा भर वहन करता है जो पूर्ण होने में लगभग तेईस करोड़ वर्ष लेती है। सूर्य इस पर विचार-विमर्श नहीं करता। वह यह नहीं तौलता कि अपने ग्रहों को वहन करे या नहीं, भार के नीचे ज़ोर नहीं लगाता, अपनी निष्ठा पर स्वयं को बधाई नहीं देता या भार पर क्षोभ नहीं करता। वह बस वैसे गति करता है जैसा उसका स्वभाव और समग्र में उसका स्थान अपेक्षित करता है, और ग्रह उसके साथ गति करते हैं, और समूचा विशाल जुलूस एक ऐसे मौन और एक ऐसी सहजता में उद्धाटित होता है जिसे कोई प्रयास सुधार नहीं सकता और कोई अनिच्छा विचलित नहीं कर सकती।

मैं इसे सरेखण के केंद्रीय चित्र के रूप में उपयोग करना चाहता हूँ, क्योंकि यह विचार से नैतिकतावाद का हर चिह्न उतार देता है। सूर्य अपने ग्रहों को वहन करके भला नहीं हो रहा। वह उस अर्थ में किसी आदेश का पालन या किसी कर्तव्य की पूर्ति नहीं कर रहा जो हम सामान्यतः समझते हैं। वह बस व्यवस्था के भीतर अपना स्वभाव व्यक्त कर रहा है, और वहन स्वयं ही घटित होता है, अनायास, क्योंकि वह सरेखित है। सरेखण सबसे बड़े पैमाने पर जिसका हम अवलोकन कर सकते हैं ऐसा दिखता है: किसी बाह्य नियम का श्रमपूर्ण अनुपालन नहीं, बल्कि उसकी अनायास अभिव्यक्ति जो व्यक्ति पहले से ही है उस समग्र के भीतर जिसका वह पहले से ही अंग है। आकाश व्यवस्था में बने रहने के लिए कठोर परिश्रम नहीं कर रहा। वह बस व्यवस्था में है, और व्यवस्था उसे गति देती है।

## जैसा ऊपर, वैसा नीचे: संरचना, कविता नहीं

पुराना वाक्यांश *जैसा ऊपर, वैसा नीचे* बहुत सहजता से केवल कविता के रूप में सुना जाता है, महान और लघु के बीच एक सुखद तुका। मैं उसे एक कठोरतर, अधिक सटीक अर्थ देना चाहता हूँ। यह संरचना के विषय में एक दावा है: कि वही व्यवस्था जो आकाश को गति देती है आपको गति देती है, कि दो नियम नहीं हैं — एक ब्रह्मांड के लिए और एक मानव-हृदय के लिए — बल्कि एक अकेली व्यवस्था हर पैमाने पर स्वयं को अभिन्न रूप से व्यक्त करती हुई। वही सिद्धांत जो ध्रुव को स्थिर रखता है आपके हृदय को आपके निर्देश के बिना धड़काता है। वही व्यवस्था जो आकाशगंगाओं को महा-आकर्षक की ओर वहन करती है आपके शरीर में श्वास को भीतर और बाहर वहन करती है जैसे आप यह वाक्य पढ़ते हैं। आपने अपना भोजन पचाने को नहीं चुना, किसी घाव को भरने को नहीं, एक अकेली कोशिका से उन खरबों के विशाल सहयोग में बढ़ने को नहीं जो आप अब हैं। व्यवस्था ने यह सब किया, नीचे, ठीक वैसे जैसे वह ऊपर सब कुछ करती है — आपसे परामर्श किए बिना, जोर लगाए बिना, मांगे बिना।

और यहाँ वह बिंदु है जिस पर यह अध्याय समूची पुस्तक के तर्क से जुड़ता है। यदि व्यवस्था को आकाशगंगाओं को गति देने के लिए किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं, और आपके हृदय को धड़काने के लिए किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं, तो वह एक छोटा क्षेत्र जहाँ आप कल्पना करते हैं कि आपकी अनुमति आवश्यक है — आपके सोद्देश्य कर्म, आपके चुनाव, आपके कर्म का क्षेत्र — ब्रह्मांडीय अनायासता का अपवाद नहीं बल्कि एक ऐसा स्थान है जहाँ आपने बस उसे देखने में चूक की है। वही अनायास सरेखण जो सूर्य को वहन करता और चुपचाप आपके शरीर को चलाता है आपके कर्म में भी उपलब्ध है, उसी क्षण जब आप चिंतित, विचार-विमर्श करते, स्वामित्व का दावा करते स्व को वहाँ डालना बंद कर दें जहाँ उसकी कभी आवश्यकता ही नहीं थी। आकाश, हर रात, प्रदर्शित करता है कि एक जीवन क्या हो सकता था: पूर्ण गति, विशाल परिणाम, समग्र व्यवस्था, और तनाव का एक चिह्न तक नहीं — क्योंकि वहाँ ऊपर कुछ भी अपनी ही कक्षा का रचयिता होने का दिखावा नहीं कर रहा।

## आपका शरीर पहले से ही पालन कर रहा है

महान व्यवस्था के साथ अनायास सरेखण खोजने को आपको आकाशगंगाओं की ओर ऊपर देखने की आवश्यकता नहीं; आप उसे अधिक घनिष्ठता से अपने ही शरीर को देखकर पा सकते हैं, जो इसे इसी क्षण आपसे परामर्श किए बिना सम्पन्न कर रहा है। आपका हृदय आज लगभग

एक लाख बार धड़क चुका है, और आपने उन धड़कनों में से एक का भी रचयिता नहीं किया। आपका रक्त साठ हजार मील की वाहिकाओं में से होकर स्वयं को छाँट रहा है; आपका प्रतिरक्षा-तंत्र उन युद्धों को लड़ रहा है जिनके विषय में आप कभी नहीं सुनेंगे; आपकी आँत एक ऐसा रसायन संचालित कर रही है जिसकी बराबरी कोई रसायनशास्त्री नहीं कर सकता; खरबों कोशिकाएँ एक इतनी विशाल और इतनी सटीक व्यवस्था में सहयोग कर रही हैं कि विज्ञान के समूचे उपक्रम ने उसके किनारों का मानचित्र बनाना अभी आरम्भ ही किया है — और यह सब आपकी जागरूकता के नीचे, आपके नियंत्रण से परे, आपकी अनुमति के बिना घटित हो रहा है, उस व्यवस्था से पूर्णतः सरेखित जो आपको जीवित रखे है। वस्तुओं की वही व्यवस्था जो सूर्य को आकाशगंगा के चारों ओर वहन करती है, इस क्षण, आपके यकृत में कहीं एक प्रोटीन के मुड़ने को संगठित कर रही है, और न सूर्य न प्रोटीन अपने सरेखण के लिए ज़ोर लगा रहा है, विचार-विमर्श कर रहा है, या कर्तृत्व का दावा कर रहा है।

यह आपको उपलब्ध सबसे प्रत्यक्ष प्रमाण है कि अनायास सरेखण कोई दूरस्थ आध्यात्मिक उपलब्धि नहीं बल्कि आपके अस्तित्व की वास्तविक आधार-अवस्था है, जो आप में सर्वत्र संचालित है सिवाय उस एक संकीर्ण क्षेत्र के जिसे आपने अपना दावा किया है। जो आप हैं उसका विशाल बहुमत ब्रह्मांडीय व्यवस्था के साथ निर्दोष अनायास सरेखण में चलता है; केवल सोद्देश्य, अहं-दावित कर्म की पतली खपच्ची स्वयं को पृथक, प्रभारी, और उत्तरदायी कल्पित करती है। इसलिए *जैसा ऊपर, वैसा नीचे* की शिक्षा आपसे कुछ अभूतपूर्व उपलब्ध करने को नहीं कह रही। यह आपसे दावित कर्म की उस पतली खपच्ची तक वही अनायास सरेखण विस्तृत करने को कह रही है जिसे आपका शेष — आपका निन्यानवे दशमलव नौ प्रतिशत — पहले से ही जी रहा है। आपसे कोई विदेशी कौशल सीखने को नहीं कहा जा रहा। आपसे एक छोटा अपवाद बनाना बंद करने को कहा जा रहा है।

## वह एक वस्तु जो आकाश कभी नहीं जोड़ता

तो फिर, सूर्य की अनायास कक्षा और मनुष्य के तनावपूर्ण, चिंतित, दुःख भोगते जीवन-मार्ग के बीच क्या अंतर है, यदि दोनों उसी मौन व्यवस्था से वहन किए जाते हैं? अंतर एक अकेली वस्तु है, और उसे सटीकता से नाम देना इस अध्याय का समूचा व्यावहारिक बिंदु है। सूर्य अपने सरेखण में कुछ नहीं जोड़ता; वह बस सरेखित है, और इसलिए उसकी विशाल गति अनायास है। मनुष्य प्रतिरोध जोड़ता है — एक ऐसे स्व का भिंचना जो कल्पना करता है कि उसे अपनी

ही कक्षा रचनी होगी, अपने ही परिणाम नियंत्रित करने होंगे, आकाश का अपना कोना स्वयं थामना होगा। आकाश यह कभी नहीं जोड़ता। कोई तारा अपने स्थान का प्रतिरोध नहीं करता; कोई ग्रह अपने पथ से नहीं लड़ता; दृश्य ब्रह्मांड में कहीं एक अंश का यह तनाव नहीं कि उसे समग्र को चलाना चाहिए। वह तनाव अनूठा और अनावश्यक मानवीय योगदान है, वह एक वस्तु जो हम जोड़ते हैं जिसे ब्रह्मांड में कुछ और नहीं जोड़ता, और वही हमारे दुःख और ऊपर की हर वस्तु की शांत अनायास गति के बीच के अंतर का समूचा स्रोत है। उसे हटाइए — प्रतिरोध जोड़ना बंद कीजिए — और एक मानव-जीवन वैसे गति करता है जैसे आकाश गति करता है: गति से भरा, परिणाम में विशाल, पूर्णतः व्यवस्थित, और बिना तनाव के। आकाश हमें कोई ऐसी वस्तु नहीं दिखा रहा जो हम पा नहीं सकते। वह हमें वह दिखा रहा है जो हम पहले से ही हैं, उस एक वस्तु के नीचे जिसे हम जोड़ने पर अड़े हैं।

### वह पैटर्न जो हर पैमाने पर दोहराता है

प्रकृति की गहन संरचना के विषय में एक विचित्र तथ्य है जिसकी पुराने वाक्यांश जैसा ऊपर, वैसा नीचे ने उसके लिए कोई गणित होने से बहुत पहले प्रत्याशा की: कि वही पैटर्न अत्यधिक भिन्न पैमानों पर पुनरावृत्त होते हैं, छोटा बड़े की प्रतिध्वनि करता हुआ एक ऐसी सटीकता से जो संयोग नहीं हो सकती। सबसे छोटी केशिका की शाखाएँ सबसे शक्तिशाली नदी-तंत्र की शाखाओं को दोहराती हैं; एक नाली में जल की कुंडली सबसे बड़ी आकाशगंगाओं की कुंडली को दोहराती है; एक चाय के प्याले में अशांति वही समीकरण मानती है जो एक तारे में अशांति। प्रकृति हर पैमाने के लिए एक नया अभिकल्प नहीं रचती; वह कुछ गहन पैटर्न दोहराती है, बार-बार, बहुत छोटे से बहुत बड़े तक, मानो एक अकेला व्याकरण एक साथ हर आयतन पर बोला जा रहा हो। मेरे विचार से चिंतकों का सूक्ष्म-जगत् द्वारा बृहद्-जगत् को प्रतिबिंबित करने से यही तात्पर्य था: कोई अस्पष्ट काव्यात्मक समानता नहीं, बल्कि एक सच्ची संरचनात्मक पुनरावृत्ति, वही व्यवस्था परमाणु और आकाशगंगा में सुपाठ्य क्योंकि, अंततः, केवल एक व्यवस्था है, हर पैमाने पर स्वयं को व्यक्त करती हुई।

और आप उन पैमानों में से एक हैं जिन पर वह व्यक्त होती है। पुनरावृत्ति मानव की सीमा पर शिष्टता से नहीं रुक जाती, हमें एक पैटर्नयुक्त ब्रह्मांड में पैटर्न के बाहर खड़े अपवादों, स्वतंत्र कर्ताओं के रूप में छोड़ती हुई वही व्यवस्था जो नदी को शाखाओं में बाँटती है आपके फेफड़े और आपके निर्णयों और आपके जीवन को शाखाओं में बाँटती है; वही घुमाव जो आकाशगंगा

को घुमाता है आपके दिनों और आपकी ऋतुओं को घुमाता है। इसे पहचानना एक पैटर्न के मात्र उदाहरण में हीन हो जाने का अनुभव नहीं, बल्कि, शायद पहली बार, ब्रह्मांड में सचमुच घर पर होने का अनुभव करना है — यह जानना कि आप किसी विदेशी ब्रह्मांड में फँके गए कोई अजनबी नहीं जो उसकी उदासीनता के विरुद्ध अपना अर्थ स्वयं रचे, बल्कि उसी व्यवस्था की एक अभिव्यक्ति हैं जो हर वस्तु में स्वयं को व्यक्त कर रही है, तारों के समान व्याकरण में बोली गई। आकाश जो सरेखण प्रदर्शित करता है वह आपके लिए विदेशी नहीं। वह आपकी अपनी गहनतम संरचना है, वह पैटर्न जिससे आप बने हैं, केवल यह माँगता हुआ कि उसे पहचाना जाए और प्रतिरोध करना बंद किया जाए।

### **वह नियम जिसका आप केवल पालन या प्रतिरोध कर सकते हैं**

गुरुत्वाकर्षण यहाँ एक उपयोगी शिक्षक है, क्योंकि वह एक ऐसा नियम प्रस्तुत करता है जिसे आप तोड़ नहीं सकते, जिससे सौदा नहीं कर सकते, जिससे बाहर नहीं निकल सकते — केवल पालन या प्रतिरोध। आप गुरुत्वाकर्षण का प्रतिरोध कर सकते हैं, और प्रतिरोध के अपने उपयोग हैं: एक भवन खड़ा रहता है, एक पक्षी उड़ता है, एक रॉकेट उठता है, सब नियम के विरुद्ध के बजाय उसके साथ कुशलता से काम करके। किंतु आप उसे समाप्त, निलंबित, या स्वयं को उससे छूट नहीं दे सकते; वह बस ऐसा ही है, सर्वत्र, सदा, आपकी हर गति को प्रतिबंधित करता हुआ चाहे आप उस पर ध्यान दें या न दें। और ध्यान दीजिए कि गुरुत्वाकर्षण के प्रति कुशल प्रतिक्रिया कभी उससे आमने-सामने लड़ना नहीं — जो गुरुत्वाकर्षण की अवज्ञा में किसी चट्टान से कदम रखता है वह नियम को परास्त नहीं करता, केवल उसे प्रदर्शित करता है — बल्कि उससे सरेखित होना, उसकी धारा के साथ काम करना, उसे जो वहन करेगा वहन करने देना और जो टेक देगा टेक देने देना है। अभियंता गुरुत्वाकर्षण को अभिभूत नहीं करती; वह उसे समझती और उससे सरेखित होती है, और सेतु खड़ा रहता है।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था ठीक इसी अर्थ में नियम है, और यह पुस्तक जो सरेखण सिखाती है वह गुरुत्वाकर्षण के प्रति अभियंता का संबंध है, समूचे जीवन तक विस्तृत। आप व्यवस्था को तोड़ नहीं सकते; आप केवल उसका पालन या प्रतिरोध कर सकते हैं, और प्रतिरोध उसे समाप्त नहीं करता बल्कि केवल वह घर्षण उत्पन्न करता है जिसे हम दुःख कहते हैं। व्यक्तिगत खाता प्रतिरोध है — स्वयं को निर्वैयक्तिक व्यवस्था से छूट देने का प्रयास, एक ऐसे ब्रह्मांड में एक पृथक रचयिता होने का जो स्वयं को रचता है, समग्र के नियम की अवज्ञा अंश की संप्रभुता पर

आग्रह करके। और वह ठीक वैसे असफल होता है जैसे गुरुत्वाकर्षण की अवज्ञा असफल होती है: नियम को परास्त करके नहीं बल्कि उसे प्रदर्शित करके, उस दुःख में जो प्रतिरोध उत्पन्न करता है। व्यवस्था से सरेखित होना उससे परास्त होना नहीं बल्कि उसकी धारा के साथ काम करना है जैसे अभियंता गुरुत्वाकर्षण की धारा के साथ करती है — और यह खोज लेना है कि वह नियम जिसे आप तोड़ नहीं सकते कभी आपका शत्रु नहीं था, बल्कि ठीक वही वस्तु थी जो, पालित होने पर, आपको थामे रखती है।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

सूर्य अपने ग्रहों को बिना माँगे वहन करता है; ध्रुव तारा बिना जोर लगाए ध्रुव थामता है; आपका हृदय धड़कता है और आपकी कोशिकाएँ बिना आपसे परामर्श किए निर्दोष सरेखण में सहयोग करती हैं। वह एक वस्तु जो आकाश कभी नहीं जोड़ता वह प्रतिरोध है — एक अंश का यह भिंचना कि उसे समग्र को चलाना ही है।

इस समय, उस सरेखण पर ध्यान दीजिए जो पहले से ही आप में चल रहा है — श्वास जो स्वयं आती है, हृदय जो ताल रखता है, शरीर जो एक ऐसी व्यवस्था सम्पन्न करता है जिसका आपने कभी रचयिता नहीं किया। फिर उस एक संकीर्ण स्थान पर ध्यान दीजिए जहाँ आप प्रतिरोध जोड़ते हैं: कोई परिणाम जिसके विरुद्ध आप भिंचे हैं। एक श्वास के लिए, उसे जोड़ना बंद कीजिए, और अनुभव कीजिए कि आपका शेष आरम्भ से क्या करता आ रहा है।





## भाग चार

### व्यक्तिगत कर्म का अंत

अपराध-बोध, शुभ और अशुभ, कर्तृत्व, और उस चिंता का ध्वंस जो उत्कृष्टता चुरा लेती है

यह विध्वंस है। संरचना खड़ी कर लेने के बाद, अब हम, टुकड़े-टुकड़े, उन रचनाओं को उघाड़ते हैं जिन्हें भ्रांति ने हमारे भीतर खड़ा किया — अपराध-बोध की मशीनरी, घटनाओं को शुभ और अशुभ तथा बड़े और छोटे में श्रेणीबद्ध करने की निरंकुशता, कर्ता का भ्रम, और वह चिंता जो परिणामों का स्वामित्व जन्म देती है। अपेक्षा कीजिए कि ये अध्याय कोमल स्थानों पर दबाव डालेंगे। वह कोमलता ही भार का खिसकना आरम्भ होना है।



## वह भार जिसे ढोने के लिए हम कभी बने ही नहीं थे

---

*अपराध-बोध वह बिल है जो अहं एक ऐसे भोजन के लिए स्वयं को भेजता है जिसे ब्रह्मांड  
सदा परोसने ही वाला था।*

— अपराध-बोध पर टिप्पणी

अब हम संरचना से विध्वंस की ओर मुड़ते हैं, और पहली दीवार जो गिरनी है वह अपराध-बोध है — उन सब भारों में सबसे भारी, सबसे पुराना, और सबसे संजोया हुआ जिन्हें हम ढोते हैं। अपराध-बोध यह अनुभूत विश्वास है कि मैंने, एक सतत और पृथक स्व ने, एक गलत वस्तु की, कि वह गलत मेरी है, और कि इसलिए मुझ पर दंड का ऋण है, चाहे ब्रह्मांड द्वारा, दूसरों द्वारा, या मेरे अपने अंतःकरण द्वारा। पिछले सब अध्याय चुपचाप उस विश्वास की नींव को खोखला करते रहे हैं। यहाँ हम उसे ढहा देते हैं।

स्मरण कीजिए जो हमने स्थापित किया है। किसी भी घटना में आपने जो भूमिका निभाई वह क्षेत्र द्वारा निर्धारित हुई थी, किसी पृथक रचयिता द्वारा चुनी नहीं गई। जिस स्व ने कृत्य सम्पन्न किया वह एक भूमिका था, अपने अभिनय में वास्तविक किंतु घटना के पूर्ण होने पर विलीन — इसलिए वह जिस पर माना जाता है कि ऋण है, अब विद्यमान ही नहीं। दृश्य कर्ता पाँच प्रतिशत था, एक ऐसे संचालन का व्यक्त शिखर जो अत्यधिक रूप से अव्यक्त और अत्यधिक रूप से अव्यक्तिगत था। और समूची घटना एक ऐसी स्वर-रचना में एक अकेला स्वर थी जो उन पैमानों भर घोंसले में बैठी है जिन पर व्यक्तिगत बहियाँ सुपाठ्य तक नहीं।

इन्हें एक साथ रखिए और अपराध-बोध के पास खड़े रहने को बस कुछ नहीं रह जाता। अपराधी होने के लिए कोई सतत पृथक रचयिता है ही नहीं; रचयिता एक भूमिका था, और भूमिकाएँ अपने विलय के क्षितिज के पार ऋण नहीं ढोतीं। इसका अर्थ यह नहीं कि गलत घटित नहीं होता — विश्वासघात सचमुच घायल करता है, क्रूरता सचमुच हानि पहुँचाती है। इसका अर्थ है

किं घाव और हानि समग्र की गतियाँ हैं, क्षेत्र में योगदान की गई परिस्थितियाँ, न कि एक स्थायी स्व के विरुद्ध किसी निजी खाते में प्रविष्टियाँ जिसे चुकाने के लिए विवश किया जाना है।

## **पश्चात्ताप और अपराध-बोध के बीच का भेद**

मैं यहाँ एक भेद खींचना चाहता हूँ जो पाठक को मुझे हानि का बहाना देते हुए गलत समझने से बचाएगा। पश्चात्ताप और अपराध-बोध के बीच एक भेद है, और जो दृष्टि मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ वह दूसरे को घुला देती है जबकि पहले को तीक्ष्ण करती है।

पश्चात्ताप यह स्पष्ट देखना है कि किसी क्रिया ने हानि पहुँचाई, उस सजीव आवेग के साथ कि भिन्न ढंग से कर्म किया जाए और जो सुधारा जा सकता है उसे सुधारा जाए। पश्चात्ताप आगे-मुख है, सर्वोत्तम अर्थ में निर्वैयक्तिक, और इस पुस्तक की हर वस्तु के साथ पूर्णतः संगत। जब आप देखते हैं कि आपकी निभाई किसी भूमिका ने हानि पहुँचाई, तो जागरूकता की स्वाभाविक गति सुधारने और पुनः संरेखित होने की होती है — इसलिए नहीं कि आप पर कोई ऋण है, बल्कि इसलिए कि वही व्यवस्था जिसने हानिकारक भूमिका निर्धारित की अब एक सुधारने वाली निर्धारित करती है, और आप वह स्थल हैं जिस पर सुधार घटित हो सकता है।

अपराध-बोध कुछ और है: यह पीछे-मुख, आत्म-दंडक आग्रह है कि मैं बुरा हूँ, कि हानि मुझे परिभाषित करती है, कि एक खाता संतुलित करने को मुझे दुःख भोगना ही होगा। अपराध-बोध कुछ नहीं सुधारता। वह आहत की सहायता नहीं करता; वह किसी की सहायता नहीं करता। वह विशुद्ध रूप से अहं का स्वयं पर पलट जाना है, एक ऐसे भोजन के लिए स्वयं को बिल भेजता हुआ जिसे ब्रह्मांड सदा परोसने ही वाला था। पश्चात्ताप भर देता है और आगे बढ़ जाता है। अपराध-बोध सड़ता है और टिका रहता है। इस पुस्तक की दृष्टि अपराध-बोध को काट देती है और पश्चात्ताप को उसका ईमानदार कार्य करने को मुक्त कर देती है।

## **जो कभी आपका था ही नहीं उसके लिए स्वयं को क्षमा करना**

पुराना अपराध-बोध ढोते पाठक से — और वह लगभग हम सब हैं — मैं यह सीधे कहना चाहता हूँ। वह वस्तु जिसके लिए आप स्वयं को क्षमा नहीं कर सकते, एक भूमिका थी, एक क्षेत्र द्वारा निर्धारित, एक ऐसे स्व द्वारा अभिनीत जो तब से विलीन हो चुका, एक ऐसे संचालन में एक स्वर के रूप में जिसकी आपने रचना नहीं की। वह व्यक्ति जिसने वह वस्तु की, वस्तुतः, जा चुका है — उस घटना के साथ विलीन जिसे उसकी आवश्यकता थी। आप एक प्रेत को

एक ऐसे शिकार की ओर से दंडित कर रहे हैं जिसकी, यदि हानि सुधारी जा सकती है, आपके दुःख की अपेक्षा आपके सुधार से कहीं बेहतर सेवा होगी। भार रख दीजिए। वह कभी उस प्रकार की वस्तु थी ही नहीं जिसका स्वामित्व लिया जा सके, और आप कभी उस प्रकार की वस्तु थे ही नहीं जो उसका ऋणी हो सके। आपके लिए जो शेष रहता है वह प्रायश्चित्त नहीं बल्कि पुनः संरेखण है — वर्तमान स्व का, ताज़ा निर्धारित, उस व्यवस्था की ओर मुड़ना जिसकी वह अब सेवा कर सकता है।

## एक ऐसे भार की शरीर-रचना जो है ही नहीं

ध्यान का एक छोटा प्रयोग आजमाइए। अगली बार जब आप किसी बीते कृत्य पर अपराध-बोध का भार अनुभव करें, रुकिए और सीधे स्वयं भार को देखिए, कृत्य को नहीं। वह कहाँ है? वह किससे बना है? आप पाएँगे, यदि आप ईमानदारी से देखें, कि वह पूर्णतः विचार से बना है — एक ऐसी कथा से जो बार-बार सुनाई गई जिसमें एक पृथक् स्व ने एक निश्चित गलत किया और अब एक निश्चित ऋण का ऋणी है। भार घटना में नहीं है, जो बहुत पहले पूर्ण हो गई और जा चुकी है। भार वर्तमान क्षण में नहीं है, जिसमें केवल यह कमरा, यह श्वास, यह पृष्ठ है। भार निरंतर बढ़ा जा रहा है, एक ऐसे मन द्वारा जो एक ऐसा खाता वर्णित कर रहा है जिसे स्वयं उसके सिवा कोई नहीं रख रहा। वह अनेक लोगों द्वारा ढोई जाने वाली सबसे भारी वस्तु है, और उसका कथन-कहन के बाहर कोई अस्तित्व ही नहीं।

मैं यह नहीं कह रहा कि हानि असत्य है या कि क्रिया से परिणाम नहीं चलते; वे चलते हैं, पूर्ण विश्वसनीयता के साथ, क्योंकि ब्रह्मांड अत्यंत सूक्ष्मता से जुड़ा है। मैं कुछ अधिक सटीक कह रहा हूँ: कि अपराध-बोध का दुःख कृत्य का परिणाम नहीं है। वह एक दूसरी, वैकल्पिक, स्व-प्रदत्त घटना है, पहली के ऊपर एक ऐसे मन द्वारा परत किया गया जिसने स्वयं को एक ऐसे मुकदमे में अभियुक्त के रूप में अभिनीत किया है जो चलाया ही नहीं जा रहा। कृत्य के संसार में अपने वास्तविक परिणाम थे। अपराध-बोध उन परिणामों में आपकी अपनी निरंतर पीड़ा के सिवा कुछ नहीं जोड़ता, जो किसी की सहायता नहीं करती, कुछ नहीं सुधारती, और केवल एक भूमिका — अपराधी — को जीवित रखने का काम करती है जिसकी घटना बहुत पहले पूर्ण हो गई। भार रख देना उत्तरदायित्व से बचना नहीं है। यह एक ऐसा ऋण चुकाना बंद करना है जो कभी देय था ही नहीं, एक ऐसे खाते में जो कभी खोला ही नहीं गया, एक ऐसे न्यायाधीश के समक्ष जो कभी नियुक्त ही नहीं हुआ।

## पश्चात्ताप आपको उपयोगी रखता है; अपराध-बोध आपको फँसाए रखता है

अपराध-बोध के ध्वंस को अंतःकरण के ध्वंस से भ्रमित न करना अत्यावश्यक है। वे विपरीत हैं। अपराध-बोध पीछे-मुख और आत्म-केंद्रित है: वह स्व पर लगे दाग पर मनन करता है, पूछता है कि स्व को कैसे दंडित या मुक्त किया जा सकता है, और ध्यान को मुझ पर, मेरे बुरेपन, मेरे ऋण पर स्थिर रखता है। पश्चात्ताप आगे-मुख और संसार-केंद्रित है: वह स्पष्ट देखता है कि किसी क्रिया ने हानि पहुँचाई, सुधारने और पुनः संरचित होने का सजीव आवेग अनुभव करता है, और अपना ध्यान बाहर उस ओर मोड़ता है जो अब किया जा सकता है। अपराध-बोध पूछता है, मैं कितना बुरा हूँ? पश्चात्ताप पूछता है, स्थिति को अब क्या चाहिए? एक लकवाग्रस्त करने वाला और अंततः स्वार्थी है, स्व को पापी के रूप में लिए एक नाटक। दूसरा स्पष्टकारी और उदार है, सुधारने की एक शांत तत्परता। जब आप कर्म के व्यक्तिगत स्वामित्व को छोड़ते हैं, तो आप पश्चात्ताप नहीं खोते — आप अंततः उसे उस अपराध-बोध से मुक्त करते हैं जो उसका गला घोट रहा था, और खोज लेते हैं कि आप उस हानि के प्रति कहीं अधिक प्रभावी ढंग से प्रत्युत्तर दे सकते हैं जिसका आप अंग थे, एक बार जब आप उसके लिए स्वयं पर अभियोग चलाने में व्यस्त नहीं रहते।

तो स्वयं को क्षमा करना किसी अपराधी पक्ष को क्षमादान देने का विषय नहीं है। यह पहचान है कि क्षमा करने को कोई पृथक्करणीय अपराधी पक्ष था ही नहीं — केवल एक भूमिका, एक पूर्ण हुई घटना में, एक ऐसे क्षेत्र द्वारा निर्धारित जिसका आपने आदेश नहीं दिया, जिसे आप अब उतनी ही स्वाभाविकता से छोड़ सकते हैं जितनी एक अभिनेता पटाक्षेप होने पर एक भाग छोड़ता है। यह पुस्तक जिस आत्म-क्षमा की ओर संकेत करती है वह "मैंने गलत किया पर मैंने स्वयं को छोड़ दिया" नहीं है। वह "घटना पूर्ण हो गई; भूमिका विलीन हो चुकी; और वह जागरूकता जिसने यह सब देखा वह आरम्भ से कर्ता थी ही नहीं" है। उस पहचान से, वास्तविक प्रायश्चित्त संभव होता है, क्योंकि वह अब आपकी क्षतिग्रस्त आत्म-छवि को बहाल करने के विषय में नहीं बल्कि बस उसकी सेवा करने के विषय में है जो स्थिति को अब चाहिए।

## जब अपराध-बोध वही बन जाता है जो आप हैं

एक अवस्था है जिस पर अपराध-बोध कुछ ऐसा होना बंद कर देता है जिसे व्यक्ति अनुभव करता है और कुछ ऐसा बन जाता है जो व्यक्ति है। कृत्य अतीत में पीछे हट जाता है, किंतु

अपराध-बोध उसके साथ पीछे नहीं हटता; इसके बजाय वह नीचे बैठ जाता है और पहचान में कठोर हो जाता है, जब तक व्यक्ति अब "मैंने एक गलत वस्तु की" नहीं कहता बल्कि, मज्जा में, विश्वास करता है, "मैं एक ऐसा व्यक्ति हूँ जो गलत है" — दोषपूर्ण, अयोग्य, चिह्नित। यह भार का सबसे दृढ़ रूप है, क्योंकि अब दुःख किसी विशेष कृत्य से जुड़ा नहीं जिसे संबोधित और मुक्त किया जा सके; वह स्वयं स्व से जुड़ा है, मुक्त-तैरता, किसी अवसर की अपेक्षा न रखता, सदा उपलब्ध। ऐसा व्यक्ति वहाँ अपराध-बोध गढ़ लेगा जहाँ उसे टेकने को कोई कृत्य नहीं, क्योंकि पहचान अपने ईंधन की माँग करती है, और बुरे-होने पर बनी एक पहचान हर तटस्थ घटना को अपने बुरेपन के और प्रमाण के रूप में पढ़ेगी। मूल कृत्य बहुत पहले जा चुका है। अपराधी की भूमिका ने व्यक्ति को जीवित ही निगल लिया है।

यह पुस्तक जो मुक्ति देती है वह यहाँ तक, शायद विशेषतः यहाँ तक पहुँचती है, क्योंकि रोग और उपचार एक ही जड़ साझा करते हैं। यदि कोई पृथक् स्व है ही नहीं जो कृत्यों का रचयिता हो — केवल क्षेत्र द्वारा निर्धारित और पूर्णता पर विलीन भूमिकाएँ — तो कोई स्थायी अपराधी स्व है ही नहीं जिससे अपराध-बोध जुड़ सके। वह बुरापन जो आप मानते हैं कि आप हैं, एक भूमिका है जिसे आपने त्वचा समझ लिया है, एक वेशभूषा इतने लम्बे समय पहनी कि आप भूल गए कि आप वह नहीं हैं। उसे भेद देना स्वयं को बुरे के बजाय अच्छा घोषित करना नहीं, जो केवल वही श्रेणीकरण-मशीन उल्टी चलना होगा; यह देखना है कि वह स्व जिस पर निर्णय सुनाया गया, उसे प्राप्त करने को वहाँ था ही नहीं। अपराधी हर अन्य भूमिका के साथ विलीन हो जाता है, और जो शेष रहता है वह एक दोषमुक्त स्व नहीं बल्कि बिल्कुल कोई अभियुक्त नहीं — और उस रिक्तता से, आश्चर्यजनक रूप से, वर्तमान में भली-भाँति कर्म करने की सामर्थ्य, एक ऐसे स्व के शव से अभाररहित जिसे बहुत पहले पूर्ण हुए एक कृत्य के लिए सदा फिर से दोषी ठहराया जा रहा था।

## उत्तरदायित्व के वेश में अपराध-बोध

सबसे चतुर तरकीब जो अपराध-बोध खेलता है वह स्वयं को अंतःकरण के वेश में छिपाना है, ताकि उसे छोड़ना एक बुरा व्यक्ति बन जाने-सा लगे। मुझे इस पर बुरा अनुभव करते रहना ही होगा, मन आग्रह करता है, अन्यथा मैं लापरवाह, निष्ठुर, ऐसा व्यक्ति बन जाऊँगा जो हानि करता है और कंधे उचका देता है। यह नैतिक गंभीरता-सा लगता है, और इसलिए हम अपने अपराध-बोध की रक्षा ऐसे करते हैं मानो वह हमारा गुण हो। किंतु दावे की जाँच कीजिए और

वह ढह जाता है। क्या आपका निरंतर अपराध-बोध वास्तव में भविष्य की हानि रोकता है, या वह केवल आपको स्वयं में लीन रखता है? अपराध-बोध से ग्रस्त व्यक्ति दूसरों के प्रति अधिक सावधान नहीं; वह अपने ही बुरेपन से जकड़ा है, जो विनम्रता का मुखौटा पहने आत्म-लीनता का एक रूप है। यह पश्चात्ताप है — हानि का स्पष्ट, आगे-मुख देखना और सुधारने का सजीव आवेग — जो भविष्य की हानि रोकता है, और पश्चात्ताप को कार्य करने के लिए किसी अपराध-बोध की आवश्यकता ही नहीं। वस्तुतः अपराध-बोध उसे क्षीण करता है, क्योंकि स्वयं पर अभियोग चलाने में व्यस्त मन के पास उस स्थिति के लिए कम ध्यान मुक्त रहता है जिसे वास्तव में सुधार चाहिए। अपराध-बोध रख देना लापरवाह बन जाना नहीं। यह अंतःकरण को उस मृत भार से मुक्त करना है जो उसे धीमा कर रहा था, ताकि वह अपना वास्तविक कार्य कर सके, जो दुःख भोगना नहीं बल्कि सुधारना है।

### अपराध-बोध क्या खरीदता है

हम में कुछ भी अपने रख-रखाव का मूल्य चुकाए बिना नहीं टिकता, और अपराध-बोध, अपनी समूची व्यथा के बावजूद, कोई अपवाद नहीं; वह इसलिए बचा रहता है कि वह कुछ ऐसा खरीदता है जिसे खोने को स्व तैयार नहीं। वह क्या खरीदता है? पहला, वह नियंत्रण का भ्रम खरीदता है — यदि मेरे दुःख ने यह उत्पन्न किया, तो मेरा इस पर अधिकार था, और अधिकार, पूर्वव्यापी और आत्म-दंडक अधिकार भी, एक ऐसी घटना में सहभागी रहे होने की असहायता से अधिक पसंद किया जाता है जो कभी मेरी रचने को थी ही नहीं। दूसरा, वह एक प्रकार का प्रायश्चित्त खरीदता है, एक अनुभूत बोध कि पर्याप्त दुःख भोगकर मैं किसी प्रकार ऋण चुका रहा हूँ, खाता संतुलित कर रहा हूँ, एक ऐसी क्षमा अर्जित कर रहा हूँ जिसे मैं अन्यथा सुरक्षित नहीं कर सकता। और तीसरा, सबसे सूक्ष्म रूप से, वह पहचान खरीदता है — अपने गलतों से परिभाषित एक स्व कम से कम एक निश्चित स्व तो है, एक कथा और एक स्थान के साथ, चाहे कितना ही पीड़ादायक हो। अपराध-बोध महँगा है, किंतु वह उन वस्तुओं को खरीद रहा है जिन्हें स्व बुरी तरह चाहता है, और यही कारण है कि उसे बस चले जाने को नहीं कहा जा सकता।

मुक्ति अपराध-बोध को तर्क से दूर करने से नहीं बल्कि यह देखने से आती है कि वह जो कुछ भी खरीद रहा था वह उसके बिना अधिक सच्चाई से पाया जा सकता है। जो नियंत्रण उसने प्रस्तुत किया वह सदा एक भ्रम था, क्योंकि घटना आपके द्वारा कभी रची ही नहीं गई थी। जो प्रायश्चित्त उसने प्रस्तुत किया वह एक ऐसा ऋण चुकाता है जो कभी देय था ही नहीं, एक ऐसे



खाते में जो कभी खोला ही नहीं गया। और जो पहचान उसने प्रस्तुत की — अपने गलतों से परिभाषित स्व — ठीक वही वेशभूषा है जिसे यह समूची पुस्तक आपको पहचानने और रख देने का निमंत्रण देती है। जब आप देख लेते हैं कि अपराध-बोध जाली वस्तुएँ खरीद रहा था — झूठा नियंत्रण, झूठा प्रायश्चित, एक झूठा स्व — तो उसकी पकड़ स्वयं ही ढीली हो जाती है, इसलिए नहीं कि आपने उसे विवश किया बल्कि इसलिए कि आपने उन वस्तुओं के लिए चुकाना बंद कर दिया जो कभी वास्तविक थीं ही नहीं। और जो शेष रहता है, जब जाली-खरीदना बंद होता है, वह वही असली वस्तु है जिसका अपराध-बोध सदा एक घटिया स्थानापन्न था: वह स्पष्ट पश्चात्ताप जो बस हानि देखता है और, अभाररहित, उसे सुधारने की ओर मुड़ जाता है।

## वे भार जो हमें विरासत में मिलते हैं

हम जो समूचा भार ढोते हैं वह हमारे द्वारा उठाया नहीं गया; उसका बहुत भाग सौंपा गया, उनसे विरासत में मिला जो हमसे पहले उसे ढोते थे। परिवार अपराध-बोध को पीढ़ियों भर एक पैतृक-संपत्ति की भाँति संचारित करते हैं — अनकही लज्जा, पूर्वजों की असफलता, वह ऋण जिसे किसी ने, कहीं वंश-रेखा में ऊपर, तय किया कि देय है और जो तब से कर्तव्यपूर्वक नीचे सौंपा गया है, प्रत्येक पीढ़ी खाते को ऐसे स्वीकारती हुई मानो वह उसका अपना हो। एक व्यक्ति अपना समूचा जीवन एक ऐसे अपराध-बोध के नीचे परिश्रम कर सकता है जिसे उसने अर्जित नहीं किया, एक ऐसी घटना में जिसमें उसने भाग नहीं लिया, एक ऐसे गलत के लिए जो उसके जन्म से पूर्व किया गया, बस इसलिए कि उसे-जिसे-प्रायश्चित-करना-है की भूमिका उसे परिवार के नाम के साथ सौंप दी गई। व्यक्तिगत खाता, प्रकट होता है, सदा मूल में व्यक्तिगत भी नहीं होता; कभी-कभी वह एक हस्तांतरित वस्तु है, इसलिए पहनी गई कि वह दी गई थी, कभी एक बार भी यह देखने को परखी नहीं गई कि वह फिट बैठती है या कभी हमारी थी भी।

एक विरासत में मिले भार को विरासत में मिला पहचानना ही उसकी आधी मुक्ति है, क्योंकि यह उस पूर्व-धारणा को तोड़ देता है कि भार किसी के अपने कृत्यों का एक सच्चा खाता है। पीढ़ियों भर सौंपा गया अपराध-बोध कभी आप पर एक निर्णय नहीं था; वह एक भूमिका थी, आपके आने से बहुत पहले निर्धारित, जिसे आप कर्तव्यपूर्वक निभा रहे थे क्योंकि किसी ने आपको नहीं बताया कि उसे रखा जा सकता है। और उसे रखा जा सकता है — उनका अपमान करके नहीं जिन्होंने उसे ढोया, बल्कि यह पहचानकर कि जो खाता उन्होंने रखा वह किसी अन्य

व्यक्तिगत खाते जितना ही ग़लत था, कि उसने जो घटनाएँ दर्ज कीं वे बहुत पहले पूर्ण हो गईं, और कि विरासत में मिले प्रायश्चित की श्रृंखला आप पर समाप्त हो सकती है, बस उसे आगे न बढ़ाने का चुनाव करके। एक विरासत में मिले भार को रख देना किसी व्यक्ति को उपलब्ध सबसे चुपचाप शक्तिशाली कृत्यों में से एक है, क्योंकि यह न केवल स्वयं को बल्कि नीचे की धारा में हर उस व्यक्ति को मुक्त करता है जिसे वह अन्यथा अगली बार मिलता।

### **एक दृश्य: वह माँ जो स्वयं को दोष देती है**

एक माँ एक सहायता-समूह में बैठी है, अपने पुत्र के व्यसन में वर्षों बीत चुके, और जब उसकी बारी आती है तो वह उसके विषय में नहीं बोलती। वह अपने विषय में बोलती है — उन कार्य-घंटों के विषय में जो उसने तब रखे जब वह छोटा था, तलाक़, वे संकेत जो उसे पढ़ लेने चाहिए थे, वे दूसरे अवसर जो उसे नहीं देने चाहिए थे, या जल्दी देने चाहिए थे। उसने, निद्राहीन जाँच के वर्षों में, एक पूर्ण खाता रच लिया है जिसमें उसके पुत्र का दुःख एक माँ के रूप में उसकी असफलताओं पर निर्णय है। वह उसे हर जगह ढोती है। वह कुछ ऐसा बन गया है जिसे वह अनुभव नहीं करती बल्कि जो वह है: वह माँ जिसने यह किया।

उसमें दो परतों को देखिए, क्योंकि उन्हें सुलझाना इस अध्याय का समूचा कार्य है। अपराध-बोध के नीचे कुछ स्पष्ट और अमूल्य है: एक प्रचंड प्रेम, और जो कुछ अब भी सहायता कर सकता है उसे करने की एक सजीव तत्परता। वह पश्चात्ताप है, और वह कमरे में सबसे उपयोगी वस्तु है। किंतु उसके चारों ओर लिपटा, उसका गला घोंटता, अपराध-बोध है — वह निरंतर आत्म-अभियोग जो उसे उसके अपने बुरेपन से जकड़े रखता है और, भक्ति की अपनी समूची प्रतीति के बावजूद, उसके पुत्र की तनिक भी सहायता नहीं करता। अपराध-बोध उसे अधिक सावधान माँ नहीं बनाता; वह उसे अधिक लीन बनाता है, उसका ध्यान बाहर इस ओर मुड़ने के बजाय कि उसके पुत्र को आज वास्तव में क्या चाहिए, भीतर उसकी अपनी असफलता पर मुड़ा हुआ। यदि वह अपराध-बोध रख सके — प्रेम नहीं, सुधारने की तत्परता नहीं, केवल आत्म-दंड — तो वह लापरवाह नहीं बन जाएगी। वह, वर्षों में पहली बार, अपने सामने की स्थिति के प्रति पूर्णतः उपलब्ध बन जाएगी, जो उसके दुःख से कभी एक बार भी सुधरी नहीं और अभी भी उसकी स्पष्ट, अभाररहित उपस्थिति से बदल सकती है।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

अपराध-बोध अतीत के विषय में अनुभूत स्वामित्व है — यह विश्वास कि एक पृथक् स्व ने गलत किया और एक खाता संतुलित करने को दुःख भोगता रहना चाहिए। पश्चात्ताप भिन्न है: वह हानि को स्पष्ट देखता है और उसे सुधारने की ओर मुड़ता है। अपराध-बोध आपको स्वयं में फँसाए रखता है; पश्चात्ताप आपको संसार के लिए उपयोगी रखता है।

एक अपराध-बोध मन में लाइए जिसे आपने बहुत समय ढोया है। दो परतों को अलग कीजिए: यह स्पष्ट देखना कि किसी क्रिया ने हानि पहुँचाई, और उसके लिए स्व का निरंतर दंड। पहले को रखिए — उसे आपको वह सुधारने को प्रेरित करने दीजिए जो सुधारा जा सकता है। देखिए कि क्या आप दूसरे को रख सकते हैं, और ध्यान दीजिए कि दंड को छोड़ना आपको लापरवाह नहीं बनाता; वह आपके उस भाग को मुक्त करता है जो वास्तव में सुधार करता है।

## न शुभ न अशुभ, न छोटा न बड़ा

*समुद्र अपनी लहरों का श्रेणीकरण नहीं करता। न कोई महत्वपूर्ण लहर है और न कोई तुच्छ लहर। केवल एक गति है, असंख्य शिखरों में व्यक्त।*

— निर्णय पर टिप्पणी

दूसरी दीवार जो गिरनी है वह क्रियाओं का श्रेणीकरण है — वह गहरी, लगभग अनैच्छिक आदत जिससे हम और दूसरे जो कुछ भी करते हैं उसे शुभ और अशुभ, महत्वपूर्ण और तुच्छ, सफलता और असफलता में छॉट देते हैं। मैं एक सावधान और सहज ही गलत समझा जाने वाला दावा करना चाहता हूँ: कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था के दृष्टिकोण से, क्रियाएँ शुभ या अशुभ नहीं, बड़ी या छोटी नहीं — वे भूमिकाएँ हैं, घटनाओं के भीतर निभाई गई, और उनकी समूची गरिमा सच्चाई से निभाए जाने में है, उनके पद में नहीं।

मैं इसे तुरंत स्पष्ट गलत पाठ से बचा दूँ। मैं यह नहीं कह रहा कि मानव-जीवन में क्रूरता और करुणा नैतिक रूप से समतुल्य हैं, कि हमें हानि की अपेक्षा उपचार को नहीं चुनना चाहिए, कि नीति एक भ्रम है। मानव-पैमाने के भीतर — वह पैमाना जिस पर हम जीते और कर्म करते और कर्म करते रहना ही चाहिए — करुणा और क्रूरता के बीच का भेद परम महत्वपूर्ण है, और यह पुस्तक हमें करुणा की ओर अधिक प्रवृत्त करेगी, कम नहीं। मैं एक भिन्न और बड़े ढाँचे के विषय में कुछ कह रहा हूँ: कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था मानवीय श्रेणीकरण-प्रणाली पर नहीं चलती, और कि उस श्रेणीकरण को अपने स्व के बोध में आयात करना दुःख का एक प्रमुख स्रोत है।

### बड़े और छोटे की निरंकुशता

पहले बड़े और छोटे के श्रेणीकरण को विचारिए। हम मानते हैं कि कुछ जीवन महत्वपूर्ण हैं और अन्य नगण्य, कुछ कृत्य महान और अन्य ध्यान के अयोग्य। यह विश्वास लोगों को दो दिशाओं में यातना देता है। वह जो मानता है कि उसकी भूमिका बड़ी है, उसके भार से कुचला जाता है और इतनी सार्थक किसी वस्तु में असफल होने से भयभीत रहता है। वह जो मानती है कि

उसकी भूमिका छोटी है, नगण्यता से खोखली हो जाती है, इस विश्वास में कि साधारण कार्य और देखभाल का उसका शांत जीवन मायने नहीं रखता, किसी बड़ी कथा में उसका कोई स्थान नहीं।

दोनों एक ही त्रुटि से छले गए हैं: यह विश्वास कि भूमिका का पद उसका मूल्य निर्धारित करता है। किंतु एक घोंसले में बैठे संचालन में, हर स्वर ठीक उतना ही मायने रखता है जितनी उसकी आवश्यकता है और एक रत्ती अधिक या कम नहीं — और संगीत तेज स्वरों और मंद स्वरों के बीच भेद नहीं करता, केवल सच्चे स्वरों और झूठे स्वरों के बीच। रात के तीन बजे एक बच्चे को सहलाती माँ अपना स्वर उतनी ही सच्चाई से बजा रही है जितना कोई सेनापति या राजनेता, और ब्रह्मांड, जो महत्ता की कोई बही नहीं रखता, दोनों को वैसा ही ग्रहण करता है जैसे वे हैं: व्यवस्था, स्वयं को अभिनीत करती हुई, यहाँ। कोई छोटी भूमिका नहीं है। केवल भूमिका है, भली-भाँति निभाई गई या बुरी तरह निभाई गई।

## शुभ और अशुभ की निरंकुशता

अब शुभ और अशुभ का श्रेणीकरण, जो अधिक सूक्ष्म है। यहाँ हानि नैतिक विवेक में नहीं, जिसकी हमें आवश्यकता है, बल्कि उस ढंग में है जिससे हम अपनी ही पहचान निर्णय के चारों ओर लपेट देते हैं। "मैं एक अच्छा व्यक्ति हूँ" और "मैं एक बुरा व्यक्ति हूँ" समान रूप से बंधन हैं, क्योंकि दोनों स्व को अपने कृत्यों का स्वामी बनाते हैं और उसके मूल्य को निर्णय पर दाँव पर लगाते हैं। अच्छे-व्यक्ति की पहचान भंगुर है, सदा अगली चूक से खतरे में; बुरे-व्यक्ति की पहचान निराशाजनक है, सदा अगली फिसलन से पुष्ट। दोनों स्व को केंद्र में रखते हैं, चिंतित होकर उसका अंक ताज़ा करते हुए।

स्वतंत्रता यह देखना है कि कृत्य भूमिकाएँ हैं, क्षेत्र द्वारा निर्धारित, आपके माध्यम से निभाई गई, और कि आपका मूल्य — यदि शब्द का कोई अर्थ है — उनके साथ नहीं उठता-गिरता, क्योंकि आप उनके स्वामी नहीं बल्कि उनके साक्षी और उनके उपकरण हैं। तब आप स्पष्ट विवेक कर सकते हैं कि यह भूमिका हानि पहुँचाती है और वह उपचार करती है, और स्वयं को उपचार की ओर प्रवृत्त कर सकते हैं, बिना कभी फिर अपनी सत्ता को निर्णय पर दाँव पर लगाए। तब आप अधिक नैतिक बन जाते हैं, क्योंकि स्पष्ट विवेक चिंतित आत्म-निर्णय का स्थान ले लेता है; और आप अधिक स्वतंत्र बन जाते हैं, क्योंकि विवेक अब आपको नष्ट करने की धमकी नहीं देता। अभिनेता एक खलनायक को महानता से और एक संत को महानता से निभा सकता है,

क्योंकि वह जानता है कि वह कोई नहीं है — और वह ज्ञान, उसे लापरवाह बनाने से कोसों दूर, उसे हर भूमिका को सब कुछ देने देता है।

न शुभ न अशुभ, न छोटा न बड़ा: इसलिए नहीं कि कुछ मायने नहीं रखता, बल्कि इसलिए कि मायने रखना व्यक्तिगत पद के माध्यम से नहीं चलता। वह निभाने की सच्चाई के माध्यम से चलता है। और वह एक ऐसा मापदंड है जो हर जीवन को समान रूप से, हर कृत्य में उपलब्ध है — जो सबसे लोकतांत्रिक और सबसे माँग करने वाला मापदंड है जो हो सकता है।

### श्रेणीकरण करता मन

हम में एक सामर्थ्य है जो श्रेणीकरण करना बंद नहीं कर सकती। वह हर घटना को बेहतर और बदतर में, हर परिणाम को सफलता और असफलता में, हर कृत्य को शुभ और अशुभ में, हर जीवन को — अपने सहित — बड़े और छोटे, सार्थक और नगण्य में छाँट देती है। यह श्रेणीकरण विवेक-सा लगता है, उसी बुद्धि-सा जो हमें संसार में मार्ग खोजने देती है, और इसलिए हम विरले ही इस पर प्रश्न करते हैं। किंतु एक अकेले दिन इसे संचालित होते देखिए और आप पाएँगे कि वह एक उपकरण से कम है जिसे हम उपयोग करते हैं और एक बाध्यता से अधिक जो हमें उपयोग करती है, पृष्ठभूमि में निरंतर चलती हुई, घटनाओं के निर्बाध प्रवाह को लाभ और हानि के एक शेर-बाज़ार-टिकर में बदलती हुई जिसके सामने हमारी शांति उठती और गिरती है। श्रेणीकरण करता मन व्यक्तिगत कर्म का इंजन-कक्ष है। वह सदा अंक जोड़ता रहता है।

कठिनाई यह नहीं कि भेद मिथ्या हैं — अग्नि सचमुच बर्फ से अधिक उष्ण है, करुणा सचमुच क्रूरता से जीवन की बेहतर सेवा करती है, और एक पुस्तक जो अन्यथा दिखावा करती मूल्यहीन होती। कठिनाई भेद से निर्णय तक की छलाँग है: "इस क्रिया ने जीवन की सेवा की और उसने हानि पहुँचाई" से "यह मुझे अच्छा बनाती है और वह मुझे बुरा" तक, "यह परिणाम वही है जिसकी आशा थी और वह नहीं" से "यह घटना एक विजय है और वह एक विपत्ति जो ब्रह्मांड ने मुझ पर लाई" तक। हर वाक्य का पहला अर्थ स्पष्ट देखना है। दूसरा अर्थ श्रेणीकरण करता मन है जो व्यक्तिगत खाते को पोषित करने के लिए उस देखने का अपहरण कर लेता है। हम विवेक रख सकते हैं और निर्णय छोड़ सकते हैं। वस्तुतः, निर्णय सक्रिय रूप से विवेक को भ्रष्ट करता है, क्योंकि अपने ही श्रेणीकरण को लेकर चिंतित मन स्पष्ट नहीं देख सकता कि कोई स्थिति क्या अपेक्षित करती है।

## बड़ा और छोटा क्षितिज पर घुल जाते हैं

विचारिए कि एक बार जब आप पैमाने को स्व के विरुद्ध मापना बंद कर देते हैं तो वह कितनी पूर्णता से ढह जाता है। हम कुछ घटनाओं को बड़ा कहते हैं — एक युद्ध, एक संपत्ति, एक प्रसिद्ध जीवन — और अन्य को छोटा — एक पका हुआ भोजन, एक अनदेखी कृपा, एक शांत मृत्यु। किंतु बड़ा और छोटा पूर्णतः व्यक्तिगत अहं के दृष्टिकोण से मापे जाते हैं, जो दृश्यता और स्वयं-के-प्रति-परिणाम को आकार के रूप में गिनता है। समग्र के दृष्टिकोण से, ऐसा कोई श्रेणीकरण नहीं। एक भोजन का पकना और एक आकाशगंगा का घूमना दोनों बस गति में आई ब्रह्मांडीय व्यवस्था हैं, व्यवस्था स्वयं को घटनाओं में व्यक्त करती हुई, प्रत्येक पूर्ण, प्रत्येक समग्र, प्रत्येक स्वर-रचना में एक सच्चा स्वर। सूर्य अपनी कक्षा को एक बड़ी उपलब्धि नहीं मानता, न कोशिका अपने शांत श्रम को छोटा मानती है। केवल स्व श्रेणीकरण करता है, क्योंकि केवल स्व का सार्थक होने में दाँव है।

यह किसी मनुष्य को उपलब्ध सबसे मुक्तिदायी पहचानों में से एक है, और सबसे अधिक प्रतिरोधित में से भी, क्योंकि अहं इसे एक खतरे के रूप में सुनता है। यदि मेरी महान उपलब्धियाँ, ब्रह्मांडीय रूप से, बड़ी नहीं, तो प्रयोजन क्या था? किंतु इसे पलटिए और स्वतंत्रता प्रकट होती है। यदि कुछ भी ब्रह्मांडीय रूप से बड़ा नहीं, तो कुछ भी ब्रह्मांडीय रूप से छोटा भी नहीं — और वे शांत, अनदेखे, "नगण्य" कृत्य जो एक मानव-जीवन का लगभग समूचा बनाते हैं, ठीक उतने ही वास्तविक, ठीक उतने ही ब्रह्मांडीय व्यवस्था की गति के रूप में उघड़ते हैं जितने प्रसिद्ध और भव्य। रात के तीन बजे एक बच्चे को सहलाती माँ, अनदेखी और अनभिलिखित, उतनी ही पूर्णता से गति में आई व्यवस्था है जितना किसी विजेता का अभियान। जब शुभ और अशुभ और बड़ा और छोटा निर्णयों के रूप में गिर जाते हैं, तो जो शेष रहता है वह एक धूसर उदासीनता नहीं बल्कि एक प्रकाशमान समता है, जिसमें हर कृत्य को उसका पूर्ण ध्यान ठीक इसलिए दिया जा सकता है क्योंकि उनमें से कोई एक ऐसे स्व के तराजू पर नहीं तौला जा रहा जिसे आगे निकलना है।

## वह प्रतिवर्ती क्रिया जो हर वस्तु को नैतिक बना देती है

इसकी गति देखिए। कुछ घटित होता है — एक अजनबी पंक्ति में आगे घुस आता है, एक सहकर्मी श्रेय ले लेता है, दुर्भाग्य का एक दौर आता है — और किसी सोद्देश्य विचार से पूर्व, एक निर्णय पहले ही बन चुका है: वह गलत था, वह व्यक्ति बुरा है, यह अनुचित है, मैं इससे

बेहतर का योग्य हूँ। नैतिक बनाती प्रतिवर्ती क्रिया चिंतन से तेज चलती है, संसार को योग्यों और अयोग्यों में, अच्छों और बुरों में, उन घटनाओं में जो होनी चाहिए थीं और उन घटनाओं में जो नहीं होनी चाहिए थीं, छाँटती हुई। वह नैतिक स्पष्टता-सी लगती है, उसी सामर्थ्य-सी जो हमें भला बनाती है। किंतु वह काफ़ी हद तक एक मशीन है, और सब मशीनों की भाँति वह चलती है चाहे उसका संचालन हमारी सेवा करे या न करे, हर तटस्थ घटित होने को निर्णय के अवसर में बदलती हुई और इस प्रकार व्यक्तिगत खाते को सतत खुला रखती हुई। प्रतिवर्ती क्रिया हमें अच्छा नहीं बनाती। वह हमें थका हुआ, धर्मी, और सतत आहत बनाती है, सदा एक ऐसे संसार को मापती हुई जिसने श्रेणीबद्ध किए जाने को नहीं कहा।

यहाँ स्वतंत्रता सूक्ष्म है और सहज ही उसके विपरीत समझ ली जाती है, इसलिए मुझे सटीक होने दीजिए। नैतिक बनाती प्रतिवर्ती क्रिया को छोड़ना हानि को सहायता से, क्रूरता को करुणा से, जीवन की सेवा करती क्रिया को उसे घायल करती क्रिया से बता पाने की सामर्थ्य खोना नहीं। वह विवेक अमूल्य है और तीक्ष्ण रखा जाना चाहिए। जो छोड़ा जाता है वह बाध्यकारी, तात्क्षणिक, स्व-संदर्भी निर्णय है — "इस क्रिया ने हानि पहुँचाई" से "मेरे साथ अन्याय हुआ है और किसी को चुकाना ही होगा" तक की छलाँग, "यह परिणाम अवांछित है" से "ब्रह्मांड ने मेरे साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार किया है" तक की। विवेक स्थिति को देखता है और पूछता है कि उसे क्या चाहिए। निर्णय स्थिति को देखता है और पूछता है कि किसका दोष है और वे क्या ऋणी हैं। एक स्पष्ट करता और मुक्त करता है; दूसरा भड़काता और बाँधता है। हम पहले को रख रहे हैं और दूसरे को छोड़ रहे हैं, और उनके बीच का अंतर एक स्पष्ट आँख और एक भिंची मुट्ठी के बीच का अंतर है।

## एक समता जो उदासीनता नहीं है

लोग डरते हैं कि घटनाओं का श्रेणीकरण बंद करना उनकी परवाह करना बंद करना है — कि चिंतित अंक-पट्ट का विकल्प एक धूसर उदासीनता है जिसमें कुछ मायने नहीं रखता और व्यक्ति जीवन से अविचलित बहता है। यह भय उसके स्वभाव को ग़लत समझता है जो प्रस्तावित किया जा रहा है। यह पुस्तक जिस समता की ओर संकेत करती है वह न-परवाह करने की चपटाई नहीं; वह हर वस्तु की परवाह करने की पूर्णता है बिना स्व के लिए उनमें से किसी के एक विशेष ढंग से होने की आवश्यकता के। जिस व्यक्ति ने अंक-पट्ट रख दिया है वह कम प्रेम नहीं करता; वह अधिक स्वतंत्रता से प्रेम करता है, क्योंकि उसका प्रेम अब उसके हिसाब से



उलझा नहीं। वह क्रूरता की अपेक्षा करुणा को पसंद करना बंद नहीं करता; वह बस उस पसंद को अपने या दूसरों के ब्रह्मांडीय मूल्य पर एक निर्णय में बदलना बंद कर देता है। एक व्यग्र माता-पिता के बीच का अंतर चित्रित कीजिए जिसे अपने पालन-पोषण को मान्य करने के लिए बच्चे की सफलता चाहिए और एक स्थिर माता-पिता के बीच जो बच्चे के अपने ही हित के लिए चाहता है कि वह फले-फूले। दोनों तीव्रता से परवाह करते हैं। किंतु एक एक भिंची, अंक-रखती चिंता के साथ परवाह करता है, और दूसरा एक खुली, सम भक्ति के साथ समता कम प्रेम नहीं है। वह बही-खाता हटा दिए गए प्रेम है।

## निर्णयों के बिना मूल्य

यह सटीक होना सार्थक है कि श्रेणीकरण करते मन के ध्वंस के बाद क्या बचता है, क्योंकि एक लापरवाह पाठक यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि यह पुस्तक हमसे सब मूल्यों को त्यागने, यह परवाह करना बंद करने कि क्रियाएँ सहायता करती हैं या हानि, एक नीरस नैतिक उदासीनता में घुल जाने को कहती है। वह ऐसा कुछ नहीं माँगती। एक मूल्य और एक निर्णय के बीच एक स्वच्छ भेद है, और समूची शिक्षा उसी भेद में जीती है। एक मूल्य एक अभिविन्यास है — क्रूरता की अपेक्षा करुणा की ओर, छल की अपेक्षा सत्य की ओर, उसे घायल करती क्रिया की अपेक्षा जीवन की सेवा करती क्रिया की ओर। एक निर्णय एक स्व के ब्रह्मांडीय मूल्य पर सुनाया गया फैसला है — यह मुझे अच्छा बनाता है, वह उसे बुरा, यह परिणाम सिद्ध करता है कि मैं अनुग्रहीत हूँ, वह सिद्ध करता है कि मैं अभिशप्त। हम मूल्य रखते हैं और निर्णय छोड़ते हैं। मूल्य हमारी क्रिया को अभिमुख करते हैं; निर्णय केवल व्यक्तिगत खाते को पोषित करते हैं, और वे उन्हीं मूल्यों को भ्रष्ट करते हैं जिनकी सेवा का वे दावा करते हैं, क्योंकि अपने ही श्रेणीकरण को लेकर चिंतित मन स्वच्छता से प्रत्यक्ष नहीं कर सकता कि करुणा या सत्य यहाँ, अभी, वास्तव में क्या अपेक्षित करता है।

ध्यान दीजिए कि सबसे नैतिक रूप से गंभीर लोग विरले ही सबसे आत्म-धर्मी होते हैं। आत्म-धर्मी निर्णय में लीन हैं — अपने ही भलेपन में, दूसरों के बुरेपन में, प्राप्य के अंक-पट्ट में — और यह लीनता उन्हें उनके सामने की वास्तविक स्थिति के प्रति अंधा कर देती है, जो वही है जहाँ वास्तविक नैतिक क्रिया जीती है। सचमुच भले लोग स्थिति में लीन हैं, उसे जो चाहिए उसमें, अपने सामने के व्यक्ति में, अपनी ही नैतिक स्थिति पूर्णतः भूले हुए। बिना अंक-पट्ट के ठीक कर्म करना कोई हीन नीति नहीं बल्कि एक उच्चतर है — उस आत्म-सम्मान से मुक्त नीति

जो सदा उसका मुख्य भ्रष्टाचार था, ध्यान पूर्णतः उसे दिया गया जो सेवा करता है न कि इसे कि सेवा करने वाले पर सेवा कैसी झलकती है। अपने मूल्य रखिए, प्रचंडता से। निर्णय छोड़िए, प्रसन्नता से। मूल्य कभी वह नहीं थे जो आपको चोट पहुँचा रहा था, और एक बार अंक-पट्ट चले जाने पर वे आपको बेहतर मार्गदर्शन देंगे।

## वह तुलना जो विषाक्त करती है

श्रेणीकरण करता मन अपनी सबसे तीक्ष्ण क्रूरता तुलना के लिए आरक्षित रखता है — अपने ही जीवन को दूसरों के जीवनो के विरुद्ध मापना, स्वयं को एक ऐसे तराजू पर निरंतर अंकित करना जिसका दूसरा छोर सदा कोई होता है जिसके पास अधिक है। सामाजिक तुलना शायद दुःख का सबसे कार्यक्षम इंजन है जो मानव-मन के पास है, और वह लगभग निरंतर चलती है: यह व्यक्ति अधिक सफल है, वह अधिक प्रिय, यह अधिक उपलब्धि-संपन्न, वह अधिक शांति। और क्रूरता संरचनात्मक है, क्योंकि आप जो भी तराजू चुनें उस पर सदा कोई आगे होता है, इसलिए तुलना कभी वह विश्राम नहीं दे सकती जिसका वह वचन देती है; जिस क्षण एक प्रतिद्वंद्वी लाँघा जाता है, आँख अगले को खोज लेती है, और अंकन फिर आरम्भ हो जाता है। ईर्ष्या बस तुलना करता मन तेजाब बना हुआ है, व्यक्तिगत खाता अब ब्रह्मांड के विरुद्ध नहीं बल्कि पड़ोसी के विरुद्ध रखा गया, और वह आपकी हर अच्छी वस्तु को किसी और के पास की एक अच्छी वस्तु के विरुद्ध मापकर विषाक्त कर देती है।

तुलना का विलय तुलना जीतने से नहीं आता — जो असंभव है, तराजू अंतहीन होने के नाते — बल्कि यह देखने से कि समूचा उपक्रम उसी व्यक्तिगत खाते पर टिका है जिसे यह पुस्तक आरम्भ से उधाड़ती रही है। तुलना को एक-दूसरे के विरुद्ध श्रेणीबद्ध किए जाने को पृथक खातों वाले पृथक स्व चाहिए; वह अध्याय-दर-अध्याय का परमाणुकृत हिसाब है, अब प्रतिद्वंद्विता के रूप में व्यक्त। यदि न कोई आपका कर्म है, न कोई मेरा, केवल वह एक कर्म जो हम सबके माध्यम से स्वयं को सम्पन्न करता है, तो दूसरे का फलना-फूलना मेरे खाते के विरुद्ध एक निशान नहीं, क्योंकि अंकित किए जाने को कोई पृथक खाते हैं ही नहीं। पड़ोसी का सौभाग्य वही गति में आई ब्रह्मांडीय व्यवस्था है जो मेरे अपने जीवन को गति देती है; वह मुझसे लिया नहीं गया, मेरे पीछे रह जाने का चिह्न नहीं, एक ऐसी होड़ में एक निर्णय नहीं जिसे मैं हार रहा हूँ। तुलना को छोड़ना एक ऐसी दौड़ दौड़ना बंद करना है जो कभी वास्तविक थी ही नहीं, उन प्रतिद्वंद्वियों

के विरुद्ध जो कभी पृथक् थे ही नहीं, एक ऐसे तराजू पर जो कभी वह शांति दे ही नहीं सकता था जिसका उसने वचन दिया।

### एक दृश्य: रजत पदक

शोधकर्ताओं ने जब ओलंपिक पदक-विजेताओं के चेहरों का अध्ययन किया तो उन्हें कुछ ऐसा मिला जो हमें विचलित करना चाहिए। कांस्य-पदक-विजेता, कुल मिलाकर, रजत से अधिक प्रसन्न दिखते थे। हर बाह्य माप से रजत-पदक-विजेता ने बेहतर किया था — संसार में दूसरा — और फिर भी उनमें से अनेक मंच पर प्रत्यक्षतः कुचले हुए खड़े थे, जबकि कांस्य-पदक-विजेता दमक रहे थे। कारण श्रेणीकरण करता मन है, क्रिया में पकड़ा गया। रजत-पदक-विजेता ठीक पहुँच से बाहर रह गए स्वर्ण के विरुद्ध मापता है: मैं लगभग जीत गया था; मैं वही हूँ जो कम रह गया। कांस्य-पदक-विजेता चौथे स्थान के विरुद्ध, बिल्कुल कोई पदक न होने के विरुद्ध मापता है: मैं पहुँच गया; मैं सम्मानितों में हूँ। वही घटना, वही मंच, और दो विपरीत अनुभव — पूर्णतः उस दिशा से उत्पन्न जिसमें श्रेणीकरण करते मन ने देखना चुना।

यह श्रेणीकरण करता मन उघड़ा हुआ है, और इसे हमें मुक्त करना चाहिए, क्योंकि यह दर्शाता है कि हमारे दुःख और हमारी संतुष्टि का उससे कितना कम सरोकार है जो वास्तव में घटित हुआ, और उस अंक-पट्ट से कितना अधिक जिसे हम उसके विरुद्ध ऊपर थामते हैं। रजत-पदक-विजेता की वेदना उपलब्धि में नहीं, जो असाधारण थी; वह निर्णय में है, उस स्वर्ण की निरंतर तुलना में जो किसी के लिए कभी निश्चित नहीं था। अंक-पट्ट छोड़िए — वह विवेक नहीं जो एक तेज़ दौड़ को एक धीमी से जानता है, बल्कि वह निर्णय जो दौड़ को स्व पर एक जनमत-संग्रह में बदल देता है — और वही उपलब्धि बस वह हो सकती है जो वह है: एक की गई वस्तु, पूर्णतः और भली-भाँति, अपने आप में पूर्ण, वास्तविक होने को किसी श्रेणीकरण की आवश्यकता नहीं। पदक नहीं बदलता। दुःख, जो कभी पदक में था ही नहीं, बदल सकता है।

\*  
\*\*

### एक चिंतन

हम में एक प्रतिवर्ती क्रिया है जो हर घटना को शुभ और अशुभ में, हर परिणाम को सफलता और असफलता में श्रेणीबद्ध करती है, और जीवन के निर्बाध प्रवाह को एक अंक-पट्ट में बदल देती है जिसके सामने हमारी शांति उठती और गिरती है। हम वह विवेक रख सकते हैं जो हानि

को सहायता से बताता है, और वह निर्णय छोड़ सकते हैं जो व्यक्तिगत खाते को खुला रखता है।

आज एक घंटे के लिए, श्रेणीकरण करती प्रतिवर्ती क्रिया को चलते देखिए — यातायात, मौसम, ईमेल, अपने ही प्रदर्शन पर तात्क्षणिक निर्णय। आपको उन्हें रोकने की आवश्यकता नहीं। बस हर एक को उठते ही देखिए, और अनुभव कीजिए कि निरंतर अंकन कितना थकाने वाला है। अंक-पट्ट को देखना उसे रख देने योग्य होने का आरम्भ है।

## अकर्तृत्व का गणित

---

कृत्य में से कर्ता को घटा दीजिए, और कृत्य घटता नहीं। वह मुक्त हो जाता है।

— अकर्तृत्व पर टिप्पणी

मैंने अकर्तृत्व शब्द को बिना अभी तक निकट से जाँचे प्रयोग किया है, और वह अपने ही एक अध्याय का पात्र है, क्योंकि वह वह सटीक धुरी है जिस पर समूची व्यावहारिक शिक्षा घूमती है। अकर्तृत्व का अर्थ न-करना नहीं है। उसका अर्थ है एक ऐसे कर्ता के मिथ्या जोड़ के बिना करना जो करने का स्वामी हो। मैं इस अध्याय को एक "गणित" कहता हूँ क्योंकि संरचना लगभग अंकगणित-सी है: एक मात्रा है जिसे हम आदतन हर क्रिया में जोड़ देते हैं — स्वामी स्व — और समूची कला उसे घटा देने में, और यह खोज लेने में है कि क्रिया शेष रहती है, अक्षत और सुधरी हुई।

किसी भी कुशल क्रिया को उसके सर्वोत्तम पर सम्पन्न होते देखिए और आप अकर्तृत्व को पहले से ही संचालित होते देखेंगे, यद्यपि हम विरले ही उसे नाम देते हैं। पूर्ण प्रवाह में पियानोवादक यह नहीं सोच रहा कि "मैं अपनी उँगलियाँ चला रहा हूँ।" उँगलियाँ चल रही हैं; संगीत घटित हो रहा है; "मैं" छूट गया है, और उसका छूटना ही ठीक उत्कृष्टता की शर्त है। जिस क्षण पियानोवादक कर्ता को पुनः भीतर डालता है — "मुझे देखो, मैं बजा रहा हूँ, मुझे असफल नहीं होना" — प्रवाह टूट जाता है और बजाना अकड़ जाता है। खिलाड़ी इस अवस्था को "जोन" कहते हैं और उसका वर्णन, सदा, अकर्तृत्व की भाषा में करते हैं: यह स्वयं बज उठा, मैं बस देख रहा था, शॉट ने स्वयं को मार लिया। वे, अनुभव की भाषा में, ठीक उसी संरचना की सूचना दे रहे हैं जिसका यह पुस्तक वर्णन करती है।

### वह समीकरण

मुझे गणित को यथासंभव सरलता से कहने दीजिए। साधारण क्रिया का रूप है: कर्ता जमा कृत्य जमा स्वामित्व का दावा। स्वामित्व का दावा समूची कठिनाई का स्रोत है — हिचक, चिंता,

गर्व, लज्जा, शोक। अकर्तृत्व बस उस एक पद को घटा दी गई साधारण क्रिया है: कृत्य, पूर्णतः उपस्थित, साक्षित, अदावित। कृत्य घटाव से घटता नहीं। इसके विपरीत, कृत्य मुक्त हो जाता है, क्योंकि जो पद हमने हटाया वह उसे विकृत करती एकमात्र वस्तु थी।

यही कारण है कि घटाव, जब वह पहली बार घटित होता है, एक हानि-सा लगता है और एक उपहार सिद्ध होता है। अहं स्वामित्व के हटाए जाने को एक प्रकार की मृत्यु के रूप में अनुभव करता है — और वह है, उस छोटे ढंग से जिसे हमने विलय के अध्याय में जाँचा। किंतु जो मरता है वह केवल विकृत करता पद है। जो शेष रहता है वह अपनी शुद्धता में क्रिया है, और एक विशाल शांत विस्तृति जहाँ चिंतित स्वामी खड़ा रहता था। जो लोग इसे क्षण-भर के लिए भी चखते हैं वे सब संस्कृतियों और शताब्दियों भर इसका वर्णन एक ही ढंग से करते हैं: एक बोध कि क्रिया उनके द्वारा के बजाय उनके माध्यम से घटित हो रही है, एक अप्रत्याशित शांति के साथ, और, बहुधा, एक कौशल की अचानक पहुँच जिसके होने का उन्हें पता नहीं था।

### अधिक करना, कम नहीं

मुझे इस बिंदु को ठोकना होगा क्योंकि यही सबसे अधिक खो जाता है: अकर्तृत्व अधिक क्रिया उत्पन्न करता है, कम नहीं, और बेहतर क्रिया, बदतर नहीं। भय यह है कि उसे चलाते स्वामी स्व के बिना, क्रिया रुक जाएगी — कि हम निष्क्रिय, ढीले, उदासीन बन जाएँगे। उल्टा सत्य है। स्वामी स्व क्रिया का इंजन नहीं; वह घर्षण है। घर्षण हटाइए और क्रिया अधिक स्वतंत्रता से, अधिक प्रचुरता से, अधिक कुशलता से चलती है। नदी को बहने का निर्णय करते किसी पृथक "नदी-कर्ता" की आवश्यकता नहीं; वह अपने स्वभाव से बहती है, और वह वहाँ सर्वश्रेष्ठ बहती है जहाँ कुछ उसे बाँधता नहीं। आप वह नहीं जिसे करने को विवश करना है। करना ब्रह्मांड का है, उस स्थल के माध्यम से गति करता हुआ जो आप हैं, और आपका एकमात्र कार्य स्वामित्व का घर्षण जोड़ना बंद करना है।

अगला अध्याय इसे सीधे उस स्थान में ले जाता है जहाँ यह आधुनिक लोगों के लिए सबसे अधिक मायने रखता है — उत्कृष्टता की खोज — और दिखाता है कि वह चिंता जिसे हम मानते हैं कि हमारी उपलब्धि को चला रही है, वस्तुतः उसमें सबसे बड़ी एकल बाधा है।

## उस पद को घटाना जो कभी वास्तविक था ही नहीं

मैंने इसे अकर्तृत्व का गणित कहा है, और समीकरण लगभग लज्जाजनक रूप से सरल है। कोई भी क्रिया लीजिए और उसे वैसे लिखिए जैसा वह साधारण मन को दिखता है: क्रिया बराबर कृत्य जमा कर्ता। एक की गई वस्तु है, और एक पृथक् स्व है जिसने उसे किया और अब उसका स्वामी है। इस पुस्तक का समूचा तर्क यह है कि दूसरा पद मिथ्या है — कोई वास्तविक मात्रा नहीं जिसे हम अनदेखा करना चुनते हैं, बल्कि एक प्रेत जो आरम्भ से था ही नहीं, मन के व्याकरण द्वारा वैसे जोड़ा गया जैसे वर्षा में स्थानापन्न "it" जोड़ा जाता है। प्रेत को घटाइए और समीकरण बस यह पढ़ता है: क्रिया बराबर कृत्या कृत्य शेष रहता है, समूचा और वास्तविक। केवल मिथ्या स्वामी गया। और मिथ्या स्वामी के साथ वे सब मात्राएँ जाती हैं जो उस पर निर्भर थीं — अपराध-बोध, गर्व, चिंता, व्यक्तिगत खाते का रखना — क्योंकि वे कभी कृत्य के गुण थे ही नहीं, बल्कि केवल उस प्रेत कर्ता के जिसने उसका दावा किया।

ध्यान दीजिए कि यह घटाव क्या हटाता है और क्या नहीं। वह क्रिया को नहीं हटाता; शल्यक्रिया अब भी होती है, भोजन अब भी पकता है, शब्द अब भी बोले जाते हैं। वह कौशल, देखभाल, पूर्ण संलग्नता को नहीं हटाता; यदि कुछ हो तो उन्हें तीव्र करता है, जैसा हम देखेंगे। वह वास्तविक अर्थ में उत्तरदायित्व तक नहीं हटाता — स्थिति को जो चाहिए उसके प्रति प्रत्युत्तरशीलता, जो हानि हुई उसे सुधारने की तत्परता। वह जो हटाता है वह केवल वह काल्पनिक स्वामी है जो कृत्य के पीछे खड़ा उसका स्वामित्व ले रहा था, और उसके साथ आत्म-अभिनंदन और आत्म-दंड का समूचा तंत्र जिसने क्रिया को इतना भारी बना दिया। अकर्तृत्व करने की समाप्ति नहीं। यह प्रेत कर्ता को घटाकर करना है, अर्थात्, ऐसा करना जो अंततः हल्का हो गया है।

## अधिक करना, कम नहीं — और उसे बेहतर करना

सतत भय यह है कि एक कर्ता के बिना, कुछ नहीं होगा — कि स्व क्रिया का इंजन है और उसे घुला देना निष्क्रियता में घुल जाना है। उल्टी दशा है, और एक बार खोजने पर प्रमाण सर्वत्र है। किसी ऐसे क्षण को विचारिए जिसमें आपने अपने परम सर्वोत्तम पर कर्म किया: वह वार्तालाप जहाँ ठीक सही शब्द बिना आपके जोड़े पहुँच गए, वह संकट जिसमें से आप एक ऐसी स्पष्टता से गुजरे जिसने आपको बाद में चकित किया, वह कार्य जो आपके हाथों के माध्यम से स्वयं को करता प्रतीत हुआ। ऐसे हर क्षण में, स्व शांत हो गया था। आप क्रिया के पीछे खड़े उसे

प्रबंधित करते हुए, यह गणना करते हुए कि वह आप पर कैसी झलकती है, परिणाम को पकड़ते हुए नहीं थे। क्रिया बस घटित हो रही थी, पूर्णतः और भली-भाँति, उस स्थल के माध्यम से जो आप हैं। हम इन क्षणों को प्रवाह, या ज़ोन में होना, या अनुग्रह कहते हैं, और हम उन्हें दुर्लभ दुर्घटनाओं की भाँति बरतते हैं। वे दुर्घटनाएँ नहीं हैं। वे वही हैं जो क्रिया बन जाती है जब भी प्रेत कर्ता मार्ग से हट जाता है।

सो गणित कोई पीछे हटने की सलाह नहीं। वह ठीक उल्टा है: पूर्ण संलग्नता की सलाह, उस घर्षण से मुक्त जो स्वामित्व प्रस्तुत करता है। प्रेत कर्ता कभी कार्य कर ही नहीं रहा था; वह केवल श्रेय ले रहा था और भय वहन कर रहा था, और श्रेय और भय दोनों क्रिया पर खिंचाव थे, कृत्य पर जोड़ा गया भार। उसे घटाइए और कार्य रुकता नहीं — वह त्वरित होता है, गहराता है, स्पष्ट होता है, क्योंकि वह समूची बुद्धि जो स्व-प्रबंधन पर खर्च हो रही थी अब स्वयं कार्य के लिए उपलब्ध है। यही कारण है कि वे ऋषि जो अकर्तृत्व की सबसे आग्रहपूर्वक बात करते थे, अक्सर विशाल और अथक क्रिया के लोग थे। उन्होंने बस यह खोज लिया था कि सबसे प्रभावी क्रिया वह क्रिया है जिसका कोई दावा नहीं कर रहा — कर्ता के बिना कृत्य, अंततः मुक्त किया गया कृत्य।

## जो खिलाड़ी पहले से ही जानते हैं

जिस अवस्था की ओर यह समूची पुस्तक संकेत करती है उसका मानचित्र सबसे सटीकता से रहस्यवादियों ने नहीं बल्कि खिलाड़ियों और कलाकारों ने बनाया है, जो उस तक विश्वसनीय रूप से पहुँचते हैं और उसका वर्णन तत्त्वमीमांसा के एक चिह्न तक के बिना करते हैं। वे उसे ज़ोन में होना कहते हैं, और उसका हर वृत्तांत एक ही बात कहता है: स्व लुप्त हो गया, प्रयास मिट गया, क्रिया स्वयं को करती प्रतीत हुई, समय ने अपना पोत बदला, और — निर्णायक रूप से — प्रदर्शन उनके जीवन का सर्वश्रेष्ठ था। बास्केटबॉल खिलाड़ी चूक नहीं सकता और प्रयास नहीं कर रहा; संगीतकार वाद्य बजा नहीं रहा जितना उसके माध्यम से बजाया जा रहा है; लेखक वाक्यों को आते देखता है मानो श्रुतलेखित। हर दशा में शिखर-अवस्था का चिह्न कर्ता की अनुपस्थिति है। कोई कमज़ोर कर्ता अधिक प्रयास करता हुआ नहीं, बल्कि एक अनुपस्थित — प्रेत स्वामी गया, और उसकी अनुपस्थिति में कौशल का वह पूर्ण, अबाधित प्रवाह जिसे उसकी उपस्थिति आरम्भ से रोक रही थी।



मैं इसकी ओर इसलिए संकेत करता हूँ कि यह अकर्तृत्व की शिक्षा को विचित्र के क्षेत्र से हटाकर साधारण सत्यापित मानवीय अनुभव में रोप देता है। आपको किसी प्राचीन सिद्धांत में विश्वास करने की आवश्यकता नहीं यह स्वीकारने को कि क्रिया तब सर्वश्रेष्ठ होती है जब स्व मार्ग से हट जाता है; आपको केवल किसी ऐसे व्यक्ति की गवाही से परामर्श करना है जिसने कभी अपनी सीमा पर प्रदर्शन किया हो, या अनायास सक्षमता के अपने ही क्षणों को स्मरण करना है। ऋषि कोई दुर्लभ रहस्यमय दशा का वर्णन नहीं कर रहे थे जो केवल दशकों के त्याग के बाद उपलब्ध हो। वे वही आत्म-विस्मृत उत्कृष्टता का वर्णन कर रहे थे, और उसे आदत बनाने का प्रस्ताव दे रहे थे, जिसमें एक खिलाड़ी कुछ मिनटों के लिए ठोकर खाकर पहुँचता है और अपना शेष कैरियर उसे पुनः पाने का प्रयास करते बिताता है। अकर्तृत्व ज्ञान है, सामान्यीकृत — केवल खेल के लिए नहीं, बल्कि एक समूचे जीवन के लिए।

### **प्रयास बाधा है, इंजन नहीं**

यहाँ वह गाँठ है जो सच्चे लोगों को वर्षों फँसाए रखती है। वे सुनते हैं कि स्व को मार्ग से हटाना ही चाहिए, और इसलिए वे स्व को मार्ग से हटाने का प्रयास करते हैं — यह न देखते हुए कि वह प्रयास ही स्व है, पूर्णतः उपस्थित, अब स्व-निष्कासन नामक एक नई परियोजना पर परिश्रम करता हुआ। वे प्रयास रोकने का जितना कठोर प्रयास करते हैं, कर्ता उतनी ही दृढ़ता से स्थापित होता है, क्योंकि श्रमपूर्ण प्रयास ठीक कर्ता का हस्ताक्षर-ढंग है। यही कारण है कि अकर्तृत्व इच्छा-शक्ति से प्राप्त नहीं किया जा सकता, और यही कि उसे विवश करने का हर प्रयास असफल होता है। स्व स्वयं को एक स्व के कृत्य से नहीं हटा सकता; वह वैसा ही है जैसे एक हाथ स्वयं को पकड़ने का प्रयास करे, या एक आँख स्वयं को सीधे देखने का। जो कर्ता को घुलाता है वह कोई अधिक श्रमपूर्ण प्रयास नहीं बल्कि समझ है — यह स्पष्ट देखना कि कर्ता आरम्भ से कार्य कर ही नहीं रहा था, कि क्रिया समूचे क्षेत्र से उस स्थल के माध्यम से बहती है जो आप हैं, कि हटाने को कुछ है ही नहीं क्योंकि स्वामी सदा एक कल्पना था। प्रयास महान अवस्था का इंजन नहीं; वह उसकी ठीक बाधा है। कर्ता धकेले जाने पर नहीं जाता। वह भेद दिए जाने पर जाता है।

### **न भाग्यवाद, न बहाव**

किसी को भ्रमित करने से पूर्व मुझे एक द्वार दृढ़ता से बंद करने दीजिए। यह कहना कि कोई पृथक कर्ता नहीं, यह कहना नहीं कि कोई क्रिया नहीं, कोई उत्तरदायित्व नहीं, उपस्थित होने

का कोई प्रयोजन नहीं — यह भाग्यवाद नहीं, और यह बहने का बहाना नहीं। भाग्यवादी कहता है कि मैं जो करूँ कुछ मायने नहीं रखता, इसलिए मैं कुछ नहीं करूँगा, और ऐसा कहने में उधाड़ देता है कि वह अब भी कर्ता में विश्वास करता है; उसने बस कर्ता को चिंतित के बजाय निराश बना दिया है। अकर्तृत्व इसका विपरीत है। वह यह नहीं कहता कि कुछ मायने नहीं रखता; वह कहता है कि हर वस्तु, पूर्णतः और परिणामपूर्वक, एक ऐसे क्षेत्र के माध्यम से घटित होती है जिसका आप एक वास्तविक और सक्रिय अंश हैं — सो कर्म कीजिए, पूर्णतः, अपने समूचे कौशल के साथ, ठीक वैसे जैसे ज़ोन में खिलाड़ी पूर्णतः कर्म करता है। अंतर केवल इतना है कि क्रिया अब अपने पीछे एक प्रेत स्वामी नहीं घसीट रही। भाग्यवाद क्रिया से पीछे हटता है; अकर्तृत्व स्वयं को क्रिया में उड़ेल देता है और केवल स्वामित्व के मिथ्या दावे को पीछे खींचता है। एक झुका हुआ हार मान लेना है; दूसरा सबसे पूर्ण-हृदय संलग्नता है जिसमें कोई मनुष्य समर्थ है, अंततः उस स्व से अभाररहित जो उसके मार्ग में आ रहा था।

## प्रयास और अनुग्रह

ईसाई रहस्यवादियों ने अनुग्रह की बात की — एक ऐसे भले की जो प्रयास की मजदूरी के रूप में नहीं बल्कि एक उपहार के रूप में आता है, अनर्जित, बहुधा ठीक तब जब प्रयत्न स्वयं को थका कर हार मान चुका हो। ताओवादियों ने अनगढ़ काष्ठ-खंड की और बिना रचे सम्पन्न करने की बात की। परंपराएँ भिन्न शब्दावलिआँ प्रयोग करती हैं, किंतु वे उसी अवलोकन के चारों ओर घूमती हैं जिसे अकर्तृत्व का सिद्धांत संरचनात्मक बनाता है: कि गहनतम और सर्वोत्तम क्रिया श्रमपूर्ण स्व द्वारा रची हुई अनुभव नहीं होती, बल्कि प्राप्त हुई, मानो वह व्यक्ति से के बजाय व्यक्ति के माध्यम से आई हो। यह प्रयास का खंडन नहीं — रहस्यवादी ने प्रार्थना की, ऋषि ने अभ्यास किया, निपुण ने दस हजार घंटे लगाए — बल्कि एक पहचान कि प्रयास की भूमिका तैयारी की है, कि वह भूमि को तैयार करता है, और कि वास्तविक प्रस्फुटन, जब वह आता है, अनुग्रह के रूप में, उपहार के रूप में, उस तैयार उपकरण के माध्यम से घटित होती किसी वस्तु के रूप में आता है, न कि किसी ऐसी वस्तु के रूप में जिसे उपकरण बल से गढ़ता है।

दोनों को एक साथ थामिए, प्रयास और अनुग्रह, क्योंकि किसी एक को छोड़ देना त्रुटि में गिरना है। प्रयास छोड़िए और आपको वह मिथ्या अनायासता मिलती है जिसके विरुद्ध यह पुस्तक पहले ही चेतावनी दे चुकी है — वह आलस्य जो अपनी जड़ता को समर्पण कहता है, वह

नौसिखिया जिसने कभी अभ्यास नहीं किया एक ऐसी निपुणता की प्रतीक्षा करता हुआ जो केवल अभ्यास अर्जित करता है। अनुग्रह छोड़िए और आपको वह तनावपूर्ण, चिंतित, स्वरचित प्रयत्न मिलता है जिसे यह पुस्तक अपनी समूची लम्बाई भर उधाड़ती रही है — वह कर्ता जो विश्वस्त है कि परिणाम उसका गढ़ने को है, सदा कसकर पकड़ता हुआ। सत्य दोनों को थामता है: समूचे प्रयास से उपकरण को तैयार कीजिए, और फिर परिणाम को उस अनुग्रह को सौंप दीजिए जो तैयार उपकरण के माध्यम से स्वयं ही आता है। पियानोवादक उस अनुच्छेद का दस हजार बार अभ्यास करता है — वह प्रयास है — और फिर, प्रदर्शन में, उन हाथों के माध्यम से संगीत को स्वयं बजने देता है जिन्हें अभ्यास ने तैयार किया — वह अनुग्रह है। अकर्तृत्व प्रयास का उन्मूलन नहीं। वह वह प्रयास है जिसने अपना स्थान समझ लिया है: उपकरण को तैयार करना, और फिर एक ओर हटकर संगीत को आने देना।

## वह व्याकरण जो कर्ता को रचता है

स्वयं भाषा कर्ता को स्थापित करने का षड्यंत्र करती है, और इसके प्रति सजग होना अभ्यास का अंग है। क्रिया के विषय में हमारा बोला हर वाक्य एक क्रिया करता एक कर्ता रखता है — मैंने किया, मैंने चुना, मैंने बनाया, मैंने कराया — और प्रथम पुरुष का निरंतर व्याकरण, दिन में दस हजार बार दोहराया गया, चुपचाप इस विश्वास को पुष्ट करता है कि हर क्रिया के पीछे उसके रचयिता के रूप में एक पृथक "मैं" खड़ा है। हम सहज ही अन्यथा नहीं बोल सकते थे; भाषा हमें यह कहने का कोई स्वच्छ ढंग नहीं देती कि कृत्य बिना किसी स्वामी के इस स्थल के माध्यम से घटित हुआ, और इसलिए हम कहते हैं मैंने किया, और वह कहना, एक जीवन-भर में, इस अनुभूत निश्चय में जम जाता है कि एक "मैं" वहाँ था, करता हुआ। कर्ता, अंशतः, एक व्याकरणिक आदत है जो एक तत्त्वमीमांसा में कठोर हो गई — एक बोलने का ढंग जिसे एक होने का ढंग समझ लिया गया।

इसका अर्थ यह नहीं कि हमें अपनी वाणी को विचित्र निर्वैयक्तिक रचनाओं में यातना देनी चाहिए; वह स्वयं अपने प्रकार की एक पकड़ होगी, अहं अब निरहंकारी व्याकरण की एक परियोजना सम्पन्न करता हुआ। उसका अर्थ केवल यह है कि हम अपनी साधारण प्रथम-पुरुष वाणी को अधिक हल्केपन से थाम सकते हैं, उसे वह सुविधाजनक कल्पना जानते हुए जो वह है, उसी प्रकार जैसे हम कहते हैं कि सूर्य उगता है जबकि जानते हैं कि पृथ्वी घूमती है। जब आप कहते हैं मैंने यह किया, तो आपको उस पृथक रचयिता में विश्वास करने की आवश्यकता नहीं

जिसका व्याकरण संकेत देता है, उतना ही जितना आप विश्वास करते हैं कि "it" नामक कोई प्राणी वर्षा करता है जब आप कहते हैं कि वर्षा हो रही है। शब्द एक ऐसे कृत्य के लिए एक उपयोगी संक्षेप हैं जो उस स्थल के माध्यम से उठा जो आप हैं; वह कर्ता जिसे वे नाम देते प्रतीत होते हैं व्याकरणिक स्थानापन्न है, कोई खोजी गई सत्ता नहीं। क्रिया की साधारण भाषा बोलना जबकि चुपचाप जानना कि उसके पीछे कोई पृथक कर्ता नहीं, बेईमानी नहीं; वह बस सटीकता है — व्याकरण की सुविधाजनक कल्पना का उपयोग उससे छले बिना, जैसे हम उगते सूर्य की सुविधाजनक कल्पना का उपयोग करते हैं।

### एक दृश्य: वह पियानोवादक जिसने अपने हाथ देखे

एक संगीत-सभा का पियानोवादक, एक निर्दोष कैरियर में दशकों बीत चुके, बिना चेतावनी एक विशेष अनुच्छेद का आतंक विकसित कर बैठा — एक तेज़ धावन जिसे उसने दस हज़ार बार बिना सोचे बजाया था। आतंक एक अकेली संगीत-सभा में एक अकेली चूक के रूप में आरम्भ हुआ, किंतु बाद में वह, असहाय होकर, अपने ही हाथों को देखने लगा जैसे वे अनुच्छेद के पास पहुँचते, उस उँगली-संचालन के विषय में सोचने लगा जिसके विषय में उसे एक बार भी सोचने की आवश्यकता नहीं पड़ी थी, सचेत रूप से उसे नियंत्रित करने का प्रयास करने लगा जो सदा स्वयं को बजाता था। और वह जितना अधिक देखता और प्रयास करता और नियंत्रित करता, वह उतना ही बदतर होता गया, जब तक वह अनुच्छेद जिसका वह तीस वर्षों से स्वामी था, विशुद्ध ध्यान से, लगभग अबजाने योग्य बन गया।

उसकी त्रासदी कर्ता की पूर्ण शरीर-रचना है। जब तक बजाना बस घटित हो रहा था — संगीत उसके माध्यम से बहता हुआ, उँगलियों को प्रबंधित करता कोई पृथक स्व नहीं — वह अनायास और पूर्ण था। विपत्ति उसी क्षण आरम्भ हुई जब कर्ता आया और क्रिया का दावा किया, संगीतकार और संगीत के बीच स्वयं को घुसाते हुए, निगरानी करते हुए, नियंत्रित करते हुए, स्वामित्व करते हुए। उपचार, जिस हर शिक्षक से उसने परामर्श किया उसने अंततः अपने भिन्न ढंगों से उसे बताया, अनुच्छेद को नियंत्रित करने का और कठोर प्रयास करना नहीं था — वह रोग था — बल्कि उसे नियंत्रित करना बंद करना, हाथों को वह करने देना जो वे सदा जानते थे, देखते, प्रबंधित करते स्व को मार्ग से हटाना। यह शरीर में लिखा अकर्तृत्व का गणित है: कृत्य पूर्ण था जब तक कर्ता ने उसका दावा नहीं किया, और उसे कर्ता के प्रस्थान से ही फिर पूर्ण बनाया जा सकता था। पियानोवादक को अपने बजाने में कुछ जोड़ने की आवश्यकता नहीं थी।

उसे उसे घटाने की आवश्यकता थी जिसने, घातक रूप से, यह विश्वास करना आरम्भ कर दिया था कि वही है जो बजा रहा है।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

क्रिया बराबर कृत्य जमा कर्ता, साधारण मन आग्रह करता है। किंतु कर्ता स्व के व्याकरण द्वारा जोड़ा गया एक प्रेत है। उसे घटाइए और कृत्य शेष रहता है, समूचा और वास्तविक, जबकि अपराध-बोध, गर्व, और चिंता — जो केवल प्रेत के थे — गिर जाते हैं।

एक ऐसा क्षण स्मरण कीजिए जब आपने अपने परम सर्वोत्तम पर कर्म किया — वे शब्द जो स्वयं आ गए, वह संकट जो आश्चर्यजनक स्पष्टता से सामना किया गया, वह कार्य जो स्वयं को करता प्रतीत हुआ। ध्यान दीजिए कि उस क्षण में स्व शांत हो गया था; परिणाम को प्रबंधित करते एक कर्ता के पीछे खड़े बिना क्रिया थी। वह कोई दुर्घटना नहीं थी। वही है जो क्रिया बन जाती है जब भी प्रेत एक ओर हट जाता है।

## चिंता-रहित उत्कृष्टता

---

बाण उस हाथ से सबसे सीधा उड़ता है जो भूल चुका है कि वह एक धनुष थामे है।

— उत्कृष्टता पर टिप्पणी

हम एक ऐसी सभ्यता में जीते हैं जो मानती है कि चिंता उत्कृष्टता का मूल्य है — कि स्वामित्व की प्रेरणा, असफलता के भय, व्यक्तिगत उपलब्धि की भूख के बिना, हम सब साधारणता में डूब जाएंगे। यह विश्वास इतना गहरा है कि इस पर प्रश्न करना आलस्य का निमंत्रण-सा लगता है। मैं फिर भी इस पर प्रश्न करना चाहता हूँ, क्योंकि मेरे विचार से यह न केवल मिथ्या बल्कि ठीक उल्टा है: चिंता उत्कृष्टता का इंजन नहीं, वह उसकी मुख्य तोड़फोड़ करने वाली है, और उच्चतम उत्कृष्टता ठीक वहाँ फूलती है जहाँ चिंतित स्वामी एक ओर हट गया है।

इस पुस्तक की हर वस्तु इसी व्यावहारिक दावे की ओर बनती रही है। यदि कर्म व्यक्तिगत नहीं, यदि भूमिका क्षेत्र द्वारा निर्धारित होती है, यदि कर्ता एक विलीन होता पद है जिसे हम कृत्य में जोड़ते और घटाते हैं, तो चिंतित स्वामित्व का समूचा तंत्र — "मुझे सफल होना ही है, यह मेरा जीतने या हारने को है, मेरा मूल्य परिणाम पर निर्भर है" — न केवल तत्त्वमीमांसीय रूप से भ्रमित बल्कि कार्यात्मक रूप से हानिकारक है। वह ठीक उस उत्कृष्टता के गियरों में रेत है जिसे चलाने का वह दावा करता है।

### चिंता कैसे तोड़फोड़ करती है

देखिए कि यह वास्तव में कैसे काम करती है। चिंतित स्वामी, एक ऐसी वस्तु में असफल होने से भयभीत जिस पर उसने अपनी पहचान दाँव पर लगाई है, तीन काम करता है, सभी विनाशकारी। वह पकड़ता है — और पकड़ ठीक उन सामर्थ्यों को अकड़ा देती है जिन्हें ढीला रहने की आवश्यकता है। वह अपना ध्यान विभाजित करता है — आधा कार्य पर, आधा देखते-और-निर्णय करते स्व पर — और विभाजित ध्यान समूचे ध्यान से बदतर प्रदर्शन करता है। और वह जोखिम से सिहर जाता है — क्योंकि दाँव व्यक्तिगत है और हानि स्व पर एक घाव

होगी — और वह सिहरना उसे उस साहसी, स्वतंत्र, पूर्ण-प्रतिबद्ध क्रिया से रोके रखता है जिसकी उत्कृष्टता को आवश्यकता है। संक्षेप में, चिंता हाथों को काँपा देती है, ध्यान को चीर देती है, और साहस को सिकोड़ देती है। ये निपुणता की सामग्री नहीं। ये उसके शत्रु हैं।

अब उसे देखिए जिसने स्वामित्व रख दिया है। उसका ध्यान अविभाजित है, क्योंकि कोई चिंतित स्व उसका आधा भाग अंक की निगरानी को खींच नहीं रहा। उसकी सामर्थ्य ढीली हैं, क्योंकि उन्हें पकड़वाने को कुछ भी व्यक्तिगत दाँव पर नहीं। वह स्वतंत्रता से जोखिम उठाती है, क्योंकि असफलता एक ऐसे स्व को घायल नहीं करेगी जिससे उसने परिणाम का तादात्म्य बनाना बंद कर दिया है। वह भूमिका को सब कुछ देती है, क्योंकि वह जानती है कि वह एक भूमिका है और भूमिकाओं को सब कुछ दिया जाना ही चाहिए। यह वह अवस्था है जिसका हर निपुण अपने शिल्प के शिखर पर वर्णन करता है, और वह स्वभाव की कोई सौभाग्यपूर्ण दुर्घटना नहीं। वह क्रिया की स्वाभाविक स्थिति है जब स्वामित्व का घर्षण हटा दिया गया है।

### **वह उत्कृष्टता जो ब्रह्मांड आपसे माँगता है**

सो अकर्तृत्व की शिक्षा निष्क्रियता की सलाह नहीं बल्कि उच्चतम संभव उत्कृष्टता की सलाह है — एक ऐसी उत्कृष्टता जो उस चिंता से शुद्ध है जो उसे घटिया करती है। ब्रह्मांड, आपको आपकी भूमिका में भूमिका देते हुए, आपसे उसे यथासंभव पूर्णता, सच्चाई और सुंदरता से निभाने को कहता है जैसे वह निर्भाई जा सकती है। यही गहनतम अर्थ में आपका धर्म है: कोई व्यक्तिगत परिणाम प्राप्त करना नहीं जिसका आप स्वामित्व ले सकें, बल्कि उस क्रिया के लिए एक स्पष्ट और अबाधित माध्यम होना जिसकी क्षेत्र को आवश्यकता है, अपना सब कुछ देकर, किसी के स्वामित्व में नहीं।

और यहाँ वह शांत चमत्कार है जिसकी सब निपुण सूचना देते हैं: जब आप इस ढंग से कर्म करते हैं — पूर्णतः प्रतिबद्ध, परिणाम से पूर्णतः अनासक्त — तो जो परिणाम आते हैं वे बहुधा उससे बेहतर होते हैं जो चिंतित स्वामी बल से स्वयं से निचोड़ सकता था। इसलिए नहीं कि आपने उन्हें उत्पन्न करने का प्रयास किया, बल्कि इसलिए कि आप मार्ग से हट गए और क्रिया को वह होने दिया जो वह होना चाहती थी। यह पुस्तक के अंतिम भाग का, और उसकी सबसे विचित्र और सबसे व्यावहारिक शिक्षा का, सेतु है: कि जब आप चुनना बंद कर देते हैं, तब श्रेष्ठतम आपके पास चला आता है — कि समर्पण उत्कृष्टता का परित्याग नहीं बल्कि उसकी

उच्चतम प्रौद्योगिकी है, और कि ब्रह्मांड, खुले हाथ से मिला जाने पर, कार्य को अनायास बना देता है।

## चिंता पहले से अनुभूत स्वामित्व है

यदि अपराध-बोध अतीत के विषय में अनुभूत स्वामित्व है, तो चिंता भविष्य के विषय में अनुभूत स्वामित्व है। वह स्व है, परिणामों का कर्तृत्व दावा कर लेने के बाद, उन परिणामों के समक्ष काँपता हुआ जिन्हें वह वास्तव में नियंत्रित नहीं कर सकता — जो वे सभी हैं, क्योंकि परिणाम घटना-क्षितिज पर समूचे क्षेत्र द्वारा बैठाए जाते हैं, किसी सहभागी द्वारा नहीं। चिंता एक ऐसे स्व का पूर्णतः तर्कसंगत आतंक है जिसने अपनी शक्ति से परे किसी वस्तु का उत्तरदायित्व ले लिया है। चिंतित व्यक्ति दुर्बल या मूर्ख नहीं; वह बस संगत है। यदि परिणाम सचमुच मेरा उत्पन्न करने को है, और परिणाम सचमुच मेरे नियंत्रण से परे है, तो भय ही एकमात्र ईमानदार प्रतिक्रिया है। भय का उपचार परिणाम को नियंत्रित करने का और कठोर प्रयास नहीं, जो केवल मिथ्या स्वामित्व को गहरा करता है। उपचार यह देखना है कि परिणाम आरम्भ से मेरा उत्पन्न करने को था ही नहीं।

देखिए कि चिंता वास्तव में उसी प्रदर्शन को कैसे घटिया करती है जिसके विषय में वह चिंतित है। एक गलत स्वर से भयभीत संगीतकार अकड़कर बजाता है और इसलिए बदतर बजाता है। श्रोताओं की स्वीकृति को पकड़ता वक्ता काठ-सा हो जाता है और उन्हें खो देता है। प्रेम पाने को व्याकुल प्रेमी अनगढ़ हो जाता है और प्रेम करने को कठिनतर। हर दशा में, चिंता किसी परिणाम के स्वामित्व से उठती है, और चिंता स्वयं क्रिया की तोड़फोड़ करती है, ठीक वही असफलता उत्पन्न करती हुई जिससे वह डरती थी। परिणामों का स्वामित्व केवल पीड़ादायक नहीं; वह प्रतिफलघातक है, एक स्व-पराजयकारी फेरा जिसमें वह पकड़ जो परिणाम सुरक्षित करना चाहती है ठीक वही है जो उसे बिगाड़ देती है। क्षेत्र परिणाम को परवाह किए बिना बैठा देगा। एकमात्र प्रश्न यह है कि क्या आप उस बैठने का सामना एक भिंचे हाथ से करेंगे जो लड़खड़ाता है या एक खुले हाथ से जो प्रदर्शन करता है।

## वह उत्कृष्टता जो स्वामित्व के समाप्त होने पर फूलती है

और इस प्रकार हम उस महान उलट-फेर पर आते हैं जिसकी ओर पुस्तक का यह भाग बनता रहा है। हम मानते हैं कि उत्कृष्ट होने के लिए हमें परिणामों की तीव्रता से परवाह करनी होगी,



अपने परिणामों का स्वामित्व लेना होगा, स्वयं को सफलता पर दाँव पर लगाना होगा। सत्य ठीक उल्टा चलता है। उच्चतम उत्कृष्टता ठीक वहाँ प्रकट होती है जहाँ परिणाम का स्वामित्व छोड़ दिया गया है, क्योंकि केवल तभी व्यक्ति की पूर्ण बुद्धि स्व के प्रबंधन में बहाए जाने के बजाय कार्य के लिए उपलब्ध होती है। शल्य-चिकित्सक तब सर्वश्रेष्ठ शल्यक्रिया करती है जब वह शल्यक्रिया में स्वयं को भूल चुकी हो; जिस क्षण वह अपनी ख्याति को स्मरण करती है, उसके हाथ कस जाते हैं। खिलाड़ी उस अवस्था में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करता है जिसे खिलाड़ी स्वयं अनायास कहते हैं, जिसमें स्व कृत्य में लुप्त हो गया है। वह उत्कृष्टता जो ब्रह्मांड आपसे माँगता है, अहं की स्वयं को सिद्ध करने का प्रयास करती तनावपूर्ण, चिंतित, स्वामित्व-चालित उत्कृष्टता नहीं। वह एक ऐसी क्रिया की शिथिल, पूर्ण, आत्म-विस्मृत उत्कृष्टता है जिसका कोई दावा नहीं कर रहा, अपने ही लिए सम्पन्न, उस क्षेत्र को सौंपी गई जो उसका परिणाम बैठाएगा।

यह अब तक तर्कित हर वस्तु का व्यावहारिक फल है, और यही कारण है कि यह पुस्तक त्यागपत्र की सलाह नहीं बल्कि उच्चतम संभव संलग्नता की सलाह है। कर्म के व्यक्तिगत स्वामित्व को छोड़ना वस्तुओं को भली-भाँति करने की कम परवाह करना नहीं। यह श्रेय के बजाय करने की, निर्णय के बजाय कार्य की, खाते के बजाय क्रिया की परवाह करना है — और यह खोज लेना है कि इस भावना में किया गया कार्य उससे गुणवत्ता में बेहतर और ढोने में हल्का दोनों है जो चिंतित स्वामी ने कभी उत्पन्न किया। आप स्वयं को पूर्णतः भूमिका को सौंप देते हैं, आप उसमें अपने कौशल का हर रत्ती लाते हैं, और आप परिणाम को उस व्यवस्था को सौंप देते हैं जो उसे वैसे भी सदा बैठाने ही वाली थी। वह चिंता-रहित उत्कृष्टता है। वह भय के बिना कृत्य है। और वह, ऋषि आग्रह करते हैं, किसी भी ऐसे व्यक्ति को उपलब्ध है जो प्रेत स्वामी को रख देने को तैयार है।

## मंच-भय की कार्य-विधि

प्रदर्शन-चिंता के एक क्षण को विच्छेदित कीजिए और आप इस पुस्तक का समूचा तर्क कुछ सेकंडों में संकुचित पाएँगे। वक्ता उठता है, श्रोता मुड़ते हैं, और भय आता है — धड़कता हृदय, सूखा मुख, अचानक रिक्त मन। उन सेकंडों में वास्तव में क्या घटित हो रहा है? वह ध्यान, जिसे स्थिति को श्रोताओं और संदेश पर बाहर की ओर संकेतित चाहिए, भीतर खींच लिया गया है और स्व पर टाँक दिया गया है: मैं कैसा दिखता हूँ, क्या मैं असफल होऊँगा, वे मेरे विषय में क्या सोचेंगे, यह इस पर झलकता है कि मैं कौन हूँ। भय स्वामित्व की अनुभूत संवेदना है —

स्व ने परिणाम को स्वयं पर एक निर्णय के रूप में दावा कर लिया है — और रिक्तता उसका प्रत्यक्ष मूल्य है, क्योंकि वह ध्यान जो कार्य को चाहिए स्व की रक्षा को चुरा लिया गया है। मंच-भय कोई रहस्यमय व्याधि नहीं। वह परिणाम का स्वामित्व है, शरीर में अनुभूत, ठीक उस प्रदर्शन की तोड़फोड़ करता हुआ जिसके विषय में वह चिंतित है, वास्तविक समय में, सबके देखने को।

और उपचार उसी विच्छेदन में दृश्य है। देखिए कि उस दुर्लभ क्षण में क्या होता है जब वक्ता स्वयं को भूल जाता है — विचार में डूबा, चेहरों में लीन, संदेश को सौंपा हुआ — और भय बस वाष्पित हो जाता है, शब्द आ जाते हैं, धाराप्रवाहता लौट आती है। कुछ जोड़ा नहीं गया; कुछ घटाया गया। आत्म-निगरानी रुकी, स्वामित्व ने अपनी पकड़ छोड़ी, ध्यान बाहर उस ओर लौटा जहाँ कार्य जीता था, और प्रदर्शन उसी क्षण स्वयं को मुक्त कर बैठा जब स्वामी ने उसे पकड़ना बंद किया। यह दबाव में किया जाने वाला कोई कौशल नहीं; आप स्वयं को स्वयं को भूलने का आदेश उतना ही नहीं दे सकते जितना आप स्वयं को समर्पण करने का आदेश दे सकते हैं। किंतु आप समझ सकते हैं कि भय क्या है — स्वामित्व, पहले से अनुभूत — और वह समझ, समय के साथ गहराई हुई, पकड़ को उसकी जड़ में ढीला कर देती है, जब तक वह खुले-हाथ प्रदर्शन जिसे चिंता ने असंभव बना दिया था बस वही बन जाए जैसे आप कर्म करते हैं।

## करने की परवाह कीजिए, श्रेय की नहीं

चिंता-रहित उत्कृष्टता के हृदय में परवाह का एक पुनर्निर्देशन है, और उसे उतनी सरलता से कहना सार्थक है जितनी एक शिल्पकार कह सकता है। कार्य की पूर्णतः परवाह कीजिए; श्रेय की तनिक भी नहीं। स्वयं को क्रिया की गुणवत्ता में उड़ेल दीजिए — कटाव की परिशुद्धता, वाक्य की सच्चाई, अपने सामने के व्यक्ति के प्रति सचेतता — और इस प्रश्न को पूर्णतः छोड़ दीजिए कि क्रिया आप पर कैसी झलकती है, वह आपको क्या अर्जित कराती है, उसकी प्रशंसा होगी या निंदा, वह आपकी स्थिति में क्या जोड़ती या घटाती है। ये दो परवाहें दूरी से समान अनुभव होती हैं और वस्तुतः विपरीत हैं, और वे ध्यान को विपरीत दिशाओं में खींचती हैं: एक कार्य की ओर, जहाँ उत्कृष्टता जीती है, और एक स्व की ओर, जहाँ चिंता जीती है। निपुण शिल्पकार कार्य की प्रचंडता से परवाह करता है और श्रेय के प्रति सचमुच उदासीन है, और यह कोई प्रयास से अर्जित संत-समान विरक्ति नहीं बल्कि ध्यान का स्वाभाविक विन्यास है जब प्रेत स्वामी रख दिया गया हो। करने की परवाह कीजिए; श्रेय छोड़िए। उस सरल पुनर्निर्देशन में समूची

चिंता उत्कृष्टता से निश्चर जाती है, और जो शेष रहता है वह कार्य है, अपने ही लिए सम्पन्न, जो एकमात्र ढंग था जिससे वह कभी भली-भाँति किया गया।

## ऊँचे दाँव, पूर्ण उपस्थिति

एक सूक्ष्म आपत्ति एक सावधान उत्तर की पात्र है। निश्चय ही, कोई कहना चाहता है, कुछ वस्तुएँ सचमुच ऊँचे-दाँव वाली हैं — वह शल्यक्रिया जिस पर एक जीवन निर्भर है, वह गवाही जो मुक्त या दंडित करेगी, वह निर्णय जो एक परिवार को एक पीढ़ी भर आकार देगा — और निश्चय ही ऐसे क्षणों में हमें परिणाम की तीव्रता से परवाह करनी चाहिए, उसका भार अनुभव करना चाहिए, उससे जकड़ा जाना चाहिए जो तराजू पर लटका है। क्या यह पुस्तक सचमुच शल्य-चिकित्सक से यह माँगती है कि वह उदासीन रहे कि उसका रोगी जीता है या नहीं? वह नहीं माँगती, और जो भेद वह खींचती है वह इस समूचे भाग में सबसे व्यावहारिक रूप से महत्वपूर्ण है। दाँव के ऊँचे होने और स्व के परिणाम को पकड़ने के बीच एक अंतर है, और सबसे ऊँचे-दाँव वाली स्थितियों में सबसे उच्च प्रदर्शक ठीक वही हैं जो पहले को दूसरे के बिना थामते हैं — पूर्णतः सचेत कि एक जीवन उनके हाथों में है, और उस चिंतित आत्म-सरोकार से पूर्णतः मुक्त जो उनके हाथों को काँपा देता।

देखिए कि यह किसी ऐसे व्यक्ति में कैसे काम करता है जिसने एक ऊँचे-दाँव वाला शिल्प साध लिया है। अनुभवी शल्य-चिकित्सक चिंतित नौसिखिए से कम नहीं चाहती कि रोगी जीता रहे; वह अधिक चाहती है, कार्य के प्रति एक स्थिर, पूर्ण भक्ति के साथ। किंतु उसने दूसरी वस्तु छोड़ दी है — पकड़ता आत्म-सरोकार, यह-मेरे-लिए-क्या-होगा, असफलता का भय अपने मूल्य पर एक निर्णय के रूप में — क्योंकि उसने, वर्षों में, सीख लिया कि पकड़ ठीक उस प्रदर्शन को घटिया कर देती है जिसकी दाँव माँग करते हैं। दाँव उसका ध्यान रोगी की ओर खींचते हैं; आत्म-सरोकार उसे वापस स्वयं की ओर खींचता, और उसने आत्म-सरोकार को प्रशिक्षित करके बाहर कर दिया है, परवाह को नहीं। यह उस विरोधाभास का समाधान है जिसने इस भाग को खोला। ऊँचे दाँव पूर्ण उपस्थिति की माँग करते हैं, और पूर्ण उपस्थिति ठीक वही है जिसे पकड़ता, स्वामित्व करता, चिंतित स्व असंभव बना देता है। ऊँचे-दाँव वाले क्षण की सेवा करने के लिए, आपको कार्य की पूर्णतः परवाह करनी होगी और उस स्व को पूर्णतः छोड़ना होगा जो कार्य को अपने विषय में बना देता। दाँव वास्तविक हैं। पकड़ वैकल्पिक है। और कार्य तब सर्वश्रेष्ठ चलता है जब दाँव का सम्मान किया जाए और पकड़ छोड़ी जाए।

## विश्राम कार्य के अंग के रूप में

परिणामों के चिंतित स्वामित्व को छोड़ने का एक व्यावहारिक फल है जहाँ तक पकड़ता मन कभी नहीं पहुँचता: विश्राम करने की सामर्थ्य। परिणामों का स्वामी सचमुच विश्राम नहीं कर सकता, क्योंकि खाता सदा खुला है, अंक सदा अस्थायी, अगला प्रदर्शन सदा स्व पर एक ताज़ा जनमत-संग्रह के रूप में मँडराता हुआ। अवकाश में भी स्वामी कार्य कर रहा है, निगरानी कर रहा है, चिंतित, भार रखने में असमर्थ क्योंकि भार पहचान बन गया है। और यह विश्राम करने की असमर्थता केवल अप्रिय नहीं; वह ठीक उस उत्कृष्टता को घटिया करती है जिसकी ओर स्वामी जोर लगा रहा है, क्योंकि समय भर बनाए रखी गई उत्कृष्टता को पुनर्प्राप्ति की आवश्यकता होती है, और पुनर्प्राप्ति को सचमुच रुकने की सामर्थ्य की — कार्य को पूर्णतः छोड़ने की, असफलता के रूप में नहीं बल्कि उस लय के अंग के रूप में जिससे अच्छा कार्य बनाए रखा जाता है। वह स्वामी जो विश्राम नहीं कर सकता जल जाता है; वह अभ्यासी जो विश्राम कर सकता है टिका रहता है।

कार्य की पूर्णतः परवाह करना और परिणामों के स्वामित्व को पूर्णतः छोड़ना ठीक वही है जो वास्तविक विश्राम को संभव बनाता है, और वास्तविक विश्राम वही है जो बनी रहने वाली उत्कृष्टता को संभव बनाता है। वह शल्य-चिकित्सक जिसने पकड़ता आत्म-सरोकार छोड़ दिया है, शल्यक्रियाओं के बीच, सचमुच विश्राम कर सकती है — कार्य को पूर्णतः रख सकती है, पुनर्प्राप्ति हो सकती है, पुनःस्थापित होकर लौट सकती है — क्योंकि उसकी पहचान एक सतत खुले खाते पर दाँव पर नहीं जो कभी बंद नहीं हो सकता। जिसने व्यक्तिगत कर्म रख दिया है वह कार्य करते समय पूर्णतः कार्य करता है और विश्राम करते समय पूर्णतः विश्राम करता है, प्रत्येक अपनी ऋतु में पूर्ण, कोई दूसरे में चिंतित होकर बहता नहीं। यह लय — पूर्ण संलग्नता, पूर्ण विमोचन, अपनी-अपनी बारी में — उत्कृष्टता के एक जीवन का बनाए रखने योग्य आकार है, और वह केवल उसी को उपलब्ध है जिसने कार्य को एक स्थायी भार के रूप में ढोना बंद कर दिया है। चिंता-रहित उत्कृष्टता केवल क्षण में बेहतर नहीं; वह एकमात्र प्रकार है जो टिकता है, क्योंकि वह एकमात्र प्रकार है जो विश्राम करना जानता है।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

चिंता भविष्य के विषय में अनुभूत स्वामित्व है — वह स्व, एक ऐसे परिणाम को दावा कर लेने के बाद जिसे वह नियंत्रित नहीं कर सकता, उसके समक्ष काँपता हुआ। और वह कँपन ठीक उसी प्रदर्शन की तोड़फोड़ करता है जिससे वह डरता है। उच्चतम उत्कृष्टता वहाँ प्रकट होती है जहाँ परिणाम का स्वामित्व छोड़ दिया गया है, क्योंकि केवल तभी व्यक्ति की पूर्ण बुद्धि कार्य के लिए मुक्त होती है।

एक वस्तु चुनिए जिसे आप आज करेंगे और यह आजमाइए: करने की गुणवत्ता की पूर्णतः परवाह कीजिए, और इस प्रश्न को पूर्णतः छोड़िए कि वह आप पर कैसी झलकती है। स्वयं को कार्य में उड़ेल दीजिए; श्रेय छोड़ दीजिए। ध्यान दीजिए कि क्या कार्य बेहतर चलता है, बदतर नहीं, जब परिणाम का चिंतित स्वामी पीछे हट गया हो।



# भाग पाँच

## संरक्षण का मार्ग

चुनाव न करना, समर्पण, अनायास कर्म, दैनिक अभ्यास, और आनंद की ओर वापसी अंतिम भाग घर का मार्ग है, और वह इच्छा-शक्ति द्वारा सम्पन्न की जाने वाली तकनीकों का समुच्चय नहीं बल्कि एक पकना है जिसे होने दिया जाना है। चुनाव न करना, समर्पण, अनायास कर्म, एक दैनिक अभ्यास, और आनंद की ओर वापसी — इनमें से प्रत्येक उस वस्तु से कम है जिसे आप करते हैं और उस वस्तु से अधिक जो एक बार समझ के पकड़ ढीली कर देने पर स्वयं घटित होती है। इस भाग को कोमलता से पढ़िए। आपको सम्पन्न करने को और कुछ नहीं दिया जा रहा। आपको दिखाया जा रहा है कि जब सम्पन्न करता स्व रख दिया जाता है तो क्या शेष रहता है।





## चुनाव न करना

---

चुनना बंद कीजिए, और देखिए कि ठीक वस्तु कितनी अचूकता से आपको खोज लेती है।

जो हाथ पकड़ता है वह थोड़ा ही पाता है; खुला हाथ भर दिया जाता है।

— चुनाव न करने पर टिप्पणी

हम पुस्तक के व्यावहारिक हृदय पर, और उसके सबसे प्रति-सहज निर्देश पर आते हैं: चुनाव न करना। एक आधुनिक पाठक को यह विपत्ति का नुस्खा-सा लगता है — निश्चय ही एक अच्छे जीवन का समूचा उपक्रम भली-भाँति चुनना, विचार-विमर्श करना, निर्णय करना, कमान सँभालना है। मैं दिखाना चाहता हूँ कि यह आधा सही और आधा ठीक ग़लत है, और कि जो आधा ग़लत है वही हमारी अधिकांश थकान का स्रोत है।

मुझे सटीक रहने दीजिए कि "चुनाव न करना" क्या अर्थ रखता है और क्या नहीं, क्योंकि ग़लत पाठ ख़तरनाक है। उसका अर्थ निष्क्रियता, बहाव, या कर्म करने से इनकार नहीं। उसका अर्थ विवेक, योजना, या ब्रह्मांड द्वारा दी गई बुद्धि का उपयोग करने में असफल होना नहीं। शरीर कर्म करता है; मन विवेक करता है; कार्य सम्पन्न होता है। "चुनाव न करना" जो छोड़ता है वह क्रिया के नीचे की कोई वस्तु है: किसी विशेष परिणाम पर चिंतित, पकड़ता, अहं-चालित आग्रह — यह भिंचा हुआ विश्वास कि मुझे अपने जीवन को ठीक उस आकार में गढ़ना ही होगा जो मैंने तय किया है कि उसका होना चाहिए, और कि कोई अन्य आकार एक असफलता है।



चित्र 8. संरक्षण का मार्ग। यह समझ कि कर्म व्यक्तिगत नहीं, पकड़ ढीली कर देती है; चुनाव न करना श्रेष्ठतम को आने देता है; समर्पण हाथ खोल देता है; अनायास कर्म उसके पीछे आता है, ब्रह्मांड कार्य करता हुआ; और स्व आनंद की ओर घर लौट आता है। समझ हाथ ढीला करती है, समर्पण उसे खोलता है, और ब्रह्मांड कार्य को हल्केपन से रख देता है।

## खुला हाथ

यहाँ विरोधाभास यथासंभव सरलता से कहा गया: आप जितनी कसकर किसी विशेष परिणाम को पकड़ते हैं, ब्रह्मांड उतना ही कम आपको दे सकता है, और आप अपना हाथ जितना अधिक खोलते हैं, ठीक वस्तु उतनी ही अचूकता से आती है। यह जादुई चिंतन नहीं; इसकी एक स्पष्ट संरचना है। पकड़ता मन, पहले से और अज्ञान में, ठीक तय कर चुका है कि वह क्या चाहता है — यह नौकरी, यह व्यक्ति, यह परिणाम — और तय करने में, वह स्वयं को उस हर वस्तु के प्रति अंधा कर लेता है जो क्षेत्र दे रहा है, और वह अपनी ही क्रिया को उसकी हताशा से विकृत कर देता है जिसे यही और केवल यही चाहिए। इसके विपरीत, खुला हाथ उसके प्रति उपलब्ध रहता है जो वास्तव में उठ रहा है, हताशा से अविकृत, उस उपहार को ग्रहण करने में समर्थ जिसे क्षेत्र सचमुच बढ़ा रहा है, न कि उस संकीर्णतर वस्तु को जिसकी अहं ने माँग की।

लगभग हर किसी ने इसका अनुभव किया है, यद्यपि थोड़ों ने इसे नाम दिया है। उन समयों के विषय में सोचिए जब आपके जीवन की बिल्कुल सर्वोत्तम वस्तुएँ आईं — वह अप्रत्याशित मित्रता, वह द्वार जो तब खुला जब दूसरा बंद हुआ, वह मार्ग जिसे आप कभी न चुनते किंतु जो आपका बनना सिद्ध हुआ। क्या ये वे वस्तुएँ थीं जिनके लिए आपने पकड़ की? लगभग कभी

नहीं। ये वे वस्तुएँ थीं जो तब आईं जब आपने, किसी भी कारण से, पकड़ना बंद कर दिया था — जब एक योजना असफल हुई और आपको खुला छोड़ गई, जब थकान ने अंततः आपकी पकड़ ढीली कर दी, जब आपने उस परिणाम पर हार मान ली जिसकी आप माँग कर रहे थे और साफ़ हुए स्थान में से कुछ बेहतर चला आया। ब्रह्मांड सदा दे रहा था। पकड़ ही वह थी जो आपको ग्रहण करने से रोक रही थी।

## पकड़ के बिना विवेक

सो निर्देश विवेक करना बंद करना नहीं बल्कि खुले हाथ से विवेक करना है। स्पष्ट देखिए; पूर्णतः कर्म कीजिए; और परिणाम को हल्के से थामिए, चकित होने को तैयार, उससे अन्य और बेहतर कुछ ग्रहण करने को तैयार जो आपने माँगा था। यह उस हर वस्तु का व्यावहारिक रूप है जो पुस्तक ने तर्क की है। यदि कर्म आपका नहीं, यदि भूमिका क्षेत्र द्वारा निर्धारित होती है, यदि सर्वोत्तम संचालन अव्यक्त है और उन पैमानों पर संचालित है जिन्हें आप देख नहीं सकते, तो तर्कसंगत प्रतिक्रिया — त्यागी प्रतिक्रिया नहीं, तर्कसंगत — यह दिखावा बंद करना है कि आप अपने जीवन को उन पाँच प्रतिशत से गढ़ सकते हैं जिन्हें आप देख सकते हैं, और उन पंचानवे प्रतिशत को वह करने देना जिन्हें आप नहीं देख सकते और जो ऐसा करने को कहीं बेहतर स्थित हैं। आप अपना भाग करते हैं, पूर्णतः और भली-भाँति। आप भूमिका-निर्धारण को क्षेत्र पर छोड़ देते हैं। और आप खोज लेते हैं कि क्षेत्र आपके चिंतित अहं की अपेक्षा कहीं बेहतर भूमिका-निर्धारक है।

## चुनाव कर्ता का अंतिम आश्रय है

उन सब क्रियाओं में जिन्हें स्व अपनी कहकर दावा करता है, चुनाव वह है जिसकी वह सबसे ईर्ष्या से रक्षा करता है, क्योंकि चुनाव कर्ता का स्वयं हस्ताक्षर प्रतीत होता है। मैं मान सकता हूँ कि मैं परिणामों को नियंत्रित नहीं करता, कि घटनाएँ समूचे क्षेत्र द्वारा प्रेरित होती हैं, कि मेरी भूमिकाएँ निर्धारित और विलीन होती हैं — और फिर भी आग्रह कर सकता हूँ कि कम से कम चुनाव मेरा था, कि निर्णय के क्षण में मैं, चयनकर्ता, संप्रभु खड़ा था। चुनाव कर्तृत्व का अविभाज्य मर्म-सा लगता है, वह स्थान जहाँ स्व सचमुच रचयिता है। और इसलिए चुनाव न करने की शिक्षा, पहले-पहल, इस पुस्तक की सबसे निरर्थक और यहाँ तक कि खतरनाक वस्तु-

सी लगती है। निश्चय ही हमें चुनना ही चाहिए। निश्चय ही चुनाव के बिना एक जीवन बहाव और अराजकता का जीवन होगा।

किंतु एक वास्तविक चुनाव को घटित होते बहुत निकट से देखिए, और संप्रभु चयनकर्ता विचित्र रूप से खोजने में कठिन हो जाता है। विचार स्वयं उठते हैं — आपने नहीं चुना कि कौन-से विचार आपको सूझेंगे। तौलना जागरूकता में घटित होता है — आपने नहीं चुना कि कौन-सा विकल्प अचानक सही अनुभव होगा। निर्णय रवा बनता है — और यदि आप ईमानदार हैं, तो आप उस क्षण को स्थित नहीं कर सकते जिस पर आपने, समूची प्रक्रिया से पृथक, भीतर पहुँचकर चुना, उतना ही जितना आप वर्षा के पीछे वर्षा-करने वाले को स्थित नहीं कर सकते। चुनाव आपकी अनुकूलनता, आपके प्रत्यक्षण, आपकी परिस्थितियों, उस क्षण के समूचे क्षेत्र से अवक्षेपित हुआ — ठीक जैसे कोई घटना अपने क्षितिज पर अवक्षेपित होती है। जिसे हम चुनना कहते हैं वह क्षेत्र का उस स्थल के माध्यम से सुलझना है जो हम हैं। चुनाव न करने का अर्थ कर्म करने से इनकार या ढीला पड़ जाना नहीं। उसका अर्थ इस थकाऊ कल्पना को छोड़ना है कि एक पृथक संप्रभु चयनकर्ता उन निर्णयों को उत्पन्न करने को ज़ोर लगा रहा है जो, वस्तुतः, स्वयं उठ रहे हैं।

### **जब आप चुनना बंद करते हैं, श्रेष्ठतम आता है**

यहाँ इस अध्याय के हृदय में विचित्र और सत्यापनीय दावा है: कि जब पकड़ता चयनकर्ता पीछे हटता है, तो बेहतर निर्णय आते हैं, बदतर नहीं। हर किसी ने इसे छोटे ढंगों में अनुभव किया है। वह नाम जो आपको स्मरण न आ रहा था उसी क्षण आ जाता है जब आप उसके लिए ज़ोर लगाना बंद कर देते हैं। समस्या का समाधान स्नान में प्रकट होता है, जब आपने उसे सुलझाने का प्रयास बंद कर दिया हो। क्रिया का सही पथ उसी क्षण स्पष्ट हो जाता है जब आप चिंतित विचार-विमर्श बंद कर देते हैं और बस शांत हो जाते हैं। यह जादू नहीं और यह आलस्य नहीं। यह वह है जो तब घटित होता है जब पकड़ते स्व का कोलाहल शांत हो जाता है और समूचे क्षेत्र की गहरी बुद्धि — जो उससे कहीं अधिक देखती है जितना संकीर्ण अहं कभी देख सकता था — को मामले को सुलझाने दिया जाता है। चयनकर्ता निर्णय में बुद्धि नहीं जोड़ रहा था। वह कोलाहल, चिंता, और विकृति जोड़ रहा था, और उस स्पष्टता को भीड़ से बाहर धकेल रहा था जो आने का प्रयास कर रही थी।

चुनाव न करना, तो, निष्क्रियता नहीं बल्कि एक उच्चतर क्रिया है: वह सक्रिय, विश्वासी स्थिरता जिसमें सर्वोत्तम प्रत्युत्तर चिंतित चयनकर्ता द्वारा गला घोंटे बिना अवक्षेपित हो सकता है। उसमें चुनने से अधिक साहस लगता है, कम नहीं, क्योंकि उसका अर्थ ठीक उस नियंत्रण को छोड़ना है जिससे हम सबसे अधिक चिपके हैं। किंतु जो इसे सीखते हैं वे बार-बार एक ही बात की सूचना देते हैं — कि जीवन एक विचित्र ठीकपन के साथ गति करने लगता है, कि आवश्यक वस्तु आवश्यक समय पर आती है, कि वे द्वार खुलते हैं जिन्हें कितना भी धकेलना हिला नहीं पाया था। इसलिए नहीं कि ब्रह्मांड उनके समर्पण को पुरस्कृत कर रहा है, बल्कि इसलिए कि उन्होंने अंततः उस चयनकर्ता की रेत से तंत्र को जाम करना बंद कर दिया है जो वास्तव में कभी चला ही नहीं रहा था।

## एक निर्णय को घटित होते देखिए

अगले वास्तविक निर्णय को धीमा कीजिए जो आप करते हैं और उसे उस ध्यान से देखिए जो आप एक विचित्र पशु को देते। आप विश्वास करते हैं कि आप चुनेंगे; कि एक संप्रभु आप विकल्पों को तौलेगा और चयन करेगा। किंतु निकट से देखिए। विकल्प स्वयं को प्रस्तुत करते हैं — आपने नहीं चुना कि कौन-सी संभावनाएँ आपको सूझेंगी; वे बस प्रकट हुईं। विचार उठते हैं — पक्ष और विपक्ष स्वयं को जागरूकता में जमा करते हैं, एक जीवन-भर के अनुभव से खींचे गए जिसका आपने रचयिता नहीं किया। एक झुकाव विकसित होता है, ठीकपन का एक बोध एक विकल्प के चारों ओर एकत्र होता है, कभी धीरे, कभी एक साथ — और आपने उस झुकाव को इच्छा के एक कृत्य से गढ़ा नहीं; वह बना, जैसे एक रुचि बनती है, उस समूचे में से जो आप हैं और उस समूचे में से जो स्थिति है। और फिर निर्णय बस वहाँ है, हो चुका, और आप उसे अपना चुनाव कहते हैं। किंतु उस सबमें, कहाँ था वह पृथक चयनकर्ता जिसने चुनाव? उसे खोजिए और आप केवल प्रक्रिया पाएँगे — विकल्प उठते हुए, विचार जमा होते हुए, एक झुकाव बनता हुआ, एक निर्णय रवा बनता हुआ — उससे पृथक खड़े उत्तोलक खींचते किसी अतिरिक्त संप्रभु कर्ता के बिना। चयनकर्ता घटित होने के बाद अनुमित किया जाता है, कृत्य में कभी पाया नहीं जाता।

यह इस बात का खंडन नहीं कि निर्णय घटित होते हैं या मायने रखते हैं; वे निरंतर घटित होते हैं और अत्यधिक मायने रखते हैं। यह उस बात का सुधार है कि वे कहाँ से आते हैं। निर्णय समूचे क्षेत्र से अवक्षेपित होता है — आपका स्वभाव, आपकी अनुकूलनता, आपका प्रत्यक्षण, क्षण,

असंख्य अभिसरित परिस्थितियाँ — ठीक जैसे कोई घटना अपने क्षितिज पर अवक्षेपित होती है। आप वह स्थल हैं जहाँ निर्णय घटित होता है, पूर्णतः और वास्तव में, किंतु क्षेत्र के बाहर खड़े भीतर पहुँचकर चयन करते एक पृथक संप्रभु नहीं। इसे देखना निर्णय करने में असमर्थ हो जाना नहीं; आप ठीक पहले की भाँति निर्णय करते रहेंगे, क्योंकि निर्णय वैसे भी प्रेत चयनकर्ता द्वारा कभी किया ही नहीं जा रहा था। यह केवल इस थकाऊ विश्वास को रख देना है कि आपको, विशुद्ध संप्रभु इच्छा से, हर निर्णय को समूचे की धारा के विरुद्ध रचना ही होगा — और निर्णय को अपने माध्यम से उसी सहजता से घटित होने देना है जिससे आपके विषय की हर अन्य वस्तु पहले से ही घटित होती है।

### विश्वास बहाव के समान नहीं है

चुनाव न करने के प्रति सबसे कठिन आपत्ति बहाव का भय है — कि संप्रभु चयनकर्ता को छोड़ना हवा पर एक पत्ता बन जाना है, निष्क्रिय, दिशाहीन, जहाँ भी परिस्थिति बहाए वहाँ बहाया हुआ। किंतु यह विश्वास को परित्याग से भ्रमित करता है, और वे इससे अधिक भिन्न नहीं हो सकते। बहने वाले ने बस संलग्न होना बंद कर दिया है; उसने ध्यान और कौशल और देखभाल वापस खींच ली है, और परिणामी रिक्तता को स्वतंत्रता कहता है। चुनाव न करना उल्टा है: वह ध्यान और कौशल और देखभाल की पूर्णतम संलग्नता है, केवल चिंतित संप्रभु चयनकर्ता को छोड़े हुए। वह धनुर्धर जिसने शॉट को बल न देना सीख लिया है वह नहीं रहा; वह लक्ष्य, धनुष, श्वास, क्षण के प्रति उससे अधिक उपस्थित है जितना ज़ोर लगाता धनुर्धर कभी था — और बाण उसके लिए अधिक सच्चा उड़ता है। चुनाव न करना उसी धनुर्धर की अवस्था समूचे जीवन तक सामान्यीकृत है: उसके प्रति पूर्ण उपस्थिति जो क्षण अपेक्षित करता है, उस भिंची इच्छा का पूर्ण विमोचन जिसने कल्पना की थी कि उसे हर परिणाम को सत्ता में बल देना ही होगा। बहने वाले ने क्षेत्र छोड़ दिया है। जिसने पकड़ना न सीखा है उसने स्वयं को उसे पूर्णतः सौंप दिया है, और उस पर विश्वास करता है कि वह उसके माध्यम से सुलझे — जो चयनकर्ता की अपेक्षा कम संलग्नता नहीं, बल्कि अनगिनत गुना अधिक है।

### संप्रभु चयनकर्ता का पक्षाघात

घास के दो समान गट्टरों के ठीक बीच रखे गए एक गधे के विषय में एक पुरानी पहेली है, जो, किसी एक को दूसरे पर वरीयता देने का कोई कारण न होने से, चुन पाने में असमर्थ भूख से मर

जाता है। पहेली सामान्यतः अनिर्णय के विषय में एक मज़ाक के रूप में सुनाई जाती है, किंतु उसमें संप्रभु चयनकर्ता में एक वास्तविक अंतर्दृष्टि है। हम चुनाव को जितना अधिक एक विलग, तर्कसंगत स्व के कृत्य के रूप में मानते हैं जो विकल्पों को बाहर से तौलता और पर्याप्त कारण पर चयन करता है, उतना ही अधिक हम खोज लेते हैं कि यह स्व, सच्ची अनिश्चितता के सामने, पक्षाघातग्रस्त हो जाता है — क्योंकि पर्याप्त कारण ठीक वही है जो अधिकांश वास्तविक निर्णय नहीं देते। जीवन हमें एक गड्ढर स्पष्ट रूप से दूसरे से बड़ा प्रस्तुत नहीं करता; वह हमें सच्ची अनिश्चितता, अतुलनीय भले, ऐसे भविष्य प्रस्तुत करता है जिनकी गणना नहीं की जा सकती, और संप्रभु चयनकर्ता, कर्म करने से पूर्व पर्याप्त कारण माँगता हुआ, रुक जाता है, व्यथित होता हुआ, ठीक वैसे जैसे वह स्त्री हप्तों उस कैरियर पर व्यथित हुई जिससे वह तर्क द्वारा बाहर न निकल सकी।

जो वास्तव में ऐसे निर्णय सुलझाता है वह संप्रभु चयनकर्ता का अंततः पर्याप्त कारण पा लेना नहीं, बल्कि कुछ ऐसा जिसके लिए तर्कवादी चित्र में कोई स्थान नहीं: समूचा क्षेत्र, हमारे माध्यम से, एक ऐसे झुकाव में बैठता हुआ जिसे अकेला तर्क उत्पन्न नहीं कर सकता था। हम उसे अंतर्ज्ञान, या अंतर्बोध, या अपनी हड्डियों में जानना कहते हैं, और हम उस पर अविश्वास करने की प्रवृत्ति रखते हैं ठीक इसलिए कि वह संप्रभु चयनकर्ता का विचार-विमर्श नहीं। किंतु अंतर्ज्ञान क्षेत्र का सुलझना है — हमारे अनुभव, अनुकूलनता, प्रत्यक्षण, और स्थिति का समूचा, सोद्देश्य तर्क के नीचे और परे एक झुकाव में अवक्षेपित होता हुआ, ठीक जैसे कोई घटना अपने क्षितिज पर अवक्षेपित होती है। गंधा वास्तविक जीवन में भूख से नहीं मरता, क्योंकि वास्तविक प्राणी पर्याप्त कारण माँगते संप्रभु चयनकर्ता नहीं हैं; वे वे स्थल हैं जिन पर क्षेत्र सुलझता है, और समाधान आता है, एक ओर झुकता हुआ, जब विचार-विमर्श करता स्व उसे आने देने योग्य पर्याप्त शांत हो जाता है। चुनाव न करना उस समाधान में विश्वास है — निर्णय का परित्याग नहीं, बल्कि निर्णय को अंश द्वारा बल दिए जाने के बजाय समूचे से आने देने की इच्छा।

## न ली गई राह का अंत

संप्रभु चयनकर्ता के सबसे भारी भारों में से एक पश्चात्ताप है — न ली गई राह का शोक, किए गए निर्णयों का अंतहीन पुनर्विचार, यह विश्वास कि कोई अन्य चुनाव किसी बेहतर जीवन की ओर ले जाता जो अब खो गया। चयनकर्ता, यह विश्वास करते हुए कि उसने अपने चुनाव रचे, समान रूप से विश्वास करता है कि उसने ग़लत चुनाव भी रचे, और इसलिए वैकल्पिक जीवनों

का एक कब्रिस्तान होता है, प्रत्येक एक उलाहना: काश मैंने अन्यथा चुना होता। पश्चात्ताप एक जीवन के काँटे पड़ते पथों पर लागू व्यक्तिगत खाता है, कर्ता स्वयं को उसके लिए नहीं जो उसने किया बल्कि उसके लिए दोषी ठहराता हुआ जो वह उसके बजाय कर सकता था, उन भविष्यों का शोक करता हुआ जो कभी अस्तित्व में थे ही नहीं मानो वे उसके अपने बुरे चुनाव द्वारा उससे चुरा लिए गए हों।

जब संप्रभु चयनकर्ता विलीन होता है, तो पश्चात्ताप उसके साथ विलीन हो जाता है, और यह उन सबसे तात्क्षणिक राहतों में से एक है जो शिक्षा देती है। यदि निर्णय समूचे क्षेत्र से अवक्षेपित हुआ — आपका स्वभाव, आपकी अनुकूलनता, क्षण की परिस्थितियाँ, सब उस झुकाव में अभिसरित होती हुई जो चुनाव बना — तो कोई पृथक् संप्रभु था ही नहीं जो अन्यथा चुन सकता था, उन सब परिस्थितियों से मुक्त खड़ा, बेहतर राह का चयन करता हुआ। जो चुनाव आपने किया वह उस क्षितिज पर समूचे क्षेत्र का समाधान था, ठीक जैसे हर घटना सुलझती है; न ली गई राह कभी ऐसी राह नहीं थी जिसे आपने संप्रभुता से अस्वीकार किया, बल्कि एक परिणाम जिस पर क्षेत्र नहीं बैठा। ऐसा कोई वैकल्पिक जीवन नहीं जिसे आपके बेहतर चुनाव ने सुरक्षित किया होता, क्योंकि चुनना कभी वह संप्रभु कृत्य था ही नहीं जिसकी पश्चात्ताप कल्पना करता है। यह आपको भविष्य के निर्णयों के विषय में लापरवाह नहीं बनाता; यह आपको बीते निर्णयों के कब्रिस्तान से मुक्त करता है, उन राहों के शोक को मुक्त करता हुआ जो कभी आपकी लेने को थीं ही नहीं, और आपके ध्यान को उस एकमात्र स्थान पर लौटाता हुआ जहाँ चुनाव वास्तव में जीता है, जो खुला वर्तमान है, कभी बंद और अपरिवर्तनीय अतीत नहीं।

### **एक दृश्य: वह निर्णय जो स्वयं आ गया**

एक स्त्री महीनों इस पर व्यथित रही कि एक सुरक्षित कैरियर को एक अनिश्चित कार्य के लिए छोड़े या नहीं जो उसे पुकारता था। उसने सूचियाँ बनाईं। उसने हर स्तंभ तौला। उसने हर किसी से परामर्श किया। वह जागती रही गणना को आगे-पीछे चलाती हुई, और वह जितनी प्रचंडता से चुनने का प्रयास करती, उतनी ही पक्षाघातग्रस्त होती गई, क्योंकि वह संप्रभु चयनकर्ता जिसे वह बनने को ज़ोर लगा रही थी एक ऐसी निश्चितता नहीं गढ़ सकती थी जो स्थिति में थी ही नहीं। विचार-विमर्श हफ्तों चलता रहा, थकाऊ और निष्फल, कीचड़ में घूमता एक पहिया।

और फिर निर्णय आया, जैसे ऐसे निर्णय लगभग सदा आते हैं, जब उसने उसे करने का प्रयास बंद कर दिया था। वह बर्तन धो रही थी, उसका मन कहीं और, सूचियाँ भूली हुई, और उत्तर



बस वहाँ था — शांत, बैठा हुआ, स्पष्ट — उसके समूचे में से अवक्षेपित होकर जबकि ज़ोर लगाता चयनकर्ता ड्यूटी से बाहर था। उसने उसे उस व्यथित, संप्रभु अर्थ में नहीं चुना जिसका वह हफ्तों प्रयास कर रही थी। वह सुलझ गया, स्वयं ही, उसी क्षण जब उसने बलपूर्वक चुनने की रेत से तंत्र को जाम करना बंद किया। यह निर्णयों के विषय में निष्क्रिय रहने की सलाह नहीं; उसने विचारों को एकत्र करने का, प्रश्न के साथ जीने का, उसे जो पुकारता था उस पर ईमानदारी से ध्यान देने का वास्तविक कार्य किया था। यह केवल यह ध्यान देना है कि अंतिम बैठना भिंची इच्छा से नहीं बल्कि उसके पीछे आई शांति से आया — कि सर्वोत्तम निर्णय, भूले हुए नाम की भाँति, उसी क्षण आते हैं जब पकड़ता स्व पीछे हटता है और समूचे क्षेत्र को अपने माध्यम से सुलझने देता है।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

चुनाव कर्ता का अंतिम गढ़ प्रतीत होता है — वह स्थान जहाँ एक संप्रभु स्व निश्चय ही भीतर पहुँचकर चयन करता है। किंतु एक निर्णय को निकट से देखिए और संप्रभु चयनकर्ता कहीं नहीं मिलता: विकल्प स्वयं उठते हैं, झुकाव स्वयं बनता है, निर्णय समूचे क्षेत्र में से रवा बनता है। चुनाव न करना बहाव नहीं; वह वह विश्वासी स्थिरता है जिसमें सर्वोत्तम प्रत्युत्तर अगला घोंटा बिना आ सकता है।

आज एक छोटे निर्णय को घटित होते देखिए — क्या खाना है, किस ओर मुड़ना है, कब बोलना है। उस पृथक चयनकर्ता को खोजिए जो चुनता है, और ध्यान दीजिए कि आप केवल प्रक्रिया पाते हैं: विकल्प प्रकट होते हुए, एक झुकाव बनता हुआ, एक निर्णय आता हुआ। फिर, किसी कम-दाँव वाली वस्तु के साथ, चुनाव न करना आजमाइए — शांत होते हुए और सही गति को अवक्षेपित होने देते हुए — और देखिए कि जब आप बल देना बंद करते हैं तो क्या आता है।

## समर्पण एक प्रौद्योगिकी के रूप में

---

*समर्पण पराजितों का सफ़ेद झंडा नहीं है। वह बुद्धिमानों का खुला हाथ है — सबसे उन्नत उपकरण जिसे कोई मनुष्य उपयोग करना सीख सकता है।*

— समर्पण पर टिप्पणी

समर्पण शब्द हमारे लिए बिगाड़ दिया गया है। वह पराजय की, हार मान लेने की, दुर्बलता की, विजेता के समक्ष हथियार रखते हारे हुए व्यक्ति की दुर्गंध वहन करता है। मैं उसे पूर्णतः पुनः अधिकृत करना चाहता हूँ, क्योंकि यह पुस्तक जिस समर्पण की ओर संकेत करती है वह पराजय का ठीक विपरीत है। वह सबसे परिष्कृत प्रौद्योगिकी है जिसे कोई मनुष्य साध सकता है — एक सोद्देश्य, कुशल, पुनरावर्त्य अभ्यास जो ऐसे परिणाम उत्पन्न करता है जिन तक पकड़ता मन कभी नहीं पहुँच सकता। मैं इसे जानबूझकर एक प्रौद्योगिकी कहता हूँ, ताकि निष्क्रियता के अर्थ-संकेत हटाकर उसके सच्चे स्वरूप को एक पद्धति के रूप में बहाल कर सकूँ।

जो समर्पित किया जाता है वह आपका प्रयास, आपकी बुद्धि, जीवन के साथ आपकी पूर्ण संलग्नता नहीं। जो समर्पित किया जाता है वह कर्तृत्व का भ्रम है — यह भिंचा हुआ विश्वास कि आप कर्ता हैं, स्वामी, वह जिसे परिणाम को नियंत्रित करना ही है। आप पाँच प्रतिशत का पंचानवे प्रतिशत को चलाने का दंभ समर्पित करते हैं। आप लहर का ज्वार का स्वामित्व करने का दावा समर्पित करते हैं। और उसे समर्पित करने में, आप अपनी शक्ति नहीं खोते; आप अहं के छोटे बल से अतुलनीय रूप से बड़ी एक शक्ति तक पहुँच पा लेते हैं — समूचे संचालन की शक्ति, जो वैसे भी सदा कार्य करने ही वाली थी, और जो अब आपके माध्यम से बिना प्रतिरोध के कर सकती है।

### समझ समर्पण में क्यों पकती है

समर्पण को विवश नहीं किया जा सकता, और यह निर्णायक है। आप समर्पण करने का निर्णय वैसे नहीं कर सकते जैसे आप अपनी बाँह उठाने का निर्णय करते हैं, क्योंकि निर्णय करना स्वयं

अहं का नियंत्रण थोपना है, जो समर्पण का विपरीत है। समर्पण इच्छा का कृत्य नहीं; वह समझ का स्वाभाविक पकना है। जब आप सचमुच देख लेते हैं — विश्वास नहीं, बल्कि देख — कि कर्म आपका नहीं, कि भूमिका क्षेत्र द्वारा निर्धारित होती है, कि कर्ता कृत्य के साथ विलीन हो जाता है, कि संचालन अव्यक्त है और आपसे परे पैमानों पर संचालित है, तब पकड़ बस स्वयं ही ढीली हो जाती है। थामने को कुछ शेष नहीं रहता। हाथ इसलिए नहीं खुलता कि आपने उसे खोला बल्कि इसलिए कि आपने अंततः देख लिया कि उसमें पकड़ने को कभी कुछ था ही नहीं।

यही कारण है कि पिछले अध्यायों का लम्बा संरचनात्मक तर्क आवश्यक था, और यही कि मैंने "बस समर्पण कर दो" से आरम्भ नहीं किया। आप आदेश पर समर्पण नहीं कर सकते, और आप उसे समर्पित नहीं कर सकते जिसे आप अब भी अपना मानते हैं। आप केवल उसे समर्पित कर सकते हैं जिसे आपने देख लिया कि वह कभी आपका था ही नहीं — और देखना ही समूचा कार्य है। समझ धीमा पकना है; समर्पण वह फल है जो पकने पर गिरता है। पिछले अध्याय पकना थे। यह गिरना है।

## व्यवहार में प्रौद्योगिकी

एक प्रौद्योगिकी के रूप में, समर्पण का एक पहचानने योग्य संचालन है, और आप उसे करना सीख सकते हैं। वह पकड़ को देखने से आरम्भ होता है — "मुझे इस परिणाम को नियंत्रित करना ही होगा" का भिंचना, शरीर में तनाव के रूप में अनुभूत, ध्यान का संकुचन, भविष्य के विषय में चिंता। वह उस देखने को स्मरण करके आगे बढ़ता है: यह कर्म मेरा नहीं; यह भूमिका निर्धारित है; संचालन मेरा भार नहीं। और वह हाथ खोलने की छोटी आंतरिक भंगिमा में पूर्ण होता है — परिणाम को वह होने देना जो क्षेत्र सुलझाता है, जबकि पूर्णतः और भली-भाँति कर्म करते रहना। अभ्यास के साथ यह तेज होता जाता है, लगभग तत्काल, जब तक यह आपके द्वारा किया जाने वाला एक कौशल कम और आपके जीने का एक ढंग अधिक न हो जाए: एक आदतन खुले-हाथपन, ब्रह्मांड को अपने माध्यम से अपना कार्य करने देने की एक स्थायी इच्छा। और फिर वह वस्तु आती है जिसका वर्णन अगला अध्याय करता है — वह अनायासता जिसे समर्पण खोलता है, जिसमें वह कार्य जो कभी आपको थकाता था, आश्चर्यजनक रूप से, स्वयं को करने लगता है।

## एक बिगाड़े गए शब्द को पुनः अधिकृत करना

समर्पण शब्द हमारे लिए बिगाड़ दिया गया है। वह पराजय की, सफ़ेद झंडे की, विजेता के समक्ष अपने हथियार रखती पिटी हुई सेना की दुर्गंध वहन करता है। इसलिए जब चिंतक समर्पण की आध्यात्मिक जीवन के शिखर के रूप में बात करते हैं, हम सिहर जाते हैं, उसमें दुर्बलता, निष्क्रियता, समस्त प्रयास और गरिमा का परित्याग सुनते हुए। मैं शब्द को पूर्णतः पुनः अधिकृत करना चाहता हूँ, क्योंकि यह पुस्तक जिस समर्पण की ओर संकेत करती है वह पराजय का ठीक विपरीत है। वह सबसे परिष्कृत प्रौद्योगिकी है जिसे कोई मनुष्य संचालित करना सीख सकता है — एक सोदेश्य, कुशल, पुनरावर्त्य पद्धति जो ऐसे परिणाम उत्पन्न करती है जिन तक पकड़ता मन कभी नहीं पहुँच सकता। मैं इसे जानबूझकर एक प्रौद्योगिकी कहता हूँ, ताकि निष्क्रियता के अर्थ-संकेत हटाकर उसके सच्चे स्वरूप को एक सटीक और सीखने योग्य कला के रूप में बहाल कर सकूँ।

जो समर्पित किया जाता है वह आपका प्रयास, आपकी बुद्धि, जीवन के साथ आपकी पूर्ण संलग्नता नहीं — ये सब न केवल बने रहते हैं बल्कि तीव्र होते हैं। जो समर्पित किया जाता है वह केवल एक वस्तु है: कर्तृत्व का भ्रम, यह भिंचा हुआ विश्वास कि आप वह कर्ता हैं जिसे परिणाम को नियंत्रित करना ही है। आप झाग का ज्वार को चलाने का दावा, लहर का समुद्र की गति का स्वामित्व करने का दंभ, पाँच प्रतिशत की पंचानवे को आदेश देने की कल्पना समर्पित करते हैं। और उस एकल मिथ्या दावे को छोड़ने में, आप अपनी शक्ति नहीं खोते; आप अहं के पास कभी रही शक्ति से अतुलनीय रूप से बड़ी एक शक्ति तक पहुँच पा लेते हैं — समूचे संचालन की शक्ति, जो वैसे भी सदा कार्य करने ही वाली थी, और जो अब आपके माध्यम से बिना प्रतिरोध के कर सकती है। समर्पण आपकी शक्ति का अंत नहीं। वह एक छोटी, जोर लगाती, निजी शक्ति का समूचे की अनायास शक्ति से विनिमय है।

## इसे विवश नहीं किया जा सकता, केवल पकाया जा सकता है

समर्पण में एक विरोधाभास है जिसका सामना ईमानदारी से करना ही होगा, क्योंकि वह इच्छा-शक्ति से समर्पण करने के हर प्रयास को परास्त कर देता है। आप समर्पण करने का निर्णय वैसे नहीं कर सकते जैसे आप अपनी बाँह उठाने का निर्णय करते हैं, क्योंकि निर्णय करना स्वयं कर्ता का नियंत्रण थोपना है, जो समर्पण का ठीक विपरीत है। आप छोड़ने का जितना कठोर प्रयास करते हैं, उतना ही कसकर पकड़ते हैं, क्योंकि प्रयास करना पकड़ना है। यही कारण है कि समर्पण

को अहं द्वारा लागू की गई एक तकनीक के रूप में प्राप्त नहीं किया जा सकता; एक तकनीक लागू करता अहं अब भी प्रभार में अहं है। समर्पण इच्छा का कृत्य है ही नहीं। वह समझ का स्वाभाविक पकना है, जैसे एक फल गिरने का निर्णय नहीं करता बल्कि पकने पर बस छूट जाता है।

यही कारण है कि इस पुस्तक ने समर्पण पर पहुँचने से पूर्व समझ पर इतना समय लगाया। जब आप सचमुच देख लेते हैं — केवल विश्वास नहीं, बल्कि देख — कि कर्म कभी आपका था ही नहीं, कि भूमिका क्षेत्र द्वारा निर्धारित होती है, कि कर्ता कृत्य के साथ विलीन हो जाता है, कि संचालन पंचानवे प्रतिशत छिपा है और आपसे परे पैमानों पर संचालित है, तब पकड़ बस स्वयं ही ढीली हो जाती है। थामने को कुछ शेष नहीं रहता। हाथ इसलिए नहीं खुलता कि आपने उसे बल से खोला बल्कि इसलिए कि आपने अंततः देख लिया कि उसमें पकड़ने को कभी कुछ था ही नहीं। समर्पण, ठीक से समझा जाए तो, कोई वस्तु नहीं जो आप करते हैं। वह वही है जो शेष रहता है जब समझ ने उसे घुला दिया हो जो थामे हुए था। और यही कारण है कि वह एक प्रौद्योगिकी है और एक मनोदशा नहीं: क्योंकि समझ को सोद्देश्य और पुनरावर्त्य रूप से संवर्धित किया जा सकता है, और समर्पण उसके पीछे उतनी ही विश्वसनीयता से आता है जितनी गिरना पकने के पीछे आता है।

## समर्पण और त्यागपत्र विपरीत हैं

सब कुछ समर्पण को त्यागपत्र से न भ्रमित करने पर निर्भर है, क्योंकि वे बाहर से अभिन्न दिख सकते हैं और अपने आंतरिक स्वभाव में विपरीत हैं। त्यागपत्र एक पराजित इच्छा का ढह जाना है: मैं जो चाहता हूँ नहीं पा सकता, इसलिए मैं चाहना छोड़ देता हूँ, झुक जाता हूँ, और अपनी थकान को स्वीकृति कहता हूँ। वह भारी, धूसर, और कटु है; वह अब भी व्यक्तिगत इच्छा और व्यक्तिगत खाते में विश्वास करता है और उसने बस दिवालियापन घोषित किया है। समर्पण, जैसा यह पुस्तक उसका अर्थ लेती है, इच्छा का ढहना नहीं बल्कि इस विषय में एक मिथ्या विश्वास का विमोचन है कि कौन कर्म कर रहा है — और वह हल्का, स्पष्ट, और विचित्र रूप से ऊर्जादायी है, क्योंकि वह किसी वास्तविक वस्तु पर हार मानना नहीं बल्कि केवल एक ऐसी कल्पना को रख देना है जो कभी कोई भार वहन कर ही नहीं रही थी। त्यागी व्यक्ति ने प्रयास करना इसलिए बंद किया कि वह असफल हुआ; समर्पित व्यक्ति ने पकड़ना इसलिए बंद किया कि उसने देख लिया कि पकड़ने को कुछ था ही नहीं। एक कर्ता की पराजय है; दूसरा कर्ता का

भेद दिया जाना। वे शरीर में इससे अधिक भिन्न नहीं हो सकते: त्यागपत्र झुक जाता है, समर्पण खुल जाता है; त्यागपत्र आह भरता है, समर्पण साँस लेता है।

यही कारण है कि समर्पण किसी व्यक्ति की जीवन के साथ संलग्नता को घटाता नहीं बल्कि तीव्र करता है। त्यागी संसार से पीछे हटते हैं; समर्पित स्वयं को उसमें पहले से अधिक पूर्णता से उड़ेल देते हैं, ठीक इसलिए कि वे अब किसी परिणाम की रक्षा को अपने एक भाग को पीछे रोककर नहीं रखते। जब आप परिणाम को नहीं पकड़ रहे, तो आप अपना समूचा स्व क्रिया को दे सकते हैं, कुछ भी सुरक्षित न रखें, पूर्णतः जोखिम उठाएँ — क्योंकि अब कोई भयभीत स्वामी नहीं जो हानि के विरुद्ध स्वयं को संचित करता हो। समर्पण, पिटे हुए के सफ़ेद झंडे से कोसों दूर, सबसे पूर्ण रूप से संलग्न लोगों की खुली मुद्रा है — वे जिन्होंने स्वयं को जीवन से बचाना बंद कर दिया है और इसलिए अंततः उसे बिना किसी आरक्षण के जीने में समर्थ हैं।

## एक छोटी शक्ति का एक विशाल शक्ति से विनिमय

समर्पण को एक विनिमय के रूप में सोचिए, और ईमानदारी से तौलिए कि क्या दिया जाता है और क्या प्राप्त होता है। आप जो छोड़ते हैं वह अहं की छोटी शक्ति है — एक पृथक् स्व की वह तनावपूर्ण, चिंतित, सतत प्रतिरक्षित सामर्थ्य जो परिस्थिति के विरुद्ध धकेलती और अपने पसंदीदा परिणामों को बल देती है, एक शक्ति जो वास्तविक किंतु अत्यल्प है, चलाने में थकाऊ, और एक ऐसे क्षेत्र के विरुद्ध सदा असफल जिसे वह नियंत्रित नहीं कर सकती। बदले में आप जो प्राप्त करते हैं वह समूचे संचालन की विशाल शक्ति के साथ सौरेखण है — पंचानवे प्रतिशत, समूचा क्षेत्र, वह व्यवस्था जो आपके धकेलने पर ध्यान दिए बिना वैसे भी सदा घटना को गति देने ही वाली थी। आप धारा के विरुद्ध संघर्ष करता एक छोटा बल होना बंद कर देते हैं और स्वयं धारा का एक अंश बन जाते हैं। यह शक्ति की हानि नहीं; यह किसी मनुष्य को उपलब्ध शक्ति का सबसे बड़ा लाभ है, एक चम्मच का समुद्र से विनिमय। ग़लती यह है कि छोड़ना अनुभव कर लिया जाए और प्राप्त करना अभी न, समर्पण को घटाव के रूप में अनुभव किया जाए क्योंकि छोटी शक्ति विशाल के अनुभव होने से पूर्व छोड़ी जाती है। किंतु जो खुली मुद्रा पर्याप्त लम्बे समय थामते हैं वे बिना अपवाद एक ही बात की सूचना देते हैं: कि जो पहले असहायता-सा लगा वह स्वयं को एकमात्र वास्तविक शक्ति के रूप में उधाड़ता है जिसे उन्होंने कभी छुआ था, समूचे की अनायास शक्ति, अब एक ऐसे स्व के माध्यम से गति करती हुई जिसने अंततः उससे लड़ना बंद कर दिया है।

## समर्पण अधीनता नहीं है

समर्पण शब्द की एक और भ्रम से रक्षा कीजिए, उस त्यागपत्र से भिन्न जिससे हम उसे पहले ही अलग कर चुके हैं। समर्पण अधीनता भी नहीं है — एक प्रबल इच्छा के समक्ष एक दुर्बल इच्छा का झुकना नहीं, किसी बाह्य अधिकारी के प्रति आज्ञाकारिता नहीं, स्वयं को किसी अन्य के आदेश को सौंप देना नहीं। अधीनता कर्ता और स्वामी की समूची संरचना को पूर्णतः अक्षत रखती है; वह केवल कर्तृत्व को स्वयं से किसी अन्य को हस्तांतरित कर देती है। किसी गुरु, एक ब्रह्मांडीय शासक के रूप में कल्पित ईश्वर, किसी अन्य की इच्छा के रूप में कल्पित भाग्य के प्रति अधीन होना वह समर्पण नहीं जिसका यह पुस्तक अर्थ लेती है; वह नए प्रबंधन के अधीन फिर खोला गया व्यक्तिगत खाता है, कर्ता अब देने के बजाय आदेश लेता हुआ। यहाँ जिस समर्पण की ओर संकेत किया गया है उसमें अधीन होने को कोई स्वामी नहीं, क्योंकि उसने कर्ता को पूर्णतः भेद दिया है — झुकने को कोई पृथक स्व शेष नहीं, और जिसके समक्ष झुके वह कोई पृथक शासक नहीं, केवल वह एक समग्र, गति में, एक पृथक स्वामी के मिथ्या दावे को छोड़े हुए।

यही कारण है कि यह पुस्तक जिस समर्पण का अर्थ लेती है वह अधीनता से इतना कठिनतर, और इतना मुक्ततर है। अधीनता, एक अर्थ में, सरल और सांत्वनादायी है: वह स्व को रखती है और उसे टेक लेने को एक स्वामी देती है, उसकी अपनी से बड़ी एक इच्छा कर्तृत्व का वह भार वहन करने को जिसे थामते वह थक चुका था। अकर्तृत्व का समर्पण ऐसी कोई सांत्वना नहीं देता, क्योंकि वह उसी स्व को घुला देता है जो एक स्वामी चाहता था, पीछे एक महान के प्रति आज्ञाकारी एक छोटी इच्छा नहीं, बल्कि बिल्कुल कोई पृथक इच्छा नहीं छोड़ता — केवल उस स्थल की खुली, अभिंची सहभागिता जिसके माध्यम से समग्र कर्म करता है। वह, पहले-पहल, अधीनता से अधिक सम्पूर्ण हानि-सी लग सकती है, क्योंकि अधीनता कम से कम स्व को एक अधीनस्थ भूमिका में संरक्षित रखती है, जबकि यह पृथक स्वामी का कुछ भी संरक्षित नहीं रखती। और फिर भी यह हानि नहीं बल्कि घर-वापसी है, क्योंकि जो घुलाया जाता है वह सदा एक कल्पना थी, और जो शेष रहता है — समग्र, एक अभिंचे स्थल के माध्यम से कर्म करता हुआ — वह सदा वही था जो आप सबसे गहराई से थे।

## विश्वास संचित होता है

समर्पण एक बार किया गया कोई अकेला वीर कृत्य नहीं, बल्कि एक विश्वास है जो छोटी पुष्टियों के माध्यम से संचित होता है, और इसे समझना उसे भयावह के बजाय व्यवहार्य बना देता है।

आप, इच्छा के एक कृत्य से, पूर्ण समर्पण में छल्लाँग नहीं लगा सकते; इच्छा करना कर्ता है, और पूर्णता की माँग अहं का स्वयं को एक असंभव परियोजना देना है। आप जो कर सकते हैं वह कुछ छोटा समर्पित करना है — एक गौण परिणाम पर पकड़ छोड़ना, एक श्वास के लिए हाथ खोलना, एक घटना को अपने पकड़े बिना सुलझने देना — और फिर ध्यान देना कि क्या होता है। और जो होता है, बार-बार, वह यह है कि छोटा समर्पण झेलने योग्य था, बल्कि फलदायी; कि छोड़े गए परिणाम ने आपको नष्ट नहीं किया; कि जीवन, खुले हाथ से मिला जाने पर, ढहा नहीं बल्कि बहुधा अधिक स्वतंत्रता से बहा। हर छोटी पुष्टि प्रमाण के एक बढ़ते समूह में जुड़ती है, और वह विश्वास जो बड़े समर्पण को संभव बनाता है इन संचित पुष्टियों से बनता है, किसी एक विश्वास के कृत्य से नहीं।

यही कारण है कि समर्पण एक जीवन भर गहराता है बजाय एक साथ आने के, और यही कि उसमें जल्दबाजी नहीं की जा सकती। विश्वास अर्जित किया जाना चाहिए, प्रयोग दर प्रयोग, हर छोटा विमोचन तंत्रिका-तंत्र को सिखाता हुआ कि खुला हाथ सुरक्षित है, कि धारा पर भरोसा किया जा सकता है, कि इस विशेष परिणाम को छोड़ना वह विपत्ति नहीं लाया जिसकी पकड़ते स्व ने भविष्यवाणी की थी। वर्षों में, संचित प्रमाण एक बैठा हुआ विश्वास बन जाता है — संदेह के विरुद्ध थामी गई कोई मान्यता नहीं, बल्कि दस हजार पुष्टियों से बना एक जानना — कि समग्र पर भरोसा किया जा सकता है, कि वह व्यवस्था जो तारों को वहन करती है इसे भी वहन कर सकती है, कि हाथ बड़ी वस्तुओं पर भी खुल सकता है क्योंकि वह छोटी वस्तुओं पर इतनी बार सुरक्षित रूप से खुल चुका है। समर्पण, तो, कूदने के लिए कोई चट्टान नहीं बल्कि बनाने के लिए एक विश्वास है, एक समय में एक छोटा विमोचन, जब तक खुला हाथ एक भयावह जोखिम नहीं बल्कि बस वह ढंग बन जाए जिससे व्यक्ति एक ऐसे जीवन से मिलता है जिस पर उसने, लम्बे प्रमाण के माध्यम से, भरोसा करना सीख लिया है।

### एक दृश्य: भँवर-धारा

हर जीवन-रक्षक वही प्रति-सहज पाठ सिखाता है, क्योंकि हर वर्ष समुद्र उन लोगों को मार डालता है जो उसे नहीं जानते। एक भँवर-धारा में फँसा एक तैराक — एक ऐसी धारा जो उसे तट से दूर उससे तेज़ खींचती है जितना वह तैर सकता है — सहज-वृत्ति से, वही एक काम करेगा जो उसे डुबो देता है: तट की ओर मुड़ना और धारा से अपनी समूची शक्ति से लड़ना, खिंचाव के विरुद्ध तब तक ज़ोर लगाना जब तक उसकी बाँहें जवाब न दे जाएँ और समुद्र उसे



न ले ले। जो वस्तु उसे बचाती है वह सहज-वृत्ति का विपरीत है। उसे लड़ना बंद करना ही होगा। उसे धारा को स्वयं को वहन करने देना होगा, उसके विरुद्ध नहीं बल्कि उसके आर-पार तैरना होगा, या बस तैरते रहना और बाहर वहन किया जाना होगा जब तक भँवर उसे न छोड़ दे, जैसे वह सदा छोड़ता है, और फिर अपनी सुविधा से लौटना होगा। जो डूबते हैं वे दुर्बल तैराक नहीं। वे प्रबल तैराक हैं, जिनमें समुद्र से इतनी देर लड़ने की पर्याप्त शक्ति थी कि वे मर जाएँ।

मैं समर्पण का, और समर्पण शक्ति है और पराजय नहीं इसका, इससे स्वच्छ कोई चित्र नहीं जानता। तैराक हार नहीं मानता — वह तीव्रता से संलग्न है, तैरता हुआ, जल के प्रति सजीव, ठीक वही करता हुआ जो स्थिति अपेक्षित करती है। वह जो समर्पित करता है वह प्रयास नहीं बल्कि वह एकल घातक विश्वास है कि उसे इच्छा-शक्ति के बल से धारा को अभिभूत करना ही होगा। वह तत्काल लौटने के परिणाम पर अपनी पकड़ छोड़ता है, और उसे छोड़ने में वह बच जाता है, और लौट आता है। यह समूचा वही है जो यह पुस्तक समर्पण से अर्थ लेती है: डूबते हुए का सफ़ेद झंडा नहीं, बल्कि उसका खुला, कुशल, पूर्णतः संलग्न झुकना जिसने समझ लिया है कि धारा से होकर मार्ग उसके विरुद्ध नहीं। समुद्र से लड़िए और समुद्र जीतता है। उसे बुद्धिमानी से झुक जाइए, अपना मार्ग बल देने की भिंची इच्छा छोड़िए, और वही समुद्र जो आपको मार रहा था आपको घर वहन कर ले जाता है।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

समर्पण पराजितों का सफ़ेद झंडा नहीं बल्कि बुद्धिमानों का खुला हाथ है — केवल एक वस्तु का विमोचन, यह भ्रम कि आप वह कर्ता हैं जिसे परिणाम को नियंत्रित करना ही है। उसे विवश नहीं किया जा सकता, क्योंकि विवश करना कर्ता है; वह स्वयं ही पकता है, जैसे समझ गहराती है, जैसे एक फल गिरने का निर्णय नहीं करता बल्कि तैयार होने पर छूट जाता है।

अभी एक श्वास शब्दशः खुले हाथ से लीजिए, हथेली ऊपर, और जैसे आप निःश्वास छोड़ें, छोड़िए — अपना प्रयास नहीं, अपनी देखभाल नहीं, बल्कि केवल एक परिणाम पर पकड़ जिसे आप पकड़े हुए थे। आप वस्तु पर हार नहीं मान रहे; आप भिंचना छोड़ रहे हैं। ध्यान दीजिए कि खुला हाथ अब भी कर्म कर सकता है, और बेहतर कर्म कर सकता है, अभिंचे होने के कारण।

## अनायास कर्म

---

जब आप नदी को धकेलना बंद करते हैं, तो आप खोज लेते हैं

कि वह आरम्भ से आपको वहन कर रही थी।

— अनायासता पर टिप्पणी

एक अवस्था है, हर परंपरा को भिन्न नामों से ज्ञात — ताओवादी ग्रंथों में वू वेई, भगवद्गीता का कर्म-में-अकर्म, ईसाई रहस्यवादियों में अनुग्रह, आधुनिक मनोवैज्ञानिकों में प्रवाह — जिसमें क्रिया अनायास हो जाती है। अनुपस्थित नहीं: अनायास। कार्य सम्पन्न होता है, बहुधा उसका बहुत और एक ऊँचे स्तर पर, किंतु तनाव, बल देने, प्रतिरोध के विरुद्ध धकेलने का बोध गिर जाता है। वह नदी जिसे धकेलने का प्रयास करते आप स्वयं को थका रहे थे, प्रकट होता है कि समूचे समय आपको वहन कर रही थी, और जिस क्षण आप धकेलना बंद करते हैं, आप धारा को अपने को ले जाते अनुभव करते हैं।

यह अनायासता समर्पण का स्वाभाविक परिणाम है, जो समझ का स्वाभाविक परिणाम है। यह अपनी ही तकनीकों की अपेक्षा रखती कोई पृथक उपलब्धि नहीं; यह वही है जो शेष रहता है जब स्वामित्व का घर्षण हटा दिया गया हो। अकर्तृत्व के गणित को स्मरण कीजिए: क्रिया घटा स्वामी स्व बराबर कृत्य, मुक्त किया गया। मुक्त किया गया कृत्य अनायास कृत्य है। जिस प्रयास के हम अभ्यस्त हैं वह स्वयं क्रिया का प्रयास नहीं बल्कि उसके साथ भारी, चिंतित, पकड़ते स्वामी को घसीटने का प्रयास है। स्वामी को रख दीजिए और क्रिया, आश्चर्यजनक रूप से, लगभग कुछ भी नहीं तौलती।

### ब्रह्मांड कार्य करता हुआ

इस पुस्तक के दृष्टिकोण से, अनायास कर्म उस सत्य का अनुभूत अनुभव है जिसे हम आरम्भ से तर्क करते रहे हैं: कि क्रिया आरम्भ से आपके द्वारा की ही नहीं जा रही थी। संचालन अव्यक्त है और आपसे परे पैमानों पर संचालित है; भूमिका क्षेत्र द्वारा निर्धारित होती है; कर्ता एक पद है

जिसे आप जोड़ते और घटा सकते हैं। जब आप उसे घटाते हैं, तो जो शेष रहता है वह ब्रह्मांड है उस स्थल के माध्यम से कर्म करता हुआ जो आप हैं — और ब्रह्मांड जोर नहीं लगाता। सूर्य अपने ग्रहों को वहन करने को जोर नहीं लगाता; ध्रुव तारा ध्रुव थामने को जोर नहीं लगाता; आकाशगंगा महा-आकर्षक की ओर प्रवाहित होने को जोर नहीं लगाती। विशाल संचालन हर पैमाने पर अनायास है, और जब आप उससे लड़ने के बजाय उससे सरेखित होते हैं, तो आपका कार्य का छोटा भाग भी अनायास हो जाता है, क्योंकि वह उसी धारा से वहन किया जा रहा है जो तारों को वहन करती है।

यह इस पुस्तक के उस वचन का गहनतम अर्थ है कि ब्रह्मांड हमारे लिए वस्तुओं को अनायास बना देता है। ऐसा नहीं कि ब्रह्मांड समर्पण को कठिनाई-मुक्त एक सहज जीवन से पुरस्कृत करता है — कठिनाई आणी, भूमिकाएँ कठिन होंगी, नाटक की अपनी त्रासदियाँ हैं। ऐसा है कि जो तनाव हम कठिनाई के ऊपर जोड़ते हैं, "मुझे इसे नियंत्रित करना ही है, यह मेरा जीतने या हारने को है, मैं वह हूँ जिसे इसे घटित कराना है" का थकाऊ घर्षण, घुल जाता है, और जो शेष रहता है वह निरावरण क्रिया है, समूचे द्वारा वहन की हुई, भूमिका के स्वयं भारी होने पर भी लगभग कुछ भी न तौलती हुई।

## मिथ्या अनायासता के विरुद्ध एक सावधानी

मुझे इस शिक्षा को एक सस्ती नक़ल से बचाना होगा, क्योंकि अनायासता की भाषा सहज ही आलस्य और आध्यात्मिक टालमटोल द्वारा अपहृत कर ली जाती है। सच्चा अनायास कर्म क्रिया की अनुपस्थिति नहीं; वह स्वामित्व के घर्षण के बिना क्रिया है। वह आलसी व्यक्ति जो कुछ नहीं करता और उसे समर्पण कहता है, उसने स्वामी स्व को घटाया नहीं — उसने केवल उसे एक भिन्न रूप में लिप्त किया है, वह रूप जो संलग्नता के बिना सहजता चाहता है। असली वस्तु अपने फलों से पहचानी जाती है: कार्य सम्पन्न होता है, बहुधा पहले से ऊँचे स्तर पर, और कर्ता शांति में है। यदि कार्य सम्पन्न नहीं हो रहा, तो वह अनायास कर्म नहीं; वह बुद्धि का मुखौटा पहने टालमटोल है। परीक्षा सरल और निर्मम है। अनायास कर्म कर्म करता है, पूर्णतः और भली-भाँति, और हल्का है। टालमटोल कर्म नहीं करता, और अपने न-करने को स्वतंत्रता कहता है। आध्यात्मिक वस्त्र पहने अपने ही अहं से छले न जाइए।

## अनायास का अर्थ निष्क्रिय नहीं

मुझे आगे बढ़ने से पूर्व अनायास कर्म के विचार को उसकी सस्ती नक़ल से बचाना होगा, क्योंकि कोई शिक्षा आलस्य द्वारा इससे अधिक सहजता से अपहृत नहीं की जाती। अनायास कर्म क्रिया की अनुपस्थिति नहीं है। यह बिस्तर में लेटकर अपनी जड़ता को समर्पण कहना नहीं, कठिनाई से बचना और बचाव को शांति नाम देना नहीं। असली वस्तु अपने फलों से पहचानी जाती है: कार्य सम्पन्न होता है, बहुधा उसका बहुत और एक ऊँचे स्तर पर, जबकि कर्ता विश्राम में है। नक़ल भी अपने फलों से पहचानी जाती है: कुछ सम्पन्न नहीं होता, और न-करना उसे लिप्त उससे छिपाने को आध्यात्मिक भाषा में सजाया जाता है। परीक्षा सरल और निर्मम है। अनायास कर्म कर्म करता है, पूर्णतः और भली-भाँति, और हल्का है। टालमटोल कर्म नहीं करता, और अपने न-करने को स्वतंत्रता कहता है। अपने ही अहं को, जो अंतहीन रूप से आविष्कारशील है, आपको बुद्धि-स्वादी आलस्य से छलने न दीजिए।

जो सच्चे अनायास कर्म को अनायास बनाता है वह यह नहीं कि कम घटित होता है बल्कि यह कि जो घटित होता है उससे स्वामित्व का घर्षण हटा दिया गया है। जिस प्रयास के हम अभ्यस्त हैं वह विरले ही स्वयं क्रिया का प्रयास होता है; वह क्रिया के साथ भारी, चिंतित, आत्म-चेतस स्वामी को घसीटने का प्रयास है — हम कैसे दिखते हैं इसकी निगरानी करता हुआ, परिणाम को पकड़ता हुआ, स्व की रक्षा करता हुआ, अपने ही प्रदर्शन पर निरंतर आंतरिक टीका चलाता हुआ। उस स्वामी को रख दीजिए और क्रिया, आश्चर्यजनक रूप से, लगभग कुछ भी नहीं तौलती, क्रिया के बड़े होने और भूमिका के कठिन होने पर भी। नदी समूचे समय आपको वहन कर रही थी; जिसने आपको थकाया वह उसके विरुद्ध तैरने पर आपका आग्रह था जबकि आप विश्वास करते थे कि आप वह हैं जो स्वयं को तैराए रख रहा है।

## तनाव के बिना कठिनाई

मुझे यह वचन न देने में सावधान रहने दीजिए कि एक सरेखित जीवन कठिनाई-मुक्त है, क्योंकि वह एक झूठ होगा, और एक निर्दय झूठ। कठिनाई आएगी। भूमिकाएँ कठिन होंगी। नाटक की अपनी त्रासदियाँ हैं, अपने रोग, अपनी हानियाँ, पिसते कार्य के अपने लम्बे विस्तार। अनायास कर्म कठिन की कठिनाई का उन्मूलन नहीं करता; पर्वत अब भी खड़ा है, श्रम अब भी वास्तविक, शोक अब भी शोक। वह जिसका उन्मूलन करता है वह दूसरी परत है जिसे हम आदतन कठिनाई के ऊपर जोड़ते हैं — "मुझे इसे नियंत्रित करना ही है, यह मेरा जीतने या हारने

को है, मैं वह हूँ जिसे इसे ठीक निकालना है, और यदि वह नहीं निकलता तो वह मुझ पर झलकता है" का थकाऊ घर्षण। वह दूसरी परत तनाव है, और तनाव वैकल्पिक है। उसे हटाइए, और जो शेष रहता है वह निरावरण कठिनाई है, एक ऐसे व्यक्ति के पूर्ण संसाधनों से मिली हुई जो अब स्वयं से भी नहीं लड़ रहा — कठिन, शायद, किंतु अब भारी नहीं।

यह इस पुस्तक के उस वचन का गहनतम अर्थ है कि ब्रह्मांड उनके लिए वस्तुओं को अनायास बना देता है जो उससे सरेखित होते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि ब्रह्मांड आपके समर्पण को एक सहज जीवन से पुरस्कृत करता है, हर बाधा को चिकना कर देता है। इसका अर्थ है कि बाधाएँ, जब आती हैं, स्वामित्व के जोड़े गए भार के बिना मिली जाती हैं, उसी धारा से वहन की हुई जो तारों को वहन करती है, न कि उस छोटे ज़ोर लगाते स्व द्वारा जिसने कल्पना की थी कि उसे सब कुछ अकेले वहन करना है। सूर्य अपने ग्रहों को धारण करने को ज़ोर नहीं लगाता; ध्रुव तारा ध्रुव थामने को ज़ोर नहीं लगाता; आकाशगंगाएँ महा-आकर्षक की ओर ज़ोर नहीं लगातीं। विशाल संचालन हर पैमाने पर अनायास है, इसलिए नहीं कि वह सहज है बल्कि इसलिए कि उसमें कुछ भी स्वयं से नहीं लड़ रहा। उससे सरेखित होइए, और आपका कार्य का भाग ठीक उसी अर्थ में अनायास हो जाता है — भारहीन नहीं, बल्कि उस एक भार से अभाररहित जो कभी आवश्यक था ही नहीं।

### वू वेई: न-बल देकर करना

ताओवादियों ने इसे इसका सबसे सटीक नाम दिया: वू वेई, जिसका अनुवाद खराब ढंग से अ-क्रिया किया जाता है और बेहतर ढंग से न-बल देने के रूप में समझा जाता है, तनाव के बिना क्रिया, वह करना जो वास्तविकता की धारा के विरुद्ध नहीं धकेलता। जल उसका महान प्रतीक है। जल प्रयत्न नहीं करता, फिर भी वह घाटियाँ तराशता है; वह बल नहीं देता, फिर भी कुछ भी अधिक प्रबल नहीं; वह निचले स्थान को खोजता है, हर बाधा को झुकता है, और, झुककर, वहाँ पहुँचता है जहाँ कोई बल देना नहीं ला सकता था। वू वेई वह क्रिया है जिसमें जल का स्वभाव है — पूर्णतः प्रभावी, अपने प्रभाव में विशाल तक, और फिर भी जो है उसके विरुद्ध ज़ोर लगाते स्व के घर्षण के बिना। यह करने की अनुपस्थिति नहीं बल्कि बल देने की अनुपस्थिति है, और उनके बीच का अंतर इस समूचे अध्याय का सार है। बल दी गई क्रिया वास्तविकता से पिसती है और स्वयं को थका देती है; वू वेई क्रिया स्थिति की वास्तविक धारा

के साथ बहती है और इस विचित्र कारण से अधिक सम्पन्न करती है कि उसने लड़ना बंद कर दिया है।

ध्यान दीजिए कि वू वेई को अधिक संवेदनशीलता चाहिए, कम नहीं — वह लापरवाही का विपरीत है। बिना बल दिए कर्म करने के लिए, व्यक्ति को स्थिति की वास्तविक धारा को इतनी सूक्ष्मता से प्रत्यक्ष करना होगा कि वह उसके विरुद्ध के बजाय उसके साथ गति करे, जैसे एक कुशल हाथ लकड़ी को आर-पार काटकर नहीं बल्कि धारा खोजकर चीरता है। बल देने वाले को प्रत्यक्ष करने की आवश्यकता नहीं; वह बस अधिक शक्ति लगाता है जब तक कुछ टूट न जाए। वू वेई के अभ्यासी को सब कुछ प्रत्यक्ष करना होगा — क्षण का वास्तविक आकार, वस्तुओं की वास्तविक तत्परता, कम-से-कम प्रतिरोध की वह रेखा जो सबसे अधिक प्रभाव की भी रेखा है — और फिर उसके साथ गति करे, हल्के से, निर्णायक रूप से, बिना तनाव के। यही कारण है कि अनायास कर्म आलसी व्यक्ति का शॉर्टकट नहीं बल्कि निपुण की उपलब्धि है: वह वास्तविकता के प्रति एक बढ़ी हुई सचेतता और उसे बल देने की इच्छा का पूर्ण विमोचन माँगता है, और उन दोनों के विवाह में — पूर्ण प्रत्यक्षण, शून्य बल — क्रिया अनायास और परम प्रभावी दोनों हो जाती है, जल समुद्र खोजता हुआ।

## दो परतें, और कौन-सी वैकल्पिक है

इस अध्याय से एक व्यावहारिक भेद सबसे ऊपर ले जाइए, क्योंकि उसका उपयोग किसी भी कठिन घंटे में किया जा सकता है। किसी भी कठिनाई में दो परतें हैं। पहली स्वयं कठिनाई है — खड़ी चढ़ाई, वास्तविक श्रम, सच्ची हानि, वास्तविक समस्या जिसका सामना किया जाना ही है। यह परत वैकल्पिक नहीं; वह बस घटनाओं के एक संसार में जीवित होने का पोत है, और कितना भी संरेखण उसे हटाता नहीं। दूसरी परत वह तनाव है जो हम ऊपर जोड़ते हैं — एक ऐसे स्व का आंतरिक भिंचना जो आग्रह करता है कि यह नहीं होना चाहिए, कि मुझे परिणाम को नियंत्रित करना ही है, कि यह मेरा जीतने या हारने को है और इस पर झलकता है कि मैं कौन हूँ। यह दूसरी परत पूर्णतः वैकल्पिक है, और वह लगभग सदा हमारे दुःख का बड़ा भाग है। चढ़ाई कठिन है; चढ़ाई के तथ्य के विरुद्ध कटु आंतरिक युद्ध और भी कठिन है, और अनावश्यक। अनायास कर्म पहली परत का उन्मूलन नहीं करता — चढ़ाई खड़ी रहती है — किंतु वह दूसरी को घुला देता है, ताकि जो शेष रहे वह निरावरण कठिनाई हो, पूर्णतः मिली हुई, वास्तविकता से युद्ध करते स्व के जोड़े गए भार के बिना। दोनों परतों को अलग-अलग अनुभव

करना सीखिए, और आप ठीक कठिनाई के मध्य में वैकल्पिक परत को रख देने की शक्ति पा लेते हैं — खड़े पथ पर चढ़ने की, साथ ही यह न लड़ते हुए कि वह खड़ा है। वह एकल विवेक, अभ्यस्त, एक शांतिपूर्ण जीवन की लगभग समूची आवश्यकता है।

## सीखने में प्रयास, निपुणता में सहजता

हर निपुणता का पथ एक आकार लेता है, और उसे समझना उस प्रत्यक्ष विरोधाभास को घुला देता है जो प्रयास के उन वर्षों के बीच है जिनकी यह पुस्तक कभी-कभी प्रशंसा करती है और उस अनायासता के बीच जिसकी ओर वह सर्वत्र संकेत करती है। आरम्भ में, सब प्रयास और घर्षण है। नौसिखिया चालक पहिया पकड़ती है, हर गति की निगरानी करती है, सचेत नियंत्रण से स्वयं को थका देती है; आरम्भिक संगीतकार हर स्वर पर परिश्रम करता है; किसी भी वस्तु का नया अभ्यासी बल देता, जोर लगाता, और थकता है। यह श्रमपूर्ण अवस्था आवश्यक और अपरिहार्य है; उसे लाँघना संभव नहीं, और वह मिथ्या अनायासता जो उसे लाँघने का प्रयास करती है केवल अक्षमता उत्पन्न करती है। किंतु जैसे निपुणता गहराती है, कुछ उलट जाता है। वह सचेत नियंत्रण जो आरम्भ में आवश्यक था स्वयं वह वस्तु बन जाता है जिसे छोड़ा जाना ही चाहिए; निपुण निगरानी किए बिना चलाता है, परिश्रम किए बिना बजाता है, बल दिए बिना कर्म करता है — और वह प्रयास जिसने कौशल बनाया एक ऐसी सहजता को स्थान दे देता है जो उसे व्यक्त करती है। सीखने में प्रयास; निपुणता में सहजता। नदी सदा वहाँ थी; प्रयास के वर्ष उससे लड़ना बंद करना सीखना थे।

यही कारण है कि अनायास कर्म एक शॉर्टकट नहीं हो सकता और एक उपलब्धि होना ही चाहिए, और यही कि आलसी नकल असफल होती है। निपुणता के पार की सहजता सीखने के प्रयास से अर्जित होती है; व्यक्ति श्रम लाँघते हुए सहजता तक छलाँग नहीं लगा सकता, उतना ही जितना वह पहले तानों का अभ्यास किए बिना एक संगीत-रचना प्रस्तुत नहीं कर सकता। किंतु — और यह मुक्तिदायी अर्थ है — एक बार जब प्रयास अपना कार्य कर चुका, तो उससे चिपकना बाधा बन जाता है, ठीक वैसे जैसे सचेत नियंत्रण से चिपकते पियानोवादक ने उस अनुच्छेद को नष्ट कर दिया जिसे अनायास प्रवाह ने पूर्ण किया था। इसलिए एक जीवन के लिए शिक्षा प्रयास को त्यागना नहीं बल्कि उसकी ऋतु को जानना है: सीखने में पूर्णतः श्रम करना, और फिर, जब कौशल आप में बन चुका हो, श्रमकर्ता स्व को छोड़ देना और निपुणता को बहने देना। अधिकांश मानवीय तनाव किसी ऐसे व्यक्ति का तनाव है जो कौशल साध लेने

के बहुत बाद तक नौसिखिए के सचेत नियंत्रण को पकड़े हुए है — एक ऐसी नदी को बल देता हुआ जिसमें तैरना उसने बहुत पहले सीख लिया, एक ऐसी धारा के विरुद्ध स्वयं को थकाता हुआ जो वर्षों पहले उसे वहन करने को तैयार थी।

## संलग्न, फिर भी रिक्त नहीं

थका होने और रिक्त हो जाने के बीच एक अंतर है, और अनायास कर्म उसे उधाड़ देता है। थकान किए गए कार्य की ईमानदार क्लांति है — शरीर और मन सच्चे प्रयास में खर्च हुए, सच्चे विश्राम से पुनःस्थापित, एक स्वच्छ थकावट जिसे नींद ठीक कर देती है। रिक्तता कुछ और है: स्वयं की धारा के विरुद्ध किए गए कार्य की पिसती, खोखली, अपुनःस्थापनीय थकावट, चिंतित स्वामी के भार के नीचे आगे घसीटे गए प्रयास की, उस कठिनाई के साथ सतत युद्ध करते एक स्व की जिसका वह सामना करता है। रिक्त केवल थके नहीं; वे एक ऐसे ढंग से जर्जर हैं जिसे विश्राम ठीक नहीं करता, क्योंकि जर्जरता स्वयं कार्य से नहीं बल्कि कार्य में जोड़े गए स्वामित्व के घर्षण से आई — दूसरी परत, आंतरिक युद्ध, हर क्रिया के पीछे घसीटा गया भिंचा स्वा। वे एक सप्ताह सो सकते हैं और फिर भी रिक्त जागेंगे, क्योंकि जिसने उन्हें रिक्त किया वह विश्राम द्वारा कभी संबोधित ही नहीं हुआ।

अनायास कर्म थकाता है किंतु रिक्त नहीं करता, और यह उसके सबसे निश्चित चिह्नों में से एक है। वह जो अभिंची अवस्था से कर्म करता है — पूर्णतः संलग्न, कठिनाई मिली हुई, किंतु स्वामी स्व के घर्षण के बिना — ईमानदारी से थकता है और ईमानदारी से पुनःस्थापित होता है, क्योंकि एकमात्र वस्तु जो खर्च हुई वह कार्य था, उसके विरुद्ध सतत युद्ध नहीं। अपने ही जीवन में, उस अंतर के लिए देखिए: कठिन कार्य के वे दिन जो आपको स्वच्छता से थका और किसी प्रकार संतुष्ट छोड़ते हैं, बनाम वे दिन जो आपको खोखला और रिक्त छोड़ते हैं यद्यपि आपने शायद कम किया हो। अंतर विरले ही कार्य की मात्रा है; वह दूसरी परत की उपस्थिति या अनुपस्थिति है, स्वामित्व का घर्षण, आंतरिक युद्ध। अनायास कर्म सीखना स्वयं को कार्य पर पूर्णतः खर्च करना सीखना है जबकि युद्ध का कुछ भी न जोड़ना — और यह खोज लेना कि एक जीवन तीव्रता से संलग्न, श्रमसाध्य तक हो सकता है, और फिर भी व्यक्ति को उस स्वच्छ ढंग से थका छोड़ सकता है जिसे विश्राम ठीक करता है, बजाय उस ढंग से रिक्त करने के जहाँ तक कोई विश्राम नहीं पहुँचता।

\*  
\*\*



## एक चिंतन

किसी भी कठिनाई में दो परतें हैं: स्वयं कठिनाई, जो वास्तविक और वैकल्पिक नहीं, और वह तनाव जो हम ऊपर जोड़ते हैं — एक ऐसे स्व का आंतरिक युद्ध जो आग्रह करता है कि यह नहीं होना चाहिए। अनायास कर्म खड़ी चढ़ाई का उन्मूलन नहीं करता। वह दूसरी परत को घुला देता है, ताकि जो शेष रहे वह निरावरण कठिनाई हो, पूर्णतः मिली हुई, जोड़े गए भार के बिना।

एक कठिनाई मन में लाइए जिसका आप सामना कर रहे हैं। दोनों परतों को अलग-अलग अनुभव कीजिए: मिलने को वास्तविक समस्या, और उसके तथ्य के विरुद्ध आपका आंतरिक भिन्नता। पहली को छोड़ दीजिए — वह आपकी मिलने को है। एक क्षण के लिए, दूसरी को रख दीजिए, और ध्यान दीजिए कि जो असह्य लगा उसका कितना तथ्य के विरुद्ध युद्ध था, न कि स्वयं तथ्य।

## एकीकृत कर्म को जीना

---

*शिक्षा तब तक मूल्यहीन है जब तक उसने यह न बदल दिया हो  
कि आप एक प्याला चाय कैसे बनाते हैं।*

— अभ्यास पर टिप्पणी

एक दर्शन जिसे जीया नहीं जा सकता वह एक संग्रहालय की वस्तु है, और मेरी संग्रहालय में जोड़ने में कोई रुचि नहीं। सो यह अध्याय सांसारिक होने की सीमा तक व्यावहारिक है। वह पूछता है: एक व्यक्ति इस पुस्तक द्वारा बिछाई गई समझ को वास्तव में कैसे जीता है? अंतर्दृष्टि के शिखर क्षणों में नहीं, बल्कि एक साधारण मंगलवार को, यातायात में, कार्य पर, परिवार के छोटे घर्षणों में और दिनचर्या के लम्बे विस्तारों में? यहाँ मैं एक प्रणाली नहीं देता — प्रणालियाँ नए पिंजरे बन जाती हैं — बल्कि मुट्ठी-भर अभिविन्यास जिन्हें मैंने, अपने ही जीवन में और दूसरों में, दृष्टि को दैनिक अस्तित्व के पोत में अनूदित करते पाया है।

### प्रातःकालीन स्मरण

दिन का आरम्भ, करने का संवेग पकड़ने से पूर्व, देखने को स्मरण करके कीजिए। उसे केवल एक मिनट लगे। स्वयं को स्मरण कराइए, जो भी शब्द आपके लिए सजीव हों उनमें: इस दिन का कर्म मेरा नहीं; मुझे ऐसी भूमिकाओं में भूमिका दी गई है जिन्हें मैंने नहीं चुना; मेरा कार्य उन्हें सच्चाई से निभाना है, उनके परिणामों का स्वामित्व लेना नहीं; संचालन मेरे अपने से कहीं बड़े हाथों में है। यह वस्तुओं के आपके अनुकूल जाने की कोई प्रार्थना नहीं। यह पकड़ के कसने का अवसर पाने से पूर्व पकड़ का एक सोद्देश्य ढीला करना है — खुले हाथ को दिन की पूर्वनिर्धारित मुद्रा के रूप में स्थापित करना।

## प्रतिक्रिया की दहलीज़ पर ठहराव

दिन भर, कार्य अधिकतर पकड़ को उठते ही पकड़ना और हाथ को फिर खोलना है। कुछ ग़लत होता है; भिंचन आता है — "यह नहीं होना चाहिए, मुझे इसे ठीक करना है, यह मेरा है।" अभ्यास भिंचन को देखना है, और देखने में, स्मरण करना: यह एक भूमिका उठ रही है, अपने क्षितिज पर एक घटना; मेरा भाग सच्चाई से प्रत्युत्तर देना है, परिणाम का स्वामित्व लेना नहीं। ठहराव को केवल एक श्वास होना चाहिए। किंतु उस श्वास में, साक्षी स्वयं को पुनः स्थापित करता है, सहभागी की पकड़ ढीली होती है, और जो प्रत्युत्तर आता है वह स्वामित्व के कँपन के बजाय स्पष्टता से आता है। एक समूचा जीवन इस एक दोहराए गए सूक्ष्म-अभ्यास से रूपांतरित हो सकता है: हर प्रतिक्रिया की दहलीज़ पर अकर्तृत्व की श्वासा।

## न्यायाधीश के बिना सान्ध्य समीक्षा

दिन का अंत सामान्य आत्म-लेखा-परीक्षा से न कीजिए — मैंने क्या भली-भाँति किया, किसमें असफल हुआ, मेरा अंक क्या है — जो केवल स्वामी स्व को पोषित करती है, बल्कि एक भिन्न प्रकार की समीक्षा से: आज मैंने कहाँ पकड़ा, और कहाँ मैं हाथ खोल पाया? किसी नैतिक श्रेणी के रूप में नहीं बल्कि सरल ध्यान-देने के रूप में, जैसे आप मौसम पर ध्यान दें। पकड़ दंडित किए जाने को कोई पाप नहीं; वह देखे जाने को एक आदत है, और उसे देखना ही वह है जो उसे ढीला करता है। हफ्तों और महीनों में, यह कोमल, न्यायाधीश-रहित ध्यान-देना वही करता है जो कितनी भी आत्म-ताड़ना नहीं कर सकती: वह समझ को समर्पण के लिए गए प्रतिवर्त में पका देता है।

## सबसे कठिन दशाएँ

मैं यह दिखावा नहीं करूँगा कि अभ्यास चरम सीमा में सरल है। जब वास्तविक विपत्ति टूटती है — एक बच्चे की मृत्यु, एक विश्वासघात जो एक जीवन को चूर कर देता है, एक अन्याय जो पुकार उठता है — तो शिक्षा यदि बहुत जल्दी या बहुत शीतलता से दी जाए तो जघन्य लग सकती है। मुझे यहाँ सावधान रहने दीजिए। इस पुस्तक की दृष्टि शोक को दबाने या दुःखी से यह कहने का उपकरण नहीं कि उनकी पीड़ा एक भ्रम है। शोक वास्तविक है; उसे पूर्णतः अनुभव होने दीजिए; साक्षी आपसे आपके हृदय को काट देने की अपेक्षा नहीं करता। शिक्षा जो देती है, जब शोक का पहला तूफ़ान बीत चुका हो, वह हानि का खंडन नहीं बल्कि उसके ऊपर परत

किए गए दूसरे दुःख का धीमा विमोचन है — विरोध, यह-मेरे-साथ-क्यों, व्यक्तिगत अन्याय का विश्वास, उत्तरजीवी का अपराध-बोध, एक शत्रु लेखाकार के रूप में कल्पित ब्रह्मांड के विरुद्ध रोष। हानि बनी रहती है; वह वास्तविक थी; आपने समुद्र की एक लहर से प्रेम किया और लहर शांत हो गई। किंतु वास्तविकता के विरुद्ध युद्ध, जो हर शोक को दुगुना कर देता है, समय में रखा जा सकता है। वह रखना उसके साथ विश्वासघात नहीं जिसे आपने खोया। वह आनंद की ओर एकमात्र द्वार है जिसमें, विरोधाभासी रूप से, उनके लिए आपका प्रेम विरोध से अविकृत होकर जारी रह सकता है।

### **अभ्यास स्मरण करना है, प्राप्त करना नहीं**

इस पुस्तक की हर वस्तु को प्राप्त की जाने वाली एक अवस्था के रूप में गलत समझा जा सकता है — स्थायी अकर्तृत्व की एक समाप्ति-रेखा जिसके परे व्यक्ति फिर कभी नहीं भूलता। वह ऐसे काम नहीं करता, और उसे उस ढंग से प्रस्तुत करना केवल अहं के पीछा करने को एक नई और सूक्ष्मतर महत्वाकांक्षा रचता है। एकीकृत समझ एक बार प्राप्त और सदा के लिए थामी नहीं जाती; वह स्मरण की जाती है, बार-बार, खोई और पुनः पाई गई, एक दिन के साधारण घर्षण के माध्यम से। आप भूलेंगे। आप कर्ता में वापस सिकुड़ेंगे, एक परिणाम का दावा करेंगे, एक नतीजे को पकड़ेंगे, एक कृत्य के लिए स्वयं पर अभियोग चलाएँगे, एक ऐसे भविष्य से डरेंगे जिसे आप नियंत्रित नहीं कर सकते। यह असफलता नहीं। यह अभ्यास की लय है। अभ्यास बस लौटना है — यह ध्यान देना कि आप सिकुड़े हैं, और शांत, अनायास विमोचन वापस व्यापक दृष्टि में। एकीकृत कर्म का एक जीवन भूलने के बिना एक जीवन नहीं। वह एक ऐसा जीवन है जो स्मरण करने में कुशल और कोमल हो गया है।

और स्मरण को एक दिन के स्वाभाविक जोड़ों में बुना जा सकता है, ताकि वह एक और श्रमसाध्य परियोजना न बन जाए। ऐसे तीन जोड़ हैं, और वे उन तीन कालों से मेल खाते हैं जिनमें कर्ता स्वयं को फिर से स्थापित करता है: प्रातः, जहाँ हम आने वाले दिन को रचने को तनते हैं; प्रतिक्रिया का क्षण, जहाँ हम एक गुज़रती घटना को अपना कहकर पकड़ लेते हैं; और सायं, जहाँ हम पूर्ण हुए दिन पर निर्णय में बैठते हैं। एक अभ्यास जो इन तीन जोड़ों में से प्रत्येक पर संकुचन से मिलता है — हल्के से, संक्षेप में, बिना गंभीरता के — व्यापक दृष्टि को साधारण घंटों भर जीवित रखने के लिए पर्याप्त है, जब तक व्यापक दृष्टि स्वयं ही, उपलब्धि के बजाय विश्राम-अवस्था बनने लगे।

## प्रतिक्रिया की दहलीज़, धीरे से जाँची गई

तीन जोड़ों में, प्रतिक्रिया का क्षण सबसे महत्वपूर्ण और सबसे शिक्षण-योग्य है, क्योंकि वहीं व्यक्तिगत कर्म वास्तविक समय में गढ़ा जाता है। कुछ होता है — एक शब्द, एक अपमान, एक समाचार, एक कुंठा — और किसी सोद्देश्य विचार से पूर्व, संकुचन घटित होता है: यह मेरे साथ हो रहा है, यह मेरा है, मुझे रक्षा या जब्त या प्रतिकर्षण करना ही है। स्वामित्व का समूचा तंत्र एक क्षण में दग जाता है, और उस क्षण से दुःख चला आता है। किंतु घटना और संकुचन के बीच सदा एक अंतराल होता है, चाहे कितना भी छोटा — एक दहलीज़ जिसके आर-पार प्रतिक्रिया ने अभी प्रतिबद्धता नहीं की। एकीकृत कर्म को जीने की समूची कला उस एकल अंतराल के संवर्धन में संकेंद्रित की जा सकती है: वह संक्षिप्त, उपलब्ध ठहराव जिसमें व्यक्ति घटना को आती हुई देख सकता है बिना अभी उसके स्वामित्व में सिकुड़े, और उस देखने में, प्रतिक्रिया के व्यक्तिगत शृंखला में एक नई कड़ी में कठोर होने से पूर्व व्यापक दृष्टि को लौटने दे।

यह भावना का दमन नहीं, जो केवल एक और रूप में स्वामित्व होगा — कर्ता अब अपनी ही समता का कर्तृत्व दावा करता हुआ। यह कुछ हल्का है: अंतराल में यह सरल पहचान कि घटना अपना क्षितिज पार कर चुकी और अब उद्धाटित हो रही है, कि वह जो भूमिका देती है उसे स्वामित्व लिए बिना निभाया जा सकता है, कि वह जागरूकता जिसमें यह सब प्रकट होता है कभी वह नहीं थी जिसका अपमान या जिसे खतरा हो रहा था। महीनों और वर्षों भर अभ्यस्त, अंतराल पर यह ध्यान आपको शीतल या प्रत्युत्तर देने में धीमा नहीं बनाता; वह आपको अधिक प्रत्युत्तरशील बनाता है, क्योंकि आपका प्रत्युत्तर अब खतरे में पड़े स्व की संकीर्ण ऐंठन के बजाय स्पष्ट व्यापक दृष्टि से उठता है। अंतराल वही है जहाँ स्वतंत्रता जीती है। इस अध्याय की हर अन्य वस्तु उसे चौड़ा करने की सेवा में है।

## सायं, और दिन को रख देना

एक दिन के अंत में, कर्ता एक मुक्रदमा चलाना चाहता है। वह घंटों की समीक्षा करता है, जीत और हार गिनता है, स्वयं को असफलताओं का दोषी ठहराता है और स्वयं को सफलता के छोटे फ़ैसले देता है, और समूचे निर्णय-लदे गड्ढर को नींद में और आगे कल में ले जाता है। एकीकृत कर्म का एक सान्ध्य अभ्यास इस मुक्रदमे का सोद्देश्य विलयन है। दिन को देखने से इनकार नहीं — स्पष्ट देखना मूल्यवान है — बल्कि न्यायाधीश के बिना एक देखना, जिसमें

दिन की घटनाएँ पूर्ण हुई घटनाओं के रूप में समीक्षित होती हैं, भूमिकाएँ जो निभाई गईं और अब विलीन हो गईं, न कि एक व्यक्तिगत खाते में प्रविष्टियों के रूप में जिन्हें विश्राम से पूर्व निपटाया जाना है। जो हानिकारक था उसे देखा जा सकता है, और उसे सुधारने का आवेग कल के लिए नोट किया जा सकता है, बिना स्व को कठघरे में खड़ा किए। जो भली-भाँति किया गया उसे देखा जा सकता है, और चुपचाप सराहा जा सकता है, बिना स्व के एक पदक का दावा किए। दिन पूर्ण हुआ; भूमिकाएँ विलीन हुईं; वह जागरूकता जिसने उन सबको देखा अभाररहित लेट जाती है। दिन को इस ढंग से रख देना, रात दर रात, पूर्ण हुई घटनाओं के मृत भार को आगे ढोने से इनकार करना है — और उस संचित भार से अभाररहित एक जीवन एक ऐसा जीवन है जो जैसे-जैसे चलता है भारी होने के बजाय हल्का होता जाता है।

## संबंध में अभ्यास

कहीं कर्म का व्यक्तिगत स्वामित्व निकट संबंध की अपेक्षा अधिक निर्ममता से नहीं गढ़ा जाता, और कहीं उसका विमोचन अधिक रूपांतरकारी नहीं। जिनसे हम प्रेम करते हैं उनके साथ हम सबसे विस्तृत खाते रखते हैं — किसने अधिक दिया, किसने किसके साथ अन्याय किया, क्या देय है, क्या योग्य था — और ये बहियाँ, वर्षों भर संचित, घनिष्ठता का धीमा विष बन जाती हैं। एकीकृत समझ यहाँ तर्क जीतने की तकनीक के रूप में नहीं बल्कि स्वयं बही के एक शांत विलयन के रूप में प्रवेश करती है। दूसरे का कठोर शब्द उनके थकान और इतिहास और भय के समूचे क्षेत्र में से एक घटना के क्षितिज पर उठा, ठीक जैसे आपके उठते हैं; वह एक भूमिका थी जिसे क्षण ने निर्धारित किया, आपके मूल्य पर एक निर्णय नहीं, और वह अपनी पूर्णता पर विलीन हो जाएगा जब तक आप में से कोई उसे खाते में संचित करके जीवित न रखे। एक प्रियजन से बही के बिना मिलना — आपके बीच की हर घटना को संचित करने के बजाय पूर्ण और विलीन होने देना — शायद सबसे व्यावहारिक उपहार है जो यह पुस्तक देती है, और सबसे कठिन, क्योंकि संबंध में हिसाब स्मृति-सा, न्याय-सा, स्वयं प्रेम-सा अनुभव होता है। वह इनमें से कोई नहीं। वह कर्ता है, अंक रखता हुआ, उस एकमात्र अखाड़े में जहाँ अंक-रखना उसे नष्ट करने को सबसे निश्चित है जिसकी रक्षा का वह दावा करता है।

इसका अर्थ पायदान बन जाना या यह दिखावा करना नहीं कि हानि हुई ही नहीं; स्पष्ट देखना और ईमानदार प्रत्युत्तर बने रहते हैं, और कुछ संबंध ठीक ही समाप्त होते हैं। इसका अर्थ है आपके बीच की पूर्ण हुई घटनाओं से एक स्थायी पहचान — आहत साथी, निराश माता-पिता,

अनसराहा मित्र — बनाने से इनकार करना, और इसके बजाय व्यक्ति से ताज़ा मिलना, जैसे वे अब हैं, न कि उस संचित अभियुक्त के रूप में जो आपकी बही ने उन्हें बना दिया है। खाते से मुक्त, प्रेम वह कर सकता है जिसका खाता गला घोंट रहा था: उसके प्रति प्रत्युत्तर देना जो वास्तव में यहाँ है, इस व्यक्ति में, इस क्षण में, न कि उस मुक़दमे के प्रति जो आप वर्षों से उनके विरुद्ध बना रहे हैं।

## लम्बा चाप, और उसकी अपेक्षित कोमलता

इसके एक जीवन-भर के आकार के विषय में एक शब्द, कहीं कोई अपनी प्रगति को एक असंभव मापदंड के विरुद्ध मापकर निराश न हो जाए। एकीकृत समझ एक बार आकर बनी नहीं रहती; वह वर्षों में एक लम्बे, असमान चाप में गहराती है, सजीव स्पष्टता घनी विस्मृति को स्थान देती हुई, अंतर्दृष्टि के पीछे संकुचन के महीने, व्यापक दृष्टि असंख्य बार पाई और खोई और फिर पाई गई। यह असफलता नहीं; यह एकमात्र आकार है जो पथ वास्तव में किसी के लिए भी लेता है, चाहे वे कितने ही उन्नत प्रतीत हों। कर्ता में वापस संकुचन दस हजार बार होगा, और अभ्यास कभी संकुचन को रोकना नहीं — जिसे रोका नहीं जा सकता — बल्कि केवल हर बार उसे थोड़ा पहले देखना और थोड़ा अधिक कोमलता से छोड़ना है, जब तक देखना स्वयं तेज़ और दयालु और लगभग सतत न हो जाए। इस लम्बे चाप पर सबसे महत्वपूर्ण एकल गुण स्वयं के प्रति कोमलता है, क्योंकि वह कठोर आत्म-सुधार जो कहता है *मुझे अब तक और आगे होना चाहिए था* बस आध्यात्मिक वेश में स्वयं को फिर स्थापित करता कर्ता है, एक नया खाता खोलता हुआ जिसमें व्यक्ति अब अपर्याप्त ज्ञानोदय का दोषी है। अपने भूलने को भी बिना निर्णय के मिलिए। चाप लम्बा है, भूलना अंतर्निहित है, और एकमात्र प्रगति जो मायने रखती है वह लौटने में कोमलता की धीमी वृद्धि है।

## यह गृहस्थ के लिए एक मार्ग है

मैं, एक लम्बी और भारी परंपरा के विरुद्ध, आग्रह करना चाहता हूँ कि इस पुस्तक की हर वस्तु कार्य और परिवार और दायित्व के साधारण जीवन के लिए है, और गुफा या मठ के लिए नहीं। एक पुरानी पूर्व-धारणा है कि चिंतक जिस स्वतंत्रता का वर्णन करते हैं वह केवल उन्हें उपलब्ध है जो संसार का त्याग करते हैं — जो बाज़ार और विवाह और बंधक को पर्वत, चोगे, उलझन-रहित जीवन के लिए छोड़ देते हैं। और यह सत्य है कि संसार की उलझनें निर्ममता से व्यक्तिगत

खाता गढ़ती हैं, कि कार्यालय और परिवार स्वामित्व और शिकायत और चिंता के कारखाने हैं। किंतु इससे यह नहीं निकलता कि स्वतंत्रता को उनके परित्याग की आवश्यकता है। केवल इतना निकलता है कि स्वतंत्रता को उनके मध्य में अभ्यस्त किया जाना चाहिए, जो उसे गुफा में अभ्यास करने से कठिनतर है, और अधिक मूल्यवान भी, क्योंकि वह एकमात्र प्रकार है जिसे हममें से अधिकांश वास्तव में कभी उपयोग कर सकते थे।

एकीकृत कर्म एक गृहस्थ का अभ्यास है। वह भेंट, झगड़े, समय-सीमा, बीमार बच्चे, वृद्ध होते माता-पिता, लम्बे साधारण दिन से बचकर नहीं, बल्कि उन सबसे व्यक्तिगत कर्तृत्व के दूसरे, आविष्कृत भार के बिना मिलकर पाया जाता है। प्रतिक्रिया की दहलीज़ पर अंतराल रसोई की मेज़ पर अभ्यस्त होता है, पर्वत पर नहीं। पूर्ण हुई घटना का विमोचन विवाह में अभ्यस्त होता है, मठ में नहीं। अनायास कर्म आपके पास जो वास्तविक कार्य है उसमें अभ्यस्त होता है, किसी हटी हुई शुद्धता में नहीं। यह, मेरे विचार से, शुभ समाचार है, क्योंकि इसका अर्थ है कि आपको आरम्भ करने के लिए एक ऐसे जीवन की प्रतीक्षा नहीं करनी जो आपके पास नहीं है। ठीक वे उलझनें जो आपके और स्वतंत्रता के बीच खड़ी प्रतीत होती हैं अभ्यास की सटीक सामग्री हैं — वह क्षेत्र जिसमें व्यक्तिगत खाता गढ़ा जाता है एकमात्र क्षेत्र है जिसमें उसे मुक्त किया जा सकता है। आप इस पथ पर चलने के लिए बहुत व्यस्त, बहुत दायित्वबद्ध, संसार में बहुत उलझे नहीं हैं। संसार ही पथ है। उसे चलने को कहीं और कभी था ही नहीं।

## एक अभिंचा व्यक्ति कमरे को बदल देता है

जिस अभ्यास का यह पुस्तक वर्णन करती है वह आंतरिक है, किंतु उसके प्रभाव अभ्यासी तक सीमित नहीं, और यह सामुदायिक आयाम अंत के निकट अपना स्थान पाने का पात्र है। एक अकेला व्यक्ति जिसने व्यक्तिगत खाता रख दिया है अपने चारों ओर के क्षेत्र को बदल देता है, बहुधा एक शब्द के बिना। एक तनावपूर्ण बैठक में, एक सहभागी जो परिणाम को नहीं पकड़ रहा, एक स्व की रक्षा नहीं कर रहा, अंक नहीं रख रहा, चुपचाप समूची गतिशीलता को बदल देता है — दूसरों के तनने को तनने के लिए कुछ नहीं रहता, चिंता का संक्रमण कोई पकड़ नहीं पाता, कमरा थोड़ा बैठ जाता है क्योंकि उसमें एक गाँठ ने भिंचन संचारित करना बंद कर दिया है। एक परिवार में, एक सदस्य जिसने बही रखना बंद कर दिया है उन चक्रों को बाधित कर सकता है जो पीढ़ियों से घूम रहे हैं, बस उस उत्तर देने वाली भूमिका को निभाने से इनकार करके



जिसकी चक्र को आवश्यकता है। अभिंचा व्यक्ति कमरे में निष्क्रिय नहीं; वह वह शांत बिंदु है जो दूसरों को, कभी-कभी, शांत होने देता है।

यह एक आंतरिक अभ्यास का शांत सामाजिक फल है, और वह इसलिए मायने रखता है कि वह इस चिंता का उत्तर देता है कि समूचा पथ शायद केवल आत्म-केंद्रित हो — एक निजी शांति जिसका पीछा किया जाए जबकि संसार जलता है। उल्टी दशा है। व्यक्तिगत खाता ही वह है जो हमारे साझा जीवन को सबसे अधिक विषाक्त करता है: रखी गई शिकायतें, निपटाए गए अंक, वह चिंतित स्वामित्व जो हर अन्योन्यक्रिया को प्राप्य में एक लेन-देन बना देता है। उसे छोड़ना दूसरों से पीछे हटना नहीं बल्कि उनसे बही से मुक्त होकर मिलना है, और इतना मुक्त व्यक्ति, हर कमरे में जो वह प्रवेश करता है, ठीक उसी वस्तु का एक छोटा स्रोत बन जाता है जिसकी संसार को सबसे अधिक कमी है — अंक न रखती, एक स्व की रक्षा न करती, भिंचन न संचारित करती एक उपस्थिति। ऐसा एक व्यक्ति एक कमरे को बदलता है; कुछ एक समुदाय को बदलते हैं; और परिवर्तन उपदेशित नहीं बल्कि बस संचारित होता है, जैसे शांति संचारित होती है, एक तंत्रिका-तंत्र से दूसरे को, सब शब्दों के नीचे। पथ प्रकट होता है, अपने शांत ढंग में, सबसे व्यावहारिक योगदान जो कोई उस साझा जीवन में कर सकता है जिसे उसने डरा था कि वह त्याग देगा।

### एक दृश्य: रसोई की मेज़ पर अंतराल

एक पिता, एक लम्बे दिन के अंत में थका, अपनी किशोर पुत्री को वह बात कहते देखता है जिसे वह जानती है कि उसे भड़काएगी — वह तिरस्कारपूर्ण टिप्पणी, वह पटका गया काँटा, अवमानना का वह द्वार जिसे हर किशोर खोलना सीख लेता है। वह पुरानी मशीन को संलग्न होते अनुभव करता है: उठती गर्मी, स्वयं को जमा करते शब्द, आहत अधिकारी की भूमिका निभाए जाने को आगे लपकती हुई, और उसके साथ वह समूचा परिचित दृश्य जो समाप्त होता है, जैसे वह सदा समाप्त होता है, चीख और एक पटका गया शयन-कक्ष का द्वार और अलग कमरों में जागते लेटे दो व्यक्तियों में। प्रतिक्रिया दगने से एक धड़कन दूर है। उसने यह भाग सौ बार निभाया है।

किंतु इस सायं, एक बार, वह अंतराल पकड़ लेता है। उसकी टिप्पणी और उसकी प्रतिक्रिया के बीच के आधे-सेकंड में — वह छोटी खुली दहलीज़ जिसके आर-पार प्रत्युत्तर ने अभी प्रतिबद्धता नहीं की — वह, निर्णय किए बिना, ध्यान देता है कि एक घटना अपना क्षितिज पार

कर चुकी और अब उसे एक भूमिका दे रही है। उकसावा उसके थकान और भय और अपना ही व्यक्ति बनने के प्रचंड कार्य के समूचे क्षेत्र से उठा; वह एक पिता के रूप में उसके मूल्य पर निर्णय नहीं है। आहत अधिकारी की भूमिका निभाए जाने को उपलब्ध है, और उसे होना नहीं चाहिए। और उस अंतराल में, जिसे वह अन्य सायं अधिकतर चूकेगा किंतु इस एक पर किसी प्रकार पा लिया है, प्रतिक्रिया के कठोर होने से पूर्व व्यापक दृष्टि लौट आती है, और पुराने दृश्य के सौवें प्रदर्शन के बजाय, कुछ नया संभव हो जाता है — एक प्रतिआक्रमण के बजाय एक प्रश्न, एक पटके काँटे के बजाय एक नरमी। वह यह अपनी भावना दबाकर नहीं सँभालता, जो केवल कर्ता का अपनी ही समता का कर्तृत्व दावा करना होगा। वह इसे इसलिए सँभालता है कि, एक सायं के लिए, उसने अंतराल पा लिया, और अंतराल में स्वतंत्रता थी। एक जीवन-भर का समूचा अभ्यास उस एकल आधे-सेकंड का धीमा चौड़ा होना है।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

एकीकृत समझ एक बार प्राप्त और सदा के लिए थामी नहीं जाती; वह स्मरण की जाती है, खोई जाती है, और फिर स्मरण की जाती है, दस हजार बार, एक दिन के साधारण घर्षण के माध्यम से। अभ्यास कभी भूलने को रोकना नहीं, जिसे रोका नहीं जा सकता, बल्कि हर बार उसे थोड़ा पहले देखना और थोड़ा अधिक कोमलता से छोड़ना है।

आज, एक प्रतिक्रिया की दहलीज़ पर अंतराल खोजिए — एक घटना के आने और उसमें अपने अपना कहकर संकुचन के बीच का छोटा अवकाश। आप उसे अधिकतर चूकेंगे; वह अपेक्षित है। किंतु एक-दो बार आप उसे पकड़ सकते हैं, और उस अंतराल में प्रतिक्रिया के कठोर होने से पूर्व व्यापक दृष्टि को लौटने दीजिए। फिर अपने अनेक चूकनों से उस कोमलता के साथ मिलिए जो इस अभ्यास का समूचा है।

## आनंद की ओर वापसी

---

आप कभी घर के सिवा कहीं नहीं थे। आपने केवल स्वप्न देखा कि आप चले गए थे, और  
स्वप्न पूर्णतः "मेरा" शब्द से बना था।

— समापन टिप्पणी

हम अंत पर आते हैं, जो एक वापसी भी है। इस पुस्तक की समूची यात्रा — अंतर्निहित व्यवस्था से नीचे कर्म तक, क्षेत्र और क्षितिज और द्रष्टा से होकर, कर्ता के विलय और अपराध-बोध के विध्वंस से होकर, चुनाव न करने और समर्पण और अनायास कर्म में — एक छोटे शब्द का एक अकेला लम्बा उघाड़ना रही है: मेरा। और जो उघड़ता है जब वह शब्द अंततः रख दिया जाता है वह कोई नई और विचित्र अवस्था नहीं जिसे प्राप्त करना हो, बल्कि वह मूल दशा है जिसे हमने वास्तव में कभी छोड़ा ही नहीं: आनंद, वह सरल, स्थिर ठीकता जिससे जागरूकता स्वयं में विश्राम करती है, जो पकड़ से ढक गई थी और उसी क्षण उघड़ जाती है जब पकड़ रुकती है।

यही कारण है कि मैंने इसे एक उपलब्धि के बजाय एक वापसी कहा है। आप आनंद को आध्यात्मिक श्रम से अर्जित नहीं करते, जैसे आप मजदूरी अर्जित करते हैं। आनंद साक्षी की स्वाभाविक दशा है, समूचे समय सहभागी के कोलाहल के नीचे उपस्थित। वह कभी अनुपस्थित नहीं था; वह केवल ढका हुआ था। बादल छँटकर आकाश रचते नहीं; वे केवल उसे छिपाना बंद कर देते हैं जो सदा वहाँ था। तो इसके साथ। समझ आनंद को गढ़ती नहीं। वह उस स्वामित्व को घुला देती है जो उसे छिपा रहा था, और वह आनंद जो सदा चमक रहा था बस फिर देखा जाता है।

### क्या बदलता है और क्या नहीं

मैं इस विषय में ईमानदार रहना चाहता हूँ कि यह वापसी क्या बदलती है और क्या नहीं, क्योंकि झूठे वचन किसी की सहायता नहीं करते। यह आपको कठिनाई, हानि, या पीड़ा के बिना एक

जीवन नहीं देती। भूमिकाएँ अब भी कठिन होंगी; घटनाएँ अब भी त्रासदी सम्मिलित करेंगी; शरीर अब भी बूढ़ा होगा और मरेगा। आपको एक घर्षण-रहित अस्तित्व का वचन नहीं दिया गया, और जो कोई आपसे उसका वचन देता है वह कुछ बेच रहा है। जो बदलता है वह उस सबके साथ आपका संबंध है — और जैसा हमने द्रष्टा के साथ देखा, संबंध सब कुछ है। वही जीवन जो एक व्यक्तिगत भार के रूप में भोगा गया, स्वामित्व किया और रक्षित किया और शोकांत किया गया, अब एक विशाल और सुंदर संचालन में सहभागिता के रूप में जीया जाता है जो आपसे केवल इतना माँगता है कि आप अपना भाग सच्चाई से निभाएँ और कुछ भी स्वामित्व में न लें। घटनाएँ वही हैं। संबंध रूपांतरित हो गया है। और उस रूपांतरण में, दूसरा दुःख — शोक पर शोक, हानि पर अपराध-बोध, प्रयास पर चिंता — गिर जाता है, और जो शेष रहता है वह पहली वस्तु है, स्वच्छता से मिली, और उसके नीचे, अविचल, आनंद।

## एकीकृत कर्म

सो हम वहीं समाप्त होते हैं जहाँ शीर्षक ने संकेत किया। न कोई आपका कर्म है और न कोई मेरा कर्म। केवल कर्म है — सार्वभौमिक, एकीकृत, अविभाज्य — ब्रह्मांडीय व्यवस्था स्वयं को सम्पन्न करने की क्रिया में, असंख्य क्षितिजों पर घटनाएँ प्रेरित करती हुई, समस्त संभावनाओं के क्षेत्र से भूमिकाएँ निर्धारित करती हुई, उन स्थलों के माध्यम से उन्हें अभिनीत करती हुई जो हम हैं, उन्हें पूर्ण करती हुई, और उन्हें वापस समग्र में विलीन करती हुई, उस सबका संचालन अत्यधिक रूप से अव्यक्त में, महा-आकर्षक और उसके परे तक प्रत्यक्षण से परे पैमानों भर घोंसले में बैठा। हम उस संगीत में स्वर हैं — वास्तविक स्वर, सच्चाई से ध्वनित, सचमुच आवश्यक — और हम उसके रचयिता नहीं, और हमें कभी होना ही नहीं था।

इसे जानना सबसे भारी भार को रख देना है जिसे कोई मनुष्य कभी ढोता है, वह भार जिसे ढोने के लिए हम कभी बने ही नहीं थे और, सत्य में, वास्तव में कभी ढो भी नहीं सकते थे। यह, सदा के लिए, एक ब्रह्मांड को रचने के असंभव कार्य से मुक्त होना है, और उस एकमात्र कार्य में मुक्त किया जाना है जो कभी वास्तव में हमारा था: यहाँ होना, पूर्णतः, उस स्पष्ट और खुले स्थल के रूप में जिसके माध्यम से ब्रह्मांड अपना अनायास और सुंदर कार्य करता है — और, जब वह कार्य करता है, उस आनंद में विश्राम करना जो आरम्भ से हमारा घर था।

सूर्य इसी क्षण अपने ग्रहों को वहन कर रहा है, बिना तनाव, बिना अनुमति, तनिक भी संदेह के बिना। ध्रुव तारा ध्रुव थामे है। आकाशगंगाएँ महा-आकर्षक की ओर एक ऐसे मौन में प्रवाहित

हो रही हैं जो किसी भी संगीत से अधिक विशाल है जिसे हम सुन सकते हैं। और आप, पाठक, भी वहन किए जा रहे हैं, ठीक जैसे आप सदा थे — सिवाय इसके कि अब, शायद, आप गति के विरुद्ध भिंचना बंद कर सकते हैं, अपना हाथ खोल सकते हैं, और स्वयं को घर वहन किए जाने दे सकते हैं।

### **आनंद कभी पुरस्कार नहीं था; वह आधार-भूमि था**

हम, अंत में, वहीं वापस आते हैं जहाँ हमने चुपचाप आरम्भ किया। यह पुस्तक जिस आनंद की ओर बढ़ती रही है वह पथ की समाप्ति पर दिया गया कोई पुरस्कार नहीं, लम्बे प्रयास से गढ़ी कोई अवस्था नहीं, अर्जित कर लेने के बाद बाहर से आप में जोड़ी गई कोई वस्तु नहीं। वह वह आधार-भूमि है जो कोलाहल के नीचे सदा वहाँ थी — आनंद, स्वयं में विश्राम करती जागरूकता की स्थिर, स्व-विद्यमान ठीकता, जो समूचे समय केवल अपने निजी खाते की सदा गणना करते एक स्व के संकुचन से ढकी थी। आप आनंद की यात्रा नहीं करते। आप उस स्थैतिक को उत्पन्न करना बंद कर देते हैं जो उसे दबा रहा था। जल स्वच्छता के जोड़ने से स्वच्छ नहीं होता; वह तब स्वच्छ होता है जब हिलाना रुकता है और जो सदा उसका स्वभाव था वह दृष्टि में बैठ जाता है। आनंद की ओर वापसी ठीक वही बैठना है — कहीं नए स्थान पर एक आगमन नहीं, बल्कि उसकी ओर घर-वापसी जो जागरूकता पहले से ही है जब वह अब भिंची नहीं।

और यही कारण है कि पथ का वह विचित्र आकार है जो उसका है, किसी विचित्र उपलब्धि में नहीं बल्कि साधारण को प्रकाशमान बनाकर समाप्त होता हुआ। जिस व्यक्ति ने व्यक्तिगत कर्म रख दिया है वह हवा में नहीं उठता या चमकता नहीं या मानव-जीवन की दशाओं से बच नहीं निकलता। वह पकाता है, कार्य करता है, प्रेम करता है, शोक करता है, बूढ़ा होता है, मरता है — एक जीवन की सब घटनाएँ अब भी आती और पूर्ण होती हैं। जो बदला है वह घटनाएँ नहीं बल्कि वह जो उनसे मिलता है: अब कोई दावा करता और डरता और गिनता कर्ता नहीं, बल्कि हर घटना के प्रति पूर्णतः उपस्थित एक साक्षी, हर भूमिका को पूर्णतः निभाता हुआ, और उनमें से किसी को एक निजी भार के रूप में न ढोता हुआ। आनंद कुछ घटनाओं में अन्यो के बजाय नहीं है। वह उन सबके अभिचे मिलन में है, वह ठीकता जो घटना के स्व की माँग के अनुसार निकलने पर निर्भर नहीं, क्योंकि अब कोई माँग करता स्व नहीं।

## एकीकृत कर्म, अंततः समग्र

मुझे समूचे तर्क को एक अकेले चित्र में समेटने दीजिए, वह जिसके चारों ओर यह पुस्तक पहले पृष्ठ से घूमती रही है। न कोई आपका कर्म है और न कोई मेरा कर्म। केवल कर्म है — एक ब्रह्मांडीय व्यवस्था स्वयं को सम्पन्न करने की निरंतर क्रिया में, अपने क्षितिजों पर घटनाएँ प्रेरित करती हुई, समस्त संभावनाओं के क्षेत्र से भूमिकाएँ निर्धारित करती हुई, असंख्य स्थलों के माध्यम से उन्हें अभिनीत करती हुई, उनकी पूर्णता पर उन्हें विलीन करती हुई, और उसी अक्षय समग्र से अगली घटना खींचती हुई। आप इसके बाहर एक पृथक रचयिता की भूमिका निभाते हुए नहीं हैं। आप उसके स्थलों में से एक हैं, एक स्थान जहाँ अव्यक्त क्षण-भर के लिए एक दृश्य भूमिका बनता है फिर समग्र में फिर शांत होने से पूर्व। इसे जानना उससे कम बन जाना नहीं जो आप थे। यह एक ऐसे भार से मुक्त होना है जिसे ढोने के लिए आप कभी बने ही नहीं थे, उस निजी नाटक से कहीं विशाल एक सहभागिता में पुनःस्थापित जिसे आपने अपना जीवन समझ लिया था, और उस आनंद की ओर लौटाया गया जो आरम्भ से जागरूकता की आधार-भूमि था।

सूर्य इसी क्षण अपने ग्रहों को वहन कर रहा है, बिना तनाव, बिना अनुमति, तनिक भी संदेह के बिना। ध्रुव तारा ध्रुव थामे है। आकाशगंगाएँ महा-आकर्षक की ओर एक ऐसे मौन में प्रवाहित हो रही हैं जो किसी भी संगीत से अधिक विशाल है जिसे हम सुन सकते थे। आपका हृदय आपके निर्देश के बिना धड़क रहा है, आपकी श्वास स्वयं आ और जा रही है, आपके शरीर के खरबों शांत सहयोग उस व्यवस्था को सम्पन्न कर रहे हैं जो किसी ने उन्हें नहीं सिखाई। और आप, पाठक, भी वहन किए जा रहे हैं, ठीक जैसे आप सदा थे — सिवाय इसके कि अब, शायद, इस तर्क का उसके अंत तक अनुसरण करके, आप गति के विरुद्ध भिंचना बंद कर सकते हैं, अपना हाथ खोल सकते हैं, उस कर्म को छोड़ सकते हैं जो कभी आपका था ही नहीं, और स्वयं को घर वहन किए जाने दे सकते हैं। करने को कभी कुछ था ही नहीं। केवल यह समग्र था, स्वयं को सम्पन्न करता हुआ, और उसके भीतर आप — झाग जो ज्वार का दावा करता है वह नहीं, बल्कि समुद्र, क्षण-भर के लिए और सुंदरता से आकार लिया हुआ, अब इस ज्ञान की ओर लौटता हुआ कि वह आरम्भ से समुद्र ही था।

## बाहर से वह कैसा दिखता है

आप अपेक्षा कर सकते हैं कि एक व्यक्ति जिसने सचमुच कर्म का व्यक्तिगत स्वामित्व रख दिया हो वह अमिट रूप से भिन्न दिखेगा — शायद विश्वोभ से परे प्रशान्त, या जीने के खुरदरे कारोबार से किसी प्रकाशमान दूरी में हटा हुआ। वास्तविकता शांततर और कहीं अधिक साधारण है, और यह साधारणता स्वयं शिक्षा का गहनतम भाग है। बाहर से, ऐसा व्यक्ति उल्लेखनीय रूप से हर किसी जैसा दिखता है। वह कार्य करता है, थकता है, हँसता है, शोक करता है, गलतियाँ करता और उन्हें सुधारता है, बूढ़ा होता और बीमार होता और मरता है। वह जीवन के ऊपर तैर नहीं रहा; वह उसमें पूर्णतः भीतर है, बहुधा अपने आसपास के लोगों से अधिक सजीवता और पूर्णता से, क्योंकि वह उसमें से किसी को भी उस प्रतिरक्षात्मक दूरी पर नहीं थामे जिसकी स्वामित्व को आवश्यकता है। जो बदला है वह उसकी परिस्थितियों में दृश्य नहीं बल्कि उसकी परिस्थितियों के साथ उसके संबंध में है — भिन्न की अनुपस्थिति, वह हल्कापन जिससे वह अपनी भूमिकाएँ पहनता है, वह ढंग जिससे वह एक कठिन घटना से पूर्णतः मिलता है बिना उससे नष्ट हुए और एक अच्छी को जाने देता है बिना उसके पीछे पकड़े। स्वतंत्रता आंतरिक और लगभग अदृश्य है, यही कारण है कि परंपरा कहती है कि मुक्त व्यक्ति हमारे बीच अपहचाना चलता है, हर बाह्य ढंग में अभिन्न सिवाय उस एक के जो मायने रखता है: वह उसी जीवन के मध्य में शांति में है जो हर किसी और को यातना देता है।

यह किसी भी ऐसे व्यक्ति के लिए राहत होनी चाहिए जो डरता था कि पथ साधारण मानव-जीवन से दूर किसी सूक्ष्म अपवाद में ले जाता है। वह नहीं ले जाता। वह सीधे वापस रसोई, कार्यालय, रोग-शय्या, विवाद, लम्बे साधारण दिन में ले जाता है — ठीक वही जीवन, अब कर्तृत्व के दूसरे, आविष्कृत भार के बिना मिला। आप इस पुस्तक के संकेत को पाने के लिए अपना जीवन छोड़ने की आवश्यकता नहीं रखते। आपको केवल वह जीवन जीना है जो आपके पास पहले से है, उस एक वस्तु के बिना जिसे आप सदा उसमें जोड़ रहे थे। आनंद कहीं और नहीं है। वह यहाँ है, ठीक इसके अभिन्ने मिलन में।

## आनंद पीछा करने को एक और वस्तु नहीं

मुझे अंतिम शब्द की उन सबसे सूक्ष्म जाल से रक्षा करने दीजिए, उससे जो इस समूची पुस्तक को दुःख के एक ताज़ा स्रोत में बदल सकता है। यह सुनकर कि आनंद आधार-भूमि है, मन तुरंत आनंद को एक लक्ष्य बना देता है — स्वामित्व किए जाने, पीछा किए जाने, प्राप्त किए

जाने, और फिर प्राप्त होने पर चिंतित होकर रक्षित किए जाने को एक और परिणाम। किंतु एक परिणाम के रूप में खोजा गया आनंद ठीक खोया हुआ आनंद है, क्योंकि खोजना ही भिंचन है, स्वामित्व है, एक पुरस्कार को पहुँचता कर्ता है, जो ठीक वही वस्तु है जो आधार-भूमि को आरम्भ में ढक देती है। आनंद पहुँचकर नहीं पहुँचा जाता; वह पहुँच के रुकने से उघड़ता है। आप उसका पीछा नहीं करते; आप उस कोलाहल को उत्पन्न करना बंद कर देते हैं जो उसे छिपा रहा था। यही कारण है कि पथ एक विजयी अर्जन में नहीं बल्कि एक शांत घटाव में समाप्त होता है, कुछ नया पाने में नहीं बल्कि कुछ पुराना रख देने में — प्रेत स्वामी, व्यक्तिगत खाता, वह "मेरा" जो इतने समय पहले कर्म के आगे चुपके से घुसा दिया गया था। उसे रख दीजिए, एक क्षण के लिए भी, और वह आनंद जो सदा आधार-भूमि था बस वहाँ है, अनर्जित और अखोजा, एक ऐसी जागरूकता की स्थायी दशा जो अब अपने ही जीवन के साथ युद्ध में एक पृथक स्व होने का दिखावा नहीं कर रही।

और इस प्रकार हम वहीं समाप्त होते हैं जहाँ हमने आरम्भ किया, उसी श्वास के साथ, उसी धड़कते हृदय के साथ, उसी साधारण क्षण के साथ — किसी वस्तु में अपरिवर्तित सिवाय उस एक के जो सब कुछ बदल देती है। सूर्य अब भी अपने ग्रहों को बिना तनाव वहन कर रहा है। ध्रुव तारा अब भी ध्रुव थामे है। आकाशगंगाएँ अब भी महा-आकर्षक की ओर अपने विशाल और मौन प्रवास में प्रवाहित हैं, और श्वास अब भी आपके शरीर में स्वयं ही आ और जा रही है, और वे खरबों शांत सहयोग जो आपको जीवित रखते हैं अब भी आपसे परामर्श किए बिना अपनी निर्दोष व्यवस्था सम्पन्न कर रहे हैं। उस सबका कर्म है — एक ब्रह्मांडीय व्यवस्था, स्वयं को सम्पन्न करती हुई, यहाँ, अभी, उस स्थल के माध्यम से जो आप हैं। उसमें जोड़ने को कभी कोई आपका या मेरा था ही नहीं। केवल यह समग्र था, गति में, और उसके भीतर आप उसके क्षणिक आकारों में से एक के रूप में — ज्ञाग जो ज्वार का दावा करता है वह नहीं, बल्कि समुद्र, क्षण-भर के लिए और सुंदरता से रचा हुआ, और अब, शायद, यह स्मरण करना आरम्भ करता हुआ कि वह आरम्भ से समुद्र ही था।

## कोई अंतिम उपलब्धि नहीं, केवल गहराना

मैं, बिल्कुल अंत में, अंतों के विषय में ईमानदार रहना चाहता हूँ, क्योंकि एक पुस्तक का आकार लेखक और पाठक दोनों को एक मिथ्या की ओर लुभाता है: आगमन का मिथ्या, यह निहितार्थ कि एक अंतिम अवस्था है जिस तक पहुँचना है, एक स्नातकोत्सव जिसके परे व्यक्ति समाप्त



कर चुका और उसे फिर कभी संघर्ष नहीं करना। ऐसी कोई अवस्था नहीं, और उसका वचन देना अहं के पीछा करने को एक अंतिम खाता खोलना होगा — अंततः और स्थायी रूप से ज्ञानोदय-प्राप्त स्व का खाता, ठीक उसी स्वामित्व का सबसे सूक्ष्म और सबसे आध्यात्मिक रूप जिसे यह समूची पुस्तक घुलाने को काम करती रही है। सत्य शांततर और दयालुतर है। कोई समाप्ति-रेखा नहीं, केवल एक गहराना; कोई स्थायी आगमन नहीं, केवल एक सदा-अधिक-कुशल और सदा-अधिक-कोमल लौटना। जिसने इस पथ पर चालीस वर्ष चला है वह अब भी भूलता है, अब भी सिकुड़ता है, अब भी व्यक्तिगत खाते को फिर खुलते पकड़ता है — और बस उसे देखने में तेज़ और दयालु, और उसे फिर रख देने में हल्का हो गया है। पथ समाप्त नहीं होता। वह गहराता है, बिना सीमा, और गहराना ही उसका समूचा है।

सो यदि आप अंतिम पृष्ठ पर समाप्त होने की अपेक्षा लिए आते हैं, तो उस अपेक्षा को बाक्री हर वस्तु के साथ रख दीजिए। आप यह पुस्तक बंद करेंगे और सप्ताह के भीतर उसका हर शब्द भूल जाएँगे; व्यक्तिगत कर्म अगले कठिन घंटे तक स्वयं को फिर स्थापित कर लेगा; जो भार आपने रखा वह फिर उठाया जाएगा, दस हजार बार। यह असफलता नहीं। यह पथ अपना एकमात्र संभव आकार लेता हुआ है, आपके लिए वैसे ही जैसे हर किसी के लिए जिसने उसे कभी चला है। आपसे माँगी गई एकमात्र वस्तु आगमन नहीं बल्कि लौटना है — ध्यान देना, हर बार थोड़ा पहले, कि आपने भार उठा लिया है, और उसे रख देना, थोड़ा अधिक कोमलता से, एक बार फिर। और उस अंतहीन, साधारण लौटने में — किसी अंतिम उपलब्धि में नहीं जो कभी नहीं आती — उस स्वतंत्रता का समूचा है जिसकी ओर यह पुस्तक संकेत करने का प्रयास करती रही है: इस श्वास में उपलब्ध, अगली में खोई, और फिर उपलब्ध, सदा, उसके बाद वाली में, जब तक आप जीते हैं, जो ठीक उतना ही लम्बा है जितनी आपको उसकी आवश्यकता होगी।

जैसे आप यह अंतिम पंक्ति पढ़ते हैं, श्वास आ रही है, स्वयं ही, उस व्यवस्था से वहन की हुई जो तारों को वहन करती है। वह आपसे कुछ नहीं माँगती। उसने कभी नहीं माँगा। पुस्तक रख दीजिए। "मेरा" शब्द रख दीजिए। और स्वयं को घर वहन किए जाने दीजिए।

## वह द्वार जो कभी बंद था ही नहीं

हम अंतिम विरोधाभास पर आते हैं, वह जो हर पृष्ठ पर अंतर्निहित रहा है और अब सरलता से कहा जा सकता है। प्राप्त करने को कुछ नहीं, और फिर भी सब कुछ बदल जाता है। प्राप्त करने को कुछ नहीं, क्योंकि यह पुस्तक जिस आनंद की ओर संकेत करती है वह पहुँचने को कोई नई

अवस्था नहीं बल्कि वह आधार-भूमि है जो सदा उपस्थित थी, वह जागरूकता जो सदा स्वतंत्र थी, वह व्यवस्था जिसके भीतर आप सदा थे और जिसकी अभिव्यक्ति आप सदा थे। आप उसे अर्जित नहीं करते जो कभी अनुपस्थित था ही नहीं। और फिर भी सब कुछ बदल जाता है, क्योंकि उसकी पहचान जो सदा वस्तुस्थिति थी व्यक्ति के समूचे जीने को रूपांतरित कर देती है — कुछ जोड़कर नहीं, बल्कि उस एक भार के गिर जाने से जो उसे ढक रहा था जो सदा वहाँ था। इस लम्बे पथ के अंत में वह द्वार प्रकट होता है कि वह समूचे समय खुला था। हमने यात्रा यह सीखने में बिताई, धीरे-धीरे, कि वहाँ कभी कोई ताला था ही नहीं — कि जिस स्वतंत्रता को हम खोज रहे थे वह किसी द्वार के पीछे नहीं थी जिसे हमें खोलना था बल्कि वही आधार-भूमि थी जिस पर हम खोजते हुए खड़े थे।

सो पुस्तक एक विजय के साथ नहीं बल्कि एक पहचान के साथ समाप्त होती है, और पहचान आपको अभी उपलब्ध है, किसी आगे के प्रयत्न के अंत में नहीं। श्वास आ रही है, स्वयं ही। हृदय अपना ताल रख रहा है। वह व्यवस्था जो आकाशगंगाओं को वहन करती है आपको वहन कर रही है, ठीक जैसे उसने सदा किया, और वह जागरूकता जिसमें यह सब प्रकट होता है कभी कर्ता नहीं थी, कभी स्वामी नहीं, कभी एक निजी खाते की रक्षक नहीं, किसी घटना से कभी घायल नहीं, कभी स्वतंत्र के सिवा कुछ और नहीं। न कोई आपका कर्म है और न कोई मेरा कर्म। केवल यह है — एक समग्र, स्वयं को सम्पन्न करता हुआ, यहाँ, अभी, उस स्थल के माध्यम से जो आप हैं — और वह सरल, निराधार ठीकता जो वही है जो शेष रहता है जब वह एक भार जिसे आप सदा जोड़ रहे थे, एक क्षण के लिए भी, रख दिया जाता है। वही उसका समूचा है। द्वार कभी बंद था ही नहीं। "मेरा" शब्द रख दीजिए, और भीतर चले जाइए।

### **एक दृश्य: एक साधारण सुबह**

सुबह में कुछ भी उल्लेखनीय नहीं। एक स्त्री अपनी रसोई की खिड़की पर एक प्याला चाय लिए खड़ी है जबकि घर अभी भी सो रहा है। छतों के ऊपर धूसर प्रकाश ऊपर आ रहा है। एक पक्षी नंगे पेड़ में कुछ कर रहा है। चाय बहुत गर्म है। हर बाह्य माप से यह सबसे साधारण क्षण है जिसकी कल्पना की जा सकती है, एक अरब रसोइयों में दोहराया गया, किसी के ध्यान के अयोग्य, स्वयं उसके भी — और अधिकांश सुबहों वह उस पर ध्यान नहीं देती, क्योंकि उसका मन पहले से ही दस बजे की बैठक में, कल रात के विवाद में, देय वस्तुओं और भयभीत वस्तुओं के उस लम्बे खाते में है जिसे वह नींद से जाग्रति में ले जाती है।

किंतु इस सुबह, बिना किसी कारण के, खाता शांत है। वह बस यहाँ है — धूसर प्रकाश, पक्षी, उसकी हथेलियों के विरुद्ध प्याले की गर्मी — क्षण में कुछ न जोड़ती, उससे कुछ न माँगती, कुछ न रक्षा करती, कुछ न ऋणी। और एक पूर्णतः साधारण क्षण के उस अभिंचे मिलन में, कुछ उपस्थित है जिसे वह किसी बड़े नाम से पुकारने में हिचकेगी, क्योंकि वह इतना शांत और इतना निकट है: एक सादी, निराधार ठीकता, एक सहजता जो किसी विशेष वस्तु का सुख नहीं बल्कि बस जागरूकता की दशा है जब उसने, एक क्षण के लिए, अपनी निजी बही सँभालना बंद कर दिया हो। यही समूचा वह है जिस तक लम्बा पथ ले जाता है। कोई दर्शन नहीं, कोई शक्ति नहीं, साधारण से किसी भव्यतर वस्तु में कोई पलायन नहीं — बल्कि ठीक यह रसोई, यह धूसर प्रकाश, यह ठंडी होती चाय, एक ऐसी जागरूकता द्वारा मिली हुई जिसने उस एक भार को रख दिया है जिसे वह सदा जोड़ रही थी, और पाया है, उसके नीचे, वह आनंद जो समूचे समय आधार-भूमि था। वह चाय समाप्त करती है। घर जागना आरम्भ करता है। और वह सुबह, जो कभी उल्लेखनीय नहीं थी, आरम्भ से ही गंतव्य थी।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

आनंद पथ के अंत में जीता जाने वाला कोई पुरस्कार नहीं बल्कि वह आधार-भूमि है जो कोलाहल के नीचे सदा वहाँ थी — स्वयं में विश्राम करती जागरूकता की स्थिर ठीकता, केवल अपनी निजी बही सदा सँभालते एक स्व के भिंचन से ढकी। आप उस तक यात्रा नहीं करते। आप उस स्थैतिक को उत्पन्न करना बंद कर देते हैं जो उसे दबा रहा था।

एक क्षण इस साधारण पल के साथ बैठिए ठीक जैसा वह है — यह श्वास, यह कमरा, यह शरीर — और उसमें कुछ न जोड़िए: कोई निर्णय नहीं, कोई माँगा गया परिणाम नहीं, कोई निपटाने को खाता नहीं। बस जो यहाँ है उससे उसके विरुद्ध भिंचे बिना मिलिए। वह सहजता जो भिंचन छूटने पर चुपचाप प्रकट होती है सदा आधार-भूमि थी। वह कभी कहीं और नहीं थी। वह आपके उस एक वस्तु को जोड़ना बंद करने की प्रतीक्षा कर रही थी जिसे आप सदा जोड़ रहे थे।



## भाग छह

### जीवन के पोत में कर्म

एक ही विचार, उन साधारण स्थानों में ले जाया गया जहाँ हम वास्तव में जीते हैं पीछे के पाँच भागों ने समझ बनाई और पथ अनुरेखित किया; यह अंतिम भाग एक ही विचार को उन साधारण स्थानों में ले जाता है जहाँ हम वास्तव में जीते हैं — मेज़, बैंक खाता, विवाह, रोग-शय्या, और शेष वे कमरे जहाँ व्यक्तिगत खाता सबसे चिंतित रूप से रखा और सबसे भारी रूप से अनुभव किया जाता है। यहाँ कुछ नया तर्क नहीं किया जाता। वही एकल पहचान — कि न कोई आपका कर्म है न मेरा, केवल वह एक व्यवस्था स्वयं को सम्पन्न करती हुई — बस घर लाई जाती है, क्षेत्र दर क्षेत्र, वहाँ परखी जाने को जहाँ वह सबसे कठिन है और जहाँ वह सबसे अधिक मायने रखती है।



## कार्य और चिंतित स्वामी

---

*वह बढ़ई जो बढ़ई होने के विषय में सोच रहा है एक टेढ़ी रेखा काटता है।*

*वह जो स्वयं को भूल चुका है सच्ची काटता है।*

— कार्य पर टिप्पणी

हम अपने जाग्रत जीवन का सबसे बड़ा भाग कार्य पर बिताते हैं, और इसलिए कार्य पर ही, लगभग कहीं और से अधिक, व्यक्तिगत खाता रखा जाता है और स्वामित्व का भार अनुभव किया जाता है। इस पुस्तक का समूचा तंत्र — कर्ता, परिणाम, निर्णय, चिंतित पकड़ — कार्य में अपना सबसे निर्मम अखाड़ा पाता है। यहीं, तो, शिक्षा को स्वयं को सिद्ध करना ही होगा, शांत प्रातःकालों के लिए एक चिंतनशील विलासिता के रूप में नहीं बल्कि किसी ऐसी वस्तु के रूप में जो बदल देती है कि एक व्यक्ति बैठक, समय-सीमा, असफलता, पदोन्नति, लम्बे साधारण मंगलवार से वास्तव में कैसे मिलता है।

मैं उस विशेष दुःख को नाम देकर आरम्भ करना चाहता हूँ जो कार्य उत्पन्न करता है, क्योंकि वह इतना सार्वभौमिक है कि हमने उसे एक दुःख के रूप में देखना बंद कर दिया है और बस उसे एक पेशेवर होना कहते हैं। वह परिणामों के स्वामी का दुःख है: वह स्व जिसने अपने मूल्य को ऐसे परिणामों पर दाँव पर लगाया है जिन्हें वह पूर्णतः नियंत्रित नहीं कर सकता, और इसलिए एक नीची, चिरकालिक चिंता में जीना ही होगा, अपनी सक्षमता की रक्षा करता हुआ, अपनी स्थिति की निगरानी करता हुआ, अपनी असफलताओं से डरता हुआ, और अपनी सफलताओं को भी फिर से सफल होने के ताज़ा दबाव में बदलता हुआ। यह किए गए कार्य की ईमानदार थकान नहीं; यह स्वामित्व किए गए कार्य की गढ़ी हुई थकावट है, तनाव की वह दूसरी परत जिसे चिंतित स्वामी वास्तविक श्रम के ऊपर जोड़ता है।

## कार्य किसका है?

उस प्रश्न को विचारिए जो समूची पुस्तक पूछती रही है, अब आपकी मेज़ पर की वस्तु पर लागू। कार्य किसका है? प्रतिवर्ती उत्तर मेरा है, और उस उत्तर से समूचा भार चला आता है। किंतु किसी भी ऐसे कार्य को निकट से देखिए जिसे आपने कभी भली-भाँति किया, और व्यक्तिगत स्वामित्व जाँच के अधीन घुलना आरम्भ कर देता है। जो कौशल आप लाते हैं वे उन शिक्षकों द्वारा दिए गए जिन्हें आपने नहीं चुना, उस अभ्यास द्वारा परिष्कृत जिसका अनुशासन उन दशाओं से आया जिन्हें आपने नहीं रचा, उस समस्या पर लागू जो आपसे कहीं परे की परिस्थितियों से उठी, एक ऐसी भाषा और ज्ञान-राशि का उपयोग करते हुए जिसे सदियों भर हजारों हाथों ने बनाया। जो कार्य आपका प्रतीत होता है वह एक ऐसे संचालन का दृश्य शिखर है जो अत्यधिक रूप से आपका नहीं — वही पाँच प्रतिशत, वही ज्ञाग, जिसे हमने व्यापक ब्रह्मांड में अनुरेखित किया।

यह कम करने या कम परवाह करने का तर्क नहीं; यह ठीक उल्टा है, जैसा हम देखेंगे। यह आपके कार्य में उस एक वस्तु को छोड़ने का तर्क है जो उसकी कभी सहायता नहीं कर रही थी: वह चिंतित स्वामी जो श्रम के पीछे खड़ा उसका दावा करता, उसकी रक्षा करता, और उसके निर्णय से डरता है। जब आप देख लेते हैं कि कार्य आपसे कहीं बड़ी दशाओं से आपके माध्यम से बहता है — कि आप वह कुशल स्थल हैं जिस पर वह घटित होता है, उसका विलग संप्रभु रचयिता नहीं — तो पकड़ ढीली हो जाती है, और कार्य, स्वामित्व के घर्षण से मुक्त, बहुधा सुधर जाता है।

## वह व्यवसाय जो आपको खोज लेता है

अपने कार्य-जीवन का क्या करना चाहिए इस प्रश्न के लिए एक विशेष वेदना आरक्षित है — एक पथ का चुनाव, ग़लत चुनाव का भय, न ली गई राहों के साथ अंतहीन तुलना। संप्रभु चयनकर्ता, यह विश्वस्त कि उसे पर्याप्त कारण से अपना भाग्य स्वयं रचना ही होगा, एक ऐसे भविष्य के समक्ष पक्षाघातग्रस्त हो जाता है जिसकी वह गणना नहीं कर सकता, और अनेक लोग वर्षों इस पक्षाघात में बिताते हैं, या इस बेचैन विश्वास में कि उनका वास्तविक व्यवसाय कहीं ऐसी जगह है जिसे वे खोजने में असफल रहे। चुनाव न करने की शिक्षा यहाँ विशेष बल से लागू होती है। एक व्यवसाय विरले ही संप्रभु अर्थ में चुना जाता है; वह कहीं अधिक बार खोजा जाता है, एक व्यक्ति और उनकी परिस्थितियों के समूचे से अवक्षेपित, पीछे मुड़कर उस



वस्तु के रूप में पहचाना जाता है जो समूचे समय बन रही थी जबकि विचार-विमर्श करता स्व व्यथित होता रहा।

इसका अर्थ निष्क्रिय रूप से बहना और आकाश से एक बुलावे के उतरने की प्रतीक्षा करना नहीं। इसका अर्थ उस पर ईमानदारी से ध्यान देने का वास्तविक कार्य करना है जो आपको पुकारता है, वस्तुएँ आजमाना, इस पर ध्यान देना कि घर्षण कहाँ सबसे कम और संलग्नता सबसे अधिक है, और फिर — यह कठिन भाग है — समाधान को चिंतित चयनकर्ता से बल देने के बजाय समूचे से उठने पर भरोसा करना। जो लोग अपने कार्य में सबसे अधिक घर पर प्रतीत होते हैं वे विरले ही एक अकेले निर्णायक क्षण पर इच्छा के एक संप्रभु कृत्य से उसे चुनने की सूचना देते हैं। वे एक ऐसे पथ की सूचना देते हैं जो उद्घाटित हुआ, द्वारों की एक शृंखला जो खुली, उस आकार की एक क्रमिक पहचान जो उनका कार्य-जीवन ले रहा था। व्यवसाय ने उन्हें खोज लिया, इस अर्थ में कि समूचा क्षेत्र उनके माध्यम से एक पथ में सुलझ गया — और उनका भाग उसे बल से रचना नहीं बल्कि उसके बनते समय सचेत और उपलब्ध बने रहना था।

## स्वामी के बिना उत्कृष्टता

इस पुस्तक के हृदय में स्थित महान उलट-फेर पर लौटिए और उसे अपनी मेज़ पर संचालित होते देखिए। हम मानते हैं कि कार्य में उत्कृष्ट होने के लिए हमें अपने परिणामों का तीव्रता से स्वामित्व लेना, स्वयं को उन पर दाँव पर लगाना, उनकी एक चिंतित, पकड़ती परवाह से परवाह करनी होगी। किंतु उच्चतम पेशेवर उत्कृष्टता ठीक वहाँ प्रकट होती है जहाँ वह स्वामित्व छोड़ दिया गया है, क्योंकि केवल तभी व्यक्ति की पूर्ण बुद्धि स्व के प्रबंधन में बहाए जाने के बजाय कार्य के लिए उपलब्ध होती है। वह वकील जो तर्क में लीन है न कि इसमें कि तर्क उसे कैसा दिखाता है; वह अभियंता जो समस्या में खोया है न कि अपनी स्थिति में; वह शिक्षक जो विद्यार्थी को सौंपा हुआ है न कि अपनी ख्याति को — प्रत्येक एक ऐसे स्तर पर प्रदर्शन करता है जिस तक चिंतित स्वामी कभी नहीं पहुँच सकता था, क्योंकि प्रत्येक ने, कम से कम कुछ समय के लिए, स्वामी को रख दिया है।

व्यावहारिक निर्देश वही है जिससे हम पहले मिल चुके हैं, अब आपके कार्य-घंटों पर लक्षित: कार्य की गुणवत्ता की पूर्णतः परवाह कीजिए, और इस प्रश्न को पूर्णतः छोड़िए कि वह आप पर कैसा झलकता है। स्वयं को करने में उड़ेल दीजिए; श्रेय और निर्णय छोड़ दीजिए। यह परिणामों के प्रति उदासीनता नहीं — कार्य अब भी अत्यधिक मायने रखता है, और आप उसमें अपने

कौशल का हर रत्ती लाते हैं — बल्कि उस विकृति से स्वतंत्रता जो परिणामों का स्वामित्व प्रस्तुत करता है। और इस स्वतंत्रता का फल केवल बेहतर कार्य नहीं बल्कि एक बनाए रखने योग्य कार्य-जीवन भी है, क्योंकि जिसने चिंतित स्वामित्व छोड़ दिया है वह सचमुच विश्राम भी कर सकता है, पुनर्प्राप्त हो सकता है, और लौट सकता है, बजाय एक ऐसे खाते के भार के नीचे जल जाने के जो कभी बंद नहीं होता।

इस ढंग से जीए गए एक कार्य-जीवन की कल्पना कीजिए: पूर्णतः संलग्न, कुशल, इस अर्थ में महत्वाकांक्षी तक कि वस्तुओं को भली-भाँति करने की गहराई से परवाह करता हुआ — और फिर भी स्वामी की चिरकालिक चिंता के बिना, निर्णय के भय के बिना, हर कार्य के अपने मूल्य पर एक जनमत-संग्रह में परिवर्तन के बिना। समय-सीमाएँ अब भी आती हैं; असफलताएँ अब भी होती हैं; कठिन सहकर्मी अब भी कठिन हैं। किंतु वे एक ऐसे व्यक्ति द्वारा मिले जाते हैं जिसने दूसरा भार रख दिया है, जो कार्य करता है बिना उसका चिंतित संप्रभु रचयिता होने का दावा किए, और जो इसलिए स्वयं को पूर्णतः करने को देने और परिणाम को उस समग्र पर छोड़ने को स्वतंत्र है जो उसे वैसे भी सदा बैठाने ही वाला था। यही वह है जो यह पुस्तक आपके जाग्रत जीवन के सबसे बड़े भाग को देती है। कम कार्य नहीं, और बदतर नहीं — बल्कि स्वामी के बिना कार्य, जो दोनों में हल्का और, आश्चर्यजनक रूप से, बेहतर किया हुआ है।

## दो व्यक्ति, एक परियोजना

दो व्यक्तियों का चित्र बनाइए जिन्हें वही माँग करती परियोजना सौंपी गई है, समान कौशल और समान दाँव के साथ। पहला उसे अपनी मानता है — स्वयं को सिद्ध करने का उसका अवसर, उसकी ख्याति दाँव पर, उसका मूल्य परिणाम से मापे जाने को — और पहले दिन से वह उसे एक पत्थर की भाँति ढोता है, इसकी निगरानी करता हुआ कि वह कैसा देखा जाता है, हर निर्णय की रक्षा करता हुआ, जागता हुआ उन ढंगों का पूर्वाभ्यास करता हुआ जिनमें वह असफल हो सकती है और उसे अभियुक्त ठहरा सकती है। वह कठोर कार्य करता है, किंतु उसकी एक-तिहाई ऊर्जा स्वयं के प्रबंधन में बह जाती है, और अंत तक वह उस ढंग से रिक्त है जिसे कोई सप्ताहांत ठीक नहीं करता, परियोजना और उसके अपने भय से समान रूप से लड़ चुका।

दूसरी कम से कम उतना ही कठोर कार्य करती है और उसे भली-भाँति करने की कम से कम उतनी ही परवाह करती है, किंतु उसने परिणाम का स्वामित्व रख दिया है। परियोजना उसका

जनमत-संग्रह नहीं; वह बस उसके सामने का कार्य है, अपने सब कुछ से मिले जाने को और फिर उन दशाओं को सौंपे जाने को जो उसे बैठाएँगी। वह स्वयं को करने की गुणवत्ता में उड़ेल देती है और इस प्रश्न को छोड़ देती है कि वह उस पर कैसा झलकता है, और इसलिए उसकी समूची बुद्धि स्व-प्रबंधन से आधी-खपी होने के बजाय कार्य के लिए उपलब्ध है। वह अंत में थकी है, स्वच्छता से थकी, और विश्राम को तैयार — और कार्य, उस घर्षण से मुक्त जो उसके सहकर्मी ने जोड़ा, बहुधा दोनों में बेहतर है। वही परियोजना, वही कौशल, वही दाँव; दो पूर्णतः भिन्न भार, जिनमें से केवल एक कभी अपेक्षित था।

### कार्य कर्ता से अधिक जीता है

अपने कार्य का स्वामित्व छोड़ने में एक शांत सांत्वना है, और वह केवल तभी दृश्य होती है जब कार्य भली-भाँति किया जाता है: कि योगदान योगदानकर्ता से अधिक जीता है और कभी वास्तव में उसका था ही नहीं। शिक्षक का सर्वोत्तम पाठ उन विद्यार्थियों में जीता रहता है जो उसका नाम भूल जाएँगे; निर्माता का अच्छा कार्य उन लोगों को आश्रय देता है जिनसे वह कभी नहीं मिलेगा; निष्ठापूर्वक की गई छोटी सक्षमता परिणाम के एक जाल में आगे पोषित होती है जो कर्ता से कहीं परे फैलता है और उसका कोई अभिलेख नहीं रखता। स्वामी श्रेय ठीक इसलिए चाहता है कि वह इससे डरता है — डरता है कि यदि कार्य उसका नहीं, तो वह कुछ नहीं, और वह कुछ नहीं। किंतु सत्य उल्टा है: कार्य अधिक मायने रखता है, कम नहीं, कर्ता से परे आगे बहने के कारण, उस विशाल निर्वैयक्तिक योगदान-धारा में सम्मिलित होते हुए जिससे मानव-संसार वास्तव में बनाया और थामा जाता है।

इसे देखना अपने कार्य का स्वामित्व लेने और उसके लिए स्मरण किए जाने की चिंतित आवश्यकता से मुक्त होना है, और इसके बजाय सच्ची सहभागिता की बड़ी गरिमा दिया जाना है। आप एक ऐसे योगदान के संप्रभु रचयिता नहीं जो आपसे आरम्भ और समाप्त होता है; आप एक स्थल हैं जिसके माध्यम से लम्बा मानवीय कार्य गुजरता है, अपना भाग जोड़ता और उसे आगे छोड़ता हुआ, जैसे असंख्य औरों ने आपसे पहले अपना जोड़ा और आपके बाद जोड़ेंगे। कार्य कर्ता से अधिक जीता है क्योंकि वह आरम्भ में कर्ता का था ही नहीं — और उसे भली-भाँति करना और उसे स्वतंत्रता से छोड़ना, श्रेय के विषय में अचिंतित, अपने भाग को घटाना नहीं बल्कि उसे सच्चाई से लेना है, उस वस्तु में एक सहभागी के रूप में जो उस छोटे स्व से कहीं बड़ी है जो स्मरण किया जाना चाहता था।

## एक चिंतन

जो कार्य सबसे अधिक आपका प्रतीत होता है वह एक ऐसे संचालन का दृश्य शिखर है जो अत्यधिक रूप से आपका नहीं — शिक्षक, भाषा, सदियों का संचित शिल्प, वे दशाएँ जिन्हें आपने कभी नहीं रचा। वह चिंतित स्वामी जो श्रम के पीछे खड़ा उसका दावा करता है कभी वह नहीं था जिसने कार्य को अच्छा बनाया। वह केवल घर्षण था।

आज एक कार्य चुनिए और स्वयं को करने की गुणवत्ता में पूर्णतः उड़ेल दीजिए जबकि इस प्रश्न को पूर्णतः छोड़ दीजिए कि वह आप पर कैसा झलकता है। ध्यान दीजिए कि क्या कार्य बेहतर चलता है, बदतर नहीं, जब स्वामी पीछे हटता है — और क्या आप उसके पूर्ण होने पर अधिक पूर्णता से विश्राम कर सकते हैं।

## धन और अभाव का भय

*कंजूस और अपव्ययी एक ही व्यक्ति हैं, दो दिशाओं में भयभीत।*

— धन पर टिप्पणी

उन सब बहियों में जो कोई मनुष्य रखता है, कोई धन की बही से अधिक चिंतित रूप से नहीं रखी जाती। यहाँ व्यक्तिगत खाता एक रूपक नहीं बल्कि शब्दशः अंकों का एक स्तंभ है, और वह भय जो उसे सताता है — अभाव का भय — एक मानव-जीवन में सबसे शक्तिशाली शक्तियों में से एक है, चुनावों को विकृत करने, संबंधों को विषाक्त करने, और दशकों को एक ऐसे प्रयत्न में निगलने में समर्थ जिसे कितना भी अर्जन कभी शांत नहीं करता। यदि इस पुस्तक की शिक्षा को एक चिंतनशील अलंकरण से अधिक होना है, तो उसके पास उस स्थान के विषय में कुछ कहने को होना ही चाहिए जहाँ स्वामित्व सबसे ठोस और भय सबसे निर्मम है।

मुझे आरम्भ में ही स्पष्ट कर देने दीजिए कि यह दरिद्रता की सलाह नहीं, न धन के प्रति आध्यात्मिक तिरस्कार, न यह वचन कि चिंता छोड़ने से आपके खाते भर जाएँगे। धन वास्तविक, आवश्यक, और तिरस्कार के अयोग्य है; उसका अभाव सच्चा दुःख उत्पन्न करता है, और पर्याप्त को सुरक्षित करना एक वैध और गंभीर सरोकार है। यह पुस्तक जिस पर प्रश्न करती है वह धन नहीं बल्कि वह विशेष दुःख है जो हम उसमें जोड़ते हैं — चिंतित स्वामित्व, अथाह भय, एक व्यावहारिक संसाधन का हमारी सुरक्षा और मूल्य के स्वयं माप में परिवर्तन।

### अभाव भविष्य का स्वामित्व है

अभाव के भय को जाँचिए और आप पाएँगे कि वह भविष्य के विषय में एक भय है — सामान्यतः इस वर्तमान क्षण के विषय में नहीं, जिसमें इस पुस्तक के अधिकांश पाठकों के पास, वस्तुतः, पर्याप्त है, बल्कि एक भविष्य के क्षण के विषय में जिसमें उनके पास शायद न हो। चिंतित मन एक ऐसे भविष्य में पहुँचता है जो सुलझा नहीं, उससे निश्चितता माँगता है, और काँपता है क्योंकि भविष्य वह आश्वासन नहीं देगा जिसकी वह तृष्णा करता है। यह अपने

शुद्धतम रूप में भविष्य का स्वामित्व है: स्व यह आग्रह करता हुआ कि उसे ऐसे परिणाम सुरक्षित, नियंत्रित, और सुनिश्चित करने ही होंगे जो समूचे क्षेत्र द्वारा बैठाए जाते हैं, किसी सहभागी द्वारा नहीं। और क्योंकि भविष्य कभी पूर्णतः सुरक्षित नहीं किया जा सकता — कितना भी धन व्यक्ति को हानि, रोग, या परिवर्तन से अभेद्य नहीं बनाता — अभाव का भय संरचनात्मक रूप से अतृप्त है। यह एक ऐसा भय नहीं जिसे अधिक धन ठीक कर सके, क्योंकि वह कभी वास्तव में धन के विषय में था ही नहीं।

यही कारण है कि कंजूस और अपव्ययी, अपने विपरीत व्यवहारों के नीचे, एक ही भयभीत व्यक्ति हैं। कंजूस डरावने भविष्य के विरुद्ध संचय करता है; अपव्ययी उसके भय से आगे निकलने को खर्च करता है। दोनों परिणामों के उसी स्वामित्व से, अभी-नहीं की सच्ची अनिश्चितता में विश्राम करने के उसी इनकार से जकड़े हैं। किसी के पास पर्याप्त नहीं, क्योंकि पर्याप्त कोई राशि नहीं जिस तक पहुँचने में वे असफल रहे; वह भविष्य के साथ एक संबंध है जिसे उन्होंने अभी तक छोड़ा नहीं। सबसे धनी चिंतित व्यक्ति के पास सबसे गरीब उस व्यक्ति से कम शांति है जिसने भय रख दिया है, क्योंकि शांति कभी अंकों में थी ही नहीं।

## "पर्याप्त" कोई राशि नहीं है

यहाँ वह पहचान है जो धन के साथ व्यक्ति के समूचे संबंध को बदल देती है, और उसे स्वीकारना सचमुच कठिन है क्योंकि वह उस हर वस्तु के विरुद्ध चलती है जो हमारी संस्कृति सिखाती है: पर्याप्त कोई राशि नहीं है। ऐसा कोई अंक नहीं जिस पर भविष्य का चिंतित स्वामी अचानक सुरक्षित अनुभव करे, क्योंकि असुरक्षा कभी अंक का प्रकार्य थी ही नहीं। जो लोग अपनी आवश्यकता से अत्यधिक अधिक अर्जित करते हैं वे पहले जितने ही भयभीत बने रहते हैं, बहुधा अधिक, अब रक्षा करने को अधिक रखते हुए; भय बस एक बड़ी वस्तु पा लेता है। पर्याप्त संचय से नहीं पहुँचा जाता; वह उसके द्वारा पहचाना जाता है जिसने भविष्य का स्वामित्व छोड़ दिया है, और उसे वास्तविक संसाधन के लगभग किसी भी स्तर पर पहचाना जा सकता है, क्योंकि वह संबंध की एक अवस्था है, बैंक खाते की एक अवस्था नहीं।

यह पहचान किसी व्यक्ति को लापरवाह या अविवेकी नहीं बनाती। जिसने अभाव का भय छोड़ दिया है वह अब भी अर्जित करता है, अब भी बचाता है, अब भी भविष्य के लिए बुद्धिमानी से योजना बनाता है — वस्तुतः वे बहुधा ऐसा बेहतर करते हैं, क्योंकि उनकी योजना अब घबराहट से विकृत नहीं, अब एक अथाह चिंता से चालित नहीं जिसे कभी संतुष्ट नहीं किया

जा सकता। वे प्रदान करने के व्यावहारिक कार्य में पूर्णतः सहभागी होते हैं, अपने भविष्य के क्षेत्र को भारित करती एक वास्तविक दशा के रूप में, जबकि इस असंभव माँग को छोड़ते हुए कि वे एक ऐसा परिणाम सुनिश्चित करें जो समग्र बैठाएगा। वे विवेकपूर्ण वस्तु करते हैं और भय छोड़ देते हैं — जो, धन के क्षेत्र में, ठीक पूर्ण संलग्नता और छोड़े गए स्वामित्व का वह विवाह है जिसका यह पुस्तक आरम्भ से वर्णन करती रही है।

## धन के साथ खुला हाथ

देखिए कि एक भिंचे हाथ के बजाय एक खुले हाथ से गुजरने पर धन के साथ क्या होता है। भिंचा हाथ सचमुच ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह जो रखता है उसे पकड़ने में बहुत व्यस्त है; और वह सचमुच दे नहीं सकता, क्योंकि हर विमोचन डरावने भविष्य के विरुद्ध एक हानि-सा लगता है। भिंचे हाथ में थामा गया धन चिंता का एक सतत स्रोत बन जाता है चाहे वह प्रचुर हो या दुर्लभ। खुला हाथ — जो लापरवाह हाथ नहीं, बल्कि अभिंचा है — भय की विकृति के बिना दोनों ग्रहण और विमोचन कर सकता है: बिना पकड़े अर्जित कर सकता है, बिना घबराहट खर्च कर सकता है, बिना बहने के बोध के दे सकता है, बिना उस सफ़ेद-पोर वाली पकड़ के थाम सकता है जो धन को सुरक्षा और सुरक्षा को जीवन समझ लेती है।

इसमें से कुछ भी धन के विषय में भिन्न अनुभव करने का निर्णय करके नहीं आता, जो केवल चिंतित स्व का स्वयं को एक नया कार्य देना है। यह, जैसे इस पुस्तक की हर वस्तु आती है, उस समझ के माध्यम से आता है जो विमोचन में पकती है — यह देखना कि भविष्य कभी आपका सुनिश्चित करने को था ही नहीं, कि पर्याप्त एक संबंध है और एक राशि नहीं, कि अभाव का भय उसी स्वामित्व का एक रूप था जो आरम्भ से दुःख का स्रोत रहा है। जब वह देखना गहराता है, तो धन पर पकड़ स्वयं ही ढीली हो जाती है, लापरवाही में नहीं बल्कि प्रदान करने के व्यावहारिक कारोबार में एक बैठी, विवेकपूर्ण, अभयभीत सहभागिता में — खुला हाथ, जो धन को थाम सकता है बिना उसके द्वारा स्वामित्व किए, और जो, अपने आश्चर्य के साथ, खोज लेता है कि उसके पास पर्याप्त था, उस एकमात्र अर्थ में जिसमें पर्याप्त कभी उपलब्ध था, समूचे समय।

## वह व्यक्ति जो अपने अंक तक पहुँच गया

एक व्यक्ति अपना कार्य-जीवन यह विश्वस्त बिताता है कि सुरक्षा एक विशेष अंक पर है — एक खाते में एक संख्या जिसके परे, उसे निश्चय है, अभाव का भय अंततः उसे मुक्त कर देगा। वह अनुशासित, सक्षम, और भयभीत है, और भय उसे दशकों चलाता है, उसके जीवन को उसके पीछा तक संकीर्ण करता हुआ, और अंततः वह अंक तक पहुँचता है, और उसे लाँघ जाता है। और फिर वह उस वस्तु को खोज लेता है जिसका यह अध्याय वर्णन करता रहा है: भय उठता नहीं। वह, हफ्तों के भीतर, एक नए और बड़े अंक से, या जो उसने एकत्र किया उसे खोने के भय से जुड़ जाता है, और वह प्रचुरता के साथ उतना ही भयभीत है जितना वह कभी अभाव के साथ था, अपने ही जीवन पर सिद्ध करते हुए कि पर्याप्त कभी एक राशि थी ही नहीं।

जिसे उसने एक संसाधनों की समस्या समझा था वह सदा खुले भविष्य के साथ एक संबंध था, और संबंध तब नहीं बदला जब अंक बदला, क्योंकि वह कभी अंक के विषय में था ही नहीं। यदि उसने इसे पहले देख लिया होता, तो वह भिन्न ढंग से जी सकता था — अधिक लापरवाही से नहीं, क्योंकि विवेक शांति का कोई शत्रु नहीं, बल्कि अधिक स्वतंत्रता से, भविष्य के लिए बुद्धिमानी से प्रदान करता हुआ उस अथाह भय के बिना जिसे कोई अर्जन कभी संतुष्ट नहीं कर सकता था। अंक वास्तविक और सुरक्षित करने योग्य था; भय आविष्कृत भाग था, और वह हर अंक पर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था जिस तक वह पहुँचा, क्योंकि उसने कभी भविष्य का वह स्वामित्व रखा ही नहीं था जो उसे उत्पन्न कर रहा था। पर्याप्त, प्रकट होता है, कहीं आगे नहीं है। वह एक ऐसा हाथ है जो अभिंचा हो गया है, और वह लगभग किसी भी शेष पर उपलब्ध है।

## उदारता परीक्षा के रूप में

यदि आप धन के साथ अपना वास्तविक संबंध जानना चाहते हैं — वह नहीं जिसका आप दावा करते हैं, बल्कि वह जिसे आप जीते हैं — तो देखिए कि जब आप देते हैं तब क्या होता है। उदारता ठीक वह परीक्षा है कि धन एक खुले हाथ में थामा गया है या एक भिंचे में, क्योंकि देने को ठीक उस विमोचन की आवश्यकता है जिससे अभाव का भय इनकार करता है। भिंचा हाथ बिना उपहार को एक घाव अनुभव किए नहीं दे सकता, डरावने भविष्य के विरुद्ध एक घटाव; उदारता का हर कृत्य उसे न केवल धन बल्कि अंतर्निहित भय की एक ऐंठन भी चुकाता है। खुला हाथ उस ऐंठन के बिना देता है, इसलिए नहीं कि उसके पास अधिक है, बल्कि इसलिए



कि उसने भविष्य का वह स्वामित्व रख दिया है जिसने हर विमोचन को एक हानि-सा बना दिया।

यही कारण है कि उदारता को हर परंपरा ने केवल दूसरों के प्रति एक गुण के रूप में नहीं बल्कि दाता के लिए एक औषधि के रूप में सराहा है: वह खुले हाथ का अभ्यास है, धन पर और उस भविष्य पर जिसे उसे सुरक्षित करना था पकड़ का सोदेश्य ढीला करना। देना — बुद्धिमानी से, लापरवाही से नहीं — ठीक उसी स्वामित्व के विमोचन का पूर्वाभ्यास करना है जो अभाव का भय उत्पन्न करता है, और हर बार यह खोज लेना है कि डरावना घटाव आपको नष्ट नहीं किया, कि खुला हाथ झेलने योग्य था, कि पर्याप्त आखिर पकड़ पर निर्भर नहीं था। कंजूस स्वयं की रक्षा नहीं कर रहा; वह उस भय को पोषित कर रहा है जिसे धन कभी ठीक करने में समर्थ नहीं था। दाता, उसी कृत्य से, उसे ढीला कर रहा है।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

अभाव का भय एक ऐसे भविष्य के विषय में भय है जो सुलझा नहीं, और वह संरचनात्मक रूप से अतृप्त है, क्योंकि कितना भी धन एक ऐसे भविष्य को सुरक्षित नहीं करता जिसे कोई सुरक्षित नहीं कर सकता। पर्याप्त कभी कोई राशि नहीं थी जिस तक पहुँचने में आप असफल रहे। वह खुले भविष्य के साथ एक संबंध है, अभी उपलब्ध, लगभग किसी भी शेष पर।

अगली बार जब अभाव का भय उठे तब ध्यान दीजिए, और देखिए कि वह एक क्षितिज के आर-पार एक ऐसे भविष्य में पहुँच रहा है जो हुआ नहीं। अविवेकी बने बिना, कुछ श्वासों के अवकाश के लिए उस भविष्य को सुनिश्चित करने की माँग रख दीजिए, और अनुभव कीजिए कि खुला हाथ वह थामता है जो भिँचा हाथ नहीं थाम सकता।

## प्रेम और लेखा-बही

---

हम अपने सबसे विस्तृत खाते उन लोगों के साथ रखते हैं  
जिनसे हम सबसे अधिक प्रेम करते हैं, और हिसाब को भक्ति कहते हैं।

— घनिष्ठता पर टिप्पणी

कहीं व्यक्तिगत खाता हमारे सबसे निकट संबंधों की अपेक्षा अधिक सूक्ष्म विस्तार में नहीं रखा जाता, और कहीं वह अधिक शांत क्षति नहीं करता। अजनबियों के साथ हम कोई बही नहीं रखते; जिनसे हम प्रेम करते हैं उनके साथ हम एक सटीक रखते हैं — किसने अधिक दिया, किसने किसके साथ अन्याय किया, क्या देय है, क्या त्यागा गया, क्या नहीं चुकाया गया — और यह हिसाब, वर्षों भर संचित, घनिष्ठता का धीमा विष बन जाता है, और भी खतरनाक क्योंकि हम उसे प्रेम, न्याय, स्मृति, गहराई से परवाह करना समझ लेते हैं। इस पुस्तक की शिक्षा यहाँ अपना सबसे कोमल और सबसे कठिन प्रयोग पाती है, उस स्थान में जहाँ बही सबसे अधिक भक्ति-सी अनुभव होती है।

मैं कोमलता से आगे बढ़ना चाहता हूँ, क्योंकि प्रेम हम जो हैं उसका सर्वोत्तम है, और इस अध्याय में कुछ भी कम प्रेम करने या इस विषय में कम परवाह करने की सलाह के रूप में नहीं सुना जाना चाहिए कि हमारे साथ कैसा व्यवहार होता है। यह अधिक स्वतंत्रता से प्रेम करने की सलाह है, उस एक वस्तु को रखकर जो प्रेम का गला घोट रही थी: खाता।

### वे खाते जो हम प्रियजनों के साथ रखते हैं

किसी तनावग्रस्त लम्बे संबंध की आंतरिक आवाज़ सुनिए और आप सतह के नीचे हिसाब की भाषा सुनेंगे। तुम्हारे लिए मैंने इतना किया उसके बाद भी। तुम कभी नहीं। मैं सदा। अब मेरी बारी है। तुम मुझ पर यह ऋणी हो। हम, अपने निकटतम लोगों के साथ, योगदानों और ऋणों, त्यागों और अपमानों की एक चालू बही रखते हैं, और हम उससे निरंतर परामर्श करते हैं, बहुधा यह जाने बिना कि हम ऐसा कर रहे हैं, संबंध को उसके शेष से मापते हुए। बही न्याय-सी अनुभव

होती है — निश्चय ही यह केवल उचित है कि स्मरण रखा जाए किसने दिया और किसने लिया — किंतु देखिए कि वह वास्तव में क्या करती है। वह प्रेम को एक लेन-देन में, घनिष्ठता को खातों के निपटान में, और प्रियजन को मिले जाने को एक व्यक्ति के बजाय एक ऋणी या ऋणदाता में बदल देती है। कोई संबंध एक लेन-देन के रूप में अधिक देर नहीं टिकता, और खाते का रखना ठीक वही है जो प्रेम को एक में बदल देता है।

एकीकृत समझ यहाँ तर्क जीतने की तकनीक के रूप में नहीं बल्कि स्वयं बही के एक शांत विलयन के रूप में प्रवेश करती है। दूसरे का कठोर शब्द उनके थकान और इतिहास और भय के समूचे क्षेत्र में से एक घटना के क्षितिज पर उठा, ठीक जैसे आपके उठते हैं; वह एक भूमिका थी जिसे क्षण ने निर्धारित किया, उनके विरुद्ध प्रमाण के रूप में दाखिल की जाने को एक प्रविष्टि नहीं, और वह अपनी पूर्णता पर विलीन हो जाएगा जब तक आप में से कोई उसे खाते में अभिलिखित करके जीवित न रखे। जो त्याग आपने किया वह वास्तविक था, और उसे एक ऋण के रूप में दाखिल करने की आवश्यकता नहीं जो दूसरा अब ऋणी है; वह बस वह वस्तु हो सकती है जो क्षण ने आपसे माँगी, स्वतंत्रता से दी गई, अपने आप में पूर्ण, दिए जाने के योग्य होने को किसी चुकौती की अपेक्षा न रखती। बही के बिना प्रेम करना आपके बीच की हर घटना को दाखिल किए जाने के बजाय पूर्ण और विलीन होने देना है — और वह शायद सबसे व्यावहारिक और सबसे कठिन उपहार है जो यह पुस्तक देती है, क्योंकि प्रेम में हिसाब ठीक परवाह करने-सा अनुभव होता है।

## प्रियजन से वेशभूषा के बिना मिलना

वर्षों भर, हम जिनसे प्रेम करते हैं उन्हें वेशभूषाओं में सी देते हैं — असंवेदनशील वाला, वह जो सदा, वह जो कभी नहीं, निराश करने वाला, कठिन वाला — पूर्ण हुई घटनाओं के संचित अभिलेख से जोड़े गए, और फिर हम उस व्यक्ति से नहीं मिलते जो वास्तव में हमारे सामने है बल्कि उस संचित अभियुक्त से जो हमारी बही ने उन्हें बना दिया है। पति द्वार से भीतर आता है और उससे वह नहीं मिला जाता जैसा वह आज सायं है बल्कि हर कभी दाखिल की गई शिकायत के योग के रूप में; पत्नी बोलती है और ताज़ा नहीं बल्कि संचित मुकदमे के माध्यम से सुनी जाती है। और वेशभूषा, एक बार सी दी जाने पर, स्व-पुष्टिकारी है: असंवेदनशील वाले के लिए तने हुए, हम उनकी हर वस्तु को और प्रमाण के रूप में पढ़ते हैं, और भूमिका एक तथ्य

में कठोर हो जाती है जो उन्हें बंदी बनाता है और संबंध को उस ताज़गी से वंचित करता है जो प्रेम को चाहिए।

प्रियजन से वेशभूषा के बिना मिलना उनकी पूर्ण हुई घटनाओं से एक स्थायी पहचान बनाने से इनकार करना है — हर घटना को पूर्ण और विलीन होने देना, और उस व्यक्ति से मिलना जो वास्तव में इस सायं उपस्थित है न कि उस अभियुक्त से जो बही ने जमा किया है। इसका अर्थ यह दिखावा करना नहीं कि हानि हुई ही नहीं, या वहाँ बने रहना जहाँ वास्तविक और जारी क्षति है; स्पष्ट देखना और ईमानदार प्रत्युत्तर बने रहते हैं, और कुछ संबंध ठीक ही समाप्त होते हैं। इसका अर्थ एक पूर्ण हुई घटना से एक स्थिर पहचान बनाने से इनकार करना, और व्यक्ति से ताज़ा मिलना है, जैसे वे अब हैं। उस वेशभूषा से मुक्त जिसमें आपने उन्हें सी दिया है, प्रियजन फिर वह बन सकता है जिसे बही ने असंभव बना दिया था: मिले जाने को एक व्यक्ति न कि चलाए जाने को एक मुकदमा।

### कुछ भी ऋणी न होने की स्वतंत्रता

एक ऐसे प्रेम की कल्पना कीजिए जिसमें कोई खाता नहीं रखा जाता — जिसमें त्याग स्वतंत्रता से दिए जाते हैं और ऋणों के रूप में दाखिल नहीं किए जाते, अपमान पूर्ण और विलीन होते हैं बजाय संचित होने के, प्रियजन से हर दिन ताज़ा मिला जाता है बजाय जमा किए गए मुकदमे के माध्यम से, और न कोई व्यक्ति दूसरे को कुछ ऋणी, क्योंकि कोई बही नहीं जिसमें एक ऋण अभिलिखित किया जा सके। यह, पहले-पहल, प्रतिबद्धता के बिना एक प्रेम-सा लगता है, किंतु वह उल्टा है। बही कभी वह नहीं थी जो प्रेम को एक साथ थामे थी; वह वह थी जो धीरे-धीरे उसे विषाक्त करती थी। खाते से मुक्त एक प्रेम कम प्रतिबद्ध नहीं बल्कि अधिक स्वतंत्र है — चुकौती की गणना किए बिना देने में समर्थ, एक ऋण बट्टे खाते डालने के बोध के बिना क्षमा करने में, संचित मुकदमे के भार के बिना मिलने में, चालू शेष के बजाय वास्तविक व्यक्ति से प्रेम करने में।

यह स्वतंत्रता, इस पुस्तक की हर वस्तु की भाँति, इच्छा के एक कृत्य से स्थापित नहीं की जा सकती; आप खाता रखना बंद करने का निर्णय उतना ही नहीं कर सकते जितना आप समर्पण करने का निर्णय कर सकते हैं, क्योंकि निर्णय करना स्व का अब भी पकड़ना है। वह उसी समझ के माध्यम से पकती है जो समूची पुस्तक भर चलती है: यह देखना कि रखने को कोई पृथक खाते हैं ही नहीं, क्योंकि न कोई आपका कर्म है न मेरा, केवल वह एक व्यवस्था आप दोनों के

माध्यम से गति करती हुई; कि आपके बीच की घटनाएँ सब घटनाओं की भाँति पूर्ण और विलीन होती हैं; कि वह वेशभूषा जिसमें आपने प्रियजन को सी दिया है एक भूमिका है और उनका द्रव्य नहीं। जैसे वह देखना गहराता है, बही स्वयं ही ढीली हो जाती है, और जो शेष रहता है वह वही वस्तु है जिसका हिसाब आरम्भ से गला घोट रहा था — एक प्रेम जो कुछ ऋणी नहीं, कोई बही नहीं रखता, और प्रियजन से, अंततः, उतनी ही स्वतंत्रता से मिलता है जितनी सुबह दिन से मिलती है।

### **वह झगड़ा जो कभी बर्तनों के विषय में था ही नहीं**

एक दंपति वर्षों तक वही झगड़ा करता है, और उसकी सतह पर वह बर्तनों के विषय में है, या समय-सारणी के, या किसने क्या स्मरण रखा — छोटा, पुनरावर्ती, कभी न सुलझा, कुछ नहीं में से भड़कता हुआ और दोनों को उसकी गर्मी पर हतप्रभ छोड़ता हुआ। जो कोई नहीं देखता वह यह है कि बर्तन केवल सतह हैं; उनके नीचे, दो बहियों से परामर्श किया जा रहा है। प्रत्येक एक चालू खाता रखता रहा है — किसने अधिक दिया, किसके साथ अधिक अन्याय हुआ, किसकी बारी है, क्या देय है — और बर्तनों के विषय में झगड़ा वास्तव में दो खातों का टकराना है, प्रत्येक साथी एक ऐसे शेष से तर्क करता हुआ जिसे दूसरा देख नहीं सकता, प्रत्येक निश्चित कि वे ऋणदाता हैं और दूसरा ऋणी।

बर्तन कभी झगड़ा नहीं सुलझाएँगे, क्योंकि बर्तन कभी मामला थे ही नहीं; बहियाँ हैं। और बहियाँ जीती नहीं जा सकतीं, क्योंकि प्रत्येक एक भिन्न मुद्रा में रखी जाती है, एक भिन्न हाथ द्वारा जोड़ी जाती है, और एक ऐसे स्व की सेवा में परामर्शित की जाती है जिसे वह होने की आवश्यकता है जिसने अधिक दिया। झगड़ा तब समाप्त होता है जब खाते अंततः संतुलित होते हैं नहीं — वे कभी नहीं होंगे — बल्कि जब उनमें से एक बही रख देता है: हिसाब रखना बंद करता है, छोटे अपमानों को अदाखिल पूर्ण और विलीन होने देता है, और दूसरे से एक लम्बे विवाद में एक ऋणी के रूप में नहीं बल्कि उस व्यक्ति के रूप में मिलता है जिससे वे वास्तव में प्रेम करते हैं, एक रसोई में खड़े, थके, एक साधारण सायं को। बर्तन किसी भी ढंग से हो जाते हैं। केवल एक ढंग में वे उनका विवाह नहीं चुकाते।

## वह क्षमा-याचना जो एक भुगतान नहीं है

देखिए कि क्षमा-याचना प्रेम की बही के भीतर कैसे काम करती है, और वह उसके बाहर कितने भिन्न ढंग से काम करती है। बही के भीतर, एक क्षमा-याचना एक भुगतान है — एक ऋण निपटाने को किया गया हस्तांतरण, आहत पक्ष द्वारा वसूला गया और अपराधी द्वारा अनिच्छा से चुकाया गया, जिसके बाद बहियाँ, माना जाता है, संतुलित हैं। इस प्रकार की क्षमा-याचना विरले ही भर देती है, क्योंकि वह समूचे हिसाब को अक्षत रखती है; वह केवल शेष को समायोजित करती है, और दोनों पक्ष बही रखते रहते हैं, अगली प्रविष्टि की प्रतीक्षा करते हुए। क्षमा-याचना-एक-भुगतान-के-रूप-में व्यक्तिगत खाता मेल-मिलाप करता हुआ है, और वह किसी को संतुष्ट नहीं करती, क्योंकि संबंध अब भी एक लेन-देन के रूप में चलाया जा रहा है।

बही के बाहर दी गई क्षमा-याचना कुछ पूर्णतः और है: एक ऋण निपटाने को एक भुगतान नहीं, बल्कि एक हानि की सरल, अनायास स्वीकृति, स्वतंत्रता से दी गई क्योंकि वह सत्य है, बदले में कुछ न माँगती और कोई खाता संतुलित न करती, क्योंकि कोई खाता रखा ही नहीं जा रहा। ऐसी एक क्षमा-याचना सचमुच भर सकती है, ठीक इसलिए कि वह एक लेन-देन नहीं — वह यह नहीं कहती *यह रहा तुम्हारा भुगतान, अब हम बराबर हैं*, बल्कि मैं देखता हूँ कि इसने तुम्हें *आहत किया, और मुझे खेद है*, उसके पीछे कोई बही नहीं और कोई शेष समायोजित न होता। अंतर एक हिसाब के रूप में चलाए गए प्रेम और खाते से मुक्त एक प्रेम के बीच का अंतर है, और वह किसी के द्वारा भी तत्काल अनुभव किया जाता है जिसने दोनों प्रकार प्राप्त किए हैं। एक ऋण निपटाता है; दूसरा बस सत्य बोलता है, और हानि को अदाखिल पूर्ण और विलीन होने देता है।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

हम अपने सबसे विस्तृत खाते उन लोगों के साथ रखते हैं जिनसे हम सबसे अधिक प्रेम करते हैं, और हिसाब को भक्ति कहते हैं। किंतु बही कभी वह नहीं थी जो प्रेम को एक साथ थामे थी; वह वह थी जो धीरे-धीरे उसे विषाक्त करती थी। स्वतंत्रता से दिया गया त्याग और विलीन होने दिया गया अपमान किसी बही में कोई प्रविष्टि नहीं माँगते।

एक छोटी शिकायत खोजिए जिसे आप किसी प्रियजन के विरुद्ध रख रहे हैं — बही में एक प्रविष्टि। उस एकल पूर्ण हुई घटना को पूर्ण और विलीन होने दीजिए, अदाखिल, और व्यक्ति से इस सायं मिलिए जैसे वे अब हैं न कि संचित मुक्रदमे के माध्यम से। ध्यान दीजिए कि प्रेम कितना हल्का है जब वह कुछ ऋणी नहीं।

## रोग और शरीर

---

शरीर कभी आपकी संपत्ति नहीं था। वह ब्रह्मांडीय व्यवस्था से आपका ऋण था, और वह आपसे कहीं बड़े हाथों द्वारा प्रशासित होता है।

— शरीर पर टिप्पणी

हमने यह पुस्तक एक रसोई की मेज़ पर आरम्भ की, एक ऐसे व्यक्ति के साथ जो उस अपराध के लिए अपना अतीत खोज रहा था जिसने उनका रोग अर्जित किया। हम अब, अंत के निकट, उस मेज़ पर लौटते हैं, क्योंकि रोग वह स्थान है जहाँ वह प्रश्न जिसने पुस्तक खोली — मैंने ऐसा क्या किया जो यह भोगना पड़ा — सबसे कठोरता से दबाता है, और जहाँ यह पुस्तक जो राहत देती है, यदि वह वास्तविक है, उसे अंततः स्वयं को सिद्ध करना ही होगा। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जिसमें व्यक्तिगत कर्तृत्व का भार अधिक निर्दयता से अनुभव किया जाता, या अधिक निर्दयता से गलत समझा जाता, जितना रोग-कक्ष में।

मुझे सावधान और स्पष्ट रहने दीजिए, क्योंकि यह कोमल भूमि है। इस अध्याय में कुछ भी रोग की वास्तविकता, औषधि के मूल्य, या उस सच्ची भूमिका का खंडन नहीं करता जो चुनाव और परिस्थितियाँ स्वास्थ्य में निभाते हैं। कुछ रोग अंशतः उन वस्तुओं से चले आते हैं जो हमने कीं, और जहाँ वे ऐसा करते हैं, स्पष्ट देखना और बुद्धिमान परिवर्तन ठीक प्रत्युत्तर हैं। यह पुस्तक जिस पर प्रश्न करती है वह कारण की वास्तविकता नहीं बल्कि वह दूसरा भार है जो हम रोग में जोड़ते हैं — निर्णय, प्राप्य, यह विश्वास कि रोग हम पर व्यक्तिगत रूप से सुनाया गया एक दंडादेश है, एक अर्जित दंड, एक ऐसे ब्रह्मांड द्वारा हम पर लक्षित एक अर्थ जो हमारा खाता रख रहा है।

### रोग-शय्या पर "मैंने ऐसा क्या किया जो यह भोगना पड़ा"

अपने निदान के बाद रसोई की मेज़ पर उस स्त्री के पास लौटिए, उस कारण के लिए अपने जीवन भर पीछे खोजती हुई जो उसने अवश्य बोया होगा। वह उसे नहीं पाएगी, क्योंकि वह उस रूप



में वहाँ है ही नहीं जिस रूप में वह उसे खोज रही है — एक अपराध के रूप में नहीं जिसने एक दंड अर्जित किया, एक कृत्य के रूप में नहीं जो एक दंडादेश में संतुलित हुआ। वे कोशिकाएँ जो बदल गईं, वह तंत्र जो असफल हुआ, जीवविज्ञान का वह संयोग जो उस पर आया, अपना घटना-क्षितिज इतनी विशाल और इतनी काफ़ी हद तक छिपी दशाओं के एक विन्यास में से पार कर गए — आनुवंशिक, पर्यावरणीय, परिस्थितिजन्य, उसके जन्म से पहले तक पीछे और उसके ज्ञान से परे बाहर तक पहुँचते — कि उसके अपने कृत्यों को घटना के रचयिता के रूप में अलग करना अंतिम हिमकण को हिमस्खलन के लिए दोष देना है, ज्ञाग को ज्वार का श्रेय देना है। रोग वास्तविक है। उसके कारण वास्तविक और असंख्य हैं। किंतु वह व्यक्तिगत रचयिता जिसे वह खोज रही है, वह स्व जिसने यह अर्जित किया, वही कल्पना है जिसे हम इस पुस्तक भर घुलाते रहे हैं, अब अपनी सबसे क्रूर वेशभूषा पहने।

अपराध की खोज रख देना अपने स्वास्थ्य के उत्तरदायित्व को त्यागना नहीं, न उन बुद्धिमान परिवर्तनों से इनकार करना जिनके लिए रोग पुकार सकता है। यह उस दूसरे भार से इनकार करना है — निर्णय, प्राप्य, रात्रिकालीन आत्म-अभियोग — जो किसी कोशिका को भरने में सहायता नहीं करता और केवल शरीर को तनाव की उस ठीक रसायनिकी से भर देता है जिसकी भरने को सबसे कम आवश्यकता है। निदान पर्याप्त भारी है। उसके ऊपर रखा कर्तृत्व का आविष्कृत भार वैकल्पिक है, और उसे रखा जा सकता है, और रखना अपने सब बल से मिले गए एक रोग और एक ऐसे स्व द्वारा मिले गए रोग के बीच का अंतर है जो एक ऐसे अपराध के लिए स्वयं पर अभियोग चलाने से पहले ही थका हुआ है जो उसने कभी किया ही नहीं।

## शरीर कभी आपकी संपत्ति नहीं था

"मेरा शरीर" वाक्यांश में दबी विचित्र पूर्व-धारणा को विचारिए। हम उसे ऐसे कहते हैं मानो शरीर एक संपत्ति हो जिसका हम स्वामित्व और प्रशासन करते हैं, और इसलिए जब वह असफल होता है तो हम उसे एक व्यक्तिगत असफलता, एक ऐसे स्वामित्व का उल्लंघन अनुभव करते हैं जिसे हमें बनाए रखना था। किंतु दावे को जाँचिए। आपने अपना शरीर नहीं बनाया; वह जोड़ा गया, कोशिका दर कोशिका, एक ऐसी व्यवस्था द्वारा जिसे आपने कभी नहीं रचा, तारों में गढ़ी गई सामग्री से। आप उसे चलाते नहीं; हृदय धड़कता है, रक्त स्वयं को छाँटता है, प्रतिरक्षा-तंत्र अपने युद्ध लड़ता है, खरबों सहयोग आपके आदेश या ज्ञान के पूर्णतः बिना आगे बढ़ते हैं। आप उसे पूर्णतः प्रत्यक्ष तक नहीं कर सकते, नियंत्रित करना तो दूर। शरीर किसी

भी अर्थ में आपकी संपत्ति नहीं जो उसके रोग को आपकी व्यक्तिगत असफलता बना दे। वह, कहीं अधिक सच्चाई से, ब्रह्मांडीय व्यवस्था से एक ऋण है, आपसे कहीं बड़े हाथों द्वारा प्रशासित, कुछ समय के लिए उसमें जीया गया और लौटाया गया।

यह कोई शीतल विचार नहीं बल्कि एक मुक्तिदायी है, विशेषतः रोग में। यदि शरीर कभी पूर्ण कार्यशील दशा में बनाए रखने को आपकी संपत्ति था ही नहीं, तो उसकी असफलताएँ आपके न्यासधर्म के उल्लंघन नहीं, आपकी सक्षमता पर निर्णय नहीं, बिल्कुल व्यक्तिगत असफलताएँ नहीं। वे एक उधार और काफ़ी हद तक स्वायत्त तंत्र में घटनाएँ हैं, वैसे मिली जैसे कोई किसी घटना से मिलता है — पूर्णतः, प्रत्युत्तरशील रूप से, सब बुद्धि और औषधि के साथ जो कोई ला सकता है — किंतु एक ऐसे स्वामी की जोड़ी गई वेदना के बिना जो एक ऐसी मशीन की असफलता से व्यक्तिगत रूप से अभियुक्त अनुभव करता है जिसे उसने कभी बनाया ही नहीं और चला नहीं सकता। शरीर वह करेगा जो शरीर करते हैं: कुछ समय सेवा करना, लड़खड़ाना, बूढ़ा होना, और अंततः असफल होना। उसे एक संपत्ति के बजाय एक ऋण के रूप में जानना उस समूचे चाप से, उसके रोगों सहित, स्वामी की हताश और अपराधी पकड़ के सिवा किसी और वस्तु से मिलना है।

## रोग-कक्ष में साक्षी

एक और उपहार है जो यह पुस्तक रोग-शय्या पर ला सकती है, और वह गहनतम है। हम, द्रष्टा के अध्यायों में, उस सहभागी के बीच भेद से मिले जो एक घटना में पूर्णतः लीन है और उस साक्षी से जिसमें घटना प्रकट होती है किंतु जो स्वयं उससे कभी घायल नहीं होता। रोग इस भेद की सर्वोच्च परीक्षा है, और वह स्थान भी जहाँ वह सबसे अधिक देता है। रोग में सहभागी पूर्णतः रोगी है — पीड़ा, भय, हास के साथ संगलित, घटना में डूबता हुआ जिसमें यह जानने को कोई शेष नहीं कि वह एक घटना है। साक्षी उस सबके प्रति उपस्थित है, पीड़ा और भय को पूर्णतः अनुभव करता हुआ, कुछ रोककर नहीं — और फिर भी केवल रोगी नहीं, क्योंकि एक जागरूकता है जिसमें रोग प्रकट होता है जो स्वयं रोगी नहीं, एक स्थिरता जिसमें रोग का समूचा तूफ़ान उठता है और जिस तक रोग नहीं पहुँच सकता।

यह दुःख का खंडन या वास्तविक पीड़ा की आध्यात्मिक टालमटोल नहीं; पीड़ा वास्तविक है और पूर्णतः अनुभव की जाती है। यह यह खोज है, गंभीर रोग में भी उपलब्ध, कि व्यक्ति केवल दुःख भोगता शरीर ही नहीं बल्कि वह जागरूकता भी है जिसमें दुःख प्रकट होता है — और

कि यह जागरूकता कभी संपत्ति नहीं थी, कभी कर्ता नहीं, कभी वह नहीं जिसने रोग अर्जित किया, और स्वयं कभी शरीर के असफल होने से हासित नहीं होती। जिन्होंने गंभीर रोग में इस साक्षी को पाया है वे वही बात बताते हैं जो परंपराओं ने सदा बताई है: कि एक स्थान है, रोग-कक्ष में भी, अंत में भी, स्वयं में एक स्थान जिसे रोग छू नहीं सकता, जो कभी रोगी नहीं था, और जो बना रहता है — स्थिर, अछूता, शांति में — उस हर वस्तु के मध्य में जो शरीर भोगता है। वह वही आनंद है जो आरम्भ से आधार-भूमि था, अब सबसे कठिन स्थान में पाया गया, जहाँ वह सबसे अधिक मायने रखता है। शरीर से पूर्णतः मिला जाता है, रोग से पूर्णतः मिला जाता है, औषधि का स्वागत किया जाता है, भय अनुभव किया जाता है — और उस सबके माध्यम से साक्षी बना रहता है, जो कभी शरीर का स्वामी नहीं था, और जिस तक ऋण का असफल होना कभी नहीं पहुँच सकता।

## निदान और दो प्रश्न

दो व्यक्ति एक ही दोपहर एक ही गंभीर निदान प्राप्त करते हैं, और प्रत्येक एक प्रश्न के साथ घर जाता है। पहला सबसे पुराना प्रश्न होता है — मैंने ऐसा क्या किया जो यह भोगना पड़ा — और आने वाले हफ्ते अँधेरे में बिताता है, उस अपराध के लिए एक जीवन भर पीछे खोजता हुआ जिसने अवश्य दंडादेश अर्जित किया होगा, पुराने चुनावों पर अभियोग चलाता हुआ, स्वयं को अभियुक्त ठहराता हुआ, रोग के भार में उस कहीं भारी भार को जोड़ता हुआ जो उसने अपनी ही आत्मा पर सुनाया है। रोग वास्तविक है; औषधि आरम्भ हो जाती है; किंतु वह उससे एक ऐसे स्व के रूप में मिलता है जो एक ऐसे मुकदमे से पहले ही थका हुआ है जिसमें वह अभियुक्त और न्यायाधीश दोनों है, और मुकदमा कुछ नहीं भरता और हर वस्तु को अँधेरा कर देता है।

दूसरी एक भिन्न प्रश्न होती है, या अंत में बिल्कुल कोई प्रश्न नहीं — केवल हर दिन से मिलना जैसे वह आता है। वह यह दिखावा नहीं करती कि रोग नहीं हो रहा, न औषधि से इनकार करती है, न भय को नकारती है; वह उस सबको पूर्णतः अनुभव करती है। किंतु उसने अपराध की खोज रख दी है, क्योंकि वह यह देखने आई है कि कोशिकाओं ने अपना क्षितिज एक ऐसी विशालता में से पार किया जिसका रचयिता कोई एकल कृत्य नहीं, और कि वह निर्णय जो वह स्वयं पर सुना सकती है एक तथ्य के ऊपर रखी एक कल्पना होगी। वह रोग से अपने सब बल से मिलती है बजाय आत्म-अभियोग से रिक्त एक स्व से — और वह, मिलने में, उस वस्तु को पाती है जिसकी ओर यह पुस्तक संकेत करती रही है: कि उसमें एक जागरूकता है जिसमें यह

भी प्रकट होता है, और जो कभी वह नहीं थी जिसने इसे अर्जित किया, और जिस तक रोग, चाहे वह जो भी ले, नहीं पहुँच सकता।

## रोगी की देखभाल

इस अध्याय की शिक्षा न केवल उस तक पहुँचती है जो रोगी है बल्कि उस तक जो उसकी देखभाल करता है, और वहाँ वह एक ऐसी राहत देती है जिसकी थके देखभालकर्ताओं को बुरी तरह आवश्यकता है। देखभालकर्ता भी स्वामित्व में गिर सकता है — प्रियजन के रोग को अपनी परियोजना के रूप में, अपने रचने को परिणाम के रूप में, अपनी असफलता के रूप में यदि प्रियजन सुधरता नहीं — और यह स्वामित्व, चाहे कितना ही प्रेममय, देखभालकर्ता को एक ऐसे उत्तरदायित्व के नीचे कुचल देता है जिसे कोई ढो नहीं सकता और सूक्ष्मता से रोगी व्यक्ति को देखभालकर्ता की उनके ठीक होने की चिंतित आवश्यकता के भार से बोझिल करता है। वह देखभालकर्ता जो परिणाम का स्वामित्व लेता है एक भिन्ने स्थान से देखभाल करता है, और भिन्न उसके द्वारा अनुभव किया जाता है जिसकी देखभाल की जाती है एक और सँभालने की वस्तु के रूप में।

रोगी की उनके परिणाम का स्वामित्व लिए बिना देखभाल करना वह उपहार है जिसकी दोनों को आवश्यकता है। देखभालकर्ता अपनी समूची भक्ति से सेवा करता है — औषधि, सान्त्वना, उपस्थिति — जबकि इस असंभव स्वामित्व को छोड़ते हुए कि प्रियजन ठीक होता है या नहीं, जो कभी उनका रचने को था ही नहीं और जिसे रोग देखभालकर्ता के नियंत्रण से कहीं परे एक समग्र से बैठाएगा। यह कम प्रेम नहीं; यह स्वामित्व की कुचलती और संक्रामक चिंता से मुक्त प्रेम है, वह प्रेम जो हताश पकड़ के बिना पूर्णतः उपस्थित हो सकता है, जो रोगी व्यक्ति के साथ जो भी आए उसके माध्यम से चल सकता है बिना उन्हें देखभालकर्ता के हित के लिए ठीक होने की आवश्यकता से बोझिल किए। माली सेवा करता है; परिणाम समग्र का है; और वह देखभालकर्ता जिसने इसे समझ लिया है सबसे गहरी देखभाल दे सकता है, जो पकड़ के बिना उपस्थिति है।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

शरीर कभी पूर्ण व्यवस्था में बनाए रखने को आपकी संपत्ति था ही नहीं; वह ब्रह्मांडीय व्यवस्था से एक ऋण था, आपसे कहीं बड़े हाथों द्वारा जोड़ा और प्रशासित। उसकी असफलताएँ आपके न्यासधर्म के उल्लंघन या आपके मूल्य पर निर्णय नहीं। और वह जागरूकता जिसमें रोग प्रकट होता है कभी स्वयं रोगी नहीं थी।

आज एक शारीरिक असुविधा से मिलिए — एक पीड़ा, एक थकान, एक छोटी विफलता — एक ऐसे निर्णय के रूप में नहीं जिसका कारण खोजा जाए, बल्कि एक उधार और काफ़ी हद तक स्वायत्त तंत्र में एक घटना के रूप में। उसे पूर्णतः अनुभव कीजिए, और उस जागरूकता पर ध्यान दीजिए जिसमें वह प्रकट होती है, जो स्वयं असुविधा नहीं और कभी शरीर की स्वामी नहीं थी।

## वृद्धावस्था और सबसे बड़ा विलय

हम एक साथ बूढ़े नहीं होते। हम कोमलता से विलीन किए जाते हैं, भूमिका दर भूमिका, जब तक केवल साक्षी शेष न रहे — जो कभी युवा नहीं था और बूढ़ा नहीं हो सकता।

— वृद्धावस्था पर टिप्पणी

बूढ़ा होना उस विलय से गुजरना है, धीरे और प्रत्यक्ष दृष्टि में, जिसका यह समूची पुस्तक वर्णन करती रही है। वे भूमिकाएँ जिन्हें हमने सबसे कसकर पहना — प्रबल शरीर, संसार के कारोबार में केंद्रीय स्थान, वह चेहरा जिसे हमने दर्पण में पहचाना, आगे खुला फैला भविष्य — हमसे एक-एक करके ली जाती हैं, एक अकेली विपत्ति में नहीं बल्कि एक लम्बे, क्रमिक ढीलेपन में, जब तक एक व्यक्ति जिसने अपनी पहचान उन भूमिकाओं पर दाँव पर लगाई है स्वयं को, अंतिम दशकों में, उस हर वस्तु का स्थिर निष्कासन देखता न पाए जिसे वह स्वयं समझता था। कोई क्षेत्र इस पुस्तक की शिक्षा को वृद्धावस्था से अधिक भली-भाँति नहीं परखता, या उसे अधिक गहराई से पुरस्कृत नहीं करता।

हमारी संस्कृति वृद्धावस्था से लगभग पूर्णतः हानि, हास, प्रतिरोधित और छिपाई जाने वाली एक समस्या के रूप में मिलती है, और उसमें एक सत्य है — वास्तविक सामर्थ्य खोई जाती हैं, वास्तविक हास आते हैं, और अन्यथा दिखावा करना एक झूठ होगा। किंतु सच्ची हानियों के नीचे एक विशेष दुःख है जो वैकल्पिक है, और वह अपनी संपत्तियाँ ली जाती देखते स्वामी का दुःख है: वह स्व जिसने भूमिकाओं से तादात्म्य बनाया, उनके निष्कासन को अपनी ही सत्ता के निष्कासन के रूप में शोक करता हुआ। यह अध्याय उस वैकल्पिक दूसरे दुःख के विषय में है, और उसके विषय में जो तब पाया जाता है जब वह रख दिया जाता है।

**जब हम वृद्धावस्था का शोक करते हैं तो किसका शोक करते हैं**

निकट से देखिए कि वृद्धावस्था में वास्तव में क्या घायल करता है, व्यावहारिक कठिनाइयों से परे, और आप पाएँगे कि वह उन भूमिकाओं का विलय है जिन्हें हमने अपना स्व समझ लिया

था। खिलाड़ी केवल धीमे शरीर का नहीं बल्कि उस पर बनी पहचान का शोक करता है; अधिकारी केवल खोए पद का नहीं बल्कि संसार के कारोबार में उस केंद्रीय स्थान का शोक करता है जो वह स्वयं को समझता था; सुंदरी केवल बदले चेहरे का नहीं बल्कि उस सराहे जाने वाले की भूमिका का शोक करती है जो चेहरा प्रदान करता था। हर दशा में शोक एक संपत्ति हटती देखते स्वामी का शोक है, एक स्व उसे हटते देखता हुआ जिसे वह स्वयं समझता था। और क्योंकि हमने भूमिकाओं को स्व समझ लिया, उनका निष्कासन विलोप-सा अनुभव होता है बजाय उसके जो वह है — उन वेशभूषाओं का स्वाभाविक विलय जिनकी ऋतुएँ पूर्ण हो चुकी थीं।

यही कारण है कि वृद्धावस्था उनके द्वारा इतने भिन्न ढंग से मिली जाती है जिन्होंने, अंशतः भी, भूमिकाओं के स्वामित्व को भेद दिया है। उसके लिए जो भूमिकाओं को त्वचा के बजाय वेशभूषा जानता है, वृद्धावस्था में उनका ढीला होना विलोप नहीं बल्कि एक प्रकार का विवस्त्र होना है — उन भागों का क्रमिक रख देना जो सदा पूर्ण होने ही वाले थे, शोक के साथ मिले, हाँ, किंतु एक स्व के नष्ट किए जाने के आतंक के साथ नहीं, क्योंकि वह जागरूकता जिसने भूमिकाएँ पहनीं जानती है कि वह कभी भूमिकाएँ थी ही नहीं। वृद्धावस्था की हानियाँ वास्तविक हैं और शोक की जाती हैं। किंतु जो उनका शोक कर रहा है वह, प्रकट होता है, उनके साथ विलीन नहीं हो रहा — और वह पहचान कटु पकड़ की एक वृद्धावस्था और एक विचित्र और बढ़ते हल्केपन की वृद्धावस्था के बीच का अंतर है।

## वे विलय जिन्हें हम पहले ही झेल चुके हैं

हम, इस पुस्तक में पहले, इस तथ्य से मिले कि हम पहले ही हजार बार मर चुके हैं — कि बालक विलीन हुआ, युवा वयस्क विलीन हुआ, हर पूर्व स्व विलीन हुआ, और हम हर विलय झेल गए क्योंकि जो झेलता है वह विलीन होता स्व कभी था ही नहीं। वृद्धावस्था बस यही परिचित प्रक्रिया है दृश्य और सतत बनाई गई, विलय अब इतने निकट आते हुए कि हम उन्हें घटित होते देख सकते हैं। किंतु जो उन्हें देखता है वह वही है जिसने बालक को विलीन होते देखा और ह्रासित नहीं हुआ, वही जागरूकता जो, अपरिवर्तित, हर पूर्व स्व के माध्यम से बनी रही जिसे आपने उतारा है। आपने यह पहले किया है, असंख्य बार। वृद्धावस्था कोई नई और अंतिम प्रकार की हानि नहीं बल्कि वही ढीलापन है जिसे आप अपने समूचे जीवन झेल चुके हैं, अब बस अनदेखा करना कठिनतर।

वृद्धावस्था से उस उत्तरजीवी जागरूकता के दृष्टिकोण से मिलना, विलीन होती भूमिकाओं के दृष्टिकोण से के बजाय, उसे पूर्णतः रूपांतरित कर देता है। भूमिकाएँ ढीली होती हैं; वह जागरूकता जिसमें वे प्रकट हुई बनी रहती है, जैसी वह सदा रही। शरीर, ब्रह्मांडीय व्यवस्था से वह ऋण, क्रमशः वापस बुलाया जाता है; वह साक्षी जो उसमें जीया कभी शरीर नहीं था और उसके साथ वापस नहीं बुलाया जाता। यह वृद्धावस्था की सच्ची हानियों का खंडन नहीं, न उसकी वास्तविक कठिनाइयों की आध्यात्मिक टालमटोल। यह वह खोज है, ठीक तब उपलब्ध जब भूमिकाएँ छीनी जा रही हों, उस एक की जो आप में है जिस तक छीनना नहीं पहुँच सकता — और वृद्धावस्था, वहाँ से मिली, एक लम्बी पराजय से कम और एक लम्बा और कोमल स्पष्टीकरण अधिक बन जाती है, उस हर वस्तु का धीमा जलकर मिट जाना जो कभी अंततः आप थी ही नहीं।

### मृत्यु सबसे बड़े घटना-क्षितिज के रूप में

और इस प्रकार हम, जैसे जीवन के विषय में हर ईमानदार पुस्तक को पहुँचना ही चाहिए, मृत्यु पर आते हैं — सबसे बड़ा घटना-क्षितिज, अंतिम विलय, वह जिससे हम सबसे अधिक डरते और सबसे कम समझते हैं। मैं यह दिखावा नहीं करूँगा कि उसके परे क्या है मैं जानता हूँ; कोई ईमानदार व्यक्ति नहीं जानता, और इस पुस्तक ने वचन दिया है कि आपको ऐसी निश्चितता कभी न बेचेगी जो उसके पास नहीं। किंतु जो कुछ हमने अनुरेखित किया वह उससे मिलने के एक विशेष ढंग की ओर संकेत करता है। मृत्यु एक जीवन की सबसे बड़ी घटना की पूर्णता है, जिस पर अंतिम और सबसे व्यापक भूमिका — इस विशेष व्यक्ति की भूमिका — विलीन हो जाती है, जैसे हर भूमिका अपनी घटना की पूर्णता पर विलीन होती है। मृत्यु का भय, बड़े भाग में, स्वामी का अपनी परम संपत्ति, स्व, के विलय का भय है; और वह भय, सब औरों की भाँति, एक भूमिका को उसके लिए गलत समझ लेने पर टिका है जो व्यक्ति सबसे गहराई से है।

यदि वह जागरूकता जिसने बालक को विलीन होते देखा बालक नहीं थी, और बची रही; यदि वह साक्षी जिसमें हर पूर्व स्व प्रकट और विलीन हुआ उनमें से कोई कभी नहीं था, और बना रहा; तो शायद अंतिम विलय भी एक भूमिका की पूर्णता है बजाय उस जागरूकता के विलोप के जिसमें भूमिका प्रकट हुई। मैं इसे उत्तरजीविता के सिद्धांत के रूप में नहीं कहता; मैं नहीं जानता। किंतु मैं इसे हर उस वस्तु के स्वाभाविक विस्तार के रूप में देता हूँ जिसे हमने देखा: कि जो मरता है वह भूमिका है, वेशभूषा, दृश्य कर्ता, व्यक्तिगत खाता — जो सब सदा पूर्ण होने ही



वाले थे — और कि साक्षी, जो कभी कर्ता और कभी स्वामी नहीं था, इस सबसे बड़े विलय से भी वैसे मिलता है जैसे वह सब छोटों से मिला, एक ऐसी स्थिरता से जिस तक विलय नहीं पहुँचता। वह ब्रह्मांडीय व्यवस्था जिसने शरीर उधार दिया उसे वापस बुलाती है। वह जागरूकता जो शरीर को उधार दी गई थी उस व्यवस्था में लौट जाती है जिसे उसने वास्तव में कभी छोड़ा ही नहीं — झाग जो ज्वार का दावा करता है वह नहीं, बल्कि लहर, अंततः, उस समुद्र में शांत होती हुई जो वह सदा थी।

## पुनर्मिलन

एक पुनर्मिलन पर, दो वृद्ध खिलाड़ी मिलते हैं, दोनों उन शरीरों से बहुत आगे जो कभी उन्हें परिभाषित करते थे। पहला पीछे पहुँचना बंद नहीं कर पाता — पुरानी विजयों को फिर सुनाता हुआ, अपने वर्तमान हास को दशकों गए एक शिखर के विरुद्ध मापता हुआ, प्रबल वाले की भूमिका को उसकी पूर्णता के बहुत बाद तक पकड़ता हुआ, और हर दर्पण और हर अकड़ी सुबह में एक ऐसे स्व की हानि भोगता हुआ जिसे उसने कभी रखा नहीं। वह केवल बूढ़ा नहीं है; वह एक ऐसी वेशभूषा के लिए शोक में है जिसे वह अब भी पहनने का प्रयास कर रहा है, और शोक उन वर्षों को कटु कर देता है जो वास्तव में उसके पास हैं।

दूसरे ने वही भूमिका कभी पहनी थी, उतनी ही पूर्णता से, और उसे रख दिया है। वह विजयों को बिना पकड़े स्मरण करता है, प्रबल युवा शरीर को एक वेशभूषा के रूप में धामता है जिसे ऋतु ने निर्धारित किया और ऋतु ने ले लिया, और अपनी वर्तमान आयु से उसके खंडहर के रूप में नहीं जो वह था बल्कि अगली वस्तु के रूप में मिलता है जो वह है। उसने यह पहले किया है, वह जानता है — बालक को, युवा को, हर पूर्व स्व को रखा — और हर रखना झेला क्योंकि जो बचा वह भूमिका कभी थी ही नहीं। और इसलिए वह एक विचित्र हल्केपन से बूढ़ा होता है जिसे उसका पुराना साथी समझ नहीं सकता, यह खोजकर कि वह जिसने उन सब स्वों को विलीन होते देखा उनमें से कोई कभी नहीं था, और अब विलीन नहीं हो रहा — केवल, एक बार फिर, एक वेशभूषा रख रहा है।

## वृद्ध जो देता है

एक विशेष उपहार है जो केवल वृद्ध दे सकते हैं, और अभिचे वृद्ध उसे सबसे पूर्णता से देते हैं: यह उपहार कि वे आगे जा चुके और पाया कि विलय झेलने योग्य हैं। युवा, अपनी भूमिकाओं

को पकड़ते, आने वाली हानियों से डरते, वृद्धों की ओर यह देखने को देखते हैं कि उनकी प्रतीक्षा में क्या है — और जो वे एक ऐसे वृद्ध में देखते हैं जो हर मुरझाती भूमिका से कटुता से चिपका रहा है वह एक भयावह पूर्वावलोकन है, यह पुष्टि कि वृद्धावस्था केवल हानि है। किंतु जो वे एक ऐसे वृद्ध में देखते हैं जिसने भूमिकाएँ हल्के से रख दी हैं वह कुछ पूर्णतः और है: एक सजीव प्रदर्शन कि कोई प्रबल शरीर, केंद्रीय स्थान, भविष्य खो सकता है, और समग्र बना रह सकता है; कि विलय अनुग्रह से मिले जा सकते हैं; कि एक व्यक्ति में कुछ ऐसा है जिसे लम्बा छीनना हासित नहीं बल्कि उघाड़ देता है।

यही कारण है कि अभिंचा वृद्ध युवाओं के लिए इतना चुपचाप अमूल्य है, और इतना दुर्लभा वे केवल बूढ़े नहीं; वे आगे से एक प्रतिवेदन हैं, एक प्रदर्शन कि वे हानियाँ जिनसे युवा डरते हैं उस कटुता को उत्पन्न करने की आवश्यकता नहीं रखतीं जिससे वे डरते हैं, कि भूमिकाओं की पकड़ के बिना मिली वृद्धावस्था एक पराजय के बजाय एक स्पष्टीकरण हो सकती है। वह वृद्ध जिसने इस समूची पुस्तक का कार्य किया है — जिसने एक लम्बे जीवन भर व्यक्तिगत खाता और भूमिकाओं का स्वामित्व रख दिया है — अपनी ही आयु में, एक ऐसी शिक्षा बन जाता है जो कोई युवा व्यक्ति नहीं दे सकता: यह सजीव प्रमाण कि साक्षी विलयों को झेलता है, कि कोई बूढ़ा हो सकता है और हासित होने के बजाय हल्का किया जा सकता है, और कि आगे जो प्रतीक्षा करता है वह केवल हानि नहीं बल्कि, उनके लिए जो भूमिकाएँ रख देते हैं, एक विचित्र और बढ़ती स्वतंत्रता है।

## अंतिम तिहाई की स्वतंत्रता

बाद के वर्षों में एक स्वतंत्रता उपलब्ध है जिसे आरम्भिक वर्ष विरले ही अनुमति देते हैं, और वह वृद्धावस्था की हानियों की शांत क्षतिपूर्ति है। यौवन और मध्य-जीवन में हम भूमिकाओं और उनकी माँगों द्वारा दावा किए जाते हैं — कैरियर का निर्माण, बच्चों का पालन-पोषण, संसार में स्व की स्थापना, केंद्रीय भूमिकाओं का निर्मम प्रदर्शन — और माँगों के नीचे, भूमिकाओं को रख देने को थोड़ा स्थान है। किंतु जैसे भूमिकाएँ पूर्ण होती हैं, एक-एक करके, एक जीवन की अंतिम तिहाई में, एक अवकाश खुलता है जो पहले कभी उपलब्ध नहीं था: बच्चे बड़े और चले गए, कैरियर पीछे या समाप्त होता हुआ, केंद्रीय प्रदर्शन पूर्ण, और स्व, पहली बार, उन भूमिकाओं द्वारा कम दावा किया गया जिन्हें उसने दशकों अभिनीत किया।

यह ढीलापन पकड़ते स्व द्वारा हानि के रूप में अनुभव किया जाता है — महत्ता का हास, केंद्रीय स्थान का मुरझाना — किंतु उससे ठीक उस स्वतंत्रता के रूप में मिला जा सकता है जिसकी ओर यह समूची पुस्तक संकेत करती रही है, अब भूमिकाओं की स्वाभाविक पूर्णता से आती हुई। जिसने भूमिकाओं को हल्के से रखना सीख लिया है वह अंतिम तिहाई में पाता है, प्रदर्शक के बजाय जागरूकता होने का एक अभूतपूर्व अवकाश, उस साक्षी में विश्राम करने का जिसे व्यस्त दशकों ने बाहर भीड़ दिया था, संसार से केंद्रीय भूमिकाओं की निर्मम माँगों के बिना मिलने का। वृद्धावस्था की हानियाँ वास्तविक हैं; किंतु यह स्वतंत्रता भी, और वह केवल इसलिए उपलब्ध है कि भूमिकाएँ पूर्ण हो चुकी हैं — यही कारण है कि बाद के वर्ष, बिना पकड़ मिले, वह कटु उपसंहार नहीं हो सकते जिससे स्वामी डरता है बल्कि सबसे स्वतंत्र ऋतु, वह समय जब वेशभूषाएँ अंततः रख दी गई हैं और जिसने उन्हें पहना वह, पहली बार, बस उपस्थित है।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

बूढ़ा होना उस विलय से गुजरना है, प्रत्यक्ष दृष्टि में, जिसका यह पुस्तक वर्णन करती रही है — भूमिकाएँ एक-एक करके ढीली होती हुई। किंतु जो उन्हें ढीला होते देखता है वह वही जागरूकता है जिसने बालक को विलीन होते देखा और हासित नहीं हुई। आप हजार विलय झेल चुके हैं। वृद्धावस्था केवल परिचित प्रक्रिया है दृश्य बनाई गई।

एक भूमिका स्मरण कीजिए जिसे आप पहले ही पार कर चुके हैं — एक पूर्व स्व जिसे आपने पूर्णतः निभाया और फिर रख दिया। ध्यान दीजिए कि आप उसका विलय झेल गए, कि वह जागरूकता जिसने उसे जाते देखा अछूती थी, और कि वही जागरूकता उन भूमिकाओं को अब ढीला होते देखती है। उसे उसके प्रति अपना संबंध बनने दीजिए जिसे आयु आपसे रख देने को कहेगी।

## भय और अनजिया भविष्य

भय वह मन है जो एक ऐसे परिणाम को जब्त करने को क्षितिज के आर-पार पहुँचता है जो हुआ नहीं, और काँपता है क्योंकि वह नहीं कर सकता।

— भय पर टिप्पणी

भय, अपने चिरकालिक और संक्षारक रूप में — वह स्वच्छ भय नहीं जो सच्चे खतरे में शरीर को भर देता है और खतरा बीतने पर हट जाता है, बल्कि वह नीची, सतत चिंता जो इतने जीवनों को सताती है — मूल में, भविष्य के साथ एक संबंध है। और इस पुस्तक की शिक्षा के पास उस संबंध के विषय में एक सटीक और मुक्तिदायी बात कहने को है, क्योंकि भविष्य ठीक समस्त संभावनाओं का वह क्षेत्र है जिसका समूची पुस्तक ने वर्णन किया है, और चिरकालिक भय ठीक स्वामी का एक ऐसे समाधान को नियंत्रित करने का प्रयास है जो उसका नियंत्रित करने को नहीं।

भय में हम जो भोगते हैं उसका अधिकांश हम पहले से भोगते हैं, उन घटनाओं के विषय में जो हुई नहीं और अधिकतर कभी नहीं होंगी। मन घटना-क्षितिज के आर-पार एक ऐसे भविष्य में पहुँचता है जो सुलझा नहीं, डरावने परिणामों का पूर्वाभ्यास करता है, और काँपता है — किसी उपस्थित वस्तु पर नहीं, बल्कि एक ऐसी संभावना पर जिसे उसने एक तथ्य समझ लिया है। भय को इस पुस्तक के शब्दों में समझना उसे खतरे की प्रतिक्रिया के रूप में नहीं बल्कि स्वामित्व के एक रूप के रूप में देखना है: स्व यह आग्रह करता हुआ कि उसे एक ऐसा परिणाम सुरक्षित और सुनिश्चित करना ही होगा जो समूचा क्षेत्र, और चिंतित स्व नहीं, बैठाएगा।

### भविष्य एक क्षेत्र है, एक तथ्य नहीं

यहाँ वह पहचान है जो चिरकालिक भय को उसकी जड़ में ढीला करती है। जिस भविष्य से आप डरते हैं वह विद्यमान ही नहीं। वह होने की प्रतीक्षा में एक तथ्य नहीं, पहले से निर्धारित और बस आपसे छिपाया गया एक स्थिर परिणाम नहीं; वह संभावना का एक क्षेत्र है, सचमुच

खुला, अभी सुलझा नहीं, अभी किसी का नहीं। डरावनी घटना ने अपना क्षितिज पार नहीं किया। भयभीत परिणाम उन अनेकों में से एक है जिन्हें क्षेत्र अभी खुला थामे है, दशाओं से भारित किंतु अभी बैठा नहीं। जब आप भविष्य से डरते हैं, तो आप एक खुले क्षेत्र को एक बंद तथ्य के रूप में बरत रहे हैं, एक ऐसा समाधान भोगते हुए जो घटित हुआ नहीं और शायद कभी न हो, अभी-नहीं को निश्चित समझते हुए। मन एक सजीव कल्पित विपत्ति और एक वास्तविक विपत्ति के बीच अंतर नहीं बता सकता, और इसलिए वह शरीर को एक ऐसे खतरे की रसायनिकी से भर देता है जो एक ऐसे क्षेत्र में अनेक संभावनाओं में से केवल एक के रूप में विद्यमान है जो सुलझा नहीं।

यह स्वयं को यह कहने की सस्ती सान्त्वना नहीं कि सब ठीक हो जाएगा — शायद न हो; क्षेत्र ठीक उस परिणाम की ओर सुलझ सकता है जिससे आप डरते हैं। यह कुछ अधिक ईमानदार और अधिक मुक्तिदायी है: यह पहचान कि परिणाम अभी वास्तविक नहीं, अभी आपका नहीं, और आपका बैठाने को नहीं, और कि जो दुःख आप अभी झेल रहे हैं वह एक ऐसी घटना में जोड़ा गया दुःख है जो हुई नहीं, एक ऐसे स्वामी द्वारा जो अपने नियंत्रण से परे एक समाधान को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहा है। भविष्य एक क्षेत्र है, एक तथ्य नहीं। उससे डरना धुएँ को पकड़ना है।

### **जिससे हम डरते हैं उसका अधिकांश अपना क्षितिज कभी पार नहीं करता**

सरल अनुभव का एक टुकड़ा है जिसे हर ईमानदार व्यक्ति सत्यापित कर सकता है, और उसे मन के विपत्ति के निर्मम पूर्वानुमान के विरुद्ध ऊपर थामना सार्थक है। अपने जीवन भर जिन विपत्तियों से आप डरे उन पर पीछे देखिए — वे डरावने वार्तालाप, वे कल्पित असफलताएँ, वे पूर्वाभ्यास की गई हानियाँ, वे भविष्य जिन्होंने आपको जगाए रखा। उनमें से कितने वास्तव में हुए? बहुत-से, शायद अधिकांश, ने अपना क्षितिज बिल्कुल पार ही नहीं किया; वे संभावनाएँ बने रहे जिनकी ओर क्षेत्र कभी सुलझा ही नहीं, व्यर्थ डरे गए, उन घटनाओं के लिए पहले से भोगे गए जो बस कभी हुई ही नहीं। और जो हुए, उनमें से कितने ठीक उस रूप में आए जिसका भय ने पूर्वाभ्यास किया था? लगभग कोई नहीं; वास्तविक घटना, जब आई, अपनी ही वस्तु थी, अपने ही क्षण में मिली, विरले ही वह विपत्ति जो कल्पना ने बनाई थी।

यह यह तर्क नहीं कि कभी कुछ बुरा नहीं होता — कठिन घटनाएँ जीवित होने का पोत हैं, और जिससे हम डरते हैं उसका कुछ आता है। यह चिरकालिक भय की चौंका देने वाली व्यर्थता के

विषय में एक अवलोकन है, जो हजार विपत्तियाँ भोगता है ताकि, अधिक से अधिक, कुछ से मिले, और उन कुछ से भी बेहतर मिलता है जब उसने उनका पूर्वाभ्यास करते स्वयं को थका नहीं लिया। भविष्य का स्वामी, पहले से और पूर्ण रूप से, उन विपत्तियों का मूल्य चुकाता है जिनमें से अधिकांश कभी सौंपी ही नहीं जातीं। स्वामित्व छोड़ना वास्तविक खतरों के विषय में लापरवाह बन जाना नहीं — विवेक बना रहता है, बुद्धिमान सावधानी बनी रहती है — बल्कि उन भविष्यों को भोगने का विशाल, व्यर्थ कर चुकाना बंद करना है जो हुए नहीं और अधिकतर कभी नहीं होंगे।

### साहस खुले हाथ के रूप में

तो, इस पुस्तक के शब्दों में, साहस क्या है? भय की अनुपस्थिति नहीं, जो दुर्लभ और सदा वांछनीय तक नहीं, बल्कि परिणाम का स्वामित्व छोड़ते हुए पूर्णतः कर्म करने की इच्छा — एक अनिश्चित भविष्य में फैलाया गया खुला हाथ। साहसी व्यक्ति वह नहीं जिसने परिणाम सुनिश्चित कर लिया है और इसलिए सुरक्षित अनुभव करता है; ऐसा कोई आश्वासन है ही नहीं। साहसी व्यक्ति वह है जो पूर्णतः कर्म करता है, अपना समूचा कौशल और देखभाल क्षण में लाता है, और परिणाम को उस क्षेत्र को सौंप देता है जो उसे बैठाएगा — जो एक भिंचे हाथ के बजाय एक खुले हाथ से अनिश्चित भविष्य में पैर रखता है, इसलिए नहीं कि वह जानता है कि वह अच्छा निकलेगा, बल्कि इसलिए कि उसने वह आश्वासन माँगना बंद कर दिया है जिस पर भय आग्रह करता है और भविष्य दे नहीं सकता।

यही कारण है कि साहस और समर्पण, जो विपरीत-से लगते हैं, वस्तुतः दो ओर से देखी गई एक ही भंगिमा हैं। परिणाम का स्वामित्व समर्पित करना ठीक वही है जो किसी व्यक्ति को साहसपूर्वक कर्म करने को मुक्त करता है, क्योंकि भय का पक्षाघात सदा एक ऐसे परिणाम को पकड़ता स्वामी था जिसे वह नियंत्रित नहीं कर सकता था। पकड़ छोड़िए, और क्रिया फिर संभव हो जाती है — पूर्ण, प्रतिबद्ध क्रिया एक अनिश्चित क्षेत्र में, एकमात्र प्रकार जो कभी थी, अब उस भय से मुक्त जो पहले से भोगने के सिवा कभी कुछ नहीं कर रहा था। भविष्य खुला बना रहता है; परिणाम अनाश्वासित बना रहता है; क्षेत्र वैसे सुलझेगा जैसे वह सुलझता है। और जिसने उसका स्वामित्व रख दिया है वह उस खुलेपन में साहसी के खुले हाथ से चल सकता है, क्षेत्र में आगे जीता हुआ बजाय एक ऐसे तथ्य के समक्ष काँपने के जो अभी विद्यमान ही नहीं।

## वह विपत्ति जो कभी नहीं आई

एक स्त्री एक वार्तालाप के भय में तीन महीने बिताती है जिसके विषय में उसे निश्चय है कि वह विपत्ति में समाप्त होगा — रात्रि-रात्रि उसका पूर्वाभ्यास करती हुई, सबसे बुरे परिणाम की हर शाखा भोगती हुई, विपत्ति को एक ऐसे भविष्य में बार-बार जीती हुई जो हुआ नहीं। जब तक वार्तालाप आता है वह डरावनी घटना को कल्पना में शायद सौ बार झेल चुकी है, उसका पूर्ण मूल्य बार-बार चुकाते हुए। और फिर वार्तालाप होता है, और वह पूर्वाभ्यास से बिल्कुल भिन्न है — अजीब, संक्षिप्त, झेलने योग्य, मिनटों में सुलझा — और वह पहचानती है कि उसने सौ विपत्तियाँ भोगीं ताकि, अंत में, किसी से न मिले।

यह सौभाग्यपूर्ण अपवाद नहीं बल्कि चिरकालिक भय का साधारण नियम है, और वह उसे अपने समूचे जीवन भर सत्यापित कर सकती थी यदि उसने देखा होता: वे डरावने भविष्य जिन्होंने अपना क्षितिज कभी पार नहीं किया, वे पूर्वाभ्यास की गई विपत्तियाँ जो कभी आई नहीं, वह विशाल कर पहले से चुकाया गया उन घटनाओं के लिए जिनमें से अधिकांश कभी सौंपी ही नहीं गई। भय विवेक-सा, तैयारी-सा, खतरे को गंभीरता से लेना-सा अनुभव हुआ; किंतु उसने कुछ तैयार नहीं किया और कुछ नहीं रोका, और केवल एक जीवन के तीन महीने एक ऐसा तथ्य भोगने में बिताए जो अभी विद्यमान नहीं था और अधिकतर कभी न होता। जिस भविष्य से वह डरी वह एक क्षेत्र था, एक तथ्य नहीं — और वार्तालाप, जब उसने अंततः अपना क्षितिज पार किया, एक अकेले साधारण क्षण में मिला गया, एक ऐसी स्त्री द्वारा जो उससे पहले ही, व्यर्थ, सौ बार मिल चुकी थी।

## स्वच्छ भय और चिरकालिक भय

दो वस्तुओं में भेद करना सार्थक है जिन्हें भय शब्द एक में मिला देता है, क्योंकि इस अध्याय की शिक्षा एक पर लागू होती है और दूसरे पर नहीं। स्वच्छ भय है — वास्तविक और उपस्थित खतरे की उपस्थिति में शरीर का तीक्ष्ण, पूर्ण भर जाना, जो मन को केंद्रित करता है, शरीर को सक्रिय करता है, और खतरा बीतते ही हट जाता है। यह भय कोई समस्या नहीं; वह एक उपहार है, सच्ची आपात्काल में शरीर की बुद्धि, और किसी को उससे मुक्त होने की कामना नहीं करनी चाहिए। और चिरकालिक भय है — उन घटनाओं के विषय में नीची, सतत चिंता जो उपस्थित नहीं और शायद कभी न आएँ, एक अनसुलझे भविष्य को नियंत्रित करने को क्षितिज के आर-पार पहुँचना, वह भय जो सक्रिय नहीं करता बल्कि केवल संक्षारित करता है। यही वह भय है

जिसे यह अध्याय संबोधित करता है, और वह स्वच्छ भय से उतना ही भिन्न है जितना एक धुआँ-चेतावनी एक ऐसे सायरन से जो कभी नहीं रुकता।

दोनों का भ्रम अनेक लोगों को फँसाए रखता है, क्योंकि वे कल्पना करते हैं कि अपनी चिरकालिक चिंता छोड़ना उस स्वच्छ भय को खोना होगा जो उन्हें सुरक्षित रखता है, वास्तविक खतरों के समक्ष लापरवाह बन जाना। उल्टा सत्य है। चिरकालिक भय वास्तविक खतरे के प्रति हमारी प्रतिक्रिया को सुधारता नहीं; वह उसे घटिया करता है, हमें पहले से थकाता हुआ, हमारे ध्यान को हजार कल्पित विपत्तियों भर बिखेरता हुआ ताकि हम वास्तविक से, जब वह आए, पहले से रिक्त मिलें। चिरकालिक भय छोड़ना स्वच्छ भय को उसका उचित कार्य करने को मुक्त करना है — सच्चे उपस्थित खतरे के प्रति पूर्णतः उपलब्ध होना ठीक इसलिए कि हम उन खतरों के भय में डूब नहीं रहे जिन्होंने अपना क्षितिज पार नहीं किया। शरीर की चेतावनी बनी रहती है, तीक्ष्ण और उपयोगी; जो रख दिया जाता है वह सायरन है जो कभी किसी वास्तविक वस्तु की चेतावनी ही नहीं दे रहा था।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

भय में हम जो भोगते हैं उसका अधिकांश हम पहले से भोगते हैं, उन घटनाओं के विषय में जिन्होंने अपना क्षितिज पार नहीं किया और अधिकतर कभी नहीं करेंगी। भविष्य एक क्षेत्र है, एक तथ्य नहीं; उससे डरना धुएँ को पकड़ना है। साहस भय की अनुपस्थिति नहीं बल्कि एक अनिश्चित क्षेत्र में फैलाया गया खुला हाथ है।

आज एक वस्तु नाम दीजिए जिससे आप डरते हैं, और ध्यान दीजिए कि वह हुई नहीं — कि वह एक ऐसे क्षेत्र में एक संभावना है जो सुलझा नहीं, पहले से बैठा एक तथ्य नहीं। बुद्धिमान सावधानी त्यागे बिना, परिणाम को नियंत्रित करने की माँग रख दीजिए, और खुले भविष्य में एक खुले हाथ से एक पूर्ण क्रिया कीजिए।



## क्रोध और आहत स्व

क्रोध स्वादिष्ट है क्योंकि वह हमें धर्मी बना देता है।

ठीक यही कारण है कि उसे रखना इतना कठिन है।

— क्रोध पर टिप्पणी

क्रोध हमारे सबसे शक्तिशाली और सबसे संजोए दुःखों में से एक है, और हम उसे ठीक इसलिए संजोते हैं कि वह दुःख-सा अनुभव नहीं होता — वह शक्ति-सा, न्याय-सा, एक आहत हुए स्व की धर्मी प्रतिक्रिया-सा अनुभव होता है। यही उसे रखना इतना कठिन और समझना इतना महत्वपूर्ण बनाता है। इस पुस्तक की शिक्षा क्रोध तक एक ऐसे द्वार से पहुँचती है जिसे हम पहले ही खोल चुके हैं: आहत वाले की भूमिका, वह वेशभूषा जिसे हम सबसे प्रचंडता से पहनते हैं क्योंकि वह एक ऐसी धार्मिकता प्रदान करती है जो अन्य भूमिकाओं का दुःख नहीं देता।

मुझे स्पष्ट कर देने दीजिए कि यह अध्याय क्रोध के दमन की सलाह नहीं देता, जो केवल एक और रूप में स्वामित्व है — कर्ता अब अपनी ही समता का कर्तृत्व दावा करता हुआ, भावना पर बैठा हुआ जब तक वह बगल से रिस न जाए। न यह इनकार करता है कि वास्तविक अन्याय होते हैं और उनके प्रति स्पष्ट प्रत्युत्तर ठीक है। यह केवल उस विशेष दुःख पर प्रश्न करता है जो क्रोध जोड़ता है: आहत की भूमिका का जन्म करना, एक घटना का एक निर्णय में परिवर्तन, उसके विरुद्ध खाते का रखना जिसने हमारे साथ अन्याय किया, और एक ऐसे न्याय के नाम पर हमारी अपनी शांति का संक्षारण जिसकी क्रोध वास्तव में सेवा नहीं करता।

### वह धार्मिकता जो क्रोध प्रदान करता है

ध्यान दीजिए कि क्रोध हमें क्या देता है, क्योंकि हम में कुछ भी अपने रख-रखाव का मूल्य चुकाए बिना नहीं टिकता, और क्रोध भरपूर चुकाता है। क्रोधित होना सही होना है। आहत वाले की भूमिका नैतिक उन्नयन की भूमिका है: दूसरे ने गलती की, मुझे चोट पहुँची, और चोट मुझे उच्च-भूमि पर रखती है, एक क्षमा-याचना, एक प्रतिकर, एक दोषमुक्ति का ऋणी। यह वह छिपी

क्षतिपूर्ति है जो क्रोध को रखना इतना कठिन बनाती है — वह एक ऐसा दुःख है जो चापलूसी करता है, एक ऐसा घाव जो सम्मानित करता है, एक ऐसी पीड़ा जो धार्मिकता में लिपटी आती है। हम आहत पक्ष के रूप में दुःख भोगना पसंद करेंगे, नैतिक ऊँचाई घेरते हुए, बजाय शिकायत छोड़ने और उस समतल भूमि पर उतरने के जहाँ कोई हमें कुछ ऋणी नहीं। धार्मिकता वह रिश्ता है जो क्रोध अपना स्थान बनाए रखने को चुकाता है।

और व्यक्तिगत खाता जो सब रिश्तों चुकाता है उनकी भाँति, यह भी जाली है। जो धार्मिकता क्रोध प्रदान करता है वह वास्तव में न्याय की सेवा नहीं करती; वह स्व की सेवा करती है, उसके ऋणी होने के बोध को पोषित करती हुई, उसके विरुद्ध खाता खुला रखती हुई जिसने उसके साथ अन्याय किया, और ठीक उस शांति को संक्षारित करती हुई जिसकी रक्षा का वह दावा करती है। वास्तविक अन्याय के प्रति वास्तविक प्रत्युत्तर — जो हुआ उसका स्पष्ट देखना, उसे रोकने या सुधारने को उचित क्रिया — को आहत वाले की भूमिका की आवश्यकता ही नहीं; वस्तुतः भूमिका उसे क्षीण करती है, क्योंकि अपनी ही धार्मिकता में लीन एक स्व स्थिति को कम स्पष्ट देखता है, अधिक नहीं। क्रोधित व्यक्ति अधिक न्यायी नहीं। वह अधिक धर्मी है, जो एक भिन्न और कहीं कम उपयोगी वस्तु है।

## दूसरे का कृत्य अपना ही क्षितिज पार कर गया

अब समूची पुस्तक की संरचना उस पर लागू कीजिए जिसने आपके साथ अन्याय किया। उनका कृत्य — कठोर शब्द, विश्वासघात, चोट — उनके दशाओं के समूचे क्षेत्र में से अपना ही घटना-क्षितिज पार कर गया: उनकी थकान, उनका इतिहास, उनका भय, उनकी अपनी अनुकूलनता जो आपके उनसे कभी मिलने से पहले तक पीछे पहुँचती है, कारणों का समूचा जाल उस कृत्य पर अभिसरित होता हुआ ठीक जैसे ऐसे जाल आपके पर अभिसरित होते हैं। यह कृत्य को अहानिकर नहीं बनाता; हानि वास्तविक है। किंतु यह उस चित्र को घुला देता है जिस पर क्रोध निर्भर है: एक संप्रभु रचयिता का चित्र जिसने स्वतंत्रता से चुना, स्पष्ट और दुर्भावपूर्ण कर्तृत्व की स्थिति से, कि वह आपके साथ अन्याय करे, और जो इसलिए आपके धर्मी खाते का पात्र है उनके विरुद्ध। जिसने आपके साथ अन्याय किया वह, आपकी भाँति, क्षेत्र द्वारा निर्धारित एक घटना में एक सहभागी था, एक भूमिका निभाता हुआ जो उनके समूचे से अवक्षेपित हुई — दुर्भाव का एक स्वतंत्र संप्रभु रचयिता नहीं बल्कि एक स्थल जिस पर एक घटना सुलझी।

इसे देखना हानि का बहाना देना या उस प्रत्युत्तर को त्यागना नहीं जिसके लिए हानि ठीक ही पुकारती है। यह व्यक्ति के विरुद्ध व्यक्तिगत खाता छोड़ना है — निर्णय, ऋणी प्रतिकर, धर्मी शिकायत घटना के पूर्ण होने के बहुत बाद तक जीवित रखी गई। आप स्पष्ट देख सकते हैं कि कृत्य ने हानि पहुँचाई, उससे वैसे प्रत्युत्तर दे सकते हैं जैसा स्थिति अपेक्षित करती है, एक संबंध समाप्त तक कर सकते हैं या एक न्याय खोज सकते हैं, जबकि आहत वाले के रूप में एक स्थायी पहचान बनाने और वह संक्षारक खाता रखने से इनकार करते हुए जिसकी क्रोध माँग करता है। कृत्य अपना क्षितिज पार कर पूर्ण हो गया; आहत वाले की भूमिका को हानि की वास्तविकता का सम्मान करने को जीवित रखने की आवश्यकता नहीं। वस्तुतः, उसे जीवित रखना किसी का सम्मान नहीं करता; वह केवल आपको एक पूर्ण हुई घटना से जकड़ता है, एक ऐसे रंगमंच में जो बंद हो गया, एक रिक्त सभागार के लिए आहत पक्ष का अभिनय करते हुए।

### क्षमा एक भूमिका के विलयन के रूप में

यह हमें क्षमा का एक स्पष्ट और सच्चा चित्र देता है उससे जो हम सामान्यतः ढोते हैं। क्षमा एक आहत पक्ष द्वारा एक अपराधी को क्षमादान देना नहीं — वह चित्र दोनों भूमिकाओं को पूर्णतः अक्षत रखता है, उदार शिकार और ऋणी अपराधी, और यही कारण है कि क्षमा इतनी बार असंभव या झूठी लगती है, एक ऐसी उदारता का प्रदर्शन जिसे हम अनुभव नहीं करते। क्षमा, इस पुस्तक के शब्दों में, आहत वाले की भूमिका का विलयन है — छोड़ना, उस ऋण का नहीं जो दूसरा ऋणी है, बल्कि उस पहचान का जो आपने उनके अन्याय पर बनाई है। यह कुछ ऐसा नहीं जो आप उनके लिए करते हैं; यह एक वेशभूषा को रख देना है जिसे आप पहने हुए थे, एक विमोचन जो आपको मुक्त करता है चाहे दूसरा कभी हानि स्वीकारे या न करे, चाहे वे इसके पात्र हों या न हों, क्योंकि यह कभी अंततः उनके विषय में था ही नहीं। खाता विलीन होता है क्योंकि आप उसे रखना बंद कर देते हैं, और आहत स्व विलीन होता है क्योंकि आप उसे निभाना बंद कर देते हैं।

इस प्रकार की क्षमा इच्छा के एक कृत्य से उतनी ही नहीं विवश की जा सकती जितनी समर्पण; इच्छा करना आहत स्व का अब भी अपनी शिकायत पकड़ना है। वह, इस पुस्तक की हर वस्तु की भाँति, समझ के माध्यम से पकती है — यह देखना कि दूसरे का कृत्य अपने संप्रभु कर्तृत्व से परे दशाओं में से अपना ही क्षितिज पार कर गया, कि घटना पूर्ण हो चुकी, कि आहत वाले की भूमिका एक वेशभूषा है जो आपको एक बंद दृश्य से जकड़े रखती है, कि वह धार्मिकता

जो वह प्रदान करती है एक जाली है। जैसे वह देखना गहराता है, शिकायत स्वयं ही ढीली हो जाती है, इसलिए नहीं कि आपने उदार होने का निर्णय किया बल्कि इसलिए कि आपने देख लिया कि कभी क्षमादान देने को कोई पृथक संप्रभु अपराधी था ही नहीं, और कभी कोई पृथक आहत स्व नहीं जिसे क्षमादान सम्मानित करता — केवल एक घटना, पूर्ण हुई, और स्वतंत्रता, अभी उपलब्ध, उसकी भूमिका को जीवित रखने से इनकार करने की।

## पुराना द्वेष

एक व्यक्ति ग्यारह वर्ष एक द्वेष ढोता है। किसी ने उसके साथ अन्याय किया — सचमुच, हानि वास्तविक थी — और उसने तब से खाता खुला रखा है, उससे परामर्श करता हुआ, उसे पालता हुआ, उस पर हर वापसी के साथ सही होने की परिचित और अनप्रिय गर्मी अनुभव करता हुआ। जिसने उसके साथ अन्याय किया वह बहुत पहले भूल चुका; दूर चला गया, आगे बढ़ गया, शायद मर भी गया; और द्वेष अब किसी को हानि नहीं पहुँचाता सिवाय उस व्यक्ति के जो उसे रखता है, उसे एक ऐसे दृश्य से जकड़ता हुआ जो ग्यारह वर्ष पहले बंद हो गया, एक लम्बे रिक्त रंगमंच में, जहाँ वह अब भी, रात्रि-रात्रि, बिना किसी श्रोता के, आहत वाले की भूमिका निभाता है।

और फिर एक साधारण दिन, बिना किसी नाटकीय कारण के, वह उसे देख लेता है — देख लेता है कि कृत्य एक ऐसे समूचे में से अपना क्षितिज पार कर गया जिसे उसने कभी नहीं समझा, कि वह बहुत पहले पूर्ण हो गया, कि वह धार्मिकता जिसे वह इन सब वर्षों उससे खींचता रहा एक जाली थी जो भूमिका को जीवित रखने को चुकाई गई, और कि उसने अकेले एक भार ढोया है जिसे दूसरे ने रख दिया या कभी अनुभव ही नहीं किया। वह हानि का अनुमोदन नहीं करता; वह वास्तविक थी। वह बस खाता रखना बंद कर देता है, आहत वाले की भूमिका को विलीन होने देता है, और उस उच्च-भूमि से उतर जाता है जिस पर वह एक दशक से अधिक खड़ा रहा है — और राहत इतनी अनुपातहीन, इतनी विशाल इतने सरल कृत्य के लिए है, कि वह आश्चर्य करता है कि उसने उसे इतने लम्बे क्यों ढोया। उत्तर वही है जो यह अध्याय देता है: क्योंकि उसने उसे सही बनाया, और सही होना सबसे महँगी सान्त्वना है जो हो सकती है।

## चमक और सुलगन

भेद कीजिए, भय की भाँति, दो वस्तुओं में जिन्हें क्रोध शब्द एक में मिला देता है। स्वच्छ चमक है — एक उपस्थित अन्याय के सामने क्रोध का तीक्ष्ण, पूर्ण उठना, जो एक प्रत्युत्तर को केंद्रित कर सकता है, एक आवश्यक टकराव को ईंधन दे सकता है, और फिर हट जाता है, पूर्ण, जब क्षण बीतता है। स्वच्छ भय की भाँति, यह समस्या नहीं; वह एक स्वाभाविक ऊर्जा है, और वह सेवा कर सकती है। और सुलगन है — रखी गई शिकायत, घटना के पूर्ण होने के बहुत बाद तक खुला रखा खाता, महीनों या वर्षों तक बनाए रखी आहत वाले की भूमिका, वह धीमी जलन जो एक ऐसी धार्मिकता पर स्वयं को गर्म करती है जो किसी भी प्रयोजन से अधिक जी चुकी है। यही वह क्रोध है जो संक्षारित करता है, और वह स्वच्छ चमक से उतना ही भिन्न है जितनी एक नियंत्रित अग्नि उससे जिसे दीवारों में सुलगने को छोड़ दिया गया है।

स्वच्छ चमक, पूर्णतः अनुभव की गई और पूर्ण होने दी गई, थोड़ी हानि करती है और कभी-कभी वास्तविक भला; सुलगन वह है जो विषाक्त करती है — एक पूर्ण हुई घटना का एक स्थायी शिकायत में परिवर्तन, दूसरे के विरुद्ध रखा खाता उस चमक के बहुत बाद तक जो स्वाभाविक रूप से बीत गई होती। और सुलगन मूल अन्याय द्वारा बनाए नहीं रखी जाती, जो बहुत पहले पूर्ण हो गया, बल्कि खाता खुला रखने, उस पर वापस लौटने, उससे धार्मिकता की जाली गर्मी खींचने के जारी चुनाव द्वारा। क्रोध के साथ काम करना स्वच्छ चमक को दबाना नहीं, जो ईमानदार और कभी-कभी आवश्यक है, बल्कि सुलगन को अस्वीकारना है — चमक को उठने, सूचित करने, और पूर्ण होने देना, जबकि उसे रखी गई शिकायत की धीमी, स्व-गर्म करती आग में जमा करने से इनकार करना। चमक मौसम है; सुलगन एक आग है जिसे आप, प्रतिदिन, पोषित करना चुन रहे हैं।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

क्रोध स्वादिष्ट है क्योंकि वह हमें धर्मी बना देता है, और ठीक यही कारण है कि उसे रखना इतना कठिन है। आहत वाले की भूमिका हमें उन्नत करती है, और हम उच्च-भूमि पर दुःख भोगना पसंद करेंगे बजाय वहाँ उतरने के जहाँ कोई हमें कुछ ऋणी नहीं। किंतु धार्मिकता एक जाली है, और वह स्व की सेवा करती है, न्याय की नहीं।

एक शिकायत लीजिए जिसे आप थामे हैं और उसमें छिपी रिश्त को अनुभव कीजिए — वह ढंग जिससे आहत होना आपको सही बना देता है। फिर स्मरण कीजिए कि दूसरे का कृत्य एक ऐसे समूचे में से अपना क्षितिज पार कर गया जिसे आप देख नहीं सकते, और आहत वाले की भूमिका को ढीला होने दीजिए, हानि का अनुमोदन करके नहीं, बल्कि खाता जीवित रखने से इनकार करके।

## शोक और जो नहीं मरता

शोक वह प्रेम है जिसके जाने को कहीं नहीं। उसे सदा थामे रखकर नहीं,

बल्कि उसे गति करने देकर सम्मानित किया जाता है।

— हानि पर टिप्पणी

इस पुस्तक को जिन सब स्थानों में प्रवेश करना ही है, कोई शोक से अधिक कोमलता नहीं माँगता — किसी प्रियजन की हानि, वह महान वियोग जो हर लम्बा जीवन अंततः लाता है। यहाँ, कहीं और से अधिक, शिक्षा को एक चतुर तर्क या एक आध्यात्मिक टालमटोल नहीं होना चाहिए, क्योंकि शोक सबसे ईमानदार वस्तु है जो हृदय करता है, और कोई दर्शन जो उसे तर्क से दूर करने का प्रयास करता त्यागे जाने का पात्र होगा। सो मुझे आरम्भ में ही कह देने दीजिए कि इस अध्याय में कुछ भी आपसे कम शोक करने, या जिसे आपने खोया उससे कम प्रेम करने, या उस पवित्र कार्य में जल्दी करने को नहीं कहता जिसकी हानि माँग करती है। यह केवल यह माँगता है कि, बड़ी सावधानी से, उस शोक के बीच भेद किया जाए जो सम्मानित करता है और उस शोक के बीच जो जकड़ता है — और बहुत कोमलता से, उसकी ओर संकेत किया जाए जो हम में नहीं खोया जाता जब बाक़ी सब खो जाता है।

हम इस भेद को पहले छुआ, विलय के अध्याय में; यहाँ मैं उसे सबसे कठिन दशा तक घर लाना चाहता हूँ, एक भूमिका या एक संपत्ति की हानि नहीं बल्कि एक व्यक्ति की जिससे हमने प्रेम किया, जो सबसे गहरा घाव है जिसे कोई मनुष्य भोग सकता है और वह जहाँ इस पुस्तक की शिक्षा सबसे अधिक परखी जाती है और, मेरे विश्वास में, सबसे अधिक सान्त्वना देती है — हानि को घटाकर नहीं, बल्कि उसे उघाड़कर जिसे हानि छू नहीं सकती।

**वह शोक जो गति करता है और वह शोक जो जकड़ता है**

एक शोक है जो गति करता है और एक शोक है जो जकड़ता है, और अंतर इसमें नहीं कि हमने कितना प्रेम किया बल्कि हानि के साथ हमारे संबंध में है। जो शोक गति करता है वह पूर्णतः

उठता है, पूर्णतः अनुभव किया जाता है, शरीर और दिनों और वर्षों में से मौसम की भाँति गति करता है, रूप बदलता हुआ, नरम होता हुआ, लहरों में लौटता हुआ, और क्रमशः — भूलकर नहीं, बल्कि एक धीमी और स्वाभाविक पूर्णता से — एक ऐसे प्रेम में बैठ जाता है जिसे वास्तविक बने रहने को अब तीव्र घाव की आवश्यकता नहीं। यह शोक पवित्र है और उसमें जल्दी या दमन नहीं किया जाना चाहिए; वह हानि के प्रति हृदय की उचित प्रतिक्रिया है, और उसे बीच में काट देना उस प्रेम के विरुद्ध एक हिंसा होगी जिसे वह व्यक्त करता है। जो शोक जकड़ता है वह कुछ और है: शोकग्रस्त की भूमिका को पूर्ण होने देने से इनकार, उसके साथ अंतिम शेष बंधन के रूप में घाव से चिपकना जो गया है, यह विश्वास — सामान्यतः अनकहा — कि चोट रोकना मृतक के साथ विश्वासघात होगा, उन्हें दूसरी बार जाने देना, उनसे कम प्रेम करना।

यह दूसरा विश्वास सबसे कोमल संभव चुनौती का पात्र है, क्योंकि वह इतने लोगों को एक ऐसे शोक में बंदी बनाता है जिसने खोए हुए को सम्मानित करना बंद कर दिया है और केवल जीवित को घायल करना आरम्भ किया है। तीव्र शोक को गति करने और पूर्ण होने देना, अपने ही समय में और कभी बल से नहीं, उसके साथ विश्वासघात या उससे कम प्रेम करना नहीं जिसे आपने खोया। यह उसी व्यवस्था पर विश्वास करना है जो आरम्भ में प्रेम को सत्ता में लाई। प्रेम घाव के स्थायित्व पर निर्भर नहीं; प्रेम वास्तविक था, वास्तविक है, और वास्तविक बना रहेगा जब तीव्र शोक एक ऐसी वस्तु में नरम हो गया हो जो खोए हुए को वेदना के बजाय कोमलता से थाम सके। एक घाव को प्रेम के नाम पर सदा खुला ढोना घाव को प्रेम के साथ भ्रमित करना है — और घाव कभी प्रेम था ही नहीं। वह केवल वह रूप था जो प्रेम ने हानि की पहली वेदना में लिया।

## हम वास्तव में किसका शोक कर रहे हैं

जब हम एक व्यक्ति का शोक करते हैं, तो हम, अंशतः, साझा घटनाओं और भूमिकाओं के एक विशाल जाल के विलय का शोक कर रहे हैं — उनके द्वारा प्रेम किए जाने वाले की भूमिका, वे दैनिक घटनाएँ जो अब घटित नहीं होंगी, वह भविष्य जो उद्धाटित होने को था और अब नहीं होगा, वह समूचा साझा संसार जो उनके पूर्ण होने पर पूर्ण हो गया। यह वास्तविक है और ठीक ही शोक किया जाता है। किंतु ध्यान दीजिए कि शोक की विशेष वेदना का अधिकांश हमारे सब दुःख के उसी स्रोत से आता है: यह माँग कि एक पूर्ण हुई घटना पूर्ण न हो, उस विलय का



इनकार जिससे हर घटना गुजरती है, एक ऐसे क्षितिज के आर-पार पीछे पहुँचना जो बंद है। हम उस अनित्यता के विरुद्ध रोष करते हैं जिसने उन्हें लिया, मानो अनित्यता हम पर विशेष रूप से लाई गई एक क्रूरता हो, यह भूलते हुए कि वही अनित्यता है जिसने प्रेम को आरम्भ में अमूल्य बनाया — कि एक ऐसा प्रेम जो खोया न जा सकता वह वह व्यथित, नश्वर, अप्रतिस्थापनीय वस्तु न होता जो प्रेम है।

यह हानि को क्षण में स्वीकार्य नहीं बनाता, न बनाना चाहिए; हृदय पहले अँधेरे में स्वयं को दर्शन से सान्त्वना नहीं देता। किंतु समय के साथ, यह पहचान प्रवेश कर सकती है कि हम उन घटनाओं की पूर्णता का शोक कर रहे हैं जो सदा, सब घटनाओं की भाँति, पूर्ण होने ही वाली थीं, और कि उनकी पूर्णता के विरुद्ध रोष — स्वाभाविक और मानवीय जितना वह है — उसी पकड़ का एक रूप है जो इस पुस्तक भर दुःख का स्रोत रहा है, अब अपने सबसे सहानुभूतिपूर्ण और सबसे क्षम्य रूप में। विलय के साथ संधि करना, धीरे और कभी बल से नहीं, खोए हुए से प्रेम करना बंद करना नहीं। यह यह माँग करना बंद करना है कि पूर्ण हुई घटना अपूर्ण की जाए, और प्रेम को एक ऐसे रूप में जीवित रहने देना है जिसे घाव के सतत पुनः खुलने की आवश्यकता नहीं।

## जो नहीं मरता

और यहाँ, सबसे कठिन स्थान पर, यह पुस्तक वह देती है जिसकी ओर वह आरम्भ से संकेत करती रही है। हमने देखा है कि साक्षी — वह जागरूकता जिसमें सब घटनाएँ प्रकट होती हैं — स्वयं कभी एक भूमिका नहीं थी, कभी कर्ता नहीं, कभी स्वामी नहीं, और उन घटनाओं से कभी घायल नहीं होता जो उसके भीतर प्रकट होती हैं। शोक में, यह जागरूकता भी उपस्थित है: शोक है, और वह जागरूकता है जिसमें शोक प्रकट होता है, और वह जागरूकता स्वयं शोकग्रस्त नहीं, क्योंकि वह कभी उनके-द्वारा-प्रेम-किए-जाने-वाले की भूमिका नहीं थी जिसे हानि ने विलीन किया। यह शोक का खंडन या उससे पलायन नहीं; शोक वास्तविक है और पूर्णतः अनुभव किया जाता है, जागरूकता के भीतर उठता हुआ। यह यह खोज है, हानि की गहराइयों में भी उपलब्ध, कि व्यक्ति केवल शोकग्रस्त ही नहीं बल्कि वह जागरूकता भी है जिसमें वियोग प्रकट होता है — और कि यह जागरूकता, जो व्यक्ति सबसे गहराई से है, हानि से ह्रासित नहीं हुई और हो नहीं सकती।

और भी है, और मैं उसे सावधानी से देता हूँ, एक संकेत के रूप में और एक सिद्धांत के रूप में नहीं। यदि जो हम सबसे गहराई से हैं वह व्यक्तिगत भूमिका नहीं बल्कि साक्षी जागरूकता है, हम सब में वही, एक व्यवस्था अनेक के रूप में प्रकट होती हुई — तो वह जिससे आपने प्रेम किया था, सबसे गहराई से, वही जागरूकता थी, वही व्यवस्था, क्षण-भर के लिए उस भूमिका में आकार ली जिससे आपने प्रेम किया। भूमिका पूर्ण हुई; वेशभूषा रख दी गई; दृश्य व्यक्ति अपनी अंतिम घटना के क्षितिज पर विलीन हो गया। किंतु वह जागरूकता जिसने वह भूमिका पहनी, वह व्यवस्था जिसने क्षण-भर के लिए वह आकार लिया — क्या वह कभी सचमुच उस जागरूकता से पृथक थी जिसने आपकी पहनी, उस व्यवस्था से जिसने क्षण-भर के लिए आपका आकार लिया? मैं यह दावा नहीं करता कि क्या बचता है मैं जानता हूँ, और मैं आपको ऐसी सान्त्वना नहीं बेचूंगा जिसे मैं सत्यापित नहीं कर सकता। किंतु जो कुछ इस पुस्तक ने अनुरेखित किया वह सुझाता है कि जो मरता है वह भूमिका है, वेशभूषा, दृश्य कर्ता, व्यक्तिगत खाता — और कि साक्षी, जागरूकता, वह एक व्यवस्था, जो कभी पृथक भूमिका और कभी स्वामी नहीं थी, उस रूप के विलय से अछूती है जिसे उसने क्षण-भर के लिए पहना। वह जिसका आप शोक करते हैं वह, सबसे गहराई से, उस व्यवस्था से पृथक नहीं था जो तारों को थामती और आपके हृदय को धड़काती है — और वह व्यवस्था मरी नहीं। उसने एक भूमिका रख दी जिसे उसने क्षण-भर के लिए लिया था, जैसे वह सब भूमिकाएँ रखती है, और जैसे वह एक दिन आपकी रखेगी — लहर उस समुद्र में शांत होती हुई जो आप दोनों सदा थे।

## दो कमरे

दो व्यक्ति एक ही वर्ष में एक जीवनसाथी खोते हैं। पहली कमरे को ठीक वैसा रखती है जैसा वह था — अलमारी में कपड़े, मेज़ पर खुली पुस्तक, समूचा स्थान उस पूर्णता के विरुद्ध संरक्षित जिसे वह स्वीकार नहीं कर सकती — और अपने शोक को भी, ठीक वैसा रखती है जैसा वह था, घाव को वर्ष दर वर्ष खुला थामे हुए क्योंकि उसे भरने देना एक विश्वासघात-सा, एक दूसरी हानि-सा, एक जाने-देना-सा लगता है जिसकी वह स्वयं को अनुमति नहीं दे सकती। वह प्रेम को सम्मानित नहीं कर रही; वह प्रेम को घाव के साथ भ्रमित कर रही है, और घाव, बल से खुला रखा गया, धीरे-धीरे उसके शेष जीवन का समूचा बन जाता है।

दूसरी कम शोक नहीं करती — हानि उतनी ही सम्पूर्ण, प्रेम उतना ही गहरा था — किंतु समय के साथ, और कभी बल से नहीं, वह तीव्र शोक को गति करने देती है। वह भूलती नहीं, कम

प्रेम नहीं करती, जल्दी नहीं करती; वह बस घाव को, उसकी अपनी धीमी ऋतु में, एक ऐसी वस्तु में नरम होने देती है जो खोए हुए को वेदना के बजाय कोमलता से थाम सके। कमरा बदलता है, कोमलता से। शोक एक ऐसा प्रेम बन जाता है जिसे वास्तविक बने रहने को अब खुले घाव की आवश्यकता नहीं। उसने उसी व्यवस्था पर विश्वास किया है जो प्रेम को सत्ता में लाई कि वह शोक को उसके घुमाव से ले जाए — और वह खोज लेती है कि प्रेम भरने को झेलता है, कि वह कभी घाव था ही नहीं, और कि शोक को गति करने देना उसे फिर खोना नहीं बल्कि अपने ही शेष जीवन को एक ऐसे घाव से खोना बंद करना था जिसे उसने भक्ति समझ लिया था।

## हानि से पूर्व शोक

एक शोक है जो हानि से पूर्व आता है — किसी प्रियजन को हासित होते देखने का पूर्वाभासी शोक, यह जानने का कि वियोग आ रहा है, एक ऐसे व्यक्ति का शोक करने का जो अब भी यहाँ है। वह सबसे भ्रमित करने वाले दुःखों में से एक है, क्योंकि वह एक ऐसी पूर्णता का शोक करता है जो अभी घटित नहीं हुई, और वह शेष समय को चुरा सकता है, वर्तमान को एक भविष्य की हानि से भरते हुए ताकि हम व्यक्ति को दो बार खोएँ: एक बार पहले से, भय को, और एक बार वास्तव में, जब समय आता है। भविष्य का स्वामी यह सबसे अधिक करता है, प्रियजन की वर्तमान उपस्थिति में विश्राम करने में असमर्थ क्योंकि मन पहले ही आने वाली हानि के क्षितिज को पार कर चुका है।

इस पुस्तक की शिक्षा पूर्वाभासी शोक से मिलने का एक ढंग देती है जो उसकी वास्तविकता का खंडन नहीं करता बल्कि उससे वर्तमान को पुनः अधिकृत करता है। हानि ने अपना क्षितिज पार नहीं किया; व्यक्ति यहाँ है, अभी, इस क्षण में जो अभी पूर्ण नहीं हुआ; और वर्तमान को एक ऐसी भविष्य की हानि का शोक करने में बिताना जो अभी आई नहीं ठीक उस समय को त्यागना है जो शेष है। आने वाले शोक को अनुभव करना बिना उसे वर्तमान उपस्थिति को निगलने दिए — भय को उठने और बीतने देना बिना अब भी उपलब्ध वास्तविक क्षणों को सौंपे — व्यक्ति को पहले से खोने से इनकार करना है, उनके साथ उस समय में रहना जो है, बजाय एक ऐसे क्षितिज के लिए वर्तमान को त्यागने के जो अभी पहुँचा नहीं। शोक अपनी ऋतु में आएगा, पूर्णतः, जब घटना पूर्ण होती है; और तब तक यह क्षण है, व्यक्ति अब भी यहाँ,

अभी खोया नहीं — और वर्तमान एक ऐसे भविष्य का शोक करने में बिताए जाने से नहीं सुधरता जो अभी आया नहीं।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

शोक वह प्रेम है जिसके जाने को कहीं नहीं, और उसे सदा खुला थामकर नहीं बल्कि उसे गति करने देकर सम्मानित किया जाता है। घाव कभी प्रेम था ही नहीं; वह वह रूप था जो प्रेम ने पहली वेदना में लिया। और वह जागरूकता जिसमें शोक प्रकट होता है कभी वह भूमिका नहीं थी जिसे हानि ने विलीन किया।

यदि आप एक शोक ढो रहे हैं, तो उसे ठीक उतना बड़ा होने दीजिए जितना वह है, कुछ रोककर नहीं — और फिर, कोमलता से, उस जागरूकता पर ध्यान दीजिए जिसमें यह शोक भी प्रकट होता है, जो स्वयं शोकग्रस्त नहीं। इसे शोक को दूर धकेलने को उपयोग न कीजिए। शोक को गति करने दीजिए, और जो प्रेम वह वहन करता है उसे, अंत में, घाव से बड़ा होने दीजिए।

## सृजनशीलता और वह कार्य जो आपके माध्यम से आता है

---

हर रचयिता जिसने कुछ वास्तविक रचा वही विचित्र बात कहता है:

कि उसका सर्वोत्तम उसका अपना अनुभव नहीं हुआ।

— सृजन पर टिप्पणी

एक क्षेत्र है जिसमें इस पुस्तक की केंद्रीय शिक्षा एक कठिनाई से अर्जित अंतर्दृष्टि नहीं बल्कि लगभग हर उस व्यक्ति की साधारण गवाही है जिसने कार्य किया है — और वह क्षेत्र सृजनशीलता है। किसी भी कलाकार, लेखक, संगीतकार, वैज्ञानिक, या किसी वास्तविक वस्तु के किसी रचयिता से उनके सर्वोत्तम कार्य के विषय में पूछिए, और आप, हजार भिन्न शब्दावलियों में, वही विचित्र प्रतिवेदन सुनेंगे: कि उसका सर्वोत्तम उनके द्वारा रचा हुआ अनुभव नहीं हुआ, कि वह आया, कि वह उनसे के बजाय उनके माध्यम से आया, कि वे उसके संप्रभु रचयिता से कम वह उपकरण थे जिसके माध्यम से उसने संसार में अपना मार्ग पाया। सृजनात्मक कृत्य वह है जहाँ कर्ता का विलय तर्क की जाने को एक दर्शन नहीं बल्कि स्मरण की जाने को एक अनुभव है।

यह सृजनशीलता को उस हर वस्तु पर एक अनोखी रूप से स्पष्ट खिड़की बनाता है जो यह पुस्तक कहती रही है, क्योंकि यहाँ प्रमाण तत्त्वमीमांसीय नहीं बल्कि अनुभवजन्य है, हर सृजनात्मक क्षेत्र और हर युग भर संगतता से प्रतिवेदित। आइए उस खिड़की से देखें, क्योंकि सृजन के विषय में वह जो दिखाती है वह, परंपराएँ आग्रह करती हैं, समस्त क्रिया के विषय में सत्य है — कि गहनतम करना किसी पृथक कर्ता द्वारा नहीं किया जाता, और कि कार्य ठीक तब सर्वोत्तम होता है जब रचयिता, कुछ समय के लिए, लुप्त हो गया हो।

## वह रचयिता जो लुप्त हो गया है

गवाही को सटीकता से सुनिए। लेखक कहती है कि पात्रों ने नियंत्रण ले लिया, कि कहानी ने स्वयं को लिखा, कि वह आविष्कार के बजाय प्रतिलेखन कर रही थी। संगीतकार कहता है कि संगीत पहले से वहाँ था और उसने उसे बस खोज लिया। वैज्ञानिक कहता है कि समाधान स्नान में, स्वप्न में, न-प्रयास के क्षण में आया, पूर्णतः गठित और अनबुलाया। चित्रकार उस चित्र की बात करती है जो उसे बताता है कि उसे क्या चाहिए। हर दशा में प्रतिवेदन वही है: सच्चे सृजन के क्षणों में, पृथक्, सोद्देश्य, नियंत्रण करता स्व शांत हो गया था, और कार्य एक ऐसे स्थल के माध्यम से बहा जो अब स्वयं को कार्य के चिंतित रचयिता के रूप में अनुभव नहीं कर रहा था। यह झूठी विनम्रता या रहस्यमय अलंकरण नहीं; यह सृजन की परिघटना का सबसे सटीक उपलब्ध वर्णन है, उन रचयिताओं द्वारा स्वतंत्र रूप से दिया गया जिन्होंने कभी नोट नहीं मिलाए।

और विलोम समान रूप से भली-भाँति प्रमाणित है, जैसा हमने उस पियानोवादक की दशा में देखा जिसने अपने हाथों को देखकर एक अनुच्छेद नष्ट कर दिया। जिस क्षण सोद्देश्य, नियंत्रण करता, स्वामित्व करता स्व आता है — निगरानी करता, निर्णय करता, परिणाम को पकड़ता, यह पूछता कि कार्य रचयिता पर कैसा झलकता है — कार्य अकड़ जाता है, प्रवाह रुक जाता है, वह सृजन जो स्वतंत्रता से आ रहा था जाम हो जाता है। सृजनात्मक अवरोध, बहुधा, ठीक कर्ता का आगमन है: स्व एक ऐसी प्रक्रिया का दावा और नियंत्रण करने को भीतर क्रदम रखता हुआ जो केवल उसके माध्यम से बहने ही वाली थी, और उसका दावा करने के कृत्य में प्रवाह का गला घोटता हुआ। रिक्त पृष्ठ का आतंक स्वामी का आतंक है — स्व एक ऐसे परिणाम को पकड़ता हुआ जिसे वह बल नहीं दे सकता, अपने मूल्य पर एक निर्णय से डरता हुआ, अपनी ही चिंता से उस कार्य को अवरुद्ध करता हुआ जो आना चाहता था।

## प्रेरणा क्षेत्र के सुलझने के रूप में

तो, इस पुस्तक के शब्दों में, प्रेरणा क्या है? वह क्षेत्र के उस स्थल के माध्यम से सुलझने की सृजनात्मक दशा है जो रचयिता है। रचयिता का समूचा — उनका प्रशिक्षण, उनके आत्मसात प्रभाव, उनकी अनुकूलनता, उनका ध्यान, वह समस्या जिसमें वे डूबे रहे, उनके अनुभव का समूचा विन्यास — एक दहलीज तक पहुँचता है, और कार्य अवक्षेपित होता है, संभावना से रूप में अपना क्षितिज पार करता हुआ, ठीक जैसे कोई घटना अपने क्षेत्र से अवक्षेपित होती है। रचयिता ने उसे संप्रभु इच्छा से उतना ही नहीं रचा जितना चयनकर्ता ने निर्णय रचा या कर्ता ने

कृत्य रचा; रचयिता ने उपकरण तैयार किया, लम्बे प्रयास के माध्यम से, और फिर कार्य तैयार उपकरण के माध्यम से सुलझा जब सोद्देश्य, पकड़ता स्व एक ओर हट गया। यही कारण है कि प्रेरणा को बल नहीं दिया जा सकता और वह इतनी बार तब आती है जब हमने प्रयास करना बंद कर दिया हो — क्योंकि प्रयास करना कर्ता है, और कर्ता ठीक वही है जो समाधान को अवरुद्ध करता है।

यह समूचे सृजनात्मक जीवन को नए सिरे से ढालता है। रचयिता का कार्य कार्य को इच्छा के बल से रचना नहीं — जो केवल पकड़ते कर्ता का अकड़ा, आत्म-चेतस, अवरुद्ध कार्य उत्पन्न करता है — बल्कि समूचे प्रयास के माध्यम से उपकरण तैयार करना और फिर मार्ग से हटना है, उन दशाओं को बनाना जिनमें कार्य उनके माध्यम से सुलझ सके, और उस स्वामित्व को छोड़ना जो प्रवाह को जाम कर देता। तैयारी में प्रयास; सृजन में विमोचना। अभ्यास के वर्ष, समस्या में डूबना, अनुशासित शिल्प — ये उपकरण की तैयारी हैं, और वे अपरिहार्य हैं; उन्हें लाँघना संभव नहीं, और वह मिथ्या अनायासता जो उन्हें लाँघने का प्रयास करती है कुछ उत्पन्न नहीं करती। किंतु स्वयं सृजन, जब वह आता है, तैयार उपकरण के माध्यम से क्षेत्र के सुलझने के रूप में आता है, तैयार पात्र के माध्यम से अनुग्रह के रूप में — और रचयिता की अंतिम कला लुप्त होने की कला है, कार्य को उस स्थल के माध्यम से आने देने की जो वे हैं, रचयिता के बिना रचने की।

## रचयिता के बिना रचना

इस समझ से जीए गए सृजनात्मक जीवन की कल्पना कीजिए। रचयिता पूर्ण भक्ति और पूर्ण कौशल से कार्य करता है, वर्षों के अनुशासित प्रयास के माध्यम से उपकरण तैयार करता है, स्वयं को शिल्प और समस्या में पूर्णतः डुबोता है — और फिर, सृजन के कृत्य में, चिंतित संप्रभु रचयिता को छोड़ देता है, स्व को शांत होने देता है, और कार्य को अपने माध्यम से आने देता है। वे कार्य की गुणवत्ता की पूर्णतः परवाह करते हैं और इस प्रश्न को पूर्णतः छोड़ देते हैं कि वह उन पर कैसा झलकता है, वह कैसे ग्रहण किया जाएगा, वह उनकी ख्याति में क्या जोड़ता है — परवाह का वही पुनर्निर्देशन जो हमने उत्कृष्टता के हृदय में पाया, अब अपने सृजनात्मक रूप में। और फल केवल बेहतर कार्य नहीं बल्कि अपने विशिष्ट यातनाओं से मुक्त एक सृजनात्मक जीवन भी है: वह अवरोध जो कर्ता की पकड़ है, रिक्त पृष्ठ का वह आतंक जो स्वामी का भय है, वह तुलना और वह चिंता जो कला पर लागू व्यक्तिगत खाता है।

यही, अंत में, कारण है कि सृजनात्मक कृत्य अपने अभ्यासियों को सदा पवित्र की सीमा पर प्रतीत हुआ है, और यही कि इतने रचयिता अनुग्रह की, संगीत-देवी की, प्रेरणा की भाषा की ओर पहुँचते हैं एक ऐसी वस्तु के रूप में जो दी गई है बजाय गढ़ी गई के। वे कल्पनाशील नहीं हो रहे थे। वे, सटीकता से, कर्ता के विलय के अनुभव का प्रतिवेदन कर रहे थे — वही विलय जिसकी ओर यह पुस्तक हर क्षेत्र में संकेत करती रही है, यहाँ स्टूडियो में और मेज़ पर पाया गया, जहाँ रचयिता लुप्त होता है और कार्य आता है। सृजनात्मक कृत्य समूची शिक्षा का एक छोटा दैनिक पूर्वाभ्यास है: उपकरण तैयार कीजिए, स्वामी को छोड़िए, और ब्रह्मांड को उस स्थल के माध्यम से रचने दीजिए जो आप हैं — जो, रचयिता सब गवाही देते हैं, तब है जब रचने योग्य एकमात्र कार्य कभी रचा गया।

### वह अवरोध जो उठ गया

एक लेखिका महीनों अवरुद्ध बैठती है। वह जो कुछ उत्पन्न करती है उसका निर्णय करती और मिटा देती है; कर्सर टिमटिमाता है; रिक्त पृष्ठ का भय तब तक बढ़ता है जब तक वह मुश्किल से ही उसके पास बैठ पाती है। जो वह नहीं देखती वह यह है कि अवरोध विचारों की अनुपस्थिति नहीं बल्कि एक उपस्थिति है — स्वामी की उपस्थिति, निगरानी और निर्णय करने को आई, परिणाम को पकड़ती, निर्णय से डरती, यह माँग करती कि जो आए वह आने दिए जाने से पहले ही अच्छा हो। कर्ता कार्य का दावा करने को भीतर कदम रख चुका है, और दावा करने में उसका गला घोंट दिया है, ठीक वैसे जैसे पियानोवादक ने अपने हाथ देखकर अनुच्छेद का गला घोंटा।

अवरोध उठता है, जब वह उठता है, अधिक प्रयास के माध्यम से नहीं — प्रयास कर्ता का अधिक कठोर प्रयास करना है — बल्कि कर्ता के शांत होने के माध्यम से। वह स्वयं को बुरा लिखने की, जो भी आए उसे बिना निर्णय आने देने की, अच्छा होने का प्रयास बंद करने और बस जो आता है उसे प्रतिलेखित करने की अनुमति देती है; और जिस क्षण स्वामी पीछे हटता है, कार्य फिर उस तैयार उपकरण के माध्यम से बहने लगता है जो अभ्यास के वर्षों ने उसका बनाया था। उसने उसे वापस गति में नहीं रचा; उसने उसे अवरुद्ध करना बंद किया। और बाद में, जो आया उसे पढ़ते हुए, वह वह परिचित विचित्रता पाती है जिसे हर रचयिता जानता है: कि उसका सर्वोत्तम उसका अपना अनुभव नहीं होता, कि वह उससे के बजाय उसके माध्यम से आया, ठीक उसी मात्रा में जिसमें वह, कुछ समय के लिए, उसके मार्ग से हट पाई।



## उसकी सेवा करना जो कार्य बनना चाहता है

रचयिता बहुधा कार्य की अपनी इच्छा होने की बात करते हैं — कहानी के एक विशेष ढंग से जाना चाहने की, चित्र के कुछ माँगने की, अभिकल्प के रचयिता के अभिप्राय का प्रतिरोध करने और उस पर आग्रह करने की जिसकी उसे आवश्यकता है। यह सामान्यतः केवल रूपक के रूप में सुना जाता है, किंतु वह सृजन में कर्ता के विलय के विषय में कुछ सत्य की ओर संकेत करता है। जब स्वामित्व करता स्व पीछे हटता है, तो रचयिता कार्य को एक पूर्वकल्पित योजना में बल दी जाने वाली कच्ची सामग्री के रूप में नहीं बल्कि अपने ही उभरते तर्क, अपनी ही ठीकता, अपनी ही दिशा वाली किसी वस्तु के रूप में प्रत्यक्ष करने लगता है — और गहनतम सृजनात्मक कृत्य रचयिता की इच्छा के थोपने से कम उस वस्तु की सेवा अधिक बन जाता है जो कार्य बनने का प्रयास कर रहा है।

यह स्टूडियो में अकर्तृत्व है: रचयिता संप्रभु के बजाय सेवक के रूप में, उस पर ध्यान देता हुआ जो कार्य चाहता है, उसके उभरते तर्क का अनुसरण करता हुआ बजाय उसे योजना में बल देने के, अपने ही अभिप्राय को भी छोड़ता हुआ जब कार्य कुछ सच्चतर माँगता है। नौसिखिया कार्य को वह बनने को बल देता है जो उसने तय किया कि उसे होना चाहिए, और वह बल देने के नीचे अकड़ जाता है; निपुण उसकी सेवा करता है जो कार्य बन रहा है, और वह जीवित हो उठता है। कार्य को रचने के बजाय उसकी सेवा करना समर्पण का सृजनात्मक रूप है — निष्क्रियता नहीं, क्योंकि सेवा सक्रिय और कुशल और पूर्ण है, बल्कि संप्रभु रचयिता का उसकी ओर ध्यान देने के पक्ष में विमोचन जो, तैयार उपकरण के माध्यम से, सत्ता में आना चाहता है। सर्वोत्तम कार्य, रचयिता गवाही देते हैं, वह नहीं जो उन्होंने अभिप्रेत किया। वह वह है जिसकी उन्होंने सेवा की।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

हर रचयिता जिसने कुछ वास्तविक रचा वही विचित्र बात प्रतिवेदित करता है: कि उसका सर्वोत्तम उसका अपना अनुभव नहीं हुआ, कि वह उनसे के बजाय उनके माध्यम से आया। कर्ता कार्य को मार देता है; रचयिता की अंतिम कला लुप्त होने की कला है, ताकि कार्य तैयार उपकरण के माध्यम से आ सके।

आज एक वस्तु रचिए — लिखिए, पकाइए, बनाइए, सुलझाइए — और उपकरण को पूर्णतः तैयार कीजिए, फिर चिंतित रचयिता को छोड़िए और कार्य को अपने माध्यम से आने दीजिए। जब पकड़ता स्व निगरानी और निर्णय करने को आए, तो ध्यान दीजिए कि प्रवाह कैसे अकड़ जाता है, और स्व को फिर शांत होने दीजिए ताकि रचना स्वयं फिर शुरू हो सके।

## समय और ध्यान

---

*आपके पास समय नहीं है। समय के पास आप हैं। एकमात्र प्रश्न यह है  
कि वह आपको वहन करते समय आपका ध्यान कहाँ टिकता है।*

— समय पर टिप्पणी

हम समय की बात उस एक वस्तु के रूप में करते हैं जिसका हम स्वामित्व और व्यय करते हैं — मेरा समय, आपका समय, वह समय जो मेरे पास शेष है — और ध्यान की एक ऐसे संसाधन के रूप में जिसे हम इच्छा से निर्देशित करते हैं। दोनों पूर्व-धारणाएँ जाँच का प्रतिफल देती हैं, क्योंकि दोनों उस स्वामित्व के रूप हैं जिसे यह पुस्तक घुलाती रही है, और दोनों एक विशेष और व्यापक दुःख उत्पन्न करती हैं: उस व्यक्ति का दुःख जो विश्वास करता है कि उसे समय में निपुण होना और ध्यान को आदेश देना ही होगा, और जो, परिणामस्वरूप, सतत पीछे, सतत बिखरा, सतत कहीं और जीता है बजाय वहाँ जहाँ वह वास्तव में है।

इस अंतिम भाग के सब क्षेत्रों में, समय और ध्यान सबसे व्यावहारिक और सबसे कम तत्त्वमीमांसीय प्रतीत हो सकते हैं — उत्पादकता का, ध्यान-केंद्रण का, वस्तुओं को सम्पन्न करने का विषय। किंतु व्यावहारिक सतह के नीचे वही एकल प्रश्न बसा है जो समूची पुस्तक पूछती रही है, और वही मुक्ति। क्योंकि आपका ध्यान जहाँ टिकता है वह, शब्दशः, वह है जहाँ आप जीते हैं; और समय के साथ आपका जो संबंध है वह आपके अनसुलझे भविष्य और आपके पूर्ण हुए अतीत के समूचे खुले क्षेत्र के साथ आपका संबंध है।

### एकमात्र क्षण जो एक विचार नहीं है

एक सादे अवलोकन से आरम्भ कीजिए जिसकी ओर चिंतक सहस्राब्दियों से संकेत करते रहे हैं और जिसे कोई भी सीधे सत्यापित कर सकता है। अतीत अभी उठते एक विचार के सिवा विद्यमान नहीं; भविष्य अभी उठते एक विचार के सिवा विद्यमान नहीं; एकमात्र वस्तु जो कभी वास्तव में घटित हो रही है वह यह वर्तमान क्षण है, जिसमें अतीत और भविष्य के वे विचार

प्रकट होते हैं। हम अपने जीवनो के विशाल भाग अतीत में बिताते हैं — फिर चलाते, पश्चात्ताप करते, पूर्ण हुई घटनाओं को फिर जीते जिनके क्षितिज बंद हैं — और भविष्य में — पूर्वाभ्यास करते, डरते, उन घटनाओं की योजना बनाते जिन्होंने अपना क्षितिज पार नहीं किया — और लगभग कभी एकमात्र वास्तविक क्षण पर ध्यान नहीं देते, वर्तमान, जिसमें अकेले कुछ भी मिला, आनंदित, या किया जा सकता है। हम समय-यात्री हैं जो लगभग कभी घर पर नहीं होते।

यह अतीत या भविष्य के समस्त विचार के विरुद्ध सलाह नहीं, जो निरर्थक होगा; जो हुआ उससे सीखना और जो आ सकता है उसके लिए तैयारी करना एक बुद्धिमान जीवन का अंग हैं। यह अनुपात के विषय में, और दुःख के विषय में एक अवलोकन है। मानवीय व्यथा का बड़ा भाग एक ऐसे मन का दुःख है जो लगभग पूर्णतः बंद अतीत और अनसुलझे भविष्य में जीता है, और लगभग कभी वर्तमान में नहीं — पूर्ण हुई घटनाओं का शोक करता हुआ जिन्हें वह फिर खोल नहीं सकता, संभावित घटनाओं से डरता हुआ जो घटित नहीं हुईं, और, इस प्रक्रिया में, एकमात्र क्षण को चूकता हुआ जिसमें वह कभी वास्तव में जीवित था। ध्यान को वर्तमान में लौटाना एक उत्पादकता तकनीक नहीं। वह एकमात्र स्थान की ओर एक वापसी है जहाँ जीवन बिल्कुल घटित हो रहा है।

## वर्तमान एकमात्र घटना-क्षितिज है

समूची पुस्तक की संरचना स्मरण कीजिए: घटनाएँ अपने क्षितिजों पर सुलझती हैं, और क्षितिज सदा अभी है। अतीत सुलझी घटनाओं का क्षेत्र है, बंद और अपरिवर्तनीय; भविष्य अनसुलझी संभावना का क्षेत्र है, अभी बैठा नहीं; और वर्तमान — अभी की धार-रेखा — एकमात्र स्थान है जहाँ संभावना वास्तविकता में पार करती है, एकमात्र घटना-क्षितिज जो है। यही कारण है कि वर्तमान एकमात्र स्थान है जहाँ सहभागिता संभव है। आप बंद अतीत या अनसुलझे भविष्य में कर्म नहीं कर सकते; आप केवल अभी कर्म कर सकते हैं, क्षितिज पर, जहाँ क्षेत्र सुलझ रहा है। वह मन जो अतीत और भविष्य में जीता है केवल वर्तमान के सुखों को नहीं चूक रहा; वह एकमात्र उस बिंदु से अनुपस्थित है जिस पर वह वास्तव में ब्रह्मांड के स्व-प्रदर्शन में सहभागी हो सकता था, पुनर्प्रसारण और पूर्वावलोकन देखता हुआ जबकि एकमात्र सजीव प्रदर्शन, अनदेखा, अभी के मंच पर चलता है।

ध्यान को वर्तमान में विश्राम कराना इसलिए न केवल बहुत-से दुःख का अंत बल्कि सच्ची सहभागिता का आरम्भ भी है। पूर्ण हुआ अतीत अपनी पूर्णता को छोड़ दिया जाता है;

अनसुलझा भविष्य अपने खुलेपन को छोड़ दिया जाता है; और ध्यान क्षितिज पर, अभी पर लौटता है, जहाँ क्षेत्र वास्तव में सुलझ रहा है और जहाँ अकेले सहभागी अपना वास्तविक भाग ले सकता है। यही वह है जो चिंतकों का उपस्थिति से तात्पर्य था, और यही कि उन्होंने उसे लगभग हर वस्तु से ऊपर सराहा: शांति की एक तकनीक के रूप में नहीं, बल्कि एक बिखरे, समय-यात्रा करते मन की एकमात्र उस क्षण की ओर वापसी के रूप में जो कभी वास्तविक था, एकमात्र घटना-क्षितिज जिस पर वह वास्तव में जी सकता था।

## विभाजित स्वामी

विभाजित ध्यान की आधुनिक व्याधि को विचारिए — एक मन का बिखरा, खंडित, सतत बाधित गुण जो एक साथ अनेक दिशाओं में खींचा जाता है, कभी पूर्णतः कहीं नहीं। हम उसे प्रौद्योगिकी या इच्छा-शक्ति की समस्या के रूप में निदान करते हैं, और उसमें सत्य है, किंतु उसके नीचे फिर स्वामी बसा है: वह स्व जो विश्वास करता है कि उसे एक साथ अनेक वस्तुओं की निगरानी और प्रबंधन करना ही होगा, जो अपना ध्यान किसी एक वस्तु पर पूर्णतः विश्राम नहीं करा सकता क्योंकि वह उन सबका चिंतित स्वामी है, जो स्वयं को एक दर्जन अनसुलझे सरोकारों भर खंडित करता है बजाय स्वयं को पूर्णतः अपने सामने की एक वस्तु को देने के। विभाजित ध्यान चिंतित स्वामी का ध्यान-संबंधी हस्ताक्षर है, उस हर वस्तु भर पतला फैला जिसे वह नियंत्रित करने का प्रयास कर रहा है, किसी के प्रति उपस्थित नहीं क्योंकि वह हर वस्तु को पकड़ रहा है।

वह अविभाजित ध्यान जिसे हम उसकी दुर्लभ उपस्थिति में तत्काल पहचानते हैं — वह मित्र जो पूर्णतः आपके साथ है, वह शिल्पकार पूर्णतः कार्य में, वह बालक पूर्णतः खेल में — उस व्यक्ति का ध्यान है जिसने, कम से कम उस क्षण के लिए, बाक्री हर वस्तु का चिंतित प्रबंधन रख दिया है और स्वयं को पूर्णतः इसको दे दिया है। यह मुख्यतः प्रशिक्षित किए जाने को ध्यान-केंद्रण का कोई कौशल नहीं, यद्यपि उसे संवर्धित किया जा सकता है; यह ध्यान की स्वाभाविक स्थिति है जब स्वामी ने उसे एक दर्जन पकड़े सरोकारों भर खंडित करना बंद कर दिया हो। एक वस्तु पर पूर्णतः ध्यान देना उस क्षण के लिए बाक्री सबका स्वामित्व छोड़ देना है — यही कारण है कि उपस्थिति राहत-सी, घर लौटने-सी, एक भार रख देने-सी अनुभव होती है: क्योंकि वह है।

## पूर्ण ध्यान का उपहार

कोई बड़ा उपहार नहीं जो एक व्यक्ति दूसरे को दे सकता है अविभाजित ध्यान से, और लगभग कुछ नहीं उससे अधिक दुर्लभ। पूर्णतः ध्यान दिया जाना — किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा मिला जाना जो पूर्णतः उपस्थित है, आधा-कहीं-और नहीं, अन्य सरोकारों का प्रबंधन न करता, बोलने की प्रतीक्षा न करता, बल्कि बस और पूर्णतः यहाँ आपके साथ — इतना असामान्य है कि हम उन थोड़ों को जिन्होंने वह हमें दिया अपने शेष जीवन स्मरण रखते हैं। और यह उपहार ठीक समूची शिक्षा का फल है जो ध्यान पर लागू हुई: जिसने अपने बिखरे सरोकारों का चिंतित स्वामित्व रख दिया है वह पूर्णतः उपस्थित होने में समर्थ हो जाता है, और उनकी पूर्ण उपस्थिति हर किसी द्वारा जिसकी ओर वे उसे मोड़ते हैं एक प्रकार के अनुग्रह के रूप में अनुभव की जाती है। अभिंचा व्यक्ति केवल कम दुःख नहीं भोगता; वे, हर मुठभेड़ में, पूर्ण ध्यान के दुर्लभ उपहार में समर्थ बन जाते हैं।

सो इस पुस्तक की शिक्षा, समय और ध्यान पर लाई गई, अंततः उत्पादकता या ध्यान-केंद्रण के विषय में नहीं, यद्यपि वह दोनों को सुधारती है। वह एकमात्र उस क्षण की ओर लौटने के विषय में है जो वास्तविक है, समय-यात्रा करते मन को बंद अतीत और अनसुलझे भविष्य से मुक्त करने के, और उस चिंतित स्वामित्व को रख देने के जो ध्यान को एक दर्जन पकड़े सरोकारों भर खंडित करता है — ताकि व्यक्ति, अंततः, वहाँ हो सके जहाँ वह वास्तव में है, एकमात्र घटना-क्षितिज पर पूर्णतः उपस्थित जो है, स्वयं को पूर्णतः अपने सामने की एक वस्तु को देता हुआ, और औरों को अविभाजित ध्यान का दुर्लभ अनुग्रह देने में समर्थ। आप अपने समय का स्वामित्व नहीं रखते; समय आपको वहन करता है, जैसे नदी पत्ते को वहन करती है। किंतु वह आपको वहन करते समय आपका ध्यान कहाँ टिकता है — वही समूचा यह है कि क्या आप कभी वास्तव में यहाँ थे।

## रात्रिभोज

छह व्यक्ति रात्रिभोज पर बैठे हैं, और उनमें से पाँच कहीं और हैं। फ़ोन थालियों के बगल में रखे, वाक्यों के बीच एक नज़र डाले जाते; ध्यान अगली वस्तु, अनुपस्थित वार्तालाप, फ़्रीड की ओर टिमटिमाता है; प्रत्येक आधा-उपस्थित है, एक दर्जन धागे प्रबंधित करता हुआ, और स्वयं रात्रिभोज — वे लोग जो वास्तव में यहाँ हैं, वह भोजन जो वास्तव में मेज़ पर है, वह एक वास्तविक सायं — किसी के द्वारा पूर्णतः ध्यान न दी गई, किसी के द्वारा पूर्णतः न जी गई, एक

वर्तमान क्षण जिस पर हर कोई तकनीकी रूप से है और कोई वास्तव में उसमें नहीं। यह विभाजित स्वामी की साधारण दशा है, हर वस्तु भर पतला फैला, किसी के प्रति उपस्थित नहीं, कहीं घर पर नहीं।

छठा व्यक्ति बस वहाँ है — पूर्णतः उपस्थित, जो भी बोल रहा है उस पर ध्यान देता हुआ, कमरे में और कहीं और नहीं — और दूसरे उसे बिना नाम दिए अनुभव करते हैं, जैसे कोई गर्माहट अनुभव करता है: कि इस व्यक्ति के निकट होना पूर्णतः मिला जाना है, किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा जो वास्तव में यहाँ है। उसमें कुछ नहीं लगता और कोई तकनीक नहीं चाहिए; वह केवल ध्यान की स्वाभाविक स्थिति है जब स्वामी ने उसे एक दर्जन पकड़े सरोकारों भर खंडित करना बंद कर दिया हो। और वह इतना दुर्लभ है कि दूसरे उस सायं को उसके लिए स्मरण रखेंगे, बाद में कहेंगे कि उस रात्रिभोज में कुछ विश्रामपूर्ण था, कभी ठीक यह न पहचानते हुए कि वह कुछ एक अकेला व्यक्ति था जो बाकियों को अविभाजित ध्यान का लुप्त होता उपहार दे रहा था — उन्हें, एक सायं के लिए, वहाँ होने का जहाँ वे वास्तव में थे।

### **"समय नहीं" का झूठ**

हम, निरंतर, कहते हैं कि हमारे पास समय नहीं है — जो मायने रखता है उसके लिए समय नहीं, विश्राम को समय नहीं, उपस्थित होने को समय नहीं — और हम इसे ऐसे कहते हैं मानो समय एक संपत्ति हो जिसमें हम कम पड़ गए, एक रिक्त हुआ संसाधन। किंतु दावे को वास्तव में जिए गए दिनों के विरुद्ध जाँचिए, और वह विरले ही टिकता है। हमारे पास वही घंटे हैं जो हर किसी के पास सदा रहे हैं; जिसकी हमें कमी है वह समय नहीं बल्कि अपना ध्यान विश्राम कराने की इच्छा है, क्योंकि ध्यान स्वामित्व में है — सौ सरोकारों से पकड़ा हुआ, एक दर्जन चिंताओं भर खंडित, कभी कहीं पूर्णतः विश्राम न करता क्योंकि स्वामी एक साथ हर वस्तु प्रबंधित करना बंद नहीं कर सकता। समय न होने की अनुभूति, बहुधा, एक ऐसे ध्यान की अनुभूति है जो कभी उपस्थित नहीं, अतीत और भविष्य और एक दर्जन एक साथ पकड़े सरोकारों भर बिखरा, ताकि कोई क्षण कभी पूर्णतः बसाया न जाए और समूचा जीवन हड़बड़ाया और पतला अनुभव हो।

जिसने ध्यान का स्वामित्व रख दिया है वह खोज लेता है, बहुधा आश्चर्य के साथ, कि उसके पास उससे कहीं अधिक समय है जितना उसने सोचा — इसलिए नहीं कि घंटे गुणित हुए, बल्कि इसलिए कि हर घंटा, पूर्णतः बसाया हुआ, अब अगले की ओर हड़बड़ाकर नहीं गुजरा जाता। उपस्थित होना समय का होना है, क्योंकि उपस्थिति एकमात्र स्थान है जहाँ समय वास्तव

में अनुभव किया जाता है; वह हड़बड़ाई अनुभूति कभी घंटों की कमी नहीं थी बल्कि उसकी अनुपस्थिति जो उन्हें जीने को था, अतीत और भविष्य और हर वस्तु के प्रबंधन में भागा हुआ। हमारे पास, वस्तुतः, समय न होना नहीं है। हमारे पास वह सब समय है जो है, हर किसी के समान। जो हमने दे दिया है वह उसके प्रति हमारी उपस्थिति है — और वह, समय के विपरीत, पुनः अधिकृत की जा सकती है, एक समय में एक पूर्णतः बसाया क्षण।

## घड़ी का समय और जिया गया समय

दो प्रकार के समय हैं, और उन्हें भ्रमित करना हमारे दुःख का अंग है। घड़ी का समय है — समय-सारणी का एकरूप, मापा, यांत्रिक समय, अभिन्न इकाइयों में विभाजित, हर किसी के लिए समान, उससे उदासीन जो उसे भरता है। और जिया गया समय है — वास्तविक अनुभव का अनुभूत समय, जो उसके प्रति हमारी उपस्थिति के साथ फैलता और सिकुड़ता है: लीन कार्य का वह घंटा जो एक क्षण की भाँति बीतता है, भय का वह मिनट जो एक घंटे की भाँति खिंचता है, पूर्ण उपस्थिति का कालातीत गुण, अन्यान्य दी गई प्रतीक्षा का घिसटना। हम अपने जीवनों को घड़ी के समय से संगठित करते हैं, और हम दुःख भोगते हैं जब हम भूल जाते हैं कि जिस समय में हम वास्तव में जीते हैं वह जिया गया समय है, जिसे कोई घड़ी नहीं मापती और जिसे उपस्थिति, न कि समय-सारणी, संचालित करती है।

घड़ी की निरंकुशता यह माँग है कि जिया गया समय घड़ी के समय के अनुरूप हो — कि हम हर मापी इकाई को वैसे अनुभव करें जैसे समय-सारणी आग्रह करती है, कि हम अनुभव को जाली में ठूसें, कि हम अपने दिनों को उस उपस्थिति के गुण के बजाय घड़ी से मापें जो वास्तव में उन्हें भरता है। किंतु सबसे समृद्ध घंटे सबसे कार्यक्षमता से अनुसूचित नहीं; वे सबसे पूर्णता से बसाए हुए हैं, वे जिनमें जिया गया समय उपस्थिति में खुला और घड़ी भूल गई। ध्यान को घड़ी के समय से जिए गए समय की ओर लौटाना — मापी जाली से वर्तमान के वास्तविक पोट की ओर — एकमात्र उस समय को पुनर्प्राप्त करना है जिसे हम कभी वास्तव में अनुभव करते हैं, जो कभी घड़ी पर था ही नहीं, और जो, ठीक उस मात्रा में जिसमें हम उसके प्रति उपस्थित हैं, अमाप्य रूप से फैलता है। हम घड़ी को हमें अधिक इकाइयाँ देने को नहीं बना सकते। किंतु जिया गया समय, घड़ी के समय के विपरीत, उसमें बिना सीमा गहराता है जो उसके प्रति उपस्थित है।



## एक चिंतन

एकमात्र क्षण जो कभी वास्तविक है वह यही है, एकमात्र घटना-क्षितिज जिस पर संभावना वास्तविकता में पार करती है। समय-यात्रा करता मन, बंद अतीत और अनसुलझे भविष्य में खोया, लगभग कभी घर पर नहीं — और आपका ध्यान जहाँ टिकता है वह, शब्दशः, वह है जहाँ आप जीते हैं।

आज एक व्यक्ति को अपना पूर्ण, अविभाजित ध्यान दीजिए — आधा-कहीं-और नहीं, बोलने की प्रतीक्षा न करते, अन्य सरोकार प्रबंधित न करते, बल्कि पूर्णतः उनके साथ उपस्थित। उसमें राहत पर ध्यान दीजिए, आपके लिए और उनके लिए, और ध्यान दीजिए कि एक वस्तु पर पूर्णतः ध्यान देना उस क्षण के लिए बाक़ी हर वस्तु का स्वामित्व रख देना है।

## निर्णय के बिना असफलता

---

एक असफलता एक घटना है। एक असफलता, यदि आप उसे होने दें,  
आपकी आत्मा पर सुनाया गया एक दंडादेश भी है। इनमें से केवल एक वास्तविक है।

— असफल होने पर टिप्पणी

थोड़ी वस्तुएँ असफलता से अधिक डरी जाती हैं, और थोड़ी वस्तुएँ, निकट से जाँची जाने पर, व्यक्तिगत खाते की अधिक पूर्ण रचना सिद्ध होती हैं। क्योंकि असफलता, पीड़ादायक अर्थ में — यह सरल तथ्य नहीं कि एक प्रयास ने वांछित परिणाम उत्पन्न नहीं किया, बल्कि एक असफलता होने का कुचलता अनुभव — ठीक एक पूर्ण हुई घटना का स्व पर एक निर्णय में परिवर्तन है। इस पुस्तक की शिक्षा के पास उसके विषय में एक स्वच्छ और मुक्तिदायी बात कहने को है: कि घटना वास्तविक है और निर्णय आविष्कृत है, और कि असफलता का लगभग समूचा दुःख आविष्कृत भाग में जीता है।

यह व्यवहार में अत्यधिक मायने रखता है, क्योंकि असफलता का भय जीवनो को लगभग किसी अन्य शक्ति से अधिक आकार देता है — यह तय करता हुआ कि हम क्या प्रयास करेंगे और क्या करने का साहस नहीं करेंगे, हमारे जीने को उन वस्तुओं की छोटी श्रेणी तक संकीर्ण करता हुआ जिनमें हम विश्वस्त हैं कि हम असफल नहीं होंगे, और हमें, एक निर्णय से बचने के नाम पर, ठीक उन प्रयासों से रोकता हुआ जिनके माध्यम से एक जीवन बढ़ता है। निर्णय को घुला देना इसलिए न केवल असफल होने पर कम दुःख भोगना है बल्कि प्रयास करने, जोखिम उठाने, उस पूर्ण श्रेणी पर जीने को मुक्त किया जाना है जो हम कर सकते हैं बजाय उस संकीर्ण श्रेणी के जिसके विषय में हम निश्चित हैं कि वह हमें अभियुक्त नहीं करेगी।

### घटना और निर्णय

अलग कीजिए, यथासंभव स्वच्छता से, दो वस्तुओं को जिन्हें असफलता संगलित कर देती है। घटना है: एक प्रयास किया गया, और उसने अभिप्रेत परिणाम उत्पन्न नहीं किया। व्यवसाय

असफल हुआ; परीक्षा उत्तीर्ण न हुई; संबंध समाप्त हुआ; कार्य अस्वीकृत हुआ। यह एक पूर्ण हुई घटना है, वास्तविक, वास्तविक परिणामों के साथ, किसी भी घटना की भाँति मिलने और सीखने को। और फिर निर्णय है: मैं एक असफलता हूँ; यह मेरी अपर्याप्तता सिद्ध करता है; परिणाम मेरे मूल्य पर सुनाया गया एक दंडादेश है। निर्णय घटना का स्वाभाविक अर्थ-सा, उसका स्पष्ट निहितार्थ-सा अनुभव होता है, किंतु वह घटना में बिल्कुल अंतर्निहित नहीं; वह स्वामी द्वारा जोड़ा जाता है, जिसने अपना मूल्य परिणामों पर दाँव पर लगाया है और इसलिए हर अवांछित परिणाम को अपनी सत्ता के अभियोग के रूप में पढ़ता है। घटना घटी। निर्णय एक ऐसे स्व द्वारा सुनाया गया जो उसे सदा सुनाने ही वाला था, ऐसे प्रमाण पर जो उसे वास्तव में समर्थित नहीं करता।

देखिए कि दुःख कितनी पूर्णता से निर्णय की ओर प्रवास कर जाता है। दो व्यक्ति वही बाह्य असफलता भोगते हैं — वही खोया व्यवसाय, वही अस्वीकृति। एक उससे एक पूर्ण हुई घटना के रूप में मिलता है, पीड़ादायक और परिणामपूर्ण, सीखने और उसमें से होकर गुजरने को; दूसरा उससे एक निर्णय के रूप में मिलता है, अपनी अपर्याप्तता का एक प्रमाण, अपनी आत्मा पर एक दंडादेश — और एक ऐसे ढंग से विध्वस्त होता है जिससे पहला नहीं, यद्यपि बाह्य घटना अभिन्न थी। अंतर घटना नहीं; वह निर्णय है जिसे दूसरे ने जोड़ा और पहले ने नहीं। और निर्णय, घटना के विपरीत, वैकल्पिक है। उसे रखा जा सकता है, यह दिखावा करके नहीं कि असफलता हुई ही नहीं, बल्कि पूर्ण हुई घटना को उस स्व पर एक दंडादेश में बदलने से इनकार करके जो उससे गुजरता है।

### **वह सहभागी जो सीखता है और वह स्वामी जो कुचला जाता है**

उस सहभागी के बीच भेद स्मरण कीजिए जो पकड़ता और दुःख भोगता है और उस साक्षी के बीच जो होने देता और सीखता है। असफलता उसे पूर्णता से प्रकाशित करती है। परिणामों का स्वामी, असफलता से कुचला, निर्णय में इतना लीन है — इसमें कि असफलता उसके विषय में क्या कहती है, अपने मूल्य पर घाव में, लज्जा में — कि वह वास्तव में घटना से सीख नहीं सकता, क्योंकि उसका ध्यान पूर्णतः स्वयं पर है बजाय उसके जो घटना को सिखाने को है। जिसने निर्णय छोड़ दिया है, इसके विपरीत, असफलता को स्पष्ट देख सकता है, आत्म-अभियोग की विकृति के बिना, और ठीक देख सकता है कि उसे क्या सिखाने को है — क्या गलत हुआ, दशाएँ क्या थीं, क्या भिन्न किया जा सकता था — क्योंकि उसका ध्यान अभियोग

के बजाय घटना पर है। असफलता, बिना निर्णय मिली, सब घटनाओं में सबसे ऊपर में से है; असफलता एक निर्णय के रूप में मिली केवल एक घाव है जो भय के सिवा कुछ नहीं सिखाता।

यही कारण है कि जो लोग अंततः सबसे अधिक सम्पन्न करते हैं वे इतनी बार वही हैं जो सबसे स्वतंत्रता से असफल हुए — इसलिए नहीं कि वे लापरवाह हैं, बल्कि इसलिए कि उन्होंने, स्वभाव या अभ्यास से, घटना को निर्णय से अलग कर दिया है, और इसलिए असफल हो सकते हैं, सीख सकते हैं, और फिर प्रयास कर सकते हैं बिना हर अड़चन से अभियुक्त स्व के पक्षाघात में कुचले। वे इस अर्थ में अधिक साहसी नहीं कि वे कोई भय अनुभव नहीं करते; उन्होंने बस अपनी असफलताओं को अपनी आत्माओं पर दंडादेश में बदलना बंद कर दिया है, और इसलिए वहाँ प्रयास करते रह सकते हैं जहाँ परिणामों का स्वामी, अगले निर्णय से डरता हुआ, बहुत पहले प्रयास करना बंद कर चुका है। निर्णय के बिना असफल होने की स्वतंत्रता, व्यवहार में, बिल्कुल प्रयास करने की स्वतंत्रता है।

## लज्जा और स्वच्छ दृष्टि

यहाँ भेद कीजिए, जैसे हमने अपराध-बोध को पश्चात्ताप से भेदा, लज्जा और एक असफलता पर स्वच्छ दृष्टि के बीच। लज्जा भीतर मुड़ा और सम्पूर्ण बनाया गया निर्णय है: यह नहीं कि मैंने कुछ किया जो काम नहीं आया, बल्कि मैं कुछ दोषपूर्ण हूँ, असफलता स्व के मर्म में एक सड़न सिद्ध करती हुई। लज्जा अपने सबसे विषैले रूप में व्यक्तिगत खाता है, और यह सरलता से कह देना सार्थक है कि वह कुछ नहीं भरती, कुछ नहीं सिखाती, और कुछ नहीं की सेवा करती है — वह केवल स्व को एक आत्म-घृणा से भर देती है जो स्पष्ट देखना असंभव और आगे प्रयास असह्य बना देती है। एक असफलता पर स्वच्छ दृष्टि विपरीत है: जो हुआ, जो किसी ने योगदान किया, जो भिन्न किया जा सकता था उसका ईमानदार, अविचल परीक्षण — आत्म-घृणा के बिना संचालित, क्योंकि देखने वाले ने घटना को अपनी सत्ता पर निर्णय में नहीं बदला।

स्वच्छ दृष्टि कठोर हो सकती है — वह असफलता में अपने वास्तविक योगदान से नहीं सिहरती, बहाना नहीं बनाती या दूर नहीं देखती — और फिर भी वह कोई लज्जा नहीं वहन करती, क्योंकि वह एक स्व पर अभियोग चलाने के बजाय एक घटना का परीक्षण कर रही है। यह उस प्रकार के आत्म-परीक्षण और उसके बीच का अंतर है जो एक व्यक्ति को बढ़ाता है और उसके बीच जो उसे नष्ट करता है। एक पूर्ण हुई घटना को स्पष्ट देखता और सीखता है; दूसरा आत्मा पर एक निर्णय सुनाता और कुचला जाता है। इस पुस्तक की शिक्षा आपसे अपनी असफलताओं

को ईमानदारी से परीक्षण करना बंद करने को नहीं कहती; वह आपसे उन्हें निर्णय के बिना परीक्षण करने को कहती है, लज्जित के बजाय स्वच्छ दृष्टि लेने को, घटना से सीखने को बजाय उससे दंडादेश पाने के। असफलता वास्तविक थी। आपकी अपर्याप्तता का प्रमाण कभी उसमें था ही नहीं। वह आपने जोड़ा, और आप उसे रख सकते हैं।

## स्वतंत्रता से असफल होना

निर्णय रखकर जीए गए एक जीवन की कल्पना कीजिए — असफलता के बिना एक जीवन नहीं, जो कोई जीवन ही नहीं, बल्कि एक ऐसा जीवन जिसमें असफलताएँ सीखने को पूर्ण हुई घटनाओं के रूप में मिली जाती हैं बजाय भोगने को दंडादेशों के। ऐसा जीवन लापरवाह या महत्वाकांक्षाहीन नहीं; इसके विपरीत, वह भय-बंधे जीवन से कहीं अधिक महत्वाकांक्षी हो सकता है, क्योंकि वह उन वस्तुओं का प्रयास कर सकता है जिनका परिणामों का स्वामी कभी साहस न करता, यह जानते हुए कि असफलता, जब वह आएगी, एक घटना होगी और एक अभियोग नहीं। वह जोखिम उठा सकता है, प्रयास कर सकता है, निश्चित-रूप-से-सुरक्षित की संकीर्ण श्रेणी से परे जा सकता है, क्योंकि जिस विपत्ति से वह बच रहा था — निर्णय, आत्मा पर दंडादेश — को भेद दिया गया है और वह अब डरी नहीं जाती। निर्णय से स्वतंत्रता प्रयास करने की स्वतंत्रता है, और प्रयास करने की स्वतंत्रता वास्तव में जीने की स्वतंत्रता है।

और उसमें एक और भी गहरा विश्राम है। जिसने निर्णय रख दिया है उसने परिणामों के माध्यम से अपना मूल्य सिद्ध करने की थकाऊ परियोजना भी रख दी है — वह परियोजना जिसने हर प्रयास को एक जनमत-संग्रह और हर असफलता को एक विपत्ति बना दिया। वे स्वतंत्रता से प्रयास कर सकते हैं क्योंकि वे अब, सफलता के माध्यम से, एक ऐसा मूल्य अर्जित करने का प्रयास नहीं कर रहे जिसके न होने से वे डरते थे; उन्होंने अंक-पट्ट से पूर्णतः क्रदम हटा लिया है। यह वही मुक्ति है जो हमने श्रेणीकरण करते मन के ध्वंस में पाई, अब असफलता के विशिष्ट भय पर लाई गई: यह आश्वासन नहीं कि आप असफल नहीं होंगे, जो कोई नहीं दे सकता, बल्कि उस निर्णय से स्वतंत्रता जिसने असफलता को असह्य बनाया — ताकि आप प्रयास कर सकें, और असफल हो सकें, और सीख सकें, और फिर प्रयास कर सकें, उतनी ही स्वतंत्रता से जितनी चलना सीखता एक बालक, जो हजार बार गिरता है और एक बार भी यह निष्कर्ष नहीं निकालता कि गिरना उसकी आत्मा पर एक दंडादेश है।

## एक ही असफलता के दो पाठ

एक उद्यमी का उपक्रम चार वर्ष बाद असफल होता है — वही बाह्य घटना, वही खोया धन, वही बंद द्वार। वह उसे दो ढंगों से पढ़ सकता है, और पाठ, न कि घटना, यह तय करेगा कि वह उसके साथ क्या करती है। पहले पाठ में वह एक निर्णय है: वह एक असफलता है, ढहना उसकी अपर्याप्तता सिद्ध करता है, चार वर्ष उसके मूल्य पर सुनाया गया एक दंडादेश हैं, और वह उसकी लज्जा को हर उस वस्तु में ले जाता है जो आगे आती है, अपने भविष्य को उन वस्तुओं की छोटी श्रेणी तक संकीर्ण करता हुआ जो उसे फिर अभियुक्त नहीं कर सकतीं, कुछ प्रयास न करता हुआ, क्योंकि अगली असफलता असह्य होगी।

दूसरे पाठ में वह एक घटना है: एक प्रयास किया गया, वास्तविक कौशल और वास्तविक प्रयास के साथ, और वह आशा के अनुसार नहीं सुलझा, उन कारणों से जिन्हें वह अब स्पष्ट परीक्षण कर सकता है — बाज़ार, समय, वे वस्तुएँ जो वह भिन्न करता, वे वस्तुएँ जिन्हें कोई नियंत्रित नहीं कर सकता था। वह पूर्ण हुई घटना को बिना निर्णय देखता है, उसे जो भी सिखाने को है सब सीखता है ठीक इसलिए कि वह लज्जा में डूब नहीं रहा, और आगे एक आत्मा पर दंडादेश नहीं बल्कि एक कठोर शिक्षा ले जाता है, स्वतंत्रता से खरीदी गई। घटना दोनों पाठों में अभिन्न थी। पहले में विध्वंस, और दूसरे में उर्वर स्पष्टता, पूर्णतः निर्णय का कार्य थे — जिसे उसने एक दशा में जोड़ा और दूसरी में रख दिया, और जो कभी, किसी भी दशा में, स्वयं असफलता में वास्तव में अंतर्निहित था ही नहीं।

## वे असफलताएँ जो हम कभी नहीं देखते

हम असफलता को कैसे प्रत्यक्ष करते हैं उसमें एक विकृति अंतर्निहित है, और उसे नाम देना उसका कुछ भार उठा देता है। हम, अपने चारों ओर, सफलताएँ देखते हैं — वे उपक्रम जो काम आए, वे कैरियर जो फले-फूले, वे लोग जो पहुँचे — क्योंकि सफलताएँ दृश्य, उत्सवित, प्रदर्शित होती हैं। हम असफलताएँ नहीं देखते, क्योंकि वे शांत, छिपी, अनकही हैं; वे उपक्रम जो ढह गए, वे प्रयास जो कुछ नहीं में आए, वह प्रयास का विशाल छिपा द्रव्यमान जो आशा के अनुसार नहीं सुलझा। और इसलिए हम एक अत्यंत अशुद्ध चित्र बनाते हैं जिसमें सफलता आदर्श है और हमारी अपनी असफलताएँ लज्जाजनक अपवाद हैं — जब सत्य, किसी को भी उपलब्ध जो ईमानदारी से देखे, यह है कि असफलता अत्यधिक आदर्श है, हर जीवन और

हर क्षेत्र का साझा द्रव्य, और दृश्य सफलताएँ एक ऐसी प्रक्रिया के दुर्लभ उत्तरजीवी हैं जो सफल होने से कहीं अधिक बार असफल होती है।

इसे देखना एक विशेष और अनावश्यक लज्जा से मुक्त होना है: यह कल्पना करने की लज्जा कि किसी की असफलताएँ असाधारण हैं, सफलताओं के एक संसार के विरुद्ध एक व्यक्तिगत दोष। वे असाधारण नहीं; वे सार्वभौमिक हैं, हर उस व्यक्ति का साझा अनुभव जिसने कभी किसी वस्तु का प्रयास किया, केवल इसलिए छिपी कि असफलता स्वयं को सफलता की भाँति विज्ञापित नहीं करती। जिन लोगों की आप प्रशंसा करते हैं वे असफल हुए, बार-बार, उन ढंगों से जिन्हें आपने कभी नहीं देखा; जिन क्षेत्रों का आप सम्मान करते हैं वे उन प्रयासों के एक छिपे पर्वत पर बने हैं जो कुछ नहीं में आए। आपकी असफलताएँ इस बात का चिह्न नहीं कि आप सफलताओं के एक संसार में अनोखे रूप से अपर्याप्त हैं। वे इस बात का चिह्न हैं कि आप वस्तुओं का प्रयास कर रहे हैं — जो एकमात्र वस्तु है जो कभी या तो असफलता या सफलता उत्पन्न करती है, और जिसे सचमुच असफल, वे जो निर्णय के भय से कुछ प्रयास नहीं करते, पूर्णतः छोड़ चुके हैं।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

एक असफलता एक घटना है; एक असफलता, यदि आप उसे होने दें, आपकी आत्मा पर सुनाया गया एक दंडादेश भी है। केवल घटना वास्तविक है। निर्णय उस स्वामी द्वारा जोड़ा जाता है जिसने अपना मूल्य परिणामों पर दाँव पर लगाया, और वह कुछ नहीं सिखाता, जबकि पूर्ण हुई घटना पर स्वच्छ दृष्टि सब कुछ सिखाती है।

एक असफलता लीजिए जिसे आप अब भी ढो रहे हैं और घटना को निर्णय से अलग कीजिए। पूर्ण हुई घटना को स्पष्ट और कठोरता से देखिए — क्या हुआ, आपने क्या योगदान किया, उसे क्या सिखाने को है — जबकि उसे अपने मूल्य पर एक दंडादेश में बदलने से इनकार करते हुए। ध्यान दीजिए कि स्वच्छ दृष्टि केवल तभी संभव है जब निर्णय रख दिया जाए।

## नेतृत्व और प्रभाव

---

चिंतित नेता एक कमरे को अपनी चिंता से भर देता है। बैठा हुआ नेता उसे साँस लेने की जगह से भर देता है। किसी को एक शब्द कहने की आवश्यकता नहीं।

— नेतृत्व पर टिप्पणी

नेतृत्व करना — औरों के लिए उत्तरदायित्व थामना, एक समूह के कार्य को आकार देना, अनेकों को प्रभावित करने वाले परिणामों पर प्रभाव वहन करना — परिणामों के स्वामित्व को उसके सबसे तीव्र और सबसे परिणामपूर्ण रूप में अनुभव करना है। नेता नियुक्त स्वामी है: वह जिसे उत्तरदायी ठहराया जाता है, वह जिसके निर्णय बाहर की ओर तरंगित होते हैं, वह जिस पर, भूमिका द्वारा, परिणाम टाँके जाते हैं। कोई क्षेत्र चिंतित स्वामी की अधिक माँग करता प्रतीत नहीं होता, और कोई क्षेत्र उसके विमोचन से अधिक रूपांतरित नहीं होता। इस पुस्तक की शिक्षा, नेतृत्व पर लाई गई, एक निष्क्रिय या उदासीन नेता उत्पन्न नहीं करती; वह कुछ ऐसा उत्पन्न करती है जिसकी संसार को बुरी तरह कमी है — एक ऐसा नेता जो व्यक्तिगत खाते की विकृत करती पकड़ के बिना महान उत्तरदायित्व वहन करता है।

मैं इस पर ठहरना चाहता हूँ क्योंकि स्वामित्व करते नेता की क्रीमते केवल नेता द्वारा नहीं बल्कि हर उस व्यक्ति द्वारा चुकाई जाती हैं जिसका वह नेतृत्व करता है। एक समूह के शीर्ष पर चिंतित स्वामी केवल निजी रूप से दुःख नहीं भोगता; वह अपनी पकड़ अपने चारों ओर हर किसी को संचारित करता है, समूचे समूह के क्षेत्र को अपने स्वामित्व, अपने भय, अपनी नियंत्रित करने और श्रेय पाने की आवश्यकता से आकार देता हुआ। नेतृत्व को इस पुस्तक के माध्यम से समझना यह देखना है कि एक व्यक्ति का व्यक्तिगत खाते के साथ संबंध कितनी गहराई से उन सबके जीवनो को आकार देता है जिनका वे नेतृत्व करते हैं।



## वह नेता जो भिंचन संचारित करता है

हमने पहले देखा कि एक अभिंचा व्यक्ति एक कमरे को बदल देता है, एक शांत बिंदु बनता हुआ जो औरों को शांत होने देता है। वही तंत्र उल्टा चलता है, और नेतृत्व वह है जहाँ वह सबसे शक्तिशाली रूप से चलता है। चिंतित नेता — परिणामों को पकड़ता, असफलता से डरता, अपनी स्थिति की रक्षा करता, खाता रखता — उन सबको यह सब संचारित करता है जिनका वह नेतृत्व करता है, जो उसके तनने के विरुद्ध तनते हैं, उसका भय आत्मसात करते हैं, और अपने ही कार्य को स्वयं कार्य के बजाय उसकी चिंता के प्रबंधन के चारों ओर संगठित करते हैं। परिणामों के एक स्वामी द्वारा नेतृत्व किया गया समूह चिंतित स्वामियों का एक समूह बन जाता है, प्रत्येक पकड़ता, प्रत्येक रक्षा करता, प्रत्येक अपना खाता रखता, क्योंकि शीर्ष पर भिंचन समूचे क्षेत्र भर नीचे प्रसारित होता है। नेता को एक शब्द कहने की आवश्यकता नहीं पड़ी; पकड़ सब शब्दों के नीचे संचारित होती है, तंत्रिका-तंत्र से तंत्रिका-तंत्र, और कमरे को भर देती है।

बैठा हुआ नेता — वह जो उत्तरदायित्व पूर्णतः वहन करता है किंतु जिसने चिंतित स्वामित्व रख दिया है — कुछ पूर्णतः और संचारित करता है, और ऐसे व्यक्ति द्वारा नेतृत्व किया गया समूह अंतर अनुभव कर सकता है भले ही वह उसे नाम न दे सके। साँस लेने को जगह है, प्रयास करने को जगह, बिना विपत्ति असफल होने को जगह, क्योंकि नेता वह भय संचारित नहीं कर रहा जो हर क्रिया को एक जनमत-संग्रह बना देता है। यह कोई नरम या निम्न-प्रदर्शन वाला नेतृत्व नहीं; यह विपरीत है। चिंता के बजाय बैठेपन से नेतृत्व किए गए समूह बेहतर प्रदर्शन करते हैं, अधिक प्रयास करते हैं, अड़चनों से तेजी से उबरते हैं, और स्वयं को अधिक समय बनाए रखते हैं, क्योंकि वे अपनी ऊर्जा नेता की पकड़ और अपने संचारित भय के प्रबंधन में नहीं खर्च कर रहे। नेता का व्यक्तिगत खाते का विमोचन, शब्दशः, हर उस व्यक्ति के लिए एक उपहार है जिसका वे नेतृत्व करते हैं।

## संप्रभु चयनकर्ता के बिना निर्णय करना

नेतृत्व निर्णय है, और हम पहले ही देख चुके हैं कि संप्रभु चयनकर्ता — विलग स्व बाहर से विचार-विमर्श करता और पर्याप्त कारण पर चयन करता — एक कल्पना है जो सच्ची अनिश्चितता के समक्ष पक्षाघातग्रस्त हो जाती है। नेता सच्चे अनिश्चित का निरंतर सामना करते हैं, और स्वामित्व करता नेता, विश्वस्त कि उसे संप्रभु तर्क से सही निर्णय रचना ही होगा, या तो

विश्लेषण में पक्षाघातग्रस्त होता है या एक निर्णय बल देता है और फिर उसके परिणाम का एक चिंतित पकड़ से स्वामित्व लेता है जो नीचे की धारा में हर वस्तु को विकृत करता है। जिस नेता ने चुनाव न करने की शिक्षा आत्मसात की है वह भिन्न ढंग से निर्णय करता है: जो एकत्र किया जा सकता है उसे एकत्र करता हुआ, ईमानदारी से ध्यान देता हुआ, और फिर निर्णय को समूचे से सुलझने देता हुआ — अपने अनुभव, स्थिति, औरों के परामर्श, दशाओं का समूचा — बजाय उसे चिंतित संप्रभु स्व से बल देने के, और फिर परिणाम को उस क्षेत्र को सौंपता हुआ जो उसे बैठाएगा।

यह अनिर्णय या उत्तरदायित्व का परित्याग नहीं; बैठा नेता निर्णय करता है, बहुधा तेजी से और भली-भाँति, और निर्णय के पूर्णतः पीछे खड़ा होता है। यह संप्रभु चयनकर्ता के पक्षाघात और स्वामी की विकृत करती पकड़ से मुक्त निर्णय है — निर्णय को समूचे से सुलझने दिया गया और फिर पूर्णतः समर्थित, परिणाम को क्षेत्र को सौंपा गया बजाय पकड़े जाने के। ऐसे नेता बहुधा अच्छा विवेक या अच्छी सहज-बुद्धि रखते वर्णित किए जाते हैं, और जो वर्णित किया जा रहा है वह ठीक यही है: सही निर्णय को चिंतित अंश से बल देने के बजाय समूचे से अवक्षेपित होने देने की सामर्थ्य, और फिर उस पर पूर्णतः कर्म करने की उस पकड़ के बिना जो उसके निष्पादन को विकृत करती। अच्छा विवेक क्षेत्र है जो एक ऐसे नेता के माध्यम से स्वच्छता से सुलझता है जो तंत्र को अपने ही स्वामित्व से जाम नहीं कर रहा।

## समूह में श्रेय और दोष

समूह व्यक्तिगत खाते के एक साझा संस्करण पर चलते हैं — श्रेय और दोष का वितरण — और नेतृत्व वह है जहाँ यह खाता सबसे आशंकित है। स्वामित्व करते नेता को श्रेय चाहिए, क्योंकि उसका मूल्य परिणामों पर दाँव पर है, और इसलिए वह उसे अपनी ओर खींचता है; और वह दोष को मोड़ देता है, क्योंकि दोष उसकी सत्ता पर एक निर्णय है, और इसलिए वह उसे बाहर औरों पर धकेल देता है। इस ढंग से नेतृत्व किया गया समूह श्रेय-खोज और दोष-स्थानांतरण का एक रंगमंच बन जाता है, जिसमें खाता जुनूनी रूप से रखा जाता है, क्योंकि नेता ने उसके रखने का शीर्ष पर प्रतिरूप दिया है। जो ऊर्जा कार्य को जानी चाहिए वह इसके बजाय बही को जाती है — स्थिति-निर्धारण को, रक्षा को, यह सुनिश्चित करने को कि श्रेय ठीक उतरे और दोष कहीं और उतरे।

जिस नेता ने व्यक्तिगत खाता रख दिया है वह इसे पूर्णतः रूपांतरित कर देता है, और फिर रूपांतरण प्रसारित होता है। ऐसे नेता को श्रेय नहीं चाहिए, क्योंकि उसका मूल्य परिणाम पर दाँव पर नहीं; वह उसे उनकी ओर बहने दे सकता है जिन्होंने कार्य किया, स्वतंत्रता से, क्योंकि वह खाता नहीं रख रहा। और वह दोष को नहीं मोड़ता, क्योंकि असफलता उसकी सत्ता पर एक निर्णय नहीं; वह उसे आत्मसात कर सकता है, स्वच्छता से परीक्षण कर सकता है, और समूह को उससे सीखने दे सकता है बिना दोष-स्थानांतरण की विषैली भगदड़ के। इस ढंग से नेतृत्व किया गया समूह अपनी ऊर्जा बही के बजाय कार्य में लगा सकता है, क्योंकि खाते का रखना शीर्ष पर रुक गया है। यह समूची शिक्षा के सबसे व्यावहारिक फलों में से है: व्यक्तिगत खाते से मुक्त एक नेता समूचे समूह को श्रेय और दोष की थकाऊ अर्थव्यवस्था से मुक्त करता है, और उसे अपनी ऊर्जा उस एकमात्र वस्तु को लौटाने देता है जो कभी बिंदु थी, जो कार्य है।

## व्यक्तिगत खाते के बिना शक्ति

एक अंतिम और गंभीरतर आयाम है, क्योंकि नेतृत्व शक्ति है, और शक्ति वह है जहाँ व्यक्तिगत खाता संसार में अपना सबसे खतरनाक कार्य करता है। परिणामों का स्वामी जो शक्ति पाता है उसे, अनिवार्यतः, अंशतः खाते की सेवा में उपयोग करता है — अपनी स्थिति सुरक्षित करने को, अपना मूल्य रक्षित करने को, तुलना जीतने को, हिसाब निपटाने को — और मानवीय हानि का इतिहास बहुत हद तक शक्तिशाली लोगों का अपने व्यक्तिगत खातों की सेवा करने का इतिहास है, पहुँच में हर किसी की विशाल क्रीमत पर। व्यक्तिगत खाते का विमोचन इसलिए उन लोगों के लिए केवल एक निजी आध्यात्मिक विषय नहीं जो शक्ति थामते हैं; वह उन सबसे परिणामपूर्ण वस्तुओं में से है जो संसार में घटित हो सकती हैं, क्योंकि व्यक्तिगत खाते की विकृति के बिना प्रयुक्त शक्ति अपने सबसे खतरनाक भ्रष्टाचार से मुक्त शक्ति है।

वह नेता जिसने सचमुच खाता रख दिया है — जिसे श्रेय नहीं चाहिए, जो दोष से नहीं डरता, जो परिणामों पर दाँव पर लगे मूल्य की रक्षा नहीं कर रहा, जो हिसाब नहीं निपटा रहा या तुलनाएँ नहीं जीत रहा — शक्ति को वैसे उपयोग कर सकता है जैसे वह सदा उपयोग की जाने को थी: कार्य और नेतृत्व-किए-गए की सेवा में, न कि स्व की। यह सेवक-नेता का प्राचीन आदर्श है, वह जो शक्ति को बिना उसके द्वारा स्वामित्व किए थामता है, और यह पुस्तक उसकी संरचना उघाड़ देती है: वह एक ऐसा नेतृत्व है जिससे व्यक्तिगत खाता विमोचित किया गया है, ताकि शक्ति स्वामी के बजाय कार्य को बहे। संसार में शक्तिशालियों की कमी नहीं। उसमें, बुरी तरह,

उन शक्तिशालियों की कमी है जिन्होंने व्यक्तिगत खाता रख दिया है — और वह रखना, जिसका यह समूची पुस्तक वर्णन करती रही है, प्रकट होता है कि न केवल एक निजी मुक्ति बल्कि बहुत संभवतः सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक भलाई है जो शक्ति में एक व्यक्ति हर उस व्यक्ति को दे सकता है जिस तक उनकी शक्ति पहुँचती है।

## दो प्रबंधक

दो प्रबंधक एक ही गलियारे में दो टीमों चलाते हैं। पहला परिणामों का स्वामी है: वह हर परिणाम को पकड़ता है, उसे श्रेय चाहिए, दोष से डरता है, और उसकी चिंता मंजिल को एक मौसम-तंत्र की भाँति भर देती है, ताकि उसकी टीम हर दिन का एक माप-योग्य भाग उसके मनोभावों को प्रबंधित करने, उसके तनाव के विरुद्ध तनने, अपने कार्य को स्वयं कार्य के बजाय उसकी अप्रसन्नता से बचने के चारों ओर संगठित करने में बिताती है। वे सक्षम लोग हैं जो शीर्ष पर भिंचन से छोटे बना दिए गए, जो समूची टीम भर नीचे प्रसारित होता है जब तक उनमें से प्रत्येक भी पकड़ता, रक्षा करता, अपना खाता रखता न हो।

दूसरी प्रबंधक वही उत्तरदायित्व वहन करती है और परिणामों की उतनी ही परवाह करती है, किंतु उसने उनका व्यक्तिगत स्वामित्व रख दिया है। उसे श्रेय नहीं चाहिए, इसलिए वह स्वतंत्रता से उनकी ओर बहता है जिन्होंने उसे अर्जित किया; वह दोष से नहीं डरती, इसलिए असफलताएँ भगदड़ से दूर के बजाय स्वच्छता से परीक्षित की जा सकती हैं; और उसका बैठापन मंजिल को उतनी ही निश्चितता से भरता है जितनी पहले प्रबंधक की चिंता ने उसकी भरी, उसकी टीम को साँस लेने को, प्रयास करने को, बिना विपत्ति असफल होने को जगह देता हुआ। उसकी टीम नरम या निम्न-प्रदर्शन वाली नहीं; वह विपरीत है, क्योंकि उसकी ऊर्जा एक नेता की पकड़ के प्रबंधन के बजाय कार्य को जाती है। किसी भी प्रबंधक ने इसके विषय में एक शब्द नहीं कहा। भिंचन, और उसकी अनुपस्थिति, सब शब्दों के नीचे संचारित हुए — और दोनों टीमों, समय के साथ, प्रत्येक के शीर्ष पर खाते के साथ संबंध का आकार बन गई।

## वह नेता जिसे प्रतिस्थापित किया जा सकता है

एक नेता के व्यक्तिगत खाते के साथ संबंध की एक उघाड़ती परीक्षा यह है कि वे अपनी ही प्रतिस्थापनीयता को कैसे देखते हैं। स्वामित्व करता नेता प्रतिस्थापनीय होना सह नहीं सकता; वह भूमिका को एक संपत्ति की भाँति पकड़ता है, स्वयं को अपरिहार्य बनाता है, उस ज्ञान और

उन संबंधों को संचित करता है जो केवल वह थामता है, क्योंकि उसका मूल्य वह होने पर दाँव पर है जो मायने रखता है, और एक नेता जिसे प्रतिस्थापित किया जा सकता है, स्वामी के लिए, एक नेता है जो कुछ नहीं है। और इसलिए वह, अपने चारों ओर, एक ऐसा संगठन बनाता है जो उसके बिना कार्य नहीं कर सकता — जो सुरक्षा-सा अनुभव होता है और वस्तुतः एक प्रकार का कारागार है, नेता दोनों के लिए, जो कभी सचमुच विश्राम या प्रस्थान नहीं कर सकता, और नेतृत्व-किए-गए के लिए, जो एक एकल बिंदु पर आश्रित रखे जाते हैं जिसे स्वामी उन्हें पार बढ़ने नहीं देगा।

जिस नेता ने व्यक्तिगत खाता रख दिया है वह प्रतिस्थापनीयता को पूर्णतः भिन्न ढंग से देखता है — बल्कि उसकी ओर बनाता है, औरों को विकसित करता हुआ, जो वह जानता है उसे वितरित करता हुआ, संगठन को अपने बिना फलने-फूलने को तैयार करता हुआ, क्योंकि उसका मूल्य अपरिहार्य होने पर दाँव पर नहीं और वह देख सकता है कि एक नेता जिसे प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता नेतृत्व के गहनतम कार्य में असफल हो गया है, जो कुछ ऐसा बनाना है जो उससे अधिक टिके। यह उस नेता और उस नेता के बीच का अंतर है जो भूमिका की सेवा करता है और जो उसका स्वामित्व करता है: स्वामी स्वयं को आवश्यक बनाता है; सेवक स्वयं को अनावश्यक बनाता है, और उसे सफलता गिनता है। अपनी ही प्रतिस्थापनीयता की ओर नेतृत्व करना — वह बनाना जिसे अब आपकी आवश्यकता नहीं — केवल उसके लिए संभव है जिसे कोई बनने को भूमिका की आवश्यकता नहीं, और वह उन सबसे निश्चित चिह्नों में से है कि व्यक्तिगत खाता सचमुच रख दिया गया है।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

चितित नेता एक कमरे को अपनी चिंता से भर देता है; बैठा हुआ उसे साँस लेने की जगह से भर देता है। किसी को एक शब्द कहने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि भिंचन, या उसकी अनुपस्थिति, सब शब्दों के नीचे संचारित होती है। जिस नेता ने व्यक्तिगत खाता रख दिया है वह हर उस व्यक्ति को मुक्त करता है जिसका वह नेतृत्व करता है श्रेय और दोष की थकाऊ अर्थव्यवस्था से।

आज एक कमरे में प्रवेश कीजिए — एक बैठक, एक वार्तालाप जिसका आप नेतृत्व कर रहे हैं — परिणाम पर पकड़ और श्रेय की आवश्यकता रखकर। भिंचन का संचारक होने के बजाय शांत बिंदु बनिए। ध्यान दीजिए कि क्या आपके चारों ओर का क्षेत्र बैठता है, थोड़ा भी, एक ऐसी उपस्थिति के चारों ओर जिसने अंक रखना बंद कर दिया है।

## स्वयं आध्यात्मिक खोज

---

अहं जो अंतिम संपत्ति जन्त करता है वह ज्ञानोदय है। वह अपने ही विलय का भी खाता  
रखेगा, यदि आप उसे होने दें।

— खोज पर टिप्पणी

एक अंतिम क्षेत्र है जिसमें व्यक्तिगत खाता अपना सबसे सूक्ष्म और सबसे दृढ़ कार्य करता है, और वह स्वयं आध्यात्मिक खोज है — उस स्वतंत्रता का वह पीछा जिसका यह पुस्तक वर्णन करती रही है। क्योंकि अहं, एक ऐसी शिक्षा से खतरे में जो उसे घुला देगी, की एक अंतिम और प्रतिभाशाली चाल है: शिक्षा को एक नई संपत्ति के रूप में उठा लेना, ज्ञानोदय को स्वामित्व किए जाने को एक नया परिणाम बनाना, आध्यात्मिक प्रगति को रखे जाने को एक नया खाता, जागरण को एक नई उपलब्धि जिससे स्वयं को औरों के विरुद्ध श्रेणीबद्ध करे। खोजी एक जीवन-भर व्यक्तिगत खाते के विलय का पीछा एक ऐसे ढंग से कर सकता है जो स्वयं व्यक्तिगत खाता है, पहले से अधिक जमा हुआ, अब चोगे पहने।

यह अध्याय इसलिए ठीक इसी पुस्तक के पाठक पर लक्षित एक चेतावनी है, उसके लेखक सहित, क्योंकि खतरा किसी भी आध्यात्मिक पथ पर सार्वभौमिक और अपरिहार्य है। वह शिक्षा जो आपको मुक्त करेगी पिंजरों में सबसे सूक्ष्म बन सकती है यदि अहं उसे एक संपत्ति के रूप में उठा ले — और वह प्रयास करेगा, बड़ी चतुराई से, क्योंकि उसका अस्तित्व दाँव पर है। इसे स्पष्ट देखना पथ का अंग है; शायद, अंत में, उसका अधिकांश।

### सबसे सूक्ष्म खाता

चाल को सटीकता से देखिए, क्योंकि वह इतनी सूक्ष्म है कि सामान्यतः अनदेखी रह जाती है। एक व्यक्ति इस जैसी एक शिक्षा से मिलता है, समझता है कि व्यक्तिगत खाता दुःख का स्रोत है, और उसे छोड़ने निकलता है — और लगभग तुरंत अहं स्वयं को एक उच्चतर स्तर पर पुनर्गठित कर लेता है, अब अपनी आध्यात्मिक प्रगति का खाता रखता हुआ। क्या मैं प्रगति

कर रहा हूँ? क्या मैं उससे अधिक जागृत हूँ जितना मैं था, जितने औरों हैं? क्या मैंने साक्षी, समर्पण, अनायास कर्म प्राप्त किया है? ठीक वे अवस्थाएँ जिनका यह पुस्तक वर्णन करती है अर्जित किए जाने को नई संपत्तियाँ और स्वामित्व किए जाने को नए परिणाम बन जाती हैं, और खोजी, जो व्यक्तिगत खाते को घुलाने निकला, पाता है कि उसने उसे केवल आध्यात्मिक तल पर स्थानांतरित किया है, जहाँ उसे देखना कठिनतर और इसलिए वह अधिक दृढ़ है। अहं उस शिक्षा को झेल चुका है जो उसे घुला देगी, स्वयं विलय को अपनी नई परियोजना, अपनी नई संपत्ति, अपने पद के नए स्रोत के रूप में उठाकर।

यही कारण है कि आध्यात्मिक मंडल इतनी बार अहं का एक अनोखा और पहचानने योग्य रूप समाहित करते हैं — आध्यात्मिक गर्व, उपलब्धि पर सूक्ष्म प्रतिस्पर्धा, खोजी अपने जागरण को औरों के विरुद्ध मापता हुआ, शिक्षक अपनी अनुभूति को एक संपत्ति की भाँति पकड़ता हुआ जो उसे उन्नत करती है। इसमें से कुछ भी साधारण अर्थ में पाखंड नहीं; यह अहं वह कर रहा है जो अहं करता है, अहं-रहितता की शिक्षा को भी स्वामित्व और श्रेणीबद्ध करने को एक और वस्तु के रूप में उठाता हुआ। और यह कोई समस्या नहीं जिसे अहं-रहित होने का अधिक कठोर प्रयास करके सुलझाया जा सके, क्योंकि प्रयास करना अहं है, और अहं-रहित बनने की परियोजना अपने शुद्धतम रूप में खाता है। सबसे सूक्ष्म खाता आध्यात्मिक है, और उसे उसी स्व द्वारा बंद नहीं किया जा सकता जिसने उसे खोला।

## वह खोजी जिसे विलीन होना ही है

यहाँ हर सच्चे आध्यात्मिक पथ के हृदय में कोआन है, और यह पुस्तक उसे आपके लिए हल नहीं कर सकती क्योंकि उसे हल द्वारा हल नहीं किया जा सकता। खोजी अपने ही विलय को खोज रहा है; किंतु खोजी ठीक वह वस्तु है जिसे विलीन होना ही है। जब तक एक अवस्था प्राप्त करने को एक कोई खोज रहा है, वह कोई — पृथक स्व, स्वामी, खाते का रखवाला — पूर्णतः अक्षत है, बल्कि खोज से पुष्ट, क्योंकि खोज एक ऐसे पृथक खोजी को पूर्वमानती है जिसमें कमी है और जो प्राप्त करेगा। यह पुस्तक जिस स्वतंत्रता का वर्णन करती है वह खोजी द्वारा एक उपलब्धि नहीं; वह खोजी का भेद दिया जाना है। वह स्व द्वारा अर्जित की जाने को एक नई संपत्ति के रूप में नहीं आती; वह इस पहचान के रूप में उदित होती है कि वह स्व जो उसे अर्जित करेगा कभी उतना वास्तविक था ही नहीं जितना वह प्रतीत हुआ। और यह पहचान



खोजी के प्रयास द्वारा उत्पन्न नहीं की जा सकती, क्योंकि खोजी का प्रयास ठीक उस स्व की क्रिया है जिसे भेद दिया जाना ही है।

तो क्या किया जाना है? कुछ नहीं जिसे अहं एक परियोजना के रूप में उठा सके, जो ठीक वही है जो इसे सबसे कठिन और सबसे सरल वस्तु बनाता है। खोज जारी रह सकती है — अभ्यास, जिज्ञासा, ध्यान — किंतु इस बढ़ती पहचान के साथ कि वह खोजी में एक संपत्ति नहीं जोड़ रही बल्कि खोजी को घिस रही है, उसी एक को घुलाती हुई जो खोजता है। प्रयास वास्तविक है और उसका स्थान है, जैसे उपकरण तैयार करने का प्रयास सदा रखता है; किंतु उसका फल खोजी का एक अवस्था का प्राप्त करना नहीं, बल्कि वह शांत उदय है, बहुधा जब खोज स्वयं को थका चुकी हो, कि आरम्भ से कोई पृथक खोजी था ही नहीं, और प्राप्त करने को कुछ नहीं, और जाने को कहीं नहीं, और जाने को कोई नहीं। खोजी सफल होकर नहीं बल्कि भेद दिए जाकर विलीन होता है — और स्वतंत्रता कभी खोजी की उपलब्धि नहीं थी बल्कि वह अनुपस्थिति है जिसे खोजी का विलय उघाड़ देता है।

## पथ पर तुलना

श्रेणीकरण करता मन, जिसे हमने पहले ध्वस्त किया, आध्यात्मिक पथ पर उपलब्धि की तुलना के रूप में स्वयं को पुनर्गठित कर लेता है, और वह अपने ही नाम का पात्र है क्योंकि वह इतना सामान्य और इतना संक्षारक है। खोजी अपने जागरण को औरों के विरुद्ध मापता है — इससे अधिक उन्नत, उससे कम, शिक्षक से पीछे, नौसिखिए से आगे — और अंक-पट्ट का समूचा तंत्र, जिसे शिक्षा घुलाने को थी, स्वयं को आध्यात्मिक मुद्रा में फिर जमा कर लेता है। यह शायद अहं की दृढ़ता का शुद्धतम प्रदर्शन है: कि वह तुलना के विलय की शिक्षा को भी ले सकता है और उसका उपयोग एक नई तुलना को ईंधन देने को कर सकता है, स्वों को स्व के विलय में उनकी प्रगति से श्रेणीबद्ध करता हुआ। अंक-पट्ट अपनी इकाइयों को सांसारिक सफलता से आध्यात्मिक उपलब्धि में बदलकर बच जाता है, और खोजी पहले जितना ही चिंतित होकर अंक रखता है, अब अपने ही जागरण पर।

इसे देखना उससे मुक्त होना है, आध्यात्मिक तुलना जीतकर नहीं — जो वही जाल एक स्तर ऊपर है — बल्कि यह पहचानकर कि उनकी उपलब्धि में श्रेणीबद्ध करने को कोई पृथक स्व हैं ही नहीं, क्योंकि समूची शिक्षा यह है कि पृथक स्व भ्रम है। आध्यात्मिक तुलना को ठीक वे पृथक स्व चाहिए जिनकी अवास्तविकता समूचा बिंदु है; जागरण पर अंक रखना जागरण को

पूर्णतः चूकना है, जैसे इस पर युद्ध करना कि सबसे शांतिपूर्ण कौन है। पथ एक दौड़ नहीं, क्योंकि कोई पृथक धावक नहीं और कोई समाप्ति-रेखा नहीं और समय रखता कोई नहीं। जिस क्षण तुलना उसके लिए देखी जाती है जो वह है — आध्यात्मिक वेश में श्रेणीकरण करता मन — वह अपनी मुद्रा खो देती है, और खोजी काल्पनिक दौड़ से उस एकमात्र स्थान को लौटाया जाता है जहाँ पथ कभी चला गया था, जो यहाँ है, अभी, बिना अंक-पट्ट, बिना प्रतिद्वंद्वी, और बिना जीतने को एक पृथक स्वा।

## जाने को कहीं नहीं

हम, स्वयं आध्यात्मिक खोज के पथ से, उसी पहचान पर आते हैं जिसने इस पुस्तक के दार्शनिक चाप को बंद किया: कि जाने को कहीं नहीं, प्राप्त करने को कुछ नहीं, प्राप्त करने को कोई अवस्था नहीं — क्योंकि स्वतंत्रता कभी खोजी से आगे एक गंतव्य नहीं थी बल्कि उनके नीचे की आधार-भूमि, कभी अनुपस्थित नहीं, केवल उस खोज से ढकी जो उसे खोजती थी। यह आध्यात्मिक खोज के विषय में कही जा सकने वाली अंतिम और सबसे मुक्तिदायी वस्तु है, और खोजी के लिए सबसे कुंठाजनक भी, जो एक गंतव्य वाला पथ और स्वामित्व को एक उपलब्धि चाहता है। कोई गंतव्य नहीं। केवल वर्तमान पहचान है, अभी उपलब्धि और किसी आगे के प्रयत्न के अंत में नहीं, कि जो आपने खोजा वह आप पहले से हैं, कि खोजी ही एकमात्र बाधा था, और कि खोज सफल होकर नहीं बल्कि भेद दिए जाकर समाप्त होती है।

सो खोज जारी रहने दीजिए, यदि वह रहेगी — अभ्यास, जिज्ञासा, ध्यान अच्छे हैं, और वे खोजी को घिसते हैं जैसे जल पत्थर को घिसता है। किंतु उसे आध्यात्मिक खाते के बिना जारी रहने दीजिए: बिना मापी जाने को प्रगति, स्वामित्व किए जाने को उपलब्धि, जीती जाने को तुलना, पहुँचने को गंतव्य। उसे, इसके बजाय, उसका क्रमिक भेद दिया जाना होने दीजिए जो खोजता है, जब तक खोज इस पहचान में विलीन न हो जाए कि कभी जाने को कहीं और कभी जाने को कोई था ही नहीं — केवल यह, एक व्यवस्था, स्वयं को सम्पन्न करती हुई, यहाँ, अभी, जैसे उसने सदा किया, उस खोजी के साथ जिसने स्वयं को उससे पृथक समझा, अंततः, उसके क्षणिक आकारों में से एक के रूप में उघड़ता हुआ। व्यक्तिगत खाते के अंत की खोज समाप्त होती है, जैसे उसे होना ही है, उस एक के भेद दिए जाने के साथ जो यह खाता भी रख रहा था — और जो शेष रहता है, जब आध्यात्मिक खोजी भी विलीन हो चुका, वह सरल, निराधार, सदा-उपस्थित स्वतंत्रता है जो कभी किसी की उपलब्धि नहीं थी और सदा, पहले से, वस्तुस्थिति थी।

## साधना-शिविर

एक मौन ध्यान-शिविर पर, एक व्यक्ति स्वयं को, अपने विषाद के साथ, अंक रखते पाता है। वह ध्यान देता है कि कौन सबसे लम्बा बैठता है, कौन सबसे प्रशान्त दिखता है, कौन-से औरों ने अधिक शिविर किए हैं; वह अपनी प्रगति को उनकी के विरुद्ध मापता है, अनुरेखित करता है कि उसका अभ्यास गहरा रहा है या नहीं, आगे होने का छोटा उठाव और पीछे होने का छोटा डंक अनुभव करता है। वह स्व को घुलाने आया, और उसने तीन दिन उसे सभाकक्ष में अन्य स्वों के विरुद्ध श्रेणीबद्ध करने में बिताए हैं, आध्यात्मिक उपलब्धि की नई और परिष्कृत मुद्रा में। अंक-पट्ट, जिसे उसने सोचा कि वह घर छोड़ आया था, बस अपनी इकाइयाँ बदलकर उसके पीछे मौन में चला आया।

यदि वह सौभाग्यशाली है, तो वह उसकी निरर्थकता देख लेता है — एक व्यक्ति इस पर प्रतिस्पर्धा करता हुआ कि सबसे कम प्रतिस्पर्धी कौन है, एक ऐसे अभ्यास में स्वों को श्रेणीबद्ध करता हुआ जिसका अर्थ उघाड़ना है कि पृथक स्व भ्रम है — और देखना, प्रतिस्पर्धा रोकने के एक नए प्रयास के बजाय, वह है जो उसे ढीला करता है। वह आध्यात्मिक तुलना नहीं जीत सकता, क्योंकि उसे जीतना एक स्तर ऊपर पकड़ा जाना है; वह केवल उस एक को भेद सकता है जो अंक रख रहा है, और पहचान सकता है कि पथ कभी एक दौड़ नहीं था, क्योंकि कोई पृथक धावक नहीं और कोई समाप्ति-रेखा नहीं और समय रखता कोई नहीं। शिविर अपना वास्तविक कार्य तब नहीं करता जब वह काल्पनिक श्रेणी में ऊपर बढ़ता है बल्कि जब श्रेणी उसके लिए देखी जाती है जो वह है और चुपचाप गिरा दी जाती है, उसे दौड़ से उस एकमात्र स्थान को लौटाते हुए जहाँ पथ कभी चला गया था, जो यहाँ है, अभी, बिना प्रतिद्वंद्वी और बिना अंक।

## शिक्षक का जाल

आध्यात्मिक खाता उनमें एक विशिष्ट और मार्मिक रूप लेता है जो सबसे दूर जाते हैं, और उसे नाम देना सार्थक है क्योंकि वह निष्कपट को पकड़ता है: उसे सिखाने के लिए अपनी अनुभूति को पकड़ना। एक व्यक्ति कुछ सत्य देखता है, कुछ सचमुच मुक्तिदायी, और स्वाभाविक रूप से उसे साझा करना चाहता है — और साझा करने में, लगभग अगोचर रूप से, देखना एक संपत्ति, एक प्रमाण-पत्र, एक वस्तु बन जाता है जो किसी के पास है और औरों के पास नहीं, और अहं-रहितता का शिक्षक, शिक्षा के चारों ओर, ठीक वही पृथक, विशेष स्व पुनर्गठित कर लेता है

जिसे शिक्षा घुलाने को थी। जो-जानता-है की भूमिका सब भूमिकाओं में सबसे चिपकती में से है, क्योंकि वह उनके सम्मान से निरंतर पुष्ट होती है जो सीखने आते हैं, और वह चुपचाप उन्हें भी पकड़ सकती है जो ऐसी सब भूमिकाओं के विलय को सिखाते हैं।

यह सिखाने के विरुद्ध तर्क नहीं, जो महान भलों में से है, न अनुभूत के लिए मौन रहने का कारण। यह एक चेतावनी है कि सिखाने की भूमिका, हर भूमिका की भाँति, एक संपत्ति के रूप में पकड़ी जा सकती है, और कि सच्चे शिक्षक को इसे भी निरंतर रखना ही होगा — जो-जानता-है बने बिना सिखाना ही होगा, अनुभूति को एक प्रमाण-पत्र के रूप में संचित किए बिना साझा करना, पहुँच चुके होने की उच्च-भूमि पर खड़े हुए बिना संकेत करना। गहनतम शिक्षकों ने सदा यह जाना है, और स्वयं से दूर संकेत किया है, आग्रह करते हुए कि उनके पास कुछ नहीं जो औरों के पास न हो, उस आसन को अस्वीकारते हुए जिसे उनके विद्यार्थी बनाते रहे। शिक्षक का जाल उसे देने के लिए अनुभूति का स्वामित्व लेना है; और एकमात्र बचाव वही है जो इस पुस्तक में हर जगह — इस खाते को भी रख देना, और सिखाना, यदि कोई सिखाता है, एक और स्थल के रूप में जिसके माध्यम से समझ गुजरती है, उसका कुछ भी स्वामित्व में न लेते हुए।

## साधारण ज्ञानोदय

इसे दोहराना उचित है, एक विशेष उपलब्धि के लिए आध्यात्मिक अहं की निरंतर आशा के विरुद्ध, कि वह जागरण जिसकी ओर यह पुस्तक संकेत करती है बाहर से वास्तव में कैसा दिखता है: किसी विशेष वस्तु जैसा नहीं। कोई आभा नहीं, कोई सतत आनंद-अवस्था नहीं जो औरों को दृश्य हो, कोई अतिमानवीय प्रशान्ति नहीं जो कभी न डगमगाए। जिसने सचमुच व्यक्तिगत खाता रख दिया है, काफ़ी हद तक भी, वह साधारण कार्य करता एक साधारण व्यक्ति जैसा दिखता है — खाता, कार्य करता, बात करता, विश्राम करता — और स्वतंत्रता अधिकतर अदृश्य है, यदि बिल्कुल भी, तो केवल एक निश्चित हल्केपन, एक निश्चित सहजता, उस भिंचन की एक निश्चित अनुपस्थिति के रूप में दर्ज होती हुई जिसे औरों यह जाने बिना ढोते हैं कि वे उसे ढोते हैं। आध्यात्मिक अहं, अर्जित और प्रदर्शित किए जाने को एक नाटकीय उपलब्धि का भूखा, इसे निरुत्साहक पाता है; जो ठीक यही कारण है कि वह सबसे निश्चित चिह्न है कि उपलब्धि वास्तविक है।

क्योंकि जिस क्षण जागरण कुछ विशेष बन जाता है — कुछ दृश्य, प्रभावशाली, स्वामित्व-योग्य, श्रेणीबद्ध-योग्य — व्यक्तिगत खाता उसका स्वामित्व लेने को फिर खुल चुका है, और अहं ज्ञानोदय को अपनी सबसे भव्य वेशभूषा के रूप में पहने है। असली वस्तु ठीक इसलिए साधारण है कि वह उस विशेष पृथक स्व का विलय है जो असाधारण बनना चाहता था; जो शेष रहता है, जब वह स्व रख दिया जाता है, वह कोई दमकता आध्यात्मिक गुरु नहीं बल्कि भिंचन से मुक्त एक साधारण व्यक्ति है, साधारण दिन से बिना भार मिलता हुआ, बिल्कुल कुछ विशेष नहीं। जो खोजी इसे समझ लेता है वह असाधारण उपलब्धि खोजना बंद कर देता है और साधारण दिन को लौटता है, जो वही था जहाँ स्वतंत्रता सदा थी — कोई विशेष बनने में नहीं, बल्कि उस एक के शांत, अदृश्य, अश्रेणीबद्ध-योग्य रख देने में जो बनना चाहता था।

और इस प्रकार आध्यात्मिक खोज, अपने अंत तक पीछा की गई, ठीक वहीं आती है जहाँ साधारण दिन समूचे समय प्रतीक्षा कर रहा था: श्वास पर, बिना प्रयास खींची गई; छोटे कार्य पर, बिना स्वामी के किया गया; उस अनुल्लेखनीय घंटे पर, बिना निर्णय मिला। पहुँचने को कभी कोई विशेष स्थान था ही नहीं, क्योंकि स्वतंत्रता कभी विशेष थी ही नहीं — केवल साधारण, अंततः उस एक के बिना मिला जो भार जोड़ रहा था। खोज उपलब्धि में नहीं बल्कि अपने पैरों के नीचे की आधार-भूमि पर आगमन में समाप्त होती है, जिस पर खोज समूचे समय खड़ी थी।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

अहं जो अंतिम संपत्ति जब्त करता है वह ज्ञानोदय है। वह अपने ही विलय का भी खाता रखेगा — अपनी प्रगति मापता, अपना जागरण श्रेणीबद्ध करता, अपनी अनुभूति का स्वामित्व लेता। किंतु खोजी ठीक वह वस्तु है जिसे भेद दिया जाना ही है, और स्वतंत्रता कभी खोजी की उपलब्धि नहीं थी। जाने को कहीं नहीं।

आज, अपने उस भाग को पकड़िए जो आपकी अपनी वृद्धि पर अंक रखता है — जो पूछता है कि क्या आप प्रगति कर रहे हैं, क्या आप पहले से या औरों से अधिक जागृत हैं। देखिए कि यह अंक-रखवाला आध्यात्मिक वेश में व्यक्तिगत खाता है, और उसे संतुष्ट करने के बजाय भेद दिया जाने दीजिए। कोई नहीं जिसे पहुँचने की आवश्यकता है।

## पालन-पोषण और वह उद्यान जिसे आप नियंत्रित नहीं करते

*आपने अपना बच्चा बनाया नहीं, और आप अपना बच्चा बना नहीं सकते। आप केवल दशाओं को सँभाल सकते हैं और उस जीवन से प्रेम कर सकते हैं जो आता है।*

— पालन-पोषण पर टिप्पणी

कोई स्वामित्व नहीं जिसे कोई मनुष्य एक बच्चे के स्वामित्व से अधिक प्रचंडता से अनुभव करता है, और कोई स्थान नहीं जहाँ व्यक्तिगत खाता एक के पालन-पोषण से अधिक शांत क्षति करता है। मेरा बच्चा, हम कहते हैं, और उस छोटे स्वामित्व में इतना प्रचंड एक प्रेम और इतना सम्पूर्ण एक उत्तरदायित्व उँडेलता है कि भार, अनेक माता-पिताओं के लिए, सबसे भारी बन जाता है जो वे कभी ढोएँगे: यह विश्वास कि बच्चे के परिणाम उनके रचने को हैं, बच्चे की असफलताएँ उनके रोकने को थीं, बच्चे का समूचा जीवन एक परियोजना जिस पर वे अंततः परखे जाएँगे। इस पुस्तक की शिक्षा यहाँ, सब स्वामित्वों में सबसे कोमल में पहुँचती है, और वह सबसे कठिन और सबसे मुक्तिदायी प्रश्न पूछती है: जीवन किसका है?

मुझे तुरंत कह देने दीजिए कि यहाँ कुछ भी अपने बच्चों से विरक्ति, उन्हें पालने के विशाल उत्तरदायित्व की उपेक्षा, या उनके फलने-फूलने के प्रति उदासीनता की सलाह नहीं देता। माता-पिता की देखभाल हम जो हैं उसके सर्वोत्तम में से है, और एक युवा जीवन को सँभालने का कार्य वास्तविक, माँग करता, और पवित्र है। यह पुस्तक जिस पर प्रश्न करती है वह देखभाल नहीं बल्कि स्वामित्व है — यह विश्वास कि बच्चा माता-पिता की परियोजना है और बच्चे के परिणाम माता-पिता का निर्णय — क्योंकि वह स्वामित्व दोनों को हानि पहुँचाता है, माता-पिता को, जो एक असंभव उत्तरदायित्व से कुचले जाते हैं, और बच्चे को, जो एक ऐसे जीवन से वंचित किया जाता है जो सचमुच उनका अपना हो।

## बच्चे ने अपना ही क्षितिज पार किया

उस विचित्र तथ्य को विचारिए कि वह बच्चा जो इतना आपकी रचना-सा अनुभव होता है, आरम्भ से, एक अजनबी है — एक समूचा जीवन जिसने आपके कर्तृत्व से कहीं परे दशाओं में से अपना ही घटना-क्षितिज पार किया, एक स्वभाव वहन करता हुआ जिसे आपने नहीं चुना, एक प्रकृति जिसे आपने अभिकल्पित नहीं किया, एक पथ जो आपके समझने से पहले बन रहा था और आपकी पहुँच से परे जारी रहेगा। आपने बच्चा नहीं बनाया; बच्चा उसी व्यवस्था द्वारा जोड़ा गया जो हर वस्तु जोड़ती है, आपसे परे पीछे फैली एक आनुवंशिक विरासत और दशाओं के एक विन्यास पर खींची हुई जिसे कोई माता-पिता नहीं रचता। आप इस जीवन के रचयिता नहीं। आप कुछ समय के लिए उसके न्यासधारी हैं, उसकी आरम्भिक दशाओं के सँभालकर्ता, उसके उद्घाटन में अत्यधिक महत्व के एक सहभागी — किंतु उसके संप्रभु रचयिता नहीं, और वह नहीं जिस पर उसका समूचा परिणाम अंततः टिकता है।

यह पहचान, माता-पिता की भूमिका को घटाने से कोसों दूर, उसे ठीक आकार देती है, और उसके ठीक आकार देने में एक विशाल राहत बसी है। बच्चे का कठिन स्वभाव आपकी अभिकल्प की असफलता नहीं; बच्चे के संघर्ष आपके पालन-पोषण पर वह निर्णय नहीं जो आपका अपराध-बोध आग्रह करता है कि वे हैं; बच्चे का पथ, जो किसी भी वस्तु से विचलित होगा जिसकी आपने योजना बनाई, उनका है और आपकी परियोजना गलत हुई नहीं। आपने दशाओं को यथासंभव सँभाला, उस बुद्धि और उन सीमाओं के साथ जो आपके पास थीं, जो स्वयं अंततः आपकी नहीं थीं; और जो जीवन आया वह अपना जीवन है, व्यवस्था में एक सच्चा सहभागी, आपके कर्तृत्व का उत्पाद नहीं। इसे देखना एक भार रख देना है जिसे कोई माता-पिता कभी वास्तव में ढो ही नहीं सका: एक ऐसे जीवन को रचा होने का भार जो कभी आपका रचने को था ही नहीं।

## माली, अभियंता नहीं

दो छवियाँ इस बात के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं कि हम एक बच्चे के पालन-पोषण को कैसे समझते हैं, और लगभग समूचा दुःख गलत छवि चुनने से आता है। अभियंता विशिष्टता के अनुसार बनाता है: वह परिणाम का रचयिता है, प्रक्रिया को नियंत्रित करता है, और उत्पाद के लिए उत्तरदायी है, जो ठीक उसकी अभिकल्प या ठीक उसकी असफलता है। माली कुछ पूर्णतः और करती है: वह दशाओं को सँभालती है — मिट्टी, जल, प्रकाश, उससे रक्षा जो हानि

पहुँचाएगा — और फिर वह जीवन पर विश्वास करती है कि वह अपनी ही प्रकृति के अनुसार उद्घाटित होगा, जिसे उसने अभिकल्पित नहीं किया और जिसे वह आदेश नहीं दे सकती। माली निष्क्रिय नहीं; उसका सँभालना निरंतर, कुशल, और गहराई से परिणामपूर्ण है। किंतु वह पौधे का रचयिता नहीं; वह उन दशाओं की सेवा करती है जिनमें पौधा स्वयं को रचता है, और वह जो उगता है उससे अभियंता के अपने उत्पाद पर निर्णय के बजाय देखभाल से मिलती है।

एक अभियंता के बजाय एक माली के रूप में पालन-पोषण करना इस अध्याय की समूची व्यावहारिक सलाह है। दशाओं को अपने सब कुछ से सँभालिए — प्रेम, संरचना, रक्षा, उदाहरण, देखभाल के हजार दैनिक कृत्य — और फिर परिणाम का स्वामित्व छोड़िए, जो कभी आपका रचने को था ही नहीं और जिसे बच्चा, हर जीवन की भाँति, अपने ही समूचे से सुलझाएगा। यह कम प्रेम या कम प्रयास नहीं; माली अनवरत सँभालती है। यह प्रेम और प्रयास है जो अभियंता के असंभव भार से मुक्त है, उस निर्णय से मुक्त जो बच्चे के जीवन में हर कठिनाई को माता-पिता के मूल्य पर एक दंडादेश में बदल देता है। जो उद्यान आप सँभालते हैं वह कोई उत्पाद नहीं जिसे आप बनाते हैं। वह एक जीवन है जिसकी आप सेवा करते हैं, और फिर उसे अपना होने को छोड़ देते हैं।

## परिणाम का स्वामित्व लिए बिना प्रेम करना

सबसे कठिन प्रयोग तब आता है जब बच्चा, बड़ा होकर, वे चुनाव करता है जो माता-पिता न करते, वे असफलताएँ भोगता है जिनसे माता-पिता डरे, वह पथ चलता है जिससे माता-पिता डरे — और माता-पिता, परिणाम का स्वामी, उस सबको अपनी असफलता के रूप में पढ़ने को, बच्चे के बंद क्षितिजों के आर-पार काश मैंने की एक वेदना में पीछे पहुँचने को लुभाया जाता है। यहाँ शिक्षा माता-पिता को अपनी गहनतम राहत देती है: बड़ा बच्चा अपने ही क्षितिज पार कर गया, अपने ही समूचे में से, व्यवस्था में एक सच्चे सहभागी के रूप में, और उनके चुनाव माता-पिता के रचे परिणाम उतने ही नहीं जितना मौसम माली का। माता-पिता ने दशाओं को सँभाला; जीवन वैसे उद्घाटित हुआ जैसे वह उद्घाटित हुआ; और जिस माता-पिता ने स्वामित्व रख दिया है वह बड़े बच्चे से उनकी कठिनाइयों के माध्यम से प्रेम कर सकता है बिना उन्हें रचा होने के कुचलते जोड़ के।

यह, अंत में, एकमात्र प्रकार का प्रेम है जो गला नहीं घोंटता: वह प्रेम जो स्वामित्व लिए बिना सँभालता है, जो खाता रखे बिना देता है, जो प्रियजन को — सबसे कठिन, अपने ही बच्चे को



भी — मुक्त करता है वह सच्चा सहभागी होने को जो वे सदा थे। जो माता-पिता इस ढंग से प्रेम करता है वह कम समर्पित नहीं बल्कि अधिक स्वतंत्र है, और इस ढंग से पाला गया बच्चा सबसे दुर्लभ उपहारों में से एक दिया जाता है: एक ऐसा प्रेम जो उनसे माता-पिता की परियोजना होने की अपेक्षा नहीं करता, एक सँभाल जो एक रचे गए अभिकल्प के बजाय उनके अपने उद्घाटन की सेवा करती है, अपना एक जीवन होने की जगह। आपने अपना बच्चा बनाया नहीं, और आप बना नहीं सकते। आप केवल दशाओं को सँभाल सकते हैं, परिणाम का स्वामित्व लिए बिना प्रेम कर सकते हैं, और उस जीवन को जो आता है, पूर्णतः और स्वतंत्रता से, अपना होने को छोड़ सकते हैं — जो किसी भी माली का अधिकतम है, और, प्रकट होता है, ठीक पर्याप्त।

### पटकथाबद्ध बच्चा

एक पिता के पास अपने पुत्र के लिए एक योजना है — प्रेम से बनी एक अच्छी योजना: वे विद्यालय, वह पथ, वह जीवन जिसके विषय में उसे निश्चय है कि वह लड़के को हर वस्तु का सर्वोत्तम देगा। वह बच्चे के भविष्य का एक अभियंता है, विशिष्टता के अनुसार बनाता हुआ, और योजना से हर विचलन एक सुधारी जाने को समस्या के रूप में, लड़के के स्वभाव में हर कठिनाई अभिकल्प में एक दोष के रूप में, पुत्र का हर चुनाव जो पिता न करता उसके पालन-पोषण की असफलता के रूप में दर्ज होता है। वह लड़के से प्रचंडता से प्रेम करता है; किंतु वह एक परियोजना पाल रहा है, एक जीवन नहीं सँभाल रहा, और लड़का स्वयं को एक परिणाम अनुभव करता बड़ा होता है जिसे उसका पिता रच रहा है बजाय एक व्यक्ति जिससे उसका पिता मिल रहा है।

जो पिता अभी नहीं देख सकता वह यह है कि पुत्र ने अपना ही क्षितिज पार किया, एक प्रकृति वहन करता हुआ जिसे पिता ने अभिकल्पित नहीं किया और एक पथ जो दोनों के समझने से पहले बन रहा था। योजना कभी पिता की रचने को थी ही नहीं, क्योंकि जीवन कभी उसकी परियोजना था ही नहीं। यदि वह एक अभियंता के बजाय एक माली बन जाए — दशाओं को अपने सब प्रेम से सँभालता हुआ, और फिर परिणाम को उस जीवन को छोड़ता हुआ जो अपना है — तो वह भक्ति का कुछ न खोएगा और केवल एक ऐसे जीवन को रचा होने का असंभव भार उतारेगा जो कभी उसका रचने को था ही नहीं। और पुत्र सबसे दुर्लभ उपहारों में से एक

पाएगा: एक ऐसा प्रेम जो उससे किसी और के अभिकल्प की पूर्ति होने की अपेक्षा नहीं करता, पूर्णतः और स्वतंत्रता से, अपना एक जीवन होने की जगह।

## उन्हें असफल होने देना

माली की मुद्रा का सबसे कठिन प्रयोग एक बच्चे को असफल होने देना है। अभियंता-माता-पिता, परिणाम का स्वामी, हर असफलता रोकने को लपकता है, हर पथ चिकना करता है, हर बाधा हटाता है, और ऐसा करते हुए बच्चे को उस एक वस्तु से वंचित करता है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति वास्तव में बढ़ता है: उनकी अपनी पूर्ण हुई घटनाएँ, मिली और सीखी गई। वह बच्चा जिसकी सब असफलताएँ रोकी जाती हैं कभी असफलता से मिलने की सामर्थ्य विकसित नहीं करता, कभी नहीं सीखता कि एक अड़चन एक निर्णय के बजाय एक घटना है, कभी वह दृढ़ता नहीं बनाता जो केवल अपने आप गिरकर और उठकर आती है — और इसलिए माता-पिता का असफलता का प्रेममय रोकना, वर्षों में, रक्षा के वेश में एक वंचना बन जाता है।

एक बच्चे को असफल होने देना — वास्तविक सुरक्षा की सीमाओं के भीतर, और प्रेम पूरे समय उपस्थित रहते — इस बात का सम्मान करना है कि बच्चे ने अपने ही क्षितिज पार किए और उन्हें अपनी ही घटनाओं से मिलना ही होगा, उनसे वैसे सीखते हुए जैसे कोई दूसरे की ओर से नहीं सीख सकता। माली हर तूफ़ान को पौधे को छूने से रोकने को नहीं लपकती; वह उसे वह झेलने देती है जो वह झेल सकता है, यह जानते हुए कि झेलना उसके दृढ़ बनने का अंग है। यह स्वामित्व करते माता-पिता के लिए वेदनादायी है, जो बच्चे की हर असफलता को अपनी अनुभव करता और उसे रोकने को लपकता है; किंतु यह माली-माता-पिता का गहनतम उपहार है, जो दशाओं को सँभालता है, असफलताओं के माध्यम से उपस्थित रहता है, और बच्चे को उनकी अपनी घटनाओं को छोड़ देता है — यह विश्वास करते हुए कि एक जीवन अपनी असफलताओं को रोके जाने से नहीं बल्कि उनसे मिलने से बनता है, और कि उन सबको रोकना बच्चे को कभी अपना बनने से ही रोकना है।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

आपने अपना बच्चा बनाया नहीं और आप अपना बच्चा बना नहीं सकते; आप केवल दशाओं को संभाल सकते हैं और उस जीवन से प्रेम कर सकते हैं जो आता है। माली अनवरत संभालती है किंतु पौधे का रचयिता नहीं। बच्चे ने अपना ही क्षितिज पार किया, एक प्रकृति वहन करता हुआ जिसे आपने अभिकल्पित नहीं किया, व्यवस्था में एक सच्चा सहभागी और आपकी परियोजना नहीं।

एक परिणाम पर ध्यान दीजिए जिसे आप एक बच्चे के जीवन में रचने का प्रयास कर रहे हैं — एक स्थान जहाँ आप माली के बजाय अभियंता बन रहे हैं। दशाओं को अपने सब कुछ से संभालिए, और फिर परिणाम का स्वामित्व छोड़िए, जो कभी आपका रचने को था ही नहीं। उस जीवन से प्रेम कीजिए जो आ रहा है बजाय उस अभिकल्प के जो आपके पास उसके लिए था।

## संघर्ष और वह दूसरा जो व्यवस्था भी है

---

हर संघर्ष में दो इच्छाएँ टकराती नहीं, बल्कि एक व्यवस्था दो स्थलों के माध्यम से गति करती है जो प्रत्येक भूल गए हैं कि दूसरा भी व्यवस्था है।

— संघर्ष पर टिप्पणी

संघर्ष — इच्छाओं का टकराव, वह असहमति जो विरोध में कठोर हो जाती है, वह विवाद जिसमें हर पक्ष अड़ जाता है — एक साझा जीवन की सबसे सार्वभौमिक और थकाऊ विशेषताओं में से है, और वह, जमीन से ऊपर तक, व्यक्तिगत खाते से बना है। दो पृथक स्व, प्रत्येक अपनी बही रखते, प्रत्येक अपनी स्थिति की रक्षा करते, प्रत्येक को जीतने की आवश्यकता, मिलते और टकराते हैं; और टकराव, जो सत्तों का टकराव-सा लगता है, बहुत हद तक स्वामित्वों का टकराव है। इस पुस्तक की शिक्षा किसी व्यक्ति को संघर्ष में निष्क्रिय या सच्ची असहमति के प्रति उदासीन नहीं बनाती, किंतु वह उस विशेष दुःख को घुला देती है जो असहमति को उस पिसती, आत्म-रक्षा करती विरोध में बदल देता है जिसे हम जानते हैं।

मैं सावधान रहना चाहता हूँ, क्योंकि कुछ संघर्ष वास्तविक अन्यायों और वास्तविक दाँवों से संबंधित हैं, और यह पुस्तक उन्हें समर्पित करने या यह दिखावा करने की सलाह नहीं देती कि सब स्थितियाँ समान हैं। यह जिस पर प्रश्न करती है वह असहमति का द्रव्य नहीं बल्कि वह स्वामित्व है जो असहमति को युद्ध में बदल देता है — जीतने की आवश्यकता, स्व की रक्षा, दूसरे के विरुद्ध खाते का रखना — जो सब उसी सत्य को धुँधला कर देते हैं जिसके विषय में संघर्ष होने का दावा करता है।

### जीतने की आवश्यकता

देखिए कि अधिकांश संघर्ष को उसके सतही विषय-वस्तु से परे वास्तव में क्या चलाता है, और आप जीतने की आवश्यकता पाएँगे — सत्य खोजने की आवश्यकता नहीं, या मामले को भली-भाँति सुलझाने की, बल्कि स्व की प्रबल होने, सही होने, न हारने की आवश्यकता। यह

आवश्यकता अपने युद्धकारी रूप में व्यक्तिगत खाता है: स्व ने अपना मूल्य स्थिति पर दाँव पर लगाया है, और इसलिए तर्क हारना एक निर्णय, एक हास, अपनी ही सत्ता की एक पराजय भोगना है। यही कारण है कि संघर्ष इतनी जल्दी अपने प्रत्यक्ष विषय के विषय में होना बंद हो जाते हैं और सम्मिलित स्वों के विषय में बन जाते हैं — मान-मर्यादा के विषय में, जीतने के विषय में, पीछे न हटने के विषय में — और यही कि वे सुलझाने में इतने कठिन हैं वास्तविक मामला छोटा होने पर भी। मामला कभी वास्तविक दाँव था ही नहीं; स्व था, और स्व हारना सह नहीं सकता।

इसे स्पष्ट देखिए और बहुत-से संघर्ष का ईंधन ही समाप्त हो जाता है। जब आपको अब जीतने की आवश्यकता नहीं — क्योंकि आपका मूल्य स्थिति पर दाँव पर नहीं, क्योंकि तर्क हारना आपकी सत्ता पर निर्णय नहीं — तो आप स्व की रक्षा के बजाय वास्तविक मामले पर ध्यान दे सकते हैं, और संघर्ष वह बन सकता है जो वह लगभग कभी नहीं है: इसमें एक साझा जिज्ञासा कि क्या सत्य है या क्या सर्वोत्तम होगा, बजाय दो स्वों के बीच एक युद्ध जो हारना सह नहीं सकते। आप बिना अपमान अपना मन बदल सकते हैं, बिना पराजय एक बिंदु स्वीकार सकते हैं, बिना स्वयं को खोए एक तर्क हार सकते हैं — क्योंकि वह स्व जो हारना सह नहीं सकता था रख दिया गया है। जीतने की आवश्यकता कभी सत्य की सेवा नहीं कर रही थी; वह खाते की सेवा कर रही थी, और खाता बंद किया जा सकता है।

## दूसरे ने अपना ही क्षितिज पार किया

अब समूची पुस्तक की संरचना उस पर लागू कीजिए जिसके साथ आप संघर्ष में हैं। उनकी स्थिति, चाहे वह आपको कितनी ही ग़लत लगे, उनके समूचे क्षेत्र में से अपना ही क्षितिज पार कर गई — उनका इतिहास, उनकी अनुकूलनता, उनका अनुभव, उनके भय, एक ऐसे जीवन का समूचा विन्यास जिसे आपने नहीं जिया और बहुत हद तक देख नहीं सकते। वे संप्रभु दुर्भाव से कठिन नहीं हो रहे, एक ग़लत स्थिति थामे जिसे वे जानते हैं कि ग़लत है शुद्ध दुष्टता से; वे एक स्थल हैं जिस पर एक स्थिति एक समूचे से सुलझी, ठीक जैसे आपकी स्थिति आपके से सुलझी। यह उनकी स्थिति को सही नहीं बनाता, या आपकी को; कौन सही है यह प्रश्न बना रहता है, और ईमानदारी से पीछा किया जाना है। किंतु यह एक संप्रभु प्रतिद्वंद्वी का चित्र घुला देता है जो स्वतंत्रता से आपका विरोध करना चुनता है, और उसे एक सच्चे चित्र से प्रतिस्थापित

करता है — व्यवस्था में एक और सहभागी, जिसका दृष्टिकोण उनके समूचे से अवक्षेपित हुआ जैसे आपका आपके से।

और यहाँ वह पहचान है जो एक संघर्ष को पूर्णतः रूपांतरित कर सकती है: दूसरा भी व्यवस्था है। वही ब्रह्मांडीय व्यवस्था जो आपके माध्यम से गति कर रही है, आपकी स्थिति में सुलझती हुई, उनके माध्यम से गति कर रही है, उनकी में सुलझती हुई। आप एक अलंघ्य खाई के आर-पार टकराती दो पृथक संप्रभु इच्छाएँ नहीं; आप दो स्थल हैं जिनके माध्यम से एक व्यवस्था गति कर रही है, प्रत्येक यह भूल गया कि दूसरा भी व्यवस्था है। यह वास्तविक भेद का कोई भावुक खंडन नहीं — स्थितियाँ सचमुच भिन्न हैं, और भेद मायने रखता है — बल्कि एक पहचान कि मेज़ के पार प्रतिद्वंद्वी अंततः उस ढंग से दूसरा नहीं जिसे संघर्ष मान लेता है, और कि उनसे एक साथी सहभागी के रूप में मिलना बजाय परास्त किए जाने को एक संप्रभु शत्रु के, इस विषय में सब कुछ बदल देता है कि संघर्ष कैसे उद्धाटित हो सकता है।

### परास्त करने के बजाय मिलना

इस पहचान से संघर्ष में होने का एक भिन्न ढंग आता है, जो दुर्बलता नहीं और द्रव्य का समर्पण नहीं, बल्कि परास्त करने का मिलने से प्रतिस्थापन है। जिसने जीतने की आवश्यकता रख दी है और दूसरे को व्यवस्था में एक साथी सहभागी के रूप में देख लिया है वह अपनी स्थिति पूर्णतः थाम सकता है, उसे ईमानदारी से तर्क कर सकता है, जो सचमुच मायने रखता है उसकी रक्षा कर सकता है — और फिर भी दूसरे को परास्त करने का प्रयास करने के बजाय उससे मिल सकता है, स्वों के बीच युद्ध के बजाय वास्तविक मामले पर ध्यान दे सकता है, और सत्य के प्रति खुला रह सकता है जहाँ भी वह हो, दूसरे के दृष्टिकोण में सहित। यह वह दुर्लभ और निरस्त्र करता गुण है जिसे हम उन थोड़े लोगों में पहचानते हैं जो शत्रु बने बिना असहमत हो सकते हैं: वे अपनी स्थिति बिना अपना स्व उस पर दाँव पर लगाए थामते हैं, और इसलिए वे आपसे सच्ची असहमति में मिल सकते हैं बिना उस पिसते विरोध के जो जीतने की आवश्यकता उत्पन्न करती है।

ऐसा व्यक्ति बहुधा पाता है कि उनकी उपस्थिति में ऐसे संघर्ष विलीन हो जाते हैं जो किसी और के साथ कठोर हो जाते, इसलिए नहीं कि उन्होंने द्रव्य समर्पित किया बल्कि इसलिए कि उन्होंने युद्ध की आपूर्ति करने से इनकार किया। एक संघर्ष को दो योद्धा चाहिए, दो स्व प्रत्येक को जीतने की आवश्यकता, दो खाते रखे जाते; और जब एक पक्ष खाता रख देता है, युद्ध अस्वीकार

करता है, और लड़ने के बजाय मिलता है, तो संघर्ष बहुधा वह ईंधन खो देता है जिसने उसे बनाए रखा होता। मामले को तब उसके गुणों पर संबोधित किया जा सकता है, सच्ची असहमति ईमानदारी से खोजी, वास्तविक दाँव पीछा किए — क्योंकि स्वों का मुकाबला, जो कभी वास्तविक बिंदु था ही नहीं, चुपचाप वापस ले लिया गया है। परास्त करने के बजाय मिलना संघर्ष हारना नहीं; यह उस युद्ध को लड़ना बंद करना है जो कभी मामले के विषय में था ही नहीं, और अंततः, स्वयं मामले पर ध्यान देना है।

## वह तर्क जो विलीन हो गया

एक परिवार एक ऐसे तर्क में फँसा बैठा है जो, किसी न किसी रूप में, वर्षों चला है — वही स्थितियाँ, वही गर्मी, वही गतिरोध, हर पक्ष अड़ा, प्रत्येक को दूसरे से पहले स्वीकारने की आवश्यकता। विषय-वस्तु पर्व-दर-पर्व बदलती है, किंतु संरचना कभी नहीं: दो शिविर, प्रत्येक अपना खाता रखता, प्रत्येक अपनी सहीपन के प्रति निश्चित, प्रत्येक पीछे हटने में असमर्थ क्योंकि पीछे हटना एक मामले पर मन बदलने के बजाय स्व की एक पराजय बन गया है। तर्क अपने विषय के विषय में नहीं और बहुत समय से नहीं रहा; वह स्वों के विषय में है, और स्व हारना सह नहीं सकते।

फिर उनमें से एक, सही ढंग से थका, बस जीतने की आवश्यकता बंद कर देता है। द्रव्य स्वीकारकर नहीं — वे अब भी उसे वैसे देखते हैं जैसे वे देखते हैं — बल्कि स्वों के मुकाबले को रखकर और, वर्षों में पहली बार, वास्तविक मामले पर और औरों पर परास्त किए जाने को प्रतिद्वंद्वियों के बजाय व्यक्तियों के रूप में ध्यान देकर। वे स्मरण करते हैं कि दूसरे शिविर की स्थिति एक ऐसे समूचे में से अपना क्षितिज पार कर गई जिसके भीतर वे कभी नहीं गए। और तर्क, जिसे दो योद्धा चाहिए थे, एक योद्धा खो देता है — और उसके साथ, आश्चर्यजनक रूप से, अपना अधिकांश बल, क्योंकि एक युद्ध किसी ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध नहीं लड़ा जा सकता जिसने युद्ध की आपूर्ति बंद कर दी है। मामले को अंततः उसके गुणों पर देखा जा सकता है, या उस छोटी वस्तु के रूप में रख दिया जा सकता है जो वह सदा उन बड़े स्वों के नीचे था जो उस पर लड़ रहे थे।

## तीसरा विकल्प

संघर्ष स्वयं को एक द्विभाजन के रूप में प्रस्तुत करता है: मैं जीतता हूँ या मैं हारता हूँ, मेरी स्थिति प्रबल होती है या आपकी, हममें से एक सही है और एक गलत। जीतने की आवश्यकता इस ढाँचे के भीतर जीती है और उससे बच नहीं सकती, क्योंकि स्वयं ढाँचा — दो स्थितियाँ, एक विजेता — स्वों के मुकाबले की संरचना है। किंतु लगभग सदा एक तीसरा विकल्प होता है: जिसे द्विभाजन छिपा देता है, केवल उसे उपलब्ध जिसने जीतने की आवश्यकता रख दी है: स्वयं ढाँचे का विलयन, यह खोज कि संघर्ष एक साझा पूर्व-धारणा पर टिका था जो, एक बार प्रश्न किए जाने पर, विरोध को घुला देती है; या यह पहचान कि दोनों स्थितियाँ आंशिक थीं, कि सत्य एक ऐसी दिशा में था जिसकी न तो कोई रक्षा कर रहा था, कि मुकाबला एक ऐसे ढाँचे पर था जिसे मुकाबला किए जाने की आवश्यकता ही नहीं थी।

जो अब भी जीतने की आवश्यकता से जकड़ा है तीसरा विकल्प नहीं खोज सकता, क्योंकि उसे खोजने को ठीक उस ढाँचे को छोड़ना आवश्यक है जिसमें जीतना संभव है — और स्थिति का स्वामी उस ढाँचे को छोड़ना सह नहीं सकता, क्योंकि उसका स्व उसके भीतर प्रबल होने पर दाँव पर है। जिसने जीतने की आवश्यकता रख दी है ढाँचे पर प्रश्न कर सकता है, पूछ सकता है कि दोनों पक्ष कौन-सी पूर्व-धारणा साझा करते हैं, उस दिशा में देख सकता है जिसकी न कोई रक्षा कर रहा था, और बहुधा वह समाधान खोज सकता है जो संघर्ष को किसी के पक्ष में निपटाने के बजाय उसे घुला देता है। यह स्वों के मुकाबले को छोड़ने का व्यावहारिक उपहार है: यह नहीं कि आप संघर्ष हारते हैं, बल्कि कि आप उस द्विभाजन के पार देखने में समर्थ हो जाते हैं जिसमें वह फँसा था, उस तीसरे विकल्प तक जिसे जीतने की आवश्यकता ने अदृश्य बना दिया।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

हर संघर्ष में दो इच्छाएँ टकराती नहीं बल्कि एक व्यवस्था दो स्थलों के माध्यम से गति करती है, प्रत्येक यह भूल गया कि दूसरा भी व्यवस्था है। जीतने की आवश्यकता युद्ध में व्यक्तिगत खाता है; उसे रख दीजिए, और संघर्ष वह बन सकता है जो वह लगभग कभी नहीं है — स्वों के बीच युद्ध के बजाय एक साझा जिज्ञासा।



आज एक असहमति में, जीतने की आवश्यकता रख दीजिए और स्वीं के मुकाबले के बजाय वास्तविक मामले पर ध्यान दीजिए। स्मरण कीजिए कि दूसरे की स्थिति एक ऐसे समूचे में से अपना क्षितिज पार कर गई जिसे आप देख नहीं सकते। उन्हें परास्त करने का प्रयास करने के बजाय उनसे मिलिए, और ध्यान दीजिए कि संघर्ष का कितना भाग कभी मामले के विषय में था ही नहीं।

## एकांत, अकेलापन, और समग्र की संगति

अकेलापन एक ऐसी पृथकता की पीड़ा है जो कभी पूरी तरह वास्तविक थी ही नहीं। उपचार अधिक संगति नहीं, बल्कि पृथकता का भेद दिया जाना है।

— अकेले होने पर टिप्पणी

अकेलापन मानवीय दुःखों में सबसे गहरे में से है, और वह, इस पुस्तक के शब्दों में, केंद्रीय भ्रम की अनुभूत क्रीमत है — पृथक स्व की पीड़ा, अपने निजी खाते के भीतर बंद, हर अन्य वस्तु से अपनी पृथकता को एक प्रकार के निर्वासन के रूप में अनुभव करता हुआ। हम अकेलेपन को परिस्थिति की समस्या के रूप में बरतते हैं, अधिक संगति, अधिक जुड़ाव, अपने चारों ओर अधिक लोगों से सुलझाई जाने को; और कभी-कभी परिस्थिति वस्तुतः मुद्दा है। किंतु वह अकेलापन जो एक भीड़ में टिका रहता है, जिसे संगति ठीक नहीं करती, जो रात में लौटता है चाहे हम दिन में कितने ही औरों से घिरे हों — वह अकेलापन अंततः परिस्थिति की समस्या नहीं। वह स्वयं पृथकता-भ्रम की पीड़ा है, और उसका एक भिन्न उपचार है।

यह अध्याय अकेलेपन को एकांत से भेदता है, जो बहुधा भ्रमित किए जाते हैं और वस्तुतः लगभग विपरीत हैं, और वह उस पहचान की ओर संकेत करता है जो अकेलेपन को उसकी जड़ में घुला देती है — पृथक स्व को अधिक संगति से घेरकर नहीं, बल्कि उस पृथकता को भेद देकर जिसने स्व को आरम्भ में निर्वासित अनुभव कराया।

### पृथक स्व की पीड़ा

अकेलेपन को निकट से जाँचिए और आप उसके केंद्र में पृथकता का विश्वास पाते हैं — एक ऐसा स्व होने का अनुभूत बोध जो सब अन्य स्वरों से सील किया हुआ है, एक अलंघ्य खाई के आर-पार एक संसार और औरों को देखता हुआ, अपने ही अनुभव में मूलभूत रूप से अकेला

चाहे कितने ही औरों निकट हों। यह व्यक्तिगत खाता अलगाव के रूप में अनुभूत है: यदि मेरा कर्म मेरा है और आपका आपका, यदि मैं एक पृथक स्व अपनी पृथक बही रखता हूँ, तो मैं, गहनतम स्तर पर, अकेला हूँ — और कितनी भी संगति पूरी तरह खाई के पार नहीं पहुँचती, क्योंकि खाई स्वयं पृथक स्व की संरचना में अंतर्निहित है। यही कारण है कि अकेलापन एक भीड़ में इतना तीव्र हो सकता है, उन लोगों के बीच भी जो हमसे प्रेम करते हैं: संगति सतह तक पहुँचती है, किंतु जिस पृथकता को वह ठीक करती वह संरचनात्मक है, स्व के अपने स्वयं अलग होने के बोध में जमी, और सतही संगति उसे छूती नहीं।

जो उपचार परिस्थिति देती है — अधिक लोग, अधिक जुड़ाव, पीड़ा से अधिक विकर्षण — इसलिए केवल आंशिक और अस्थायी रूप से काम करता है, क्योंकि वह लक्षण को संबोधित करता है जबकि कारण, पृथकता-भ्रम, को पूर्णतः अक्षत छोड़ता है। अकेला व्यक्ति एक ऐसी खाई भरने को अधिक संगति खोजता है जिसे अधिक संगति भर नहीं सकती, क्योंकि खाई लोगों की कमी नहीं बल्कि स्व की अनुभूत पृथकता है, जो किसी भी मात्रा की संगति के नीचे टिकी रहती है। अकेलेपन को उसकी जड़ में संबोधित करना परिस्थिति को नहीं बल्कि पृथकता को संबोधित करना है — सील किए गए पृथक स्व के भ्रम को भेद देना जो स्वयं को निर्वासित अनुभव करता है, और उस जुड़ाव को पहचानना जो अनुभूत पृथकता के नीचे सदा पहले से वस्तुस्थिति था।

## एकांत अकेलापन नहीं है

ध्यान दीजिए कि एकांत — भौतिक रूप से अकेले होना — अकेलेपन के समान नहीं, और कि दोनों पूर्णतः स्वतंत्र रूप से घटित हो सकते हैं। ऐसे लोग हैं जो भीड़ों में अकेले हैं और ऐसे लोग जो एकांत में गहराई से शांति में हैं; अंतर औरों की उपस्थिति या अनुपस्थिति नहीं बल्कि पृथकता-भ्रम के साथ संबंध है। जो अकेले शांति में है वह अकेला नहीं, क्योंकि वह अपने अकेलेपन को निर्वासन के रूप में अनुभव नहीं करता; वह, एकांत में, समग्र के साथ एक ऐसे जुड़ाव में विश्राम करता है जो अन्य लोगों के उपस्थित होने पर निर्भर नहीं। और जो एक भीड़ में अकेला है वह पृथकता-भ्रम भोगता है चाहे कितने ही उसे घेरें। एकांत एक परिस्थिति है; अकेलापन पृथकता के साथ एक संबंध है — और समूचा बिंदु यह है कि संबंध बदल सकता है परिस्थिति न बदलने पर भी।

यही कारण है कि एकांत, अकेलेपन का कारण होने से कोसों दूर, उसका उपचार हो सकता है — वह स्थान जहाँ, सतही संगति के विकर्षण से मुक्त, व्यक्ति अंततः उस पृथकता-भ्रम से मिल सकता और उसे भेद सकता है जिसे संगति ने केवल ढका था। हर परंपरा के चिंतकों ने एकांत खोजा अपने अकेलेपन को गहरा करने को नहीं बल्कि उसे जड़ में घुलाने को, अकेलेपन में उस समग्र के साथ जुड़ाव को खोजते हुए जिसे संगति के कोलाहल ने धुँधला कर दिया था। सुखपूर्वक अकेले होना — निर्वासन की पीड़ा के बिना एकांत में विश्राम करना — जुड़ाव पर हार मान लेने का चिह्न नहीं; यह उस जुड़ाव को पाने का चिह्न है जो संगति पर निर्भर नहीं, समग्र की वह संगति जो तब भी उपस्थित है जब कोई अन्य व्यक्ति नहीं।

## समग्र की संगति

यहाँ वह पहचान है जो अकेलेपन को घुला देती है, और वह वही पहचान है जो समूची पुस्तक भर चलती है, अब गहनतम पीड़ा के बिंदु पर अनुभूत। आप कभी वस्तुतः पृथक थे ही नहीं। वह सील किया गया पृथक स्व जो स्वयं को निर्वासित अनुभव करता है वह भ्रम है जिसे यह समूची पुस्तक घुलाती रही है; सत्य में आप एक व्यवस्था में एक सच्चे सहभागी हैं, समग्र के साथ उतने ही घनिष्ठ जितनी एक लहर समुद्र के साथ, एक क्षण के लिए भी उस व्यवस्था से वास्तव में अलग नहीं जो आपके माध्यम से और हर वस्तु के माध्यम से गति करती है। जो जुड़ाव अकेलापन तरसता है वह संगति के माध्यम से अर्जित किए जाने को कुछ नहीं; वह पहले से ही वस्तुस्थिति है, अनुभूत पृथकता के नीचे, और उसे पहचाना जा सकता है — समग्र की संगति, कभी-अलग-न-रहा-होना, वह संबंध जो किसी अन्य व्यक्ति पर निर्भर नहीं और जो कभी वस्तुतः अनुपस्थित था ही नहीं।

यह मानवीय जुड़ाव को त्यागने की सलाह नहीं, जो एक जीवन के महान भलों में से है और संजोया जाना है; समग्र की संगति की पहचान वास्तविक लोगों के प्रेम को प्रतिस्थापित नहीं करती बल्कि उसे उस हताशा से मुक्त करती है जो अकेलापन उसमें लाता है। जिसने पृथकता को भेद दिया है वह अब औरों की ओर एक अभरने योग्य खाई भरने को नहीं पहुँचता, अब संगति को एक ऐसे निर्वासन का उपचार नहीं बनाता जिसे संगति ठीक नहीं कर सकती; वे औरों से और उनके साथ स्वतंत्रता से प्रेम कर सकते और हो सकते हैं, पृथकता की पीड़ा के बजाय पूर्णता से, और वे अकेले हो सकते हैं बिना अकेले हुए, समग्र की संगति में विश्राम करते हुए। अकेलेपन की पीड़ा सदा एक ऐसी पृथकता की पीड़ा थी जो कभी पूरी तरह वास्तविक थी ही

नहीं। उसका उपचार अंततः अधिक संगति नहीं, बल्कि पृथकता का भेद दिया जाना है — और यह पहचान, एकांत में या एक भीड़ में उपलब्ध, कि आप कभी, एक भी क्षण के लिए, वस्तुतः अकेले थे ही नहीं।

### **भीड़ में अकेला, अकेले में शांत**

एक स्त्री एक भीड़-भरी सभा में से गुज़रती है और, उस सारी संगति के मध्य में, गहराई से अकेला अनुभव करती है — सतह पर हर जगह मिली और उसके नीचे कहीं नहीं, कोलाहल और चेहरे किसी प्रकार पीड़ा को सहज करने के बजाय गहरा करते हुए। उसके चारों ओर महीनों में जितने रहे उससे अधिक लोग हैं, और अकेलापन उसके खाली घर में जितना है उससे तीक्ष्णतर है, क्योंकि संगति सतह तक पहुँचती है और जिस खाई को वह भरती वह संरचनात्मक है, स्व की अनुभूत पृथकता में जमी, जिसे अधिक लोग छूते नहीं। वह अपने अभिप्राय से पहले निकल जाती है, भीड़ के लिए कम अकेली नहीं।

वही स्त्री, एक अन्य सायं, पूर्णतः अकेली बैठती है और बिल्कुल अकेली नहीं — एक ऐसे एकांत में शांति में जो किसी की माँग नहीं करता, कुछ ऐसे में विश्राम करती हुई जिसे वह ठीक नाम नहीं दे सकती: एक जुड़ाव जो किसी के उपस्थित होने पर निर्भर नहीं, समग्र का अंग होने का — उससे अलग होने के बजाय — नंगा तथ्या। दोनों सायंओं के बीच का अंतर कभी लोगों की संख्या नहीं था; वह पृथकता के साथ उसका संबंध था — भीड़ में ढका, एकांत में भेद दिया गया। अकेलापन, वह समझने लगती है, कभी संगति से ठीक नहीं हुआ और कभी अकेले होने से उत्पन्न नहीं हुआ। वह एक ऐसी पृथकता की पीड़ा थी जो कभी पूरी तरह वास्तविक थी ही नहीं, और वह तब सहज नहीं हुई जब वह घिरी हुई थी बल्कि जब उसने समग्र की संगति पहचानी, जो समूचे समय वहाँ थी, भीड़ में और खाली कमरे में समान रूप से।

### **कभी संगति के बिना नहीं**

एकांत के विषय में एक विचित्र सत्य है जिसे चिंतकों ने खोजा और जिसे कोई भी जो चुपचाप अकेला बैठा है सत्यापित कर सकता है: हम कभी वस्तुतः संगति के बिना नहीं होते, क्योंकि मन साथियों की एक सतत धारा देता है — स्मरण की गई आवाज़ें, कल्पित वार्तालाप, जारी आंतरिक टीका, औरों का वह दल जिसे हम भीतर वहन करते और परामर्शित करते और दिन-भर तर्क करते हैं। अकेला व्यक्ति, संगति से खाली होने से कोसों दूर, बहुधा उससे भरा होता है:

कल्पित औरों से भरा एक सिर, स्मरण किए गए अपमान, पूर्वाभ्यास किए गए आदान-प्रदान, वह समूचा आंतरिक समाज जिसे पृथक स्व बनाए रखता है। अकेलापन, तो, संगति की अनुपस्थिति नहीं बल्कि उसके साथ एक विशेष संबंध है — ठीक उन औरों से अनुभूत पृथकता जो मन को भीड़ते हैं।

सच्चे एकांत में बैठना, अंशतः, इस आंतरिक भीड़ को शांत होने देना है — कल्पित औरों, स्मरण की गई आवाजों, और पूर्वाभ्यास किए गए आदान-प्रदानों की सतत धारा बनाए रखना बंद करना — और उस शांत होने में उसे खोजना जिसे कोलाहल ढक रहा था: एक भयावह रिक्तता नहीं, बल्कि वह गंगी उपस्थिति जिसमें स्वयं पृथकता भेद दी जा सकती है। आंतरिक भीड़, एक अर्थ में, पृथक स्व अपनी पृथकता के विषय में स्वयं से बात करता था, और जब वह शांत होती है, जो शेष रहता है वह अकेलापन नहीं बल्कि समग्र की संगति है, वह जुड़ाव जिसे वास्तविक होने को किसी औरों की आवश्यकता नहीं थी। हम कभी संगति के बिना नहीं; प्रश्न केवल यह है कि संगति पृथक स्व की चिंतित आंतरिक भीड़ है, या उस समग्र की शांत उपस्थिति जो तब शेष रहती है जब उस भीड़ को, कुछ समय के लिए, मौन होने दिया गया हो।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

अकेलापन एक ऐसी पृथकता की पीड़ा है जो कभी पूरी तरह वास्तविक थी ही नहीं — सील किए गए पृथक स्व की अनुभूत क्रीमता। उपचार अंततः अधिक संगति नहीं, जो खाई को ढक देती है, बल्कि पृथकता का भेद दिया जाना, और समग्र की संगति की पहचान है, जो तब भी उपस्थित है जब कोई अन्य व्यक्ति नहीं।

आज कुछ मिनट अकेले बिताइए बिना विकर्षण या संगति की ओर पहुँचे, और अकेलेपन से सीधे मिलिए। देखिए कि क्या, सतही पीड़ा के नीचे, आप उस जुड़ाव को पहचान सकते हैं जो किसी के उपस्थित होने पर निर्भर नहीं — समग्र की संगति, कभी-अलग-न-रहा-होना। ध्यान दीजिए कि एकांत और अकेलापन समान नहीं हैं।

## आदत, परिवर्तन, और वह स्व जो प्रतिरोध करता है

हम अपनी आदतें बल से नहीं तोड़ते। हम उनसे आगे बढ़ जाते हैं, जब दशाएँ और समझ  
इतनी पक चुकी हों कि पुरानी भूमिका अब फिट न बैठे।

— परिवर्तन पर टिप्पणी

परिवर्तन इतना कठिन क्यों है? हम ठीक-ठीक क्यों जानते हैं कि क्या बेहतर होगा, दृढ़ता से उसे करने का संकल्प करते हैं, और स्वयं को, हफ्तों बाद, ठीक वहीं पाते हैं जहाँ हम थे — आदत अटूट, संकल्प विलीन, पुराना ढर्रा एक ऐसे बल से स्वयं को फिर स्थापित करता हुआ जो हमारी इच्छा-शक्ति का उपहास करता है? समूचा आत्म-सुधार उद्योग इसी कठिनाई पर टिका है और बहुत हद तक उसे सुलझाने में असफल रहता है, क्योंकि वह परिवर्तन की संरचना को गलत समझता है। इस पुस्तक की शिक्षा एक भिन्न और अधिक सटीक चित्र देती है, और उसके साथ उस परिवर्तन का एक भिन्न और कोमलतर मार्ग जो हम खोजते हैं।

परिवर्तन का परंपरागत चित्र इच्छा का एक युद्ध है: स्व बदलने का संकल्प करता है, अपनी इच्छा-शक्ति जमा करता है, और आदत को अधीनता में लड़ता है। यह चित्र इतनी विश्वसनीयता से असफल होता है क्योंकि वह गलत समझता है कि कौन किससे लड़ रहा है। इस पुस्तक की शिक्षा, परिवर्तन पर लागू, योद्धाओं को घुलाकर युद्ध को घुला देती है — और एक ऐसा ढंग उधाड़ती है जिससे आदतें वास्तव में बदलती हैं, जो बिल्कुल बल से नहीं।

### इच्छा-शक्ति कर्ता का कर्ता से लड़ना

इच्छा-शक्ति के युद्ध को निकट से देखिए और उसकी विचित्र संरचना पर ध्यान दीजिए: स्व स्वयं से लड़ रहा है। वह भाग जो बदलने का संकल्प करता है और वह भाग जो आदत बनाए रखता है दोनों एक ही स्व हैं, और इसलिए इच्छा-शक्ति का युद्ध कर्ता का कर्ता से लड़ना है,

एक हाथ दूसरे से कुशली करता हुआ, स्व स्वयं के विरुद्ध विभाजित एक थकाऊ संघर्ष में जिसे वह अंततः जीत नहीं सकता क्योंकि दोनों योद्धा वही हैं। यही कारण है कि इच्छा-शक्ति क्षीण होती है, क्यों संकल्प असफल होते हैं, क्यों जितना कठोर हम एक आदत से लड़ते हैं वह उतनी ही बार जम जाती है: हम एक आंतरिक गृहयुद्ध में विशाल ऊर्जा खर्च कर रहे हैं जिसका कोई संभावित विजेता नहीं, क्योंकि जो भी जीतता है वह अब भी स्व है, और वह स्व जिसने आदत बनाए रखी उस स्व द्वारा परास्त नहीं होता जिसने उसके विरुद्ध संकल्प किया बल्कि केवल अस्थायी रूप से अभिभूत किया जाता है, फिर स्वयं को स्थापित करने की प्रतीक्षा करता हुआ जब इच्छा-शक्ति डगमगाए।

यह वही अंतर्दृष्टि है जिससे हम अकर्तृत्व के सिद्धांत में मिले, अब परिवर्तन पर लागू: वह कर्ता जो परिवर्तन को बल देगा वही कर्ता है जो परिवर्तन की समस्या है, और आप कर्ता के माध्यम से कर्ता से अपना मार्ग बल नहीं दे सकते। इच्छा-शक्ति का सफ़ेद-पोर वाला युद्ध आत्म-सुधार पर लागू व्यक्तिगत खाता है — स्वामी स्वयं में एक परिवर्तन को बल से रचने का प्रयास करता हुआ — और वह उसी कारण से असफल होता है जिससे स्वामी का सब बल देना असफल होता है: क्योंकि गहनतम परिवर्तन बल देते स्व से बिल्कुल आते ही नहीं। इसे समझना एक ऐसा युद्ध लड़ना बंद करना है जिसे आप जीत नहीं सकते, और उस ढंग को खोजना है जिससे परिवर्तन वास्तव में घटित होता है, जो कर्ता के बल के माध्यम से नहीं।

## एक आदत स्वचालित हुई भूमिका है

इस पुस्तक के शब्दों में, एक आदत क्या है? वह एक स्वचालित हुई भूमिका है — क्रिया का एक ढर्रा जिसे कभी कर्ता की संलग्नता की आवश्यकता थी और अब उसके नीचे डूब चुका है, स्वयं चलता हुआ, सोद्देश्य स्व की सहभागिता के बिना निर्धारित और अभिनीत। यही कारण है कि आदतें इच्छा के प्रति इतनी प्रतिरोधी हैं: वे ठीक वे ढर्रे हैं जिन्हें अब इच्छा की आवश्यकता नहीं, जो उसके नीचे चलते हैं, जो उस स्थल के स्वचालित कार्य में बुने हैं जो आप हैं। एक आदत पर इच्छा-शक्ति से आक्रमण करना सोद्देश्य स्व को एक ऐसे ढर्रे पर लगाना है जो, परिभाषा से, सोद्देश्य स्व के नीचे डूब चुका है — यही कारण है कि सोद्देश्य स्व इतनी बार हारता है, और क्यों आदत उसी क्षण स्वयं को फिर स्थापित कर लेती है जब सोद्देश्य ध्यान चूकता है।



एक आदत को एक स्वचालित हुई भूमिका के रूप में देखना, बल से परास्त किए जाने को एक शत्रु के रूप में नहीं, उसके प्रति समूचा दृष्टिकोण बदल देता है। भूमिकाएँ, हमने देखा है, दशाओं द्वारा निर्धारित होती हैं और तब विलीन होती हैं जब उनकी दशाएँ बदलती हैं और उनकी घटना पूर्ण होती है। एक आदत तब नहीं बदलती जब इच्छा उसे परास्त करती है बल्कि तब जब वे दशाएँ बदलती हैं जो उसे निर्धारित और बनाए रखती हैं, और जब समझ इतनी पक चुकी हो कि पुरानी भूमिका अब उस पर फिट न बैठे जो उसे निभा रहा था। यही कारण है कि परिवर्तन इतनी बार इच्छा के एक वीर कृत्य के माध्यम से नहीं बल्कि दशाओं के एक परिवर्तन — एक नया वातावरण, एक नई परिस्थिति, एक नई समझ — के माध्यम से आता है जो चुपचाप पुरानी भूमिका को अप्रचलित बना देता है, ताकि वह परास्त होकर नहीं बल्कि अब निर्धारित न होकर गिर जाए।

### तोड़ने के बजाय आगे बढ़ जाना

एक जीवन के गहनतम परिवर्तन विरले ही तोड़े जाते हैं; वे आगे बढ़ जाते हैं। आदत, ढर्रा, होने का वह ढंग जो कभी फिट बैठता था गिर जाता है इसलिए नहीं कि इच्छा ने अंततः उसे परास्त किया बल्कि इसलिए कि व्यक्ति इच्छा के नीचे एक स्तर पर बदल गया — बढ़ा, समझा, अपनी दशाओं और अपने देखने में खिसका — जब तक पुरानी भूमिका अब फिट न बैठे और बस स्वयं ही गिर जाए, बहुधा इतनी चुपचाप कि उन्होंने मुश्किल से ही उसे जाते देखा। एक जीवन के सच्चे रूपांतरण वास्तव में इसी तरह घटित होते हैं: इच्छा-शक्ति के सफ़ेद-पोर वाले युद्धों के माध्यम से नहीं, जो अधिकतर असफल होते हैं, बल्कि एक पकने, दशाओं और समझ के एक परिवर्तन के माध्यम से, जो पुराने ढंग को अप्रचलित बना देता है। वह धूम्रपानकर्ता जो अंततः रुक जाता है, वह ढर्रा जो अंततः खिसकता है, होने का वह ढंग जिससे व्यक्ति अंततः आगे बढ़ जाता है — ये आते हैं, इच्छा-शक्ति के चित्र की स्वीकृति से कहीं अधिक बार, एक विजय के बजाय एक गिर-जाने के रूप में, एक युद्ध के बजाय एक पकने के रूप में।

सो परिवर्तन का कोमलतम और सबसे प्रभावी मार्ग इच्छा-शक्ति का युद्ध नहीं बल्कि दशाओं का सँभालना और समझ का पकना है — वही माली का धैर्य जो हमने पालन-पोषण में पाया, अब स्वयं पर मोड़ा गया। उन दशाओं को बदलिए जो भूमिका को निर्धारित करती हैं; उस समझ को गहरा कीजिए जो पुराने ढर्रे को फिट बनाती है; और फिर परिवर्तन को एक विजय के रूप में बल देने के बजाय एक पकने के रूप में आने दीजिए, यह विश्वास करते हुए कि अब निर्धारित

न की गई भूमिका स्वयं ही गिर जाएगी। यह निष्क्रियता नहीं — दशाओं का सँभालना वास्तविक और सक्रिय कार्य है — किंतु यह कर्ता का कर्ता से उस थकाऊ और निष्फल गृहयुद्ध से मुक्त कार्य है। हम अंततः अपनी आदतें बल से नहीं तोड़ते। हम उनसे आगे बढ़ जाते हैं, जब दशाएँ और समझ इतनी पक चुकी हों कि पुरानी भूमिका अब फिट न बैठे — और फिर वे गिर जाती हैं, चुपचाप, जैसे पूर्ण हुई भूमिकाएँ सदा करती हैं, और हम स्वयं को विजय से नहीं बल्कि उसी पकने से बदला हुआ पाते हैं जो एक ऋतु को मोड़ता है।

## आहार और स्थानांतरण

एक व्यक्ति वर्षों एक आदत को इच्छा के बल से बदलने का प्रयास करता है — हर जनवरी किया गया संकल्प, सफ़ेद-पोर वाला अनुशासन, ढर्रे के विरुद्ध जमाई गई इच्छा-शक्ति — और हर वर्ष ढर्रा जीतता है, क्योंकि वह इच्छा जो उसके विरुद्ध संकल्प करती है और वह स्व जो उसे बनाए रखता है वही स्व हैं, और गृहयुद्ध का कोई विजेता नहीं। वह निष्कर्ष निकालता है, जैसे अधिकांश निकालते हैं, कि उसमें इच्छा-शक्ति की कमी है, कि वह दुर्बल है, असफलता में एक निर्णय जोड़ता हुआ; किंतु सत्य संरचनात्मक है। वह सोद्देश्य स्व को एक ऐसे ढर्रे पर लगा रहा था जो, परिभाषा से, सोद्देश्य स्व के नीचे स्वचालित में डूब चुका था, और स्वचालित ने हर बार इच्छा-शक्ति को मात दी, जैसा वह सदा देगा।

परिवर्तन, जब वह अंततः आता है, बग़ल से आता है — इच्छा के एक बड़े कृत्य के माध्यम से नहीं बल्कि दशाओं के एक परिवर्तन के माध्यम से जिसे वह लगभग उससे जोड़ता ही नहीं। वह एक नए शहर में स्थानांतरित होता है, और नए स्थान में, नई दिनचर्याओं और नए परिवेश के साथ, पुराने ढर्रे के पास जुड़ने को कहीं नहीं रहता; भूमिका अब निर्धारित नहीं की जाती, और वह गिर जाती है, चुपचाप, बिना एक युद्ध के, जबकि वह कहीं और देख रहा होता है। उसने आदत नहीं तोड़ी। वह उससे आगे बढ़ गया, जब दशाएँ इतनी खिसकीं कि पुरानी भूमिका अब फिट न बैठे — और वह सीखता है, लगभग संयोग से, वह पाठ जो यह अध्याय सिखाता है: कि हम स्वयं को एक ऐसे युद्ध में परास्त करके नहीं बदलते जिसे हम जीत नहीं सकते, बल्कि दशाओं को सँभालकर और उस भूमिका को जिससे हम आगे बढ़ गए हैं स्वयं ही गिरने देकर।

## आपको एक नया स्व बनने की आवश्यकता नहीं

परिवर्तन की अधिकांश कठिनाई एक छिपी और थकाऊ पूर्व-धारणा से आती है: कि एक आदत बदलने के लिए, व्यक्ति को एक नया और बेहतर स्व बनना ही होगा, पुराने स्व को

परास्त करना और उसे एक सुधरे हुए से प्रतिस्थापित करना। यह परिवर्तन को दो स्वरों के बीच एक युद्ध के रूप में ढालता है — अयोग्य वर्तमान स्व और योग्य भविष्य स्व — और वह दुगुना अभिशप्त है, दोनों इसलिए कि स्व का स्व के विरुद्ध युद्ध का कोई विजेता नहीं, और इसलिए कि स्वयं वह ढाँचा व्यक्तिगत खाते को पुष्ट करता है, बेहतर स्व बनने पर किसी के मूल्य को दाँव पर लगाता और वर्तमान को अपर्याप्त के रूप में अभियुक्त ठहराता हुआ। जितना कठोर हम नया स्व बनने को ज़ोर लगाते हैं, उतना ही हम उस खाते को जमाते हैं जो वास्तविक समस्या था, आत्म-सुधार के नाम पर स्वयं से लड़ते हुए।

किंतु परिवर्तन, जैसा इस अध्याय ने दिखाया है, एक स्व का दूसरे द्वारा परास्त होना नहीं; वह एक ऐसी भूमिका का गिर-जाना है जो अब फिट नहीं बैठती, जब दशाएँ और समझ पक चुकी हों। और इसके लिए बिल्कुल एक नया स्व बनना आवश्यक नहीं — केवल इतना आवश्यक है कि पुरानी भूमिका, अब निर्धारित न की गई, गिर जाए, पीछे एक विजयी नया स्व नहीं बल्कि बस वह जागरूकता छोड़ती हुई जो आरम्भ में कभी भूमिका थी ही नहीं। आपको एक अयोग्य आदत रख देने के लिए एक योग्य नया व्यक्ति बनना नहीं पड़ता; आपको केवल एक ऐसी भूमिका को जिससे आप आगे बढ़ गए हैं गिरने देना है, जिसे वह जागरूकता जिसने उसे पहना बिना किसी युद्ध, किसी आत्म-सुधार, किसी अभियोग के होने दे सकती है कि आप कौन थे। परिवर्तन वास्तविक है, किंतु वह एक हल्का होना है, एक विजय नहीं — एक बुरे स्व का एक अच्छे से प्रतिस्थापन नहीं, बल्कि एक वेशभूषा का गिर-जाना, उस एक के द्वारा देखा गया जो कभी वेशभूषा था ही नहीं।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

हम अपनी आदतें बल से नहीं तोड़ते; आदत से लड़ती इच्छा कर्ता का कर्ता से लड़ना है, बिना विजेता का एक गृहयुद्ध। एक आदत स्वचालित हुई भूमिका है, और वह तब नहीं बदलती जब इच्छा उसे परास्त करती है बल्कि तब जब दशाएँ और समझ इतनी पक चुकी हों कि पुरानी भूमिका अब फिट न बैठे।

एक आदत लीजिए जिसे आप इच्छा-शक्ति से तोड़ने का प्रयास कर रहे हैं और उससे सीधे लड़ना बंद कीजिए। इसके बजाय एक दशा बदलिए जो उसे निर्धारित और बनाए रखती है, और

अपनी समझ गहरी कीजिए कि वह आपके लिए क्या कर रही थी। फिर परिवर्तन को एक विजय के बजाय एक पकने के रूप में आने दीजिए, अब निर्धारित न की गई भूमिका पर विश्वास करते हुए कि वह स्वयं ही गिर जाएगी।

## तृष्णा और वह भूख जो संसार को चलाती है

---

इच्छा समस्या नहीं है। समस्या वह छोटा शब्द है जिसे हम उसके आगे घुसा देते हैं: मुझे यह चाहिए ही। वहीं भूख दुःख में बदल जाती है।

— चाहने पर टिप्पणी

इस पुस्तक ने जिन बहुत-से दुःखों की जाँच की है उनके नीचे एक अकेला इंजन चलता है: तृष्णा, वह बेचैन चाहना जो मानव-जीवन का इतना अधिक भाग चलाती है। हम परिणाम की तृष्णा करते हैं, संपत्ति की, अनुमोदन की, सुरक्षा की, अगली वस्तु की जो अंततः हमें पूर्ण करेगी — और तृष्णा, चाही गई वस्तुओं से कहीं अधिक, वही है जो हमें गति और दुःख में रखती है। चिंतनशील परंपराओं ने तृष्णा को इस पुस्तक से बहुत पहले दुःख की जड़ के रूप में पहचाना, और एकीकृत समझ ठीक-ठीक दिखाती है क्यों: तृष्णा भूख के रूप में व्यक्त व्यक्तिगत खाता है, पृथक स्व उसे प्राप्त करने को पहुँचता हुआ जो उसके अनुभूत अभाव को भरेगा।

मुझे स्पष्ट कर देने दीजिए कि यह इच्छा के विरुद्ध सलाह नहीं, जो दोनों असंभव और जीवन-विरोधी होगी। इच्छा जीवित होने में बुनी है; वह भूख जो संसार को चलाती है वह भी बनाती, रचती, प्रेम करती, और खोजती है। यह पुस्तक जिस पर प्रश्न करती है वह इच्छा नहीं बल्कि वह विशेष दुःख है जो तृष्णा उसमें जोड़ती है — वह हताश स्वामित्व, वह अनुभूत अभाव जिसे कोई अर्जन नहीं भरता, वह पकड़ जो चाहने की स्वाभाविक गति को एक ऐसी भूख के चकराहिन्नी में बदल देती है जिसे कभी संतुष्ट नहीं किया जा सकता क्योंकि वह कभी वास्तव में अपनी वस्तुओं के विषय में थी ही नहीं।

## तृष्णा की संरचना

एक तृष्णा की शरीर-रचना देखिए और आप हर बार वही संरचना देखेंगे। एक अनुभूत अभाव है — अपर्याप्तता का एक बोध, कुछ छूटे होने का। एक वस्तु है जो उसे भरने का वचन देती है — भोजन, खरीद, उपलब्धि, अनुमोदन, द्रव्य। अर्जन है, और एक संक्षिप्त राहत जैसे तृष्णा क्षण-भर के लिए संतुष्ट होती है। और फिर, एक ऐसी विश्वसनीयता से जिसने बहुत पहले हमें कुछ सिखा दिया होना चाहिए था, अभाव लौटता है, एक नई वस्तु से जुड़ता है, और चक्र फिर आरम्भ होता है। तृष्णा का चकराघिन्नी ठीक यही है: एक अनुभूत अभाव जो अपनी वस्तु अर्जित होने पर क्षण-भर शांत होता है और फिर अघटित लौटता है, हमें अगली वस्तु के पीछे भेजता हुआ, और अगली, एक ऐसे पीछे में जो कभी नहीं पहुँचता क्योंकि अभाव कभी वास्तव में वस्तुओं के विषय में था ही नहीं।

यही कारण है कि अर्जन तृष्णा को कभी संतुष्ट नहीं करता, चाहे कितना ही अर्जित किया जाए। वह व्यक्ति जो अंततः वह वस्तु पा लेता है जिसकी उसने तृष्णा की, संक्षिप्त राहत अनुभव करता है और फिर, बहुधा घंटों के भीतर, अभाव की वापसी, अब किसी नई वस्तु से जुड़ा — क्योंकि अभाव कभी वस्तु न होने का प्रकार्य नहीं था बल्कि पृथक् स्व की अनुभूत अपर्याप्तता का, जिसे कोई वस्तु भर नहीं सकती। तृष्णा ने वचन दिया कि यह वस्तु आपको पूर्ण करेगी; वह कभी नहीं करती, क्योंकि अपूर्णता पृथक् स्व का अनुभूत अभाव थी, और स्व पृथक्, और अभावग्रस्त, बना रहता है, हर अर्जन के बाद। चकराघिन्नी सदा चलता है क्योंकि वह कभी कहीं जा ही नहीं रहा था।

## वस्तु कभी बिंदु थी ही नहीं

यहाँ वह पहचान है जो तृष्णा को उसकी जड़ में ढीला करती है: वस्तु कभी बिंदु थी ही नहीं। तृष्णा वास्तव में जिसके लिए पहुँच रही है, हर विशेष वस्तु के नीचे, वह अनुभूत अभाव का अंत है — वह पूर्णता, वह समग्रता, वह पर्याप्तता जिसे पृथक् स्व स्वयं को छूटा हुआ अनुभव करता है। किंतु वह समग्रता कभी अर्जन के माध्यम से उपलब्ध थी ही नहीं, क्योंकि अभाव भरी जाने को कोई वास्तविक अनुपस्थिति नहीं; वह पृथक्ता-भ्रम की अनुभूत क्रीमत्ता है, उस स्व की पीड़ा जो स्वयं को समग्र से पृथक् और इसलिए अपूर्ण समझता है। जो पूर्णता तृष्णा खोजती है वह किसी वस्तु में नहीं; वह साक्षी की समग्रता है, स्वयं में विश्राम करती जागरूकता की

पर्याप्तता, वह आनंद जो आरम्भ से आधार-भूमि था — और वह समग्रता कभी छूटी नहीं थी, केवल उसी तृष्णा से ढकी जो उसे कहीं और अर्जित करने की चेष्टा करती थी।

यही कारण है कि तृष्णा का अंत इच्छा का दमन नहीं — जो केवल स्व का फिर स्वयं से लड़ना है — बल्कि यह पहचान है कि जिस समग्रता के लिए तृष्णा पहुँचती है वह कभी अनुपस्थित थी ही नहीं और कभी अर्जन के माध्यम से उपलब्ध नहीं थी। जब अनुभूत अभाव भेद दिया जाता है — जब वह पृथक् स्व जिसने स्वयं को अपूर्ण अनुभव किया उस भ्रम के रूप में पहचाना जाता है जिसे यह समूची पुस्तक घुलाती रही है — तो तृष्णा अपनी हताशा खो देती है, क्योंकि जिस समग्रता का वह पीछा कर रही थी वह पहले से ही वस्तुस्थिति पाई जाती है। इच्छा बनी रहती है; वह भूख जो संसार को चलाती है बनी रहती है; किंतु हताशा स्वामित्व गिर जाता है, और व्यक्ति अनुभूत अभाव के बिना चाह सकता है, चक्रधिन्नी के बिना पीछा कर सकता है, इच्छा की वस्तुओं का आनंद ले सकता है बिना यह माँग किए कि वे एक ऐसे स्व को पूर्ण करें जो कभी वास्तव में अपूर्ण था ही नहीं।

### पूर्णता से चाहना

अभाव से चाहने और पूर्णता से चाहने के बीच एक संसार-भर का अंतर है, और वह समूचा अंतर है जिसकी ओर यह अध्याय संकेत करता है। अभाव से चाहना तृष्णा करना है — वस्तु की ओर उस वस्तु के रूप में पहुँचना जो अंततः एक अपूर्ण स्व को पूर्ण करेगी, उस सब हताशा, स्वामित्व, और अपरिहार्य निराशा के साथ जो तृष्णा वहन करती है। पूर्णता से चाहना स्वतंत्रता से इच्छा करना है — एक जीवन की स्वाभाविक गति से पीछा करना, रचना, प्रेम करना, और खोजना, अनुभूत अभाव के उसे चलाए बिना, इस माँग के बिना कि वस्तु आपको पूर्ण करे, उस भूख के चक्रधिन्नी के बिना जिसे कभी संतुष्ट नहीं किया जा सकता। जो पूर्णता से चाहता है वह वही वस्तुएँ पीछा कर सकता है जो तृष्णावान पीछा करता है — वही कैरियर बना सकता है, उन्हीं लोगों से प्रेम कर सकता है, उन्हीं सुखों का आनंद ले सकता है — किंतु स्वतंत्रता से, हताशा के बिना, क्योंकि वह एक ऐसी रिक्तता भरने का प्रयास नहीं कर रहा जिसे कोई वस्तु भर नहीं सकती।

यह इच्छा का वह रूपांतरण है जिसकी ओर गहनतम शिक्षाएँ संकेत करती हैं: उसका विलोप नहीं, जो न संभव न वांछनीय, बल्कि पृथक् स्व के अनुभूत अभाव से उसकी मुक्ति। जिस समग्रता का तृष्णा ने हजार वस्तुओं के माध्यम से पीछा किया उसे सदा-उपस्थित आधार-भूमि

के रूप में पहचाना जाता है, और इच्छा, हताश स्वामित्व से मुक्त, एक ऐसे जीवन की आनंदपूर्ण गति बन जाती है जो पहले से ही पूर्ण है बजाय एक ऐसे स्व के चकरधिन्नी के जो एक पूर्णता अर्जित करने का प्रयास कर रहा है जो उसके पास सदा थी। वह भूख जो संसार को चलाती है उसे चलाती रहती है — किंतु उसमें जिसने अभाव को भेद दिया है, वह अभाव की हताशा के बजाय पूर्णता के खेल के रूप में गति करती है, जो चाहती है उसे स्वतंत्रता से चाहती हुई और, सब चाहने के नीचे, उस पर्याप्तता में विश्राम करती हुई जो कभी छूटी नहीं थी और कभी बिकाऊ नहीं थी।

## संक्षिप्त उन्माद

एक स्त्री वह वस्तु खरीदती है जिसे वह हफ्तों से चाहती रही है, और एक-दो घंटे के लिए चाहना शांत हो जाता है और वह, अंततः, पूर्ण अनुभव करती है। और फिर — वह लगभग उस पर एक घड़ी लगा सकती थी — पूर्णता मिटती है, अनुभूत अभाव लौटता है, और दिनों के भीतर वह स्वयं को एक नई वस्तु से जोड़ चुका है, और पीछा फिर आरम्भ होता है, जैसे वह हजार बार पहले आरम्भ हुआ है, एक ऐसी संतुष्टि की ओर जो केवल अर्जन के संक्षिप्त क्षण में आती है और कभी टिकती नहीं। उसने अपना समूचा जीवन यह फेरा चलाया है और कभी ठीक नहीं देखा कि यह एक फेरा है — कि वस्तु उसे कभी पूर्ण नहीं करती, कि अभाव सदा लौटता है, कि चकरधिन्नी, अपनी समूची गति के बावजूद, एक बार भी कभी नहीं पहुँचा।

यदि वह फेरे को पर्याप्त निकट से देखे, तो वह देख लेती है जो वह उसे आरम्भ से बता रहा है: कि वस्तु कभी बिंदु थी ही नहीं, कि तृष्णा हर वस्तु के नीचे जिसके लिए पहुँचती है वह अनुभूत अभाव का अंत है, एक ऐसे स्व की समग्रता जो स्वयं को अपूर्ण अनुभव करता है। और वह समग्रता कभी अर्जन के माध्यम से उपलब्ध थी ही नहीं, क्योंकि अभाव भरी जाने को कोई वास्तविक अनुपस्थिति नहीं बल्कि स्वयं को एक पृथक्, अपर्याप्त स्व समझने की अनुभूत क्रीमत है। चकरधिन्नी सदा चलता है क्योंकि वह कभी कहीं जा ही नहीं रहा था; और वह तब नहीं रुकता जब वह अंततः पर्याप्त अर्जित करती है बल्कि जब वह उस अभाव को भेद देती है जो उसे चला रहा था — और उस पूर्णता को खोज लेती है जिसका वह हजार खरीदों के माध्यम से पीछा कर रही थी कि वह, समूचे समय, वह आधार-भूमि थी जिस पर वह खरीदारी करते हुए खड़ी थी।



## वह सुख जो शेष रहता है

तृष्णा छोड़ने के विषय में हर शिक्षा को एक भय छाया देता है: कि पकड़ छोड़ना सुख छोड़ना है, इच्छा का एक सजीव जीवन एक धूसर विरक्ति के लिए बदलना जिसमें किसी वस्तु का आनंद नहीं लिया जाता। यह भय पूर्णतः गलत समझता है कि क्या छोड़ा जाता है। तृष्णा सुख में जो जोड़ती है वह आनंद नहीं बल्कि पकड़ है — वह हताश जकड़न, उसे खोने का भय, यह माँग कि वह हमें पूर्ण करे, उसके बीतने पर निराशा — और यह सब वस्तुतः उस सुख को घटाता है जिसे वह तीव्र करने का दावा करती है, क्योंकि पकड़ता मन, सुख खोने को लेकर चिंतित और उसका और माँगता, उस सुख के प्रति कभी पूर्णतः उपस्थित नहीं जो उसके पास है। तृष्णावान, विरोधाभासी रूप से, कम आनंद लेता है, अधिक नहीं, क्योंकि पकड़ ठीक उस उपस्थिति को भीड़ से बाहर धकेल देती है जिसमें आनंद जीता है।

पकड़ छोड़िए, और सुख लुप्त नहीं होता — वह मुक्त किया जाता है। तृष्णा के बिना खाया गया भोजन अधिक पूर्णता से चखा जाता है, क्योंकि पकड़ता मन पहले से ही अगले कौर के लिए नहीं पहुँच रहा; उसके स्वामित्व की आवश्यकता के बिना मिली सुंदरता अधिक स्पष्ट देखी जाती है; इस माँग के बिना कि वह हमें पूर्ण करे या उसके बीतने के भय के बिना आनंदित सुख, पहली बार, वास्तव में आनंदित होता है, पूर्णतः उपस्थित, अपने आप में पूर्ण। अभाव के बजाय पूर्णता से चाहना कम आनंद लेना नहीं बल्कि अधिक सच्चाई से आनंद लेना है, क्योंकि आनंद अब उस पकड़ से गला घोंटा नहीं जाता जो तृष्णा ने जोड़ी। सुख बना रहता है — बल्कि गहराता है — जब तृष्णा छोड़ी जाती है। जो खोया जाता है वह केवल वह दुःख है जो सुख की तीव्रता का स्वाँग कर रहा था, और वस्तुतः आरम्भ से उसे घटा रहा था।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

तृष्णा भूख के रूप में व्यक्त व्यक्तिगत खाता है — एक अनुभूत अभाव जो अपनी वस्तु अर्जित होने पर क्षण-भर शांत होता है और फिर, अघटित, किसी नई वस्तु से जुड़ा लौटता है। वस्तु कभी बिंदु थी ही नहीं। तृष्णा जिसके लिए पहुँचती है वह स्व की समग्रता है, जिसे कोई वस्तु आपूर्ति नहीं कर सकती और जो कभी वास्तव में छूटी नहीं थी।

आज एक तृष्णा को आरम्भ से अंत तक देखिए — अनुभूत अभाव, वह वस्तु जो उसे भरने का वचन देती है, उसे अर्जित करने की संक्षिप्त राहत, और अभाव की वापसी। देखिए कि वस्तु ने आपको पूर्ण नहीं किया, और पूछिए, कोमलता से, कि तृष्णा हर उस वस्तु के नीचे जिसे उसने कभी चुना वास्तव में किसके लिए पहुँच रही थी।

## प्रशंसा, निंदा, और स्वीकृति की भूख

---

औरों के निर्णय के लिए जीना उन्हें एक ऐसे स्व की चाबियाँ सौंप देना है  
जिसे आप फिर तब नहीं खोज पाते जब वे देख नहीं रहे होते।

— स्वीकृति पर टिप्पणी

एक जीवन को आकार देती सबसे शक्तिशाली और सबसे कम जाँची गई शक्तियों में स्वीकृति की भूख है — भली-भाँति सोचे जाने की आवश्यकता, अस्वीकृति का भय, अपने व्यवहार का औरों के निर्णयों की ओर सतत, बहुधा अचेतन अभिविन्यास। हम अपने जीवनों, अपने चुनावों, अपने स्वयं स्वं को उन लोगों की स्वीकृति के चारों ओर व्यवस्थित करते हैं जिनके मतों को हमने एक न्यायालय बना दिया है, और हम उनकी निंदा भोगते और उनकी प्रशंसा की तृष्णा करते हैं मानो हमारा मूल्य सचमुच उनकी अभिरक्षा में हो। इस पुस्तक की शिक्षा इस भूख तक उसी द्वार से पहुँचती है जिसका उसने पूरे समय उपयोग किया है: व्यक्तिगत खाता, अब केवल हमारे द्वारा अकेले नहीं बल्कि औरों की कल्पित बहियों में रखा गया।

यह अध्याय उस विशेष स्वतंत्रता के विषय में है जो औरों के निर्णय की अब आवश्यकता न रखने से आती है — उसकी शीतल उदासीनता नहीं जो लोगों की परवाह नहीं करता, बल्कि उसकी स्वतंत्रता जिसने अपना मूल्य एक ऐसे न्यायालय के मतों पर दाँव पर लगाना बंद कर दिया है जिसे उसने नियुक्त किया, और जो इसलिए प्रशंसा और निंदा दोनों से मिल सकता है बिना किसी से स्वामित्व किए।

**वह न्यायालय जिसे हम नियुक्त करते हैं**

ध्यान दीजिए कि जिस स्वीकृति की हम भूख रखते हैं और जिस अस्वीकृति से हम डरते हैं वे निर्णय हैं — हमारे मूल्य पर सुनाए गए फ़ैसले — और कि हमने औरों को न्यायाधीशों के रूप में नियुक्त किया है, उन्हें यह अधिकार सौंपते हुए कि वे, अपने मत से, तय करें कि हम स्वीकार्य हैं या नहीं। यह बाहरीकृत व्यक्तिगत खाता है: अंक-पट्ट अब औरों के कल्पित आकलनों में

रखा गया, हमारा मूल्य उनकी प्रशंसा और निंदा के साथ उठता और गिरता, हमारा व्यवहार स्वयं को सतत एक अनुकूल निर्णय की ओर अभिमुख करता हुआ। और यह एक अनोखा बंधन है, क्योंकि हमने अपने ही आत्म-मूल्य की चाबियाँ उन लोगों को सौंप दी हैं जिन्होंने उनके लिए नहीं माँगा, जिनके मत बाहर से और बहुधा लापरवाही से बनते हैं, और जिनके निर्णयों को हम फिर ऐसे भोगते हैं मानो वे हमारी सत्ता का सत्य हों। स्वीकृति के लिए जीना अपने मूल्य को अपने बाहर स्थित करना है, एक ऐसे न्यायालय में जिसे व्यक्ति ने नियुक्त किया, और फिर उस मूल्य को खोज पाने में असमर्थ होना जब न्यायालय अधिवेशन में न हो।

इसे स्पष्ट देखिए और भूख अपनी पकड़ खोने लगती है। औरों का निर्णय आपके मूल्य का सत्य नहीं; वह बाहर से बना एक मत है, दूसरे की अपनी अनुकूलनता, भयों, और सीमित दृष्टि से आकार दिया गया, और वह इस विषय में कुछ निर्धारित नहीं करता कि आप वास्तव में क्या हैं। आपने उन्हें आपका निर्णय करने का अधिकार सौंपा, और आप उसे वापस ले सकते हैं — औरों की परवाह करना बंद करके नहीं, बल्कि अपने मूल्य को उनके निर्णयों में स्थित करना बंद करके, अनुमोदन के अंक-पट्ट से वैसे ही कदम हटाकर जैसे आपने सब औरों से हटाया। जिस न्यायालय को आपने नियुक्त किया उसे विसर्जित किया जा सकता है, और आपका मूल्य, जो कभी वास्तव में उनकी अभिरक्षा में था ही नहीं, वहाँ लौटाया जा सकता है जहाँ वह सदा था: किसी निर्णय में नहीं, बल्कि उस जागरूकता में जिसे कोई निर्णय छूता नहीं।

## प्रशंसा और निंदा एक ही काँटा हैं

यहाँ एक पहचान है जो अनेकों को चकित करती है: प्रशंसा और निंदा एक ही काँटा हैं, और एक से पकड़ा जाना दूसरे से पकड़ा जाना है। हम कल्पना करते हैं कि प्रशंसा अच्छी और निंदा बुरी है, कि हमें पहली खोजनी और दूसरी से बचना चाहिए; किंतु दोनों निर्णय हैं, और प्रशंसा के लिए जीना अनिवार्यतः निंदा के भय में जीना है, क्योंकि वह जिसे अनुकूल निर्णय चाहिए वह उसी आवश्यकता से प्रतिकूल के प्रति भेद्य है। वे एक अकेले बंधन के दो पहलू हैं: अपने मूल्य का औरों के मतों पर दाँव पर लगाना। वह व्यक्ति जो प्रशंसा से उल्लसित होता है निंदा से विध्वस्त होगा, क्योंकि दोनों का उस पर अधिकार है; केवल वह जिसने प्रशंसा की आवश्यकता बंद कर दी है निंदा से भी मुक्त है, क्योंकि उसने उस अधिकार को वापस ले लिया है जो उसने न्यायालय को सौंपा था।

यही कारण है कि यह अध्याय जिस स्वतंत्रता की ओर संकेत करता है वह सार्वभौमिक स्वीकृति की प्राप्ति नहीं — जो असंभव है, और जो प्राप्त होने पर भी बंधन ही होगी — बल्कि निर्णय की बिल्कुल आवश्यकता न रखने से मुक्ति है। जिसने अनुमोदन का खाता रख दिया है वह प्रशंसा को बिना उससे फूले प्राप्त कर सकता है और निंदा से बिना विध्वस्त हुए मिल सकता है, क्योंकि उसका मूल्य अब किसी पर दाँव पर नहीं; वह औरों के मतों को सूचना के रूप में सुन सकता है, कभी-कभी उपयोगी, बिना उन्हें अपनी सत्ता पर निर्णयों के रूप में सुने। प्रशंसा और निंदा निर्णय के बजाय मौसम बन जाते हैं — ध्यान दिए जाने को गुजरती दशाएँ, भोगे जाने को दंडादेश नहीं — और वह स्व जिसे अनुकूल निर्णय चाहिए था, और जो प्रतिकूल से डरता था, चुपचाप एक ऐसे न्यायालय से मुक्त किया जाता है जिसे उसे कभी नियुक्त करने की आवश्यकता ही नहीं थी।

### कार्य से कर्म करना, तालियों से नहीं

इस स्वतंत्रता का एक व्यावहारिक फल है जो रूपांतरित कर देता है कि व्यक्ति संसार में कैसे कर्म करता है। जो स्वीकृति के लिए जीता है वह अपनी क्रिया को निर्णय की ओर अभिमुख करता है — वह करता हुआ जिसकी प्रशंसा होगी, उससे बचता हुआ जिसकी निंदा होगी, कार्य और स्व को अनुकूल मत की ओर आकार देता हुआ — और यह अभिविन्यास हर वस्तु को विकृत करता है, क्योंकि क्रिया अब अपने वास्तविक प्रयोजन की सेवा नहीं कर रही बल्कि अनुमोदन के खाते की सेवा कर रही है। जिसने स्वीकृति की भूख छोड़ दी है वह अपनी क्रिया को स्वयं कार्य की ओर — जो सत्य है, जो भला है, जो स्थिति वास्तव में अपेक्षित करती है उसकी ओर — अभिमुख कर सकता है, तालियों की ओर के बजाय, और यह समस्त सच्ची और अविकृत क्रिया की दशा है। तालियों के बजाय कार्य से कर्म करना स्वच्छता से कर्म करना है, उस सतत विरूपण से मुक्त जो स्वीकृति की भूख प्रस्तुत करती है।

यह व्यक्ति को औरों के प्रति उदासीन या उनकी सच्ची आवश्यकताओं के प्रति लापरवाह नहीं बनाता; इसके विपरीत, स्वीकृति की भूख से मुक्त व्यक्ति औरों पर अधिक सच्चाई से ध्यान दे सकता है, क्योंकि वह अब औरों को एक ऐसे न्यायालय के रूप में उपयोग नहीं कर रहा जिसका निर्णय उसे चाहिए, और इसलिए उनसे न्यायाधीशों के बजाय व्यक्तियों के रूप में मिल सकता है। अनुमोदन के खाते से स्वतंत्रता औरों से एक मुड़-जाना नहीं बल्कि कार्य की ओर और औरों की ओर जैसे वे वास्तव में हैं एक मुड़-जाना है, उनके अनुकूल निर्णय की विकृत करती आवश्यकता से मुक्त। औरों के निर्णय के लिए जीना उन्हें एक ऐसे स्व की चाबियाँ सौंप देना है

जिसे आप फिर तब नहीं खोज पाते जब वे देख नहीं रहे होते; चाबियाँ वापस लेना यह खोज लेना है कि आपका मूल्य कभी उनकी अभिरक्षा में था ही नहीं, कि प्रशंसा और निंदा एक ही गुजरता मौसम हैं, और कि आप, अंततः, तालियों के लिए के बजाय कार्य से कर्म करने को स्वतंत्र हैं।

## एक बुरी समीक्षा

एक कलाकार सौ समीक्षाएँ प्राप्त करता है, और निन्यानवे गर्म हैं। वह सौवीं पढ़ता है — वह एक निर्दय टिप्पणी — और वही एकमात्र है जिसे वह ढोता है, हफ्तों उसे फिर चलाता हुआ, निन्यानवे की प्रशंसा के विरुद्ध एक अकेले अजनबी के निर्णय से विध्वस्त। हम इसे अतार्किक कहते हैं, और वह है; किंतु उसकी संरचना सटीक है। वह औरों के निर्णय के लिए जीता है, और जिसे अनुकूल निर्णय चाहिए वह उसी आवश्यकता से प्रतिकूल के विरुद्ध रक्षाहीन है। प्रशंसा और निंदा एक ही काँटा हैं, और काँटा गहरा गड़ा है: उसका मूल्य उस न्यायालय पर दाँव पर है जिसे उसने नियुक्त किया, और एक न्यायाधीश का अँगूठा-नीचे तालियों के एक सभाकक्ष को मात देता है क्योंकि तालियाँ कभी सुरक्षा नहीं थीं, केवल भय की अस्थायी अनुपस्थिति।

जिस स्वतंत्रता को वह तरसता है वह सौ अच्छी समीक्षाएँ नहीं — उसके पास निन्यानवे थीं और उन्होंने उसे नहीं बचाया — बल्कि निर्णय की बिल्कुल आवश्यकता न रखने से मुक्ति है। यदि उसका मूल्य अजनबियों के मतों पर दाँव पर न होता, तो सौवीं समीक्षा सूचना होती, शायद उपयोगी, शायद नहीं, किंतु एक घाव नहीं; निन्यानवे सुखद होतीं बिना आवश्यक हुए; और तालियों के लिए जीने का समूचा तंत्र, जो न केवल उसकी शांति बल्कि उसके कार्य को विकृत करता है, चुपचाप गिर जाता। वह तालियों के लिए के बजाय कार्य से कर्म करता, और प्रशंसा और निंदा दोनों से उस गुजरते मौसम के रूप में मिलता जो वे सदा थे। सौवीं समीक्षा का कोई अधिकार न था सिवाय उस अधिकार के जो उसने उसे दिया, अपने मूल्य की चाबियाँ एक ऐसे न्यायालय को सौंपते हुए जिसने कभी उनके लिए नहीं माँगा।

## आंतरिक न्यायालय

यह निष्कर्ष निकालना भूल होगी कि औरों के निर्णयों से जीने का उपचार अपने ही से जीना है — बाह्य न्यायालय को एक आंतरिक से प्रतिस्थापित करना, स्वयं को औरों के बजाय अपने ही मापदंडों से जाँचना। क्योंकि आत्म-अनुमोदन वही जाल एक क्रदम भीतर है: वह निर्णय के समूचे तंत्र को अक्षत रखता है, केवल न्यायाधीश को स्थानांतरित करता हुआ, ताकि व्यक्ति

अब एक आंतरिक न्यायालय की ओर चिंतित अभिविन्यास में जीए जो ठीक वैसे प्रशंसा और निंदा करता है जैसे बाह्य करता था। वह व्यक्ति जिसने स्वयं को औरों के अनुमोदन की आवश्यकता से मुक्त किया, केवल अपने ही आत्म-निर्णय की निरंकुशता में गिरने को, खाते से बिल्कुल नहीं बचा; उसने उसे आंतरिक बना लिया है, और आंतरिक न्यायाधीश बहुधा किसी भी बाह्य से कठोरतर है।

यह अध्याय जिस स्वतंत्रता की ओर संकेत करता है वह बाह्य न्यायालय का एक आंतरिक से प्रतिस्थापन नहीं बल्कि स्वयं न्यायालय का विलयन है — यह पहचान कि किसी का मूल्य किसी निर्णय में नहीं, आंतरिक या बाह्य, क्योंकि वह जागरूकता जो व्यक्ति सबसे गहराई से है वह कभी जाँची जाने को एक वस्तु थी ही नहीं। साक्षी आत्म-अनुमोदन से सुधरता या आत्म-आलोचना से ह्रासित नहीं होता; वह सब निर्णयों से पूर्व है, वह जागरूकता जिसमें स्वयं निर्णय करना प्रकट होता है। अनुमोदन के अंक-पट्ट से क्रदम हटाना उससे पूर्णतः क्रदम हटाना है, अपना एक निजी अंक-पट्ट स्थापित करना नहीं — और स्वीकृति की भूख से गहनतम स्वतंत्रता बेहतर आत्म-सम्मान नहीं, जो अब भी खाता है, बल्कि उस एक का भेद दिया जाना है जिसे आरम्भ में निर्णय चाहिए था, आंतरिक या बाह्य।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

औरों के निर्णय के लिए जीना उन्हें एक ऐसे स्व की चाबियाँ सौंप देना है जिसे आप फिर तब नहीं खोज पाते जब वे देख नहीं रहे होते। प्रशंसा और निंदा एक ही काँटा हैं: जिसे प्रशंसा चाहिए वह उसी आवश्यकता से निंदा के प्रति भेद्य है। दोनों मौसम हैं, निर्णय नहीं — गुजरती दशाएँ, आपकी सत्ता पर दंडादेश नहीं।

आज एक क्षण पर ध्यान दीजिए जब आप स्वीकृति खोज रहे हैं या अस्वीकृति से डर रहे हैं, और देखिए कि आपने दूसरे को एक न्यायालय के रूप में नियुक्त किया है और उन्हें आपके मूल्य का निर्णय करने का अधिकार सौंपा है। चाबियाँ वापस लीजिए — उनकी परवाह करना बंद करके नहीं, बल्कि अपने मूल्य को उनके निर्णय में स्थित करना बंद करके — और तालियों के लिए के बजाय कार्य से कर्म कीजिए।

## ऊब, बेचैनी, और वर्तमान का इनकार

---

ऊब करने को किसी वस्तु की अनुपस्थिति नहीं है। वह जो है उसका इनकार है,  
एक ऐसे स्व द्वारा जिसने तय कर लिया है कि यह क्षण पर्याप्त नहीं।

— बेचैनी पर टिप्पणी

ऊब ब्रह्मांडीय व्यवस्था और दुःख के अंत के विषय में एक पुस्तक में एक अध्याय का पात्र होने को बहुत छोटी वस्तु लगती है, और फिर भी उसे जाँचना सार्थक है ठीक इसलिए कि वह इतनी साधारण, इतनी सतत, और इतनी उघाड़ती है। ऊब की तुच्छ सतह के नीचे वही संरचना बसी है जो इस पुस्तक द्वारा जाँचे गए सबसे गंभीर दुःखों की: वर्तमान का इनकार, अगली घटना के लिए बेचैन पहुँचना, इस क्षण पर सुनाया गया निर्णय कि वह पर्याप्त नहीं। ऊब अपने सबसे रोज़मर्रा रूप में व्यक्तिगत खाता है, और उसका अंत वही उपस्थिति है जो बड़े दुःखों को समाप्त करती है।

हम ऊब को अपर्याप्त उद्दीपन की समस्या के रूप में बरतते हैं, करने को कुछ खोजकर, देखने को कुछ, खाली क्षण भरने को कुछ खोजकर सुलझाई जाने को। किंतु वह ऊब जो उद्दीपन रुकते ही उसी क्षण लौटती है, जो फ़ोन के लिए बाध्यकारी पहुँचना चलाती है, जो एक अनभरा क्षण सह नहीं सकती — वह ऊब अंततः करने की वस्तुओं की कमी नहीं। वह वर्तमान के साथ एक संबंध है, और उसकी वही जड़ है जो हमारी समूची बेचैनी की।

### जो है उसका इनकार

ऊब को निकट से देखिए और आप, उसके केंद्र में, एक इनकार पाते हैं — इस वर्तमान क्षण का इनकार, यह निर्णय कि जो यहाँ है, अभी, अपर्याप्त है, वर्तमान से किसी कल्पित अधिक-रोचक कहीं-और की ओर मुड़-जाना। ऊबा व्यक्ति वस्तुतः वर्तमान क्षण में कुछ छूटा हुआ नहीं रखता; वह एक ऐसे क्षण के प्रति उपस्थित है जिसे उसने अपर्याप्त ठहराया है, और ऊब की असुविधा उस इनकार का घर्षण है, एक ऐसे स्व का दुःख जिसने तय कर लिया है कि यह पर्याप्त



नहीं और अगली वस्तु के लिए, बेचैनी से, पहुँच रहा है जो शायद हो। ऊब एक निर्णय के साथ मिला वर्तमान क्षण है, और निर्णय वही है जो व्यक्तिगत खाता सदा सुनाता है: पर्याप्त नहीं, वह नहीं जो मैं चाहता हूँ, वह परिणाम नहीं जिसकी मैं माँग करता हूँ।

यही कारण है कि ऊब इतनी उघाड़ती है। वह हमें, सबसे साधारण परिस्थितियों में, जो है उसका वह बेचैन इनकार दिखाती है जो हमारे इतने दुःख के नीचे चलता है — वर्तमान में विश्राम करने की असमर्थता, अगली घटना के लिए सतत पहुँचना, यह निर्णय कि यह क्षण, जो भी वह हो, अपर्याप्त है। वह व्यक्ति जो एक भी अनभरा क्षण सह नहीं सकता, जो वर्तमान के अनलंकृत होते ही उद्दीपन के लिए बाध्यकारी रूप से पहुँचता है, हमें पृथक स्व को वर्तमान के अपने बेचैन इनकार में दिखा रहा है, बस यहाँ होने में असमर्थ क्योंकि यहाँ को पर्याप्त नहीं ठहराया गया है। और उपचार अधिक उद्दीपन नहीं, जो केवल इनकार को पोषित करता है, बल्कि स्वयं इनकार का अंत है — वर्तमान से बिना निर्णय का मिलना।

### बेचैनी क्या ढक रही है

ऊब और उसकी उपचार-खोजती बेचैनी के नीचे कुछ बसा है जिसे बेचैनी ढक रही है, और उसे कोमलता से नाम देना सार्थक है। एक अनभरे क्षण के प्रति पूर्णतः उपस्थित होना — जो है उसके साथ बैठना, अगली वस्तु के लिए पहुँचे बिना — एक ऐसे ढंग से स्वयं के साथ अकेला होना है जिसे बेचैन स्व असह्य पाता है, क्योंकि उस अनभरी उपस्थिति में पृथक स्व का अनुभूत अभाव, सामान्यतः उद्दीपन से दबाया, श्रव्य हो जाता है। उद्दीपन के लिए बाध्यकारी पहुँचना, अंशतः, इससे एक पलायन है — उस नंगी उपस्थिति से जिसमें स्व की अनुभूत अपर्याप्तता, उसकी बेचैनी, उसकी पीड़ा से मिलना ही पड़ता। ऊब असुविधाजनक है इसलिए नहीं कि क्षण खाली है बल्कि इसलिए कि खाली क्षण हमें स्वयं को लौटाता है, और जिस स्व को हम लौटाए जाते हैं वह बेचैन, अभावग्रस्त, पृथक स्व है जिससे बचने में उद्दीपन हमारी सहायता कर रहा था।

यही कारण है कि ऊब का अंत अधिक उद्दीपन नहीं बल्कि वही पहचान है जो पृथक स्व के सब दुःखों को समाप्त करती है। जब अनुभूत अभाव भेद दिया जाता है — जब वह पृथक स्व जिसने वर्तमान को अपर्याप्त पाया उस भ्रम के रूप में पहचाना जाता है जिसे यह पुस्तक घुलाती रही है — तो अनभरा क्षण भागे जाने को एक इनकार नहीं बल्कि विश्राम किए जाने को एक उपस्थिति रह जाता है, और ऊब बस उठती ही नहीं, क्योंकि अब कोई स्व यह निर्णय सुनाता

नहीं कि यह पर्याप्त नहीं। वर्तमान, इनकार के बिना मिला, पूर्णतः पर्याप्त पाया जाता है — इसलिए नहीं कि वह उद्दीपन से भर दिया गया है, बल्कि इसलिए कि वह स्व जिसने उसे खाली पाया भेद दिया गया है।

## वर्तमान की पर्याप्तता

एक साधारण, अनभरे क्षण से मिलने की कल्पना कीजिए — एक प्रतीक्षा, एक ठहराव, कुछ-विशेष-नहीं का एक विस्तार — ऊब की प्रतिवर्ती क्रिया के बिना, उद्दीपन के लिए पहुँचे बिना, इस निर्णय के बिना कि वह अपर्याप्त है। बस जो है उसके प्रति उपस्थित: श्वास, शरीर, प्रकाश, ध्वनियाँ, क्षण का गंगा पोत, इनकार के बिना मिला। यह कोई भव्य रहस्यमय अवस्था नहीं; यह संसार की सबसे साधारण वस्तु है, वह सरल उपस्थिति जिसमें छोटे बच्चे स्वाभाविक रूप से विश्राम करते हैं बेचैन इनकार सीखने से पहले, और जिसे चिंतक वर्षों फिर से सीखते हैं। और उस नंगी उपस्थिति में, निर्णय के बिना मिली, क्षण पर्याप्त पाया जाता है — इसलिए नहीं कि उसमें कुछ जोड़ा गया है, बल्कि इसलिए कि वह स्व जिसने उसे खाली पाया अपना निर्णय सुनाना बंद कर चुका है।

यह समूची शिक्षा का सबसे छोटा और सबसे उपलब्ध रूप है, सबसे साधारण परिस्थितियों में अभ्यस्त। आपको दुःख के अंत का अभ्यास करने को किसी संकट या किसी शिखर अनुभव की आवश्यकता नहीं; आपको केवल अगले अनभरे क्षण की आवश्यकता है, ऊब की प्रतिवर्ती क्रिया के बिना मिला, जो है उसके इनकार के बिना। अगली घटना के लिए बेचैन पहुँचना अपने सबसे रोजमर्रा रूप में व्यक्तिगत खाता है, अपना सतत निर्णय सुनाता हुआ कि यह पर्याप्त नहीं; और उसका अंत वही उपस्थिति है जो बड़े दुःखों को समाप्त करती है, अभी उपलब्ध, इस साधारण क्षण में, जो उसी क्षण पूर्णतः पर्याप्त पाया जाता है जब स्व उसका इनकार करना बंद कर देता है। ऊब करने को किसी वस्तु की अनुपस्थिति नहीं है। वह जो है उसका इनकार है — और जो है, इनकार के बिना मिला, सदा पर्याप्त था।

## खिड़की पर बालक

एक बालक एक धीमी दोपहर को खिड़की पर बैठा है, करने को कुछ-विशेष-नहीं, और ऊबा नहीं — वर्षा, बिल्ली, प्रकाश देखता हुआ, अनभरे क्षण के प्रति उपस्थित बिना इस निर्णय के कि वह अपर्याप्त है, एक ऐसी नंगी उपस्थिति में विश्राम करता हुआ जिसे किसी उद्दीपन की

आवश्यकता नहीं क्योंकि किसी स्व ने अभी तय नहीं किया कि यह पर्याप्त नहीं। हम सब कभी यही बालक थे, बेचैन इनकार सीखने से पहले। एक साधारण क्षण के प्रति उपस्थित होने की सामर्थ्य उससे भागे बिना अर्जित किए जाने को कुछ नहीं; वह पुनर्प्राप्त किए जाने को कुछ है, क्षण को अपर्याप्त होने का सिखाने के वर्षों ने हमसे प्रशिक्षित करके बाहर निकाल दिया।

वही वयस्क उसी खिड़की पर, सेकंडों के भीतर, फ़ोन के लिए पहुँचता है — इसलिए नहीं कि उसमें कुछ है जो उसे चाहिए, बल्कि इसलिए कि अनभरा क्षण असह्य हो गया है, उसे एक ऐसी उपस्थिति को लौटाता हुआ जिसमें स्व के बेचैन अभाव से मिलना ही पड़ता। ऊब क्षण की रिक्तता नहीं बल्कि उसका उसका इनकार है, और उद्दीपन के लिए पहुँचना उस नंगी उपस्थिति से एक पलायन है जिसमें बालक स्वाभाविक रूप से विश्राम करता था। धीमी दोपहर से वैसे मिलना जैसे बालक मिलता है — जो है उसके प्रति उपस्थित, बिना पहुँचने के, बिना निर्णय के — समूची शिक्षा का सबसे छोटा और सबसे उपलब्ध रूप है: साधारण क्षण, उसी क्षण पर्याप्त पाया गया जब स्व उसका इनकार करना बंद कर देता है, ठीक वैसे जैसे वह उन सब वर्षों पहले खिड़की पर पर्याप्त था, इससे पहले कि हमने उसे ऊब कहना सीखा।

### **बेचैनी किसकी ओर संकेत करती है**

ऊब और बेचैनी को सुनने का एक ढंग है उन्हें केवल उद्दीपन से ठीक की जाने वाली असुविधाओं के रूप में नहीं, बल्कि किसी ऐसी वस्तु की ओर संकेत करते संकेतों के रूप में जिसे चिंतकों ने गंभीरता से लिया। वह बेचैनी जो एक अनभरा क्षण सह नहीं सकती, जो अगली वस्तु के लिए बाध्यकारी रूप से पहुँचती है, अपनी सतही तुच्छता के नीचे, एक प्रकार की खोज है, एक अनुभूत बोध कि कुछ छूटा हुआ है, कि यह पर्याप्त नहीं, कि और होना ही चाहिए। और और है, यद्यपि वहाँ नहीं जहाँ बेचैनी देखती है: वह और जिसकी ओर बेचैनी टटोलती है अगला उद्दीपन नहीं बल्कि वह पूर्णता है जो अनुभूत अभाव के नीचे सदा उपस्थित थी, वह समग्रता जिसे बेचैन स्व सब ग़लत स्थानों में खोज रहा है।

इस ढंग से सुनी जाने पर, एक निष्क्रिय क्षण की बेचैन ऊब एक अप्रत्याशित द्वार बन जाती है। उससे उद्दीपन में भागने के बजाय, व्यक्ति उसकी ओर मुड़ सकता है, पूछता हुआ कि वह सतही खुजली के नीचे वास्तव में किसकी खोज कर रही है — और पाता है, मुड़ने में, कि वह कुछ-छूटा-हुआ जिसकी ओर वह संकेत करती है एक छूटा उद्दीपन नहीं बल्कि पृथक स्व का अनुभूत अभाव है, और कि वह पूर्णता जिसके लिए वह टटोलती है वही उपस्थिति है जिससे वह भाग

रही थी। बेचैनी एक गलत पढ़ा गया संकेत थी: समग्रता की ओर एक टटोलना जो बाहर की ओर पहुँचता रहा, अगली वस्तु की ओर, जब जिस समग्रता को वह खोजती थी वह केवल उस वर्तमान क्षण में उपलब्ध थी जिसका वह इनकार कर रही थी। बेचैनी की ओर मुड़ना उससे भागने के बजाय संकेत को घर तक अनुसरण करना है — वर्तमान की पर्याप्तता तक, जो वही था जिसकी बेचैनी आरम्भ से खोज कर रही थी, उस एक दिशा को छोड़ हर दिशा में जहाँ वह वास्तव में थी।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

ऊब करने को किसी वस्तु की अनुपस्थिति नहीं बल्कि जो है उसका इनकार है, एक ऐसे स्व द्वारा जिसने तय कर लिया है कि यह क्षण पर्याप्त नहीं। उद्दीपन के लिए बाध्यकारी पहुँचना उस नंगी उपस्थिति से एक पलायन है जिसमें स्व के अनुभूत अभाव से मिलना ही पड़ता। वर्तमान, इनकार के बिना मिला, सदा पर्याप्त था।

आज एक अनभरे क्षण से मिलिए — एक प्रतीक्षा, एक ठहराव, कुछ-विशेष-नहीं का एक विस्तार — उद्दीपन के लिए पहुँचे बिना। बस जो यहाँ है उसके प्रति उपस्थित रहिए: श्वास, शरीर, प्रकाश, क्षण का नंगा पोता। ऊब की प्रतिवर्ती क्रिया को एक इनकार के रूप में देखिए, और देखिए कि क्या वह क्षण, निर्णय के बिना मिला, पर्याप्त पाया जाता है।

## साधारण दिन

---

समूचा पथ शिखर अनुभवों में नहीं बल्कि साधारण दिन में चला जाता है, जो एकमात्र स्थान है जहाँ किसी ने कभी वास्तव में जीवन जिया है।

— रोज़मर्रा पर टिप्पणी

हम आध्यात्मिक जीवन की कल्पना, यदि हम बिल्कुल भी करते हैं, शिखर अनुभवों के एक विषय के रूप में करते हैं — गहन ध्यान, अंतर्दृष्टि का क्षण, पर्वत-शिखर का दर्शन — और हम इनकी प्रतीक्षा करते हैं, और इनसे अपनी प्रगति मापते हैं, और चूक जाते हैं, प्रतीक्षा में, एकमात्र उस स्थान को जहाँ पथ कभी वास्तव में चला जाता है: साधारण दिन। क्योंकि साधारण दिन, अपने छोटे कार्यों और गौण घर्षणों और अनुल्लेखनीय घंटों के साथ, वह पृष्ठभूमि नहीं जिसके विरुद्ध वास्तविक आध्यात्मिक जीवन कहीं और घटित होता है; वह वास्तविक आध्यात्मिक जीवन है, एकमात्र अखाड़ा जो है, वह स्थान जहाँ व्यक्तिगत खाता रखा जाता है और जागने और सोने के बीच हजार बार रखा जा सकता है।

यह अध्याय, पुस्तक के अंत के निकट, समूची शिक्षा को एकमात्र उस स्थान को लौटाता है जहाँ वह वास्तव में जी जा सकती है। वह हर वस्तु जो इस पुस्तक ने वर्णित की — स्वामित्व का विमोचन, घटनाओं से बिना निर्णय का मिलना, बिना इनकार की उपस्थिति, वह साक्षी जिसमें यह सब प्रकट होता है — किसी हठी हुई शुद्धता में नहीं बल्कि एक साधारण दिन के पोत में अभ्यस्त होती है, और वहीं, अनुल्लेखनीय घंटों में, स्वतंत्रता या तो पाई जाती है या बिल्कुल नहीं पाई जाती।

### हज़ार छोटे स्वामित्व

एक अकेले साधारण दिन के लिए, ध्यान दीजिए कि व्यक्तिगत खाता कितनी बार खोला जाता है — कितने छोटे स्वामित्व, निर्णय, पकड़ें, और इनकार घंटों के एक अनुल्लेखनीय विस्तार से गुज़रते हैं। वह गौण चिढ़ जो एक व्यक्तिगत अपमान के रूप में ली जाती है; वह छोटा कार्य

स्वामी की चिंता से पकड़ा गया; वह गुजरती तुलना; वह संक्षिप्त ऊब और फ़ोन के लिए उसका पहुँचना; वह छोटी शिकायत दाखिल की गई; वह स्वीकृति-खोज का क्षण; वह प्रतिवर्ती "मेरा" जो हर छोटी घटना को एक व्यक्तिगत मामले में बदल देता है। एक साधारण दिन व्यक्तिगत खाते से खाली नहीं; वह उससे सघन है, हजार सूक्ष्म भिंचनों से पिरोया हुआ, उनमें से अधिकांश इतने आदतन कि हम उन्हें कभी उन छोटे दुःखों के रूप में ध्यान नहीं देते जो वे हैं। जिस भार का इस पुस्तक ने वर्णन किया वह मुख्यतः बड़े संकटों में नहीं ढोया जाता; वह इन हजार छोटे स्वामित्वों के संचित भार में ढोया जाता है, घंटे दर घंटे, समूचे दिन।

और यह शुभ समाचार है, क्योंकि इसका अर्थ है कि पथ ठीक इन्हीं हजार छोटे क्षणों में चला जाता है — दुर्लभ शिखर अनुभवों में नहीं, बल्कि साधारण दिन के अंतहीन छोटे अवसरों में खाता रख देने के। हर गौण चिढ़ घटना को बिना निर्णय छोड़ने का एक अवसर है; हर पकड़ा गया कार्य स्वामी को छोड़ने का एक अवसर; हर ऊब का क्षण वर्तमान से बिना इनकार मिलने का एक अवसर; हर छोटी शिकायत घटना को पूर्ण और अदाखिल विलीन होने देने का एक अवसर। साधारण दिन अभ्यास की अनुपस्थिति नहीं बल्कि उसकी वास्तविक सामग्री है — हजार छोटे स्वामित्व उनके विमोचन का अभ्यास करने के हजार छोटे अवसर हैं, और एक जीवन दुर्लभ बड़ी अंतर्दृष्टि से नहीं बल्कि इन संचित छोटे भिंचनों के क्रमिक हल्के होने से रूपांतरित होता है, एक-एक करके रख दिए गए, घंटे दर घंटे, जब तक दिन स्वयं हल्का न हो जाए।

## एक अभिंचे दिन का पोत

एक साधारण दिन की कल्पना कीजिए जो इस पुस्तक द्वारा वर्णित स्वतंत्रता के थोड़े से भी साथ मिला हो। वही कार्य किए जाते हैं, वही घर्षण उठते हैं, वही गौण कठिनाइयाँ आती हैं — किंतु उसके द्वारा मिले जो हजार छोटे स्वामित्वों में से कुछ को भी रख चुका है, दिन का एक भिन्न पोत है। चिढ़ उठती है और एक व्यक्तिगत अपमान के रूप में नहीं ली जाती; कार्य देखभाल से किया जाता है किंतु स्वामी की चिंतित पकड़ के बिना; ऊब से एक ऐसे क्षण के रूप में मिला जाता है जिसमें उपस्थित रहना है बजाय भागने के; तुलना ध्यान दी और छोड़ दी जाती है; शिकायत को दाखिल किए जाने के बजाय विलीन होने दिया जाता है। दिन की बाह्य विषय-वस्तु के विषय में कुछ नहीं बदला, किंतु दूसरा भार — दिन की वास्तविक घटनाओं के ऊपर

जोड़े गए हजार छोटे भिंचन — हल्का हो गया है, और दिन, उस संचित भार से मुक्त, सहे जाने को एक भार नहीं बल्कि बस जिए जाते एक जीवन का पोत पाया जाता है।

यह समूची शिक्षा वहाँ लाई गई जहाँ वह वास्तव में जी जाती है। साधारण दिन से किसी शुद्धतर क्षेत्र में एक पलायन नहीं, बल्कि स्वयं साधारण दिन से — मेज़, रसोई, आवागमन, छोटे कार्य और गौण घर्षण — व्यक्तिगत खाते से उस स्वतंत्रता के साथ मिलना जिसका इस पुस्तक ने वर्णन किया है। अभिंचा दिन एक भिन्न दिन नहीं; वह वही साधारण दिन है, हजार छोटे स्वामित्वों के बिना मिला, और वह प्रकाशमान है इसलिए नहीं कि कुछ विशेष घटित हुआ बल्कि इसलिए कि साधारण, बिना भिंचन मिला, सदा प्रकाशमान था, और हम बस उसे ध्यान देने को खाता रखने में बहुत व्यस्त थे।

### कुछ विशेष नहीं

जेन परंपरा गहनतम अभ्यास के फल के लिए एक वाक्यांश प्रयोग करती है, और वह हर आध्यात्मिक महत्वाकांक्षा के लिए निरुत्साहक है: कुछ विशेष नहीं। सब खोज के बाद, सब अंतर्दृष्टि, सब पथ के बाद — कुछ विशेष नहीं। ज्ञानोदय-प्राप्त जीवन एक सतत शिखर अनुभव नहीं, एक निरंतर रहस्यमय आभा नहीं, कुछ भी ऐसा नहीं जिसे आध्यात्मिक अहं ने अर्जित करने की आशा की; वह साधारण दिन है, व्यक्तिगत खाते के बिना मिला — भूख लगने पर खाना, थकने पर सोना, अगला छोटा कार्य करना, अगले गौण घर्षण से मिलना, उस सबका पूर्णतः साधारण, और उस सबका प्रकाशमान ठीक अपनी साधारणता में। जिस स्वतंत्रता का इस पुस्तक ने वर्णन किया है वह आपको साधारण दिन से किसी विशेष वस्तु में नहीं उठाती; वह आपको साधारण दिन को लौटाती है, उस भार से मुक्त जिसे आप उसमें जोड़ रहे थे, और साधारण को, बिना भिंचन मिला, समूचे समय वही उघाड़ देती है जो वह सदा था।

सो शिखर अनुभव की प्रतीक्षा न कीजिए, या अपने जीवन को दुर्लभ बड़ी अंतर्दृष्टि से न मापिए, या यह कल्पना न कीजिए कि स्वतंत्रता वहाँ है जहाँ आप हैं उससे अन्यत्र। वह यहाँ है, साधारण दिन में, खाता रख देने के हजार छोटे अवसरों में, उन अनुल्लेखनीय घंटों में जो एकमात्र स्थान हैं जहाँ किसी ने कभी वास्तव में जीवन जिया है। समूचा पथ साधारण दिन में चला जाता है, और उसका फल कुछ विशेष नहीं — केवल स्वयं साधारण दिन, अंततः बिना भार मिला, और पाया गया, अपनी ही साधारणता में, पर्याप्त होना, प्रकाशमान होना, एक ब्रह्मांडीय व्यवस्था चुपचाप स्वयं को एक साधारण जीवन के पोत के रूप में सम्पन्न करती हुई, जो वह सदा थी।

## एक सुबह, दो ढंग

एक अकेली साधारण सुबह लीजिए और उसे दो बार जीइए। पहली में, अलार्म एक अपमान है, आवागमन छोटी शिकायतों की एक शृंखला, इनबॉक्स व्यक्तिगत रूप से ली गई माँगों का एक समुच्चय, पंक्ति में आगे का धीमा व्यक्ति एक व्यक्तिगत बाधा, समूची सुबह गौण घटनाओं का एक अनुक्रम जिनमें से प्रत्येक एक छोटे भिंचन, एक छोटे स्वामित्व, एक छोटे निर्णय से मिली — दिन के ठीक से आरम्भ होने से पहले व्यक्तिगत खाते के सौ छोटे उद्घाटन, उनमें से कोई भी उन छोटे दुःखों के रूप में ध्यान नहीं दिया गया जो वे हैं, उन सबका उस नीचे भार में संचित होता हुआ जिसे व्यक्ति दोपहर के भोजन तक ढोता है बिना कभी जाने कि सुबह इतनी भारी क्यों लगी।

वही सुबह फिर जीइए, इस पुस्तक द्वारा वर्णित स्वतंत्रता के थोड़े से भी साथ मिली। अलार्म बस सुबह का आरम्भ है; आवागमन आवागमन है; आगे का धीमा व्यक्ति एक व्यक्ति है, धीमा, आप पर लक्षित एक अपमान नहीं; माँगें कार्य हैं, देखभाल से मिलीं किंतु स्वामी की पकड़ के बिना। बाह्य रूप से कुछ नहीं बदला — वही अलार्म, वही आवागमन, वही पंक्ति, वही इनबॉक्स — किंतु सौ छोटे भिंचन हल्के हो गए हैं, उठते ही एक-एक करके रख दिए गए, और सुबह, उस दूसरे भार से मुक्त जिसे वह ढो रही थी, बिल्कुल भारी नहीं पाई जाती, केवल साधारण, केवल जिए जाते एक जीवन का पोता। समूचा पथ ठीक इन्हीं सुबहों में चला जाता है, और उसका फल एक भिन्न सुबह नहीं बल्कि वही, बिना भिंचन मिली, और पाई गई — किसी के अपने शांत आश्चर्य से — समूचे समय प्रकाशमान रही होना।

## अंतिम साधारण दिन

एक विचार-प्रयोग है जो साधारण दिन को एक ऐसी स्पष्टता से प्रकाशित करता है जो कोई और वस्तु नहीं देती: कि इन साधारण दिनों में से एक अंतिम होगा। वह नाटकीय, सार्थक अंतिम दिन नहीं जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं, बल्कि बहुत संभवतः एक साधारण — वही आवागमन, वही छोटे कार्य, वही अनुल्लेखनीय घंटे — जो, हमसे अज्ञात, अंतिम होने को घटित होता है। हम साधारण दिन को सार्थक शिखरों के बीच त्याज्य भराव के रूप में बरतते हैं, सहा और किसी बेहतर वस्तु की ओर भागकर गुजारा गया; और फिर भी साधारण दिन भराव नहीं हैं। वे जीवन हैं। शिखर दुर्लभ हैं; साधारण दिन वही है जिससे एक जीवन लगभग पूर्णतः बना है, और उनमें से एक, औरों से अभिन्न, अंतिम होगा।



यह कोई मृत्यु-विषयक विचार नहीं बल्कि एक स्पष्टकारी है, और वह हमें, कोमलता से, इस अध्याय की समूची शिक्षा को लौटाता है। यदि साधारण दिन वही है जिससे एक जीवन बना है, और यदि इन साधारण दिनों में से एक अंतिम होगा, तो साधारण दिन किसी बेहतर वस्तु की ओर भागकर गुज़रे जाने को नहीं बल्कि, जब तक वह यहाँ है, उस अमूल्य और प्रकाशमान वस्तु के रूप में मिले जाने को है जो वह वास्तव में है — इसलिए नहीं कि वह विशेष है, बल्कि ठीक इसलिए कि वह साधारण है, और साधारण वह समूचा है जो हमें दिया गया है। साधारण दिन से बिना भिंचन मिलना, उसके अनुल्लेखनीय घंटों के प्रति उपस्थित, एक सार्थक जीवन से कम के लिए संतुष्ट होना नहीं; यह पहचानना है कि सार्थक जीवन सदा साधारण दिन था, बिना भार मिला, जब तक वह यहाँ था — और कि उस एक से जो जीया जा रहा है, साधारण रूप से, अभी, अन्य कोई जीवन नहीं, और अन्य कोई दिन नहीं।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

पथ शिखर अनुभवों में नहीं बल्कि साधारण दिन में चला जाता है, जो हज़ार छोटे स्वामित्वों से सघन है — गौण चिढ़ें व्यक्तिगत रूप से ली गईं, छोटे कार्य पकड़े गए, गुज़रती तुलनाएँ, छोटी शिकायतें दाखिल कीं। प्रत्येक खाता रख देने का एक अवसर है, और एक जीवन दुर्लभ बड़ी अंतर्दृष्टि से नहीं बल्कि इन छोटे भिंचनों के, एक-एक करके छोड़े गए, हल्के होने से हल्का होता है।

एक साधारण दिन के लिए, हज़ार छोटे स्वामित्वों को उठते ही ध्यान दीजिए — वह प्रतिवर्ती "मेरा" जो हर छोटी घटना को एक व्यक्तिगत मामले में बदल देता है — और उन्हें एक-एक करके रख दीजिए, जैसे आप उन्हें पकड़ें। आप उनमें से अधिकांश को चूकेंगे। किंतु हर एक जिसे आप पकड़ते और छोड़ते हैं दिन को थोड़ा हल्का करता है, और साधारण दिन, बिना भिंचन मिला, समूचे समय प्रकाशमान रहा होना पाया जाता है।

## धैर्य और तेज की निरंकुशता

---

अधीरता यह माँग है कि एक घटना अपनी दशाओं के पकने से पहले अपना क्षितिज पार करे।

वह स्वयं ब्रह्मांडीय व्यवस्था की गति के साथ एक झगड़ा है।

— प्रतीक्षा पर टिप्पणी

हम प्रतीक्षा के उन्मूलन के चारों ओर संगठित एक सभ्यता में जीते हैं, और हम धैर्य को एक गुण के रूप में नहीं बल्कि कार्यक्षमता की एक विफलता के रूप में अनुभव करने आए हैं — एक समस्या जिसे अभियांत्रिकी से दूर किया जाए। फिर भी अधीरता, निकट से जाँची जाने पर, उस स्वामित्व का एक और रूप सिद्ध होती है जिसे यह पुस्तक घुलाती रही है: यह माँग कि घटनाएँ अपनी ऋतु में के बजाय हमारी समय-सारणी पर सुलझें, उस गति के साथ स्वामी का झगड़ा जिस पर ब्रह्मांडीय व्यवस्था वास्तव में चलती है। इस पुस्तक की शिक्षा के पास अधीर से, जो हममें से अधिकांश है, अधिकांश समय, कहने को कुछ शांत और उपयोगी है।

अधीरता समय के साथ एक संबंध-सी अनुभव होती है, किंतु वह वास्तव में नियंत्रण के साथ एक संबंध है। अधीर स्व यह माँग करता है कि घटना अपना क्षितिज अभी, आदेश पर, पार करे, और एक ऐसी वास्तविकता का घर्षण भोगता है जो जल्दी नहीं की जाएगी — धीमी पंक्ति, अपक्व स्थिति, वह प्रक्रिया जो उतना समय लेती है जितना वह लेती है। और चिढ़ के नीचे परिचित स्वामी है, आग्रह करता हुआ कि परिणाम उसकी समय-सारणी पर सुलझें, एक ऐसी घटना के सच्चे अभी-नहीं में विश्राम करने में असमर्थ जिसकी दशाएँ पकी नहीं।

### घटना अपने ही समय में पकती है

हर घटना अपना क्षितिज तब पार करती है जब उसकी दशाएँ पकी हों, और पहले नहीं — फल जब ऋतु ने अपना कार्य कर लिया, समझ जब मन पर्याप्त लम्बा सिझा, स्थिति जब समूचा विन्यास अभिसरित हो चुका। अधीरता यह माँग है कि घटना अपनी दशाओं के पकने से पहले सुलझे, कि फल ऋतु के समाप्त होने से पहले गिरे, और वह एक ऐसी माँग है जिसका ब्रह्मांडीय

व्यवस्था सम्मान नहीं करती, क्योंकि व्यवस्था पकती दशाओं की गति पर चलती है और स्वामी की कामना की गति पर नहीं। अधीर व्यक्ति, बिल्कुल शब्दशः, समग्र की गति के साथ झगड़ रहा है — आग्रह करता हुआ कि जो अभी तैयार नहीं वह अभी तैयार हो — और झगड़े में, एक ऐसा घर्षण भोगता है जो इस विषय में कुछ नहीं बदलता कि घटना वास्तव में कब सुलझेगी। इसे समझना निष्क्रियता की सलाह नहीं, वह त्यागपत्र जो कुछ नहीं करता और उसे धैर्य कहता है। धैर्यवान व्यक्ति अब भी कर्म करता है, अब भी दशाओं को सँभालता है, अब भी हर वह वस्तु करता है जो घटना को पकाती है — किंतु वह यह माँग करने का घर्षण नहीं जोड़ता कि वह अपनी ऋतु से पहले सुलझे। धैर्य, इस अर्थ में, निष्क्रिय प्रतीक्षा नहीं बल्कि असमय समाधान की माँग से मुक्त सक्रिय सँभालना है — फिर माली, जो पौधे को पोषित करने को हर वस्तु करता है और उसे तैयार होने से पहले मिट्टी से खींचने को कुछ नहीं।

### तेज की निरंकुशता

एक ऐसी सभ्यता में एक विशेष दुःख है जिसने गति को अपना ईश्वर बनाया है — तेज की निरंकुशता, जिसमें हर प्रतीक्षा एक अपमान है, हर विलंब एक विफलता, हर प्रक्रिया जिसे त्वरित नहीं किया जा सकता सुलझाई जाने को एक समस्या। हमने इतनी प्रतीक्षा अभियांत्रिकी से दूर कर दी है कि जो प्रतीक्षा शेष रहती है वह लगभग असह्य हो गई है, और हम जीवन के अ-त्वरण-योग्य भागों से — वह शोक जो अपना समय लेता है, वह कौशल जिसे जल्दी नहीं किया जा सकता, वह संबंध जो धीरे पकता है, वह समझ जो आदेश पर नहीं आएगी — एक अधीरता से मिलते हैं जो केवल उन प्रक्रियाओं में दुःख जोड़ती है जो सदा उतना समय लेने ही वाली थीं जितना वे लेती हैं। जितना तेज हम हर वस्तु बनाते हैं, उतना ही कम हम उन वस्तुओं को सहने में समर्थ होते जिन्हें तेज नहीं बनाया जा सकता, जो बहुधा वे वस्तुएँ हैं जो सबसे अधिक मायने रखती हैं।

और गहनतम वस्तुएँ तेज नहीं बनाई जा सकतीं। शोक अपनी ही ऋतु में पकता है; प्रेम समय के साथ गहराता है जिसे संपीड़ित नहीं किया जा सकता; निपुणता केवल उस लम्बी तैयारी के माध्यम से आती है जिसे कोई शॉर्टकट प्रतिस्थापित नहीं करता; समझ तब तक सिझती है जब तक वह तैयार न हो और पहले नहीं। तेज की निरंकुशता, इन पर लागू केवल एक ऐसी गति के साथ झगड़ते स्वामी का दुःख उत्पन्न करती है जिसे वह बदल नहीं सकता — शोकग्रस्त अपने ही शोक से अधीर, सीखने वाला उस समय से अधीर जो निपुणता लेती है, खोजी एक ऐसी

समझ के लिए अधीर जो पकने पर आएगी और तब नहीं जब उसकी माँग की जाए। तेज़ की निरंकुशता को छोड़ना पकती दशाओं की गति के साथ संधि करना है, धीमी वस्तुओं को धीमा होने देना है, और उन वस्तुओं में जो समय लेती हैं यह माँग करने का घर्षण जोड़ना बंद करना है कि वे कम लें। घटना अपने ही समय में पकती है। धैर्य का समूचा उसे होने देने की इच्छा है।

## देखा गया पतीला

एक व्यक्ति एक बीज बोता है और, यह जानते हुए कि वह उगेगा, उसे जाँचना बंद नहीं करता — जड़ का निरीक्षण करने को उसे खोदना हुआ, मिट्टी दबाता हुआ, यह देखने को घंटे-घंटे लौटता हुआ कि वह अंकुरित हुआ या नहीं, उसके तेज़ होने की इच्छा करता हुआ। उसका जाँचना उगने को एक भी घंटे जल्दी नहीं करता; बीज अपनी ही पकती दशाओं की समय-सारणी पर अंकुरित होता है, उसकी अधीरता के प्रति उदासीन। किंतु उसका जाँचना मिट्टी को अवश्य अशांत करता है, और उसकी चिंता प्रतीक्षा को अवश्य कटु करती है, ताकि प्रक्रिया का वह एक भाग जिसे वह प्रभावित कर सकता था — उसका अपना उसका अनुभव — वह बदतर बनाता है, जबकि वह भाग जिसे वह प्रभावित नहीं कर सकता — उगने की गति — ठीक वैसे आगे बढ़ता है जैसे वह उसके बिना बढ़ता।

यह लघु रूप में अधीरता है, और यह वह ढंग है जिससे हम अधिकांश अ-त्वरण-योग्य वस्तुओं से मिलते हैं: वह उपचार जो अपना समय लेता है, वह कौशल जो धीरे पकता है, वह स्थिति जो अभी तैयार नहीं, वह शोक जो जल्दी नहीं किया जाएगा। हम बीज को जाँचने को खोदते हैं, बार-बार, मिट्टी को अशांत करते और प्रतीक्षा को कटु करते हुए, जबकि उगना उन दशाओं की समय-सारणी पर आगे बढ़ता है जिन्हें हम आदेश नहीं दे सकते। वह माली जिसने गति के साथ संधि की है मिट्टी संभालता है और फिर बीज को अकेला छोड़ देता है, और बीज शांति में छोड़े जाने के लिए तनिक भी देर से अंकुरित नहीं होता — और माली, चिंतित जाँचक के विपरीत, प्रतीक्षा को एक ऐसे घर्षण में नहीं बिताता जो उसके अपने घंटों की गुणवत्ता के सिवा कुछ नहीं बदलता।

## जो केवल धीमापन देता है

भलों का एक वर्ग है जिसे जल्दी नहीं किया जा सकता, इसलिए नहीं कि हममें उन्हें त्वरित करने की प्रौद्योगिकी की कमी है बल्कि इसलिए कि उनका स्वयं स्वभाव धीरे पकना है, और तेज़ की निरंकुशता एक जीवन को ठीक इन्हें भीड़ से बाहर धकेलकर दरिद्र करती है। विश्वास

धीरे बनाया जाता है, अनेक छोटी पुष्टियों पर, और गति से स्थापित नहीं किया जा सकता; एक मित्रता में गहराई केवल उन संचित घंटों के साथ आती है जिन्हें कोई शॉर्टकट प्रतिस्थापित नहीं करता; एक कठिन पुस्तक, एक कठिन व्यक्ति, एक कठिन कला की समझ एक धीमे सिझने के माध्यम से पकती है जिसे हड़बड़ी केवल बाधित करती है; स्वयं प्रज्ञा एक लम्बे ऋतु-पकने का फल है जिसके लिए अधीर कभी इतनी देर स्थिर नहीं रहते कि उसे प्राप्त करें। ये धीमे भले हैं, और वे उन सर्वोत्तम में से हैं जो एक जीवन समाहित करता है।

गति के चारों ओर संगठित एक सभ्यता केवल हमें अधीर नहीं बनाती; वह धीरे-धीरे हमें उन भलों से भूखा रखती है जो केवल धीमापन देता है, हमें किसी भी ऐसी प्रक्रिया को त्यागने को प्रशिक्षित करती हुई जो जल्दी नहीं देती और इसलिए उस गहरे विश्वास, उस ऋतु-पकी मित्रता, उस पकी समझ, उस कठिनाई से जीती प्रज्ञा को त्यागने को जिन्हें एक ऐसे धैर्य की आवश्यकता है जिसकी सामर्थ्य हम खो रहे हैं। धैर्य पुनर्प्राप्त करना इसलिए केवल पंक्तियों में कम दुःख भोगना नहीं; यह धीमे भलों को फिर प्राप्त करने में समर्थ बनना है — लम्बे पकने, धीमे सिझने, अ-त्वरण-योग्य गहराने के साथ इतनी देर रहना कि वह दिया जा सके जो केवल वे दे सकते हैं। तेज भले वास्तविक हैं और उनका स्थान है। किंतु एक जीवन जो सर्वोत्तम वस्तुएँ देता है वे धीमी हैं, और वे केवल उनके द्वारा प्राप्त की जाती हैं जिन्होंने उस गति के साथ संधि की है जिस पर वे पकती हैं।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

अधीरता यह माँग है कि एक घटना अपनी दशाओं के पकने से पहले अपना क्षितिज पार करे — स्वयं ब्रह्मांडीय व्यवस्था की गति के साथ एक झगड़ा। धैर्यवान व्यक्ति अब भी दशाओं को अपनी सब देखभाल से सँभालता है; वह बस यह माँग करने का घर्षण नहीं जोड़ता कि घटना अपनी ऋतु से पहले सुलझे।

आज एक वस्तु पर ध्यान दीजिए जिसके लिए आप अधीर हैं, और देखिए कि आप माँग कर रहे हैं कि वह अपनी दशाओं के पकने से पहले सुलझे। जो भी आप उसे पकाने को सँभाल सकते हैं उसे सँभालिए, और फिर यह माँग रख दीजिए कि वह अभी हो। धीमी वस्तु को धीमा होने दीजिए, और देखिए कि घर्षण का क्या होता है जब आप उस गति के साथ झगड़ना बंद कर देते हैं जिस पर वह वैसे भी सदा गति करने ही वाली थी।

## कृतज्ञता और अनर्जित

---

आप जो कुछ भी हैं वह दिया गया था। श्वास, शरीर, वह मन जो यह पंक्ति पढ़ता है —  
इनमें से कुछ भी अर्जित नहीं था, और यह सब उधार दिया गया था।

— धन्यवाद पर टिप्पणी

कृतज्ञता सामान्यतः सुखद गुणों में गिनी जाती है — संवर्धित करने को एक अच्छी अनुभूति, किसी के कल्याण के लिए भली, प्रसन्नचित्तों द्वारा संस्तुता। किंतु इस पुस्तक के लेंस से देखी जाने पर, कृतज्ञता कुछ कहीं अधिक आमूल है: यह सटीक भावनात्मक पहचान कि जो हम हैं या रखते हैं उसमें से कुछ भी अंततः अर्जित या स्वामित्व में नहीं था, कि वह सब एक ऐसी व्यवस्था द्वारा दिया गया जिसे हमने नहीं रचा, और कि एक ऐसे जीवन के प्रति उचित प्रत्युत्तर जिसे हमने अर्जित नहीं किया वह व्यक्तिगत खाते का चिंतित स्वामित्व नहीं बल्कि एक ऐसे व्यक्ति का खुले-हाथ का धन्यवाद है जो स्वयं को एक प्राप्तकर्ता जानता है। कृतज्ञता उलटा-भीतर किया गया व्यक्तिगत खाता है — यह पहचान कि हम पर कभी कोई ऋण देय था ही नहीं, बल्कि हमें सब कुछ दिया गया, मुफ्त।

यही कारण है कि कृतज्ञता और व्यक्तिगत खाता सह-अस्तित्व नहीं रख सकते। खाता प्राप्य पर बना है — उस पर जो हमने अर्जित किया, हम ऋणी हैं, के पात्र हैं — और कृतज्ञता उसके विपरीत पर बनी है, अनर्जित, दिए गए, निःशुल्क की पहचान पर। जिस मात्रा में कोई खाता रखता है, वह कृतज्ञ नहीं हो सकता, क्योंकि खाता आग्रह करता है कि व्यक्ति ने अर्जित किया जो उसके पास है; और जिस मात्रा में कोई सचमुच कृतज्ञ है, खाता विलीन हो जाता है, क्योंकि कृतज्ञता देखती है कि कुछ अर्जित नहीं था और सब कुछ दिया गया था।

### कुछ अर्जित नहीं था

विचारिए, सरलता से, कि जो आप हैं उसका कितना अर्जित था। वह श्वास जो आप खींच रहे हैं दी गई थी, अर्जित नहीं। वह शरीर जिसमें आप बसते हैं एक ऐसी व्यवस्था द्वारा जोड़ा गया

जिसे आपने नहीं रचा, तारों में गढ़ी सामग्री से। वह मन जो यह पंक्ति पढ़ रहा है एक ऐसी भाषा द्वारा आकार दिया गया जिसे आपने आविष्कृत नहीं किया, उन लोगों द्वारा सिखाया गया जिन्हें आपने नहीं चुना, एक सभ्यता के संचित कार्य पर बना जिसके पात्र होने को आपने कुछ नहीं किया। जिन सामर्थ्यों पर आप सबसे अधिक गर्व करते हैं वे कच्ची योग्यता के रूप में दी गईं और दशाओं द्वारा परिष्कृत — शिक्षक, अवसर, एक ऐसा मस्तिष्क जो संयोगवश काम कर गया — जिन्हें आपने व्यवस्थित नहीं किया। किसी भी उपलब्धि, किसी भी संपत्ति, किसी भी गुण को जिसका आप श्रेय लेते हैं उसकी दशाओं तक पीछे अनुरेखित कीजिए, और व्यक्तिगत अर्जन दिए गए की एक विशाल विरासत में घुल जाता है, जब तक लगभग कुछ शेष न रहे जिसे आप ईमानदारी से कह सकें कि आपने शून्य से अर्जित किया, स्वयं द्वारा, किसी का ऋणी नहीं।

यह एक हास नहीं बल्कि एक मुक्ति है, और कृतज्ञता उस मुक्ति की अनुभूति है। यह देखना कि कुछ अर्जित नहीं था पात्र होने की थकाऊ परियोजना से — अपना स्थान अर्जित करना, अपने अस्तित्व को न्यायोचित ठहराना, जो आपके पास है उसका पात्र होना — मुक्त होना है, और, इसके बजाय, अपने समूचे जीवन को एक उपहार के रूप में प्राप्त करना जिसे आपको अर्जित करना नहीं पड़ा और अर्जित नहीं कर सकते थे। कृतज्ञ व्यक्ति दिखावा नहीं कर रहा; वे सटीक देख रहे हैं, हर उस वस्तु के दिए-जाने को पहचानते हुए जिसे उन्होंने एक अर्जित संपत्ति समझ लिया था, और उस धन्यवाद से प्रत्युत्तर देते हुए जो एक उपहार का एकमात्र उपयुक्त प्रत्युत्तर है। कृतज्ञता सटीक प्रत्यक्षण है, और व्यक्तिगत खाता वह ग़लत-प्रत्यक्षण है जिसे वह सुधारती है।

## किसी विशेष को नहीं, धन्यवाद

अनेकों के लिए एक कठिनाई उठती है: कृतज्ञता किसको देय है? धन्यवाद एक दाता की अपेक्षा करता-सा लगता है, और जो एक व्यक्तिगत ब्रह्मांडीय दाता का कोई विशेष चित्र नहीं थामता वह अनुभव कर सकता है कि कृतज्ञता का कोई उचित विषय नहीं, कि धन्यवाद देने को कोई नहीं। किंतु यह पुस्तक जिस कृतज्ञता की ओर संकेत करती है उसे प्राप्त किए जाने को एक विशेष दाता की आवश्यकता नहीं; वह स्वयं दिए-जाने की पहचान है, एक अनर्जित जीवन के लिए खुले-हाथ का धन्यवाद, अनिवार्यतः एक नामित दाता को संबोधित नहीं बल्कि समग्र को — वह ब्रह्मांडीय व्यवस्था जिसने श्वास और शरीर और मन दिया, चाहे व्यक्ति उसके स्वभाव को

कैसे समझे या न समझे। व्यक्ति समग्र के प्रति, समग्र के लिए, कृतज्ञ हो सकता है, बिना यह तत्त्वमीमांसा सुलझाए कि समग्र कौन या क्या है।

और इस किसी-विशेष-को-नहीं धन्यवाद में कुछ उपयुक्त है, क्योंकि वह कृतज्ञता को एक और लेन-देन बनने से रोकता है — अब एक दाता को देय एक ऋण, एक ब्रह्मांडीय ऋणदाता के साथ फिर खुला खाता। जो कृतज्ञता शुद्धतम है वह वह धन्यवाद है जो कुछ वापस ऋणी नहीं, जो उपहार को स्वतंत्रता से प्राप्त करता और स्वतंत्रता से प्रत्युत्तर देता है, बिना उपहार को एक नए ऋण या दाता को एक नए ऋणदाता में बदले। एक अनर्जित जीवन के लिए कृतज्ञ होना, उस समग्र के प्रति जिसने उसे दिया, बदले में कुछ ऋणी नहीं — यह अपने सबसे सुंदर रूप में खुला हाथ है, सब कुछ उपहार के रूप में प्राप्त करता और उसमें से किसी को न अर्जित संपत्ति न देय ऋण के रूप में थामता। श्वास दी गई थी। धन्यवाद मुफ्त है। और उपहार और धन्यवाद के बीच बिल्कुल कोई खाता नहीं — केवल पहचान, और खुला हाथ, और एक ऐसे व्यक्ति का शांत आश्चर्य जिसने देख लिया है कि उसमें से कुछ भी कभी अर्जित नहीं था, और वह सब दिया गया था।

## दो स्तंभ

एक पन्ने पर दो स्तंभ खींचने की कल्पना कीजिए। पहले में, अपने जीवन की हर वस्तु सूचीबद्ध कीजिए जिसे आपने सचमुच अर्जित किया — शून्य से बनाई, स्वयं द्वारा, किसी का ऋणी नहीं। दूसरे में, हर वस्तु सूचीबद्ध कीजिए जो दी गई थी: शरीर, श्वास, वह मस्तिष्क जो संयोगवश काम कर गया, वह भाषा जिसमें आप सोचते हैं, वह युग जिसमें आप जन्मे, शिक्षक, आरम्भिक भाग्य, वे योग्यताएँ जिनके पात्र होने को आपने कुछ नहीं किया, वे असंख्य दशाएँ जिन्होंने हर उपलब्धि को संभव बनाया। इसे ईमानदारी से कीजिए, और दूसरा स्तंभ पहले को अभिभूत कर देता है जब तक पहला लगभग लुप्त न हो जाए — क्योंकि अर्जित स्तंभ में किसी भी मद को उसकी दशाओं तक पीछे अनुरेखित कीजिए, और वह, टुकड़ा दर टुकड़ा, दिए गए में प्रवास कर जाता है।

यह आत्म-हास में एक अभ्यास नहीं बल्कि सटीक देखने में, और सटीक देखना ही है जो कृतज्ञता है। वह व्यक्ति जो केवल पहला स्तंभ रखता है — जो अपने जीवन को अर्जित संपत्तियों के एक समुच्चय के रूप में अनुभव करता है — व्यक्तिगत खाते में जीता है, उसकी रक्षा करता हुआ जिसे वह अपना समझता है और किसी को धन्यवाद ऋणी नहीं। वह व्यक्ति जो दूसरा



स्तंभ देखता है कृतज्ञता में जीता है, क्योंकि वे देखते हैं कि लगभग कुछ अर्जित नहीं था और लगभग सब कुछ दिया गया था, और एक ऐसे जीवन का एकमात्र उपयुक्त प्रत्युत्तर जिसे व्यक्ति ने अर्जित नहीं किया प्राप्तकर्ता का खुले-हाथ का धन्यवाद है। दोनों स्तंभ रवैये का विषय नहीं; वे सटीकता का विषय हैं। और सटीक लेखा, ईमानदारी से खींचा गया, केवल एक स्तंभ रखता है जो मायने रखता है।

## प्राप्य-बोध, कृतज्ञता का विपरीत

कृतज्ञता का ठीक विपरीत अकृतज्ञता नहीं, जो केवल उसकी अनुपस्थिति है, बल्कि प्राप्य-बोध है — यह विश्वास कि जो किसी के पास है वह देय है, पात्र है, अधिकार से उसका, एक ऐसे स्व का स्वाभाविक हक जिसने उसे अर्जित किया। प्राप्य-बोध अपने सबसे सुखद रूप में व्यक्तिगत खाता है: यह बैठी हुई पूर्व-धारणा कि किसी के लाभ योग्य हैं, उसकी सुविधाएँ देय हैं, उसका सौभाग्य बस वह जो उसे मिलने को था — और वह संक्षारक है ठीक इसलिए कि वह इतना सुखद है, इतना अदृश्य उसके लिए जो उसे थामता है, अपने ही मूल्य की एक स्पष्ट-दृष्टि वाली पहचान का स्वाँग करता हुआ। प्राप्य-बोध वाला व्यक्ति कृतज्ञ नहीं हो सकता, क्योंकि कृतज्ञता को जो उसके पास है उसके दिए-जाने को देखना आवश्यक है, और प्राप्य-बोध केवल अर्जन देखता है।

यही कारण है कि कृतज्ञता और प्राप्य-बोध सह-अस्तित्व नहीं रख सकते, और क्यों एक का संवर्धन दूसरे का विलयन है। दूसरा स्तंभ देखना — दिए गए की वह विशाल विरासत जो हर उस वस्तु के नीचे है जिसे व्यक्ति ने एक अर्जित संपत्ति समझ लिया — प्राप्य-बोध को विलीन होते देखना है, क्योंकि एक बार जब व्यक्ति देख लेता है कि लगभग कुछ अर्जित नहीं था तो प्राप्य अनुभव करने को कुछ शेष नहीं रहता। और प्राप्य-बोध का विलयन कृतज्ञता के सबसे मधुर फलों में से है, क्योंकि प्राप्य-बोध एक आनंदहीन अवस्था है, सतत मापती हुई कि क्या व्यक्ति को अपना हक मिल रहा है, सतत आहत जब संसार वह देने में असफल होता है जो वह कथित रूप से ऋणी है; जबकि कृतज्ञता, हर वस्तु को उपहार के रूप में देखती हुई, सतत प्रचुरता से चकित है, उसे प्राप्त करती हुई जिसे प्राप्य-बोध केवल लेखा-परीक्षित कर सकता था। प्राप्य-बोध वाले और कृतज्ञ के जीवन अभिन्न हो सकते हैं। वे भिन्न संसारों में जीते हैं — एक देय और गंभीर रूप से अदत्त ऋणों का, दूसरा दिए गए और स्वतंत्रता से प्राप्त किए गए उपहारों का।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

कृतज्ञता उलटा-भीतर किया गया व्यक्तिगत खाता है — यह पहचान कि जो आप हैं या रखते हैं उसमें से कुछ भी अंततः अर्जित नहीं था, और वह सब एक ऐसी व्यवस्था द्वारा दिया गया जिसे आपने नहीं रचा। जिस मात्रा में आप उसका खाता रखते हैं जिसके आप पात्र हैं, आप कृतज्ञ नहीं हो सकते; जिस मात्रा में आप कृतज्ञ हैं, खाता विलीन हो जाता है।

एक वस्तु लीजिए जिसे अर्जित किया होने पर आप गर्व करते हैं — एक सामर्थ्य, एक उपलब्धि, एक संपत्ति — और उसे ईमानदारी से उसकी दशाओं तक पीछे अनुरेखित कीजिए: शिक्षक, योग्यता, अवसर, वह श्वास और शरीर और मन जिसे आपने नहीं रचा। व्यक्तिगत अर्जन को दिए गए की एक विशाल विरासत में विलीन होते देखिए, और उस खुले-हाथ के धन्यवाद को उठने दीजिए जो एकमात्र उपयुक्त प्रत्युत्तर है।

## मित्रता और लम्बी संगति

---

*मित्र वह नहीं जिसका आपके साथ खाता संतुलित हो। मित्र वह है*

*जिसके साथ आपने खाता रखना बंद कर दिया हो।*

— मित्रता पर टिप्पणी

मानव-हृदय के अधिकांश विवरणों में मित्रता को रोमांटिक प्रेम या परिवार से कम ध्यान मिलता है, और फिर भी वह शायद सबसे शुद्ध क्षेत्र है जिसमें यह देखा जाए कि व्यक्तिगत खाते से मुक्त एक संबंध कैसा दिखता है — ठीक इसलिए कि मित्रता हमारे निकट बंधनों में सबसे कम लेन-देन वाली है, वह जो किसी अनुबंध, किसी दायित्व, किसी औपचारिक बंधन से नहीं, बल्कि केवल दो व्यक्तियों की स्वतंत्रता से चुनी गई संगति से एक साथ थामी जाती है जिन्होंने, सर्वोत्तम दशाओं में, एक-दूसरे के साथ खाते रखना बंद कर दिया है। इस पुस्तक की शिक्षा मित्रता में सुलझाई जाने को एक समस्या नहीं बल्कि इसकी एक झलक पाती है कि बही रख देने पर समस्त संबंध क्या हो सकता है।

विचारिए कि एक सच्ची मित्रता को एक मात्र गठबंधन या परिचय से क्या अलग करता है। गठबंधन लेन-देन वाला है — पारस्परिक लाभ का एक संबंध, खाता देखा गया, विनिमय मोटे तौर पर संतुलित, बंधन केवल तब तक टिका जब तक लाभ। मित्रता, अपनी गहराई में, ठीक वह संबंध है जिसमें यह हिसाब रख दिया गया है: जहाँ सहायता बिना गिने दी जाती है, जहाँ व्यक्ति इसका अंक नहीं रखता कि अंतिम बार किसने पुकारा या किसने अधिक दिया, जहाँ बंधन शेष पर निर्भर नहीं क्योंकि कोई शेष रखा ही नहीं जा रहा। एक मित्र, सच्चे अर्थ में, वह है जिसके साथ आपने खाता रखना बंद कर दिया हो।

### अनुबंध के बिना संबंध

मित्रता स्वयं के सिवा किसी वस्तु से एक साथ नहीं थामी जाती — कोई विवाह-शपथ नहीं, कोई रक्त-संबंध नहीं, कोई कानूनी बंधन नहीं, कोई दायित्व का अनुबंध नहीं — और यह

प्रत्यक्ष नाज़ुकता वस्तुतः उसकी महिमा है। क्योंकि कोई बाह्य वस्तु एक मित्रता को एक साथ नहीं थामती, वह केवल दोनों व्यक्तियों की सच्ची स्वतंत्रता-से-दी-गई संगति से एक साथ थामी जाती है, दायित्व द्वारा प्रवर्तित के बजाय चुनाव द्वारा नवीकृत, और यह उसे संबंधों में सबसे कम स्वामित्व किया और सबसे स्वतंत्रता से दिया गया बनाता है। आपको मित्रता में दायित्वबद्ध नहीं किया जा सकता जैसे आप परिवार के कर्तव्यों या विवाह के अनुबंध में किए जा सकते हैं; दायित्व से बनाए रखी एक मित्रता पहले ही मित्रता होना बंद कर चुकी और एक कर्तव्य बन चुकी है। मित्र स्वतंत्रता से देता है या बिल्कुल नहीं, और यह स्वतंत्र देना, किसी अनुबंध से अप्रवर्तित, वही है जो उपहार को वह अर्थ देता है जो उसका अर्थ है।

यही कारण है कि मित्रता खाते से मुक्त संबंध की ऐसी स्पष्ट झलक देती है। विनिमय को प्रवर्तित करने को कोई अनुबंध नहीं, देने को बाध्य करने को कोई दायित्व नहीं, एक सच्ची मित्रता पूर्णतः स्वतंत्रता-से-दिए-गए पर चलती है — बिना गिने दी गई सहायता, बिना गणना दिया गया समय, शेष को देखे बिना बढ़ाई गई निष्ठा। और वह सिखाती है, किसी को भी जो उस पर ध्यान देता है, कि अन्य संबंध क्या हो सकते थे यदि उनके अनुबंध और दायित्व इतनी सहजता से बहियाँ न बन जाते: कि एक बंधन खातों के प्रवर्तित संतुलन से नहीं बल्कि उन व्यक्तियों की स्वतंत्रता-से-दी-गई संगति से एक साथ थामा जा सकता है जिन्होंने अंक रखना बंद कर दिया है, और कि ऐसा एक बंधन, अपने पीछे कोई खाता न होने के लिए, अधिक प्रबल है, कम नहीं।

## लम्बी संगति

जो मित्रताएँ टिकती हैं उनमें एक विशेष उपहार है — उनकी लम्बी संगति जिन्होंने हमें दशकों भर जाना है, हमारी अनेक भूमिकाओं और ऋतुओं के माध्यम से, और जो इसका कोई स्थिर चित्र नहीं थामते कि हम कौन थे बल्कि इसकी एक सजीव परिचितता कि हम कौन रहे हैं और बन रहे हैं। पुराने मित्र ने हमें भूमिका दर भूमिका रखते देखा है — वे स्व जिन्हें हमने उतारा, वे वेशभूषाएँ जिनसे हम आगे बढ़े — और बना रहा है, उनमें से किसी एक से अनुरक्त नहीं, उस जागरूकता की संगति में जिसने उन सबको पहना। यह दुर्लभ और अमूल्य है: विलयों के पार जाना जाना, एक ऐसा साथी रखना जो पूर्व स्वीं को स्मरण करता है बिना हमें उन पर थामे, जिसने लम्बे उद्घाटन को देखा और रुका रहा।

और लम्बी संगति, अपने शांत ढंग में, समूची शिक्षा का एक सजीव प्रदर्शन है। वह मित्र जिसने हमें दशकों जाना है जानता है, किसी और से बेहतर, कि हम उन भूमिकाओं में से कोई नहीं

जिन्हें हमने निभाया, क्योंकि उसने हमें इतनी निभाते और उतारते देखा है; वे एक स्थिर स्व की संगति में नहीं बल्कि लम्बे उद्धाटन की, उस जागरूकता की जो सब बदलती भूमिकाओं के माध्यम से बनी रही। इस ढंग से मित्र बनाया जाना — विलयों के पार, उसके द्वारा जो हमें हमारे पूर्व स्वों पर नहीं थामता — लगभग उस ढंग से प्रेम किया जाना है जिसकी ओर यह पुस्तक संकेत करती है: एक स्थिर और लेखाबद्ध स्व के रूप में नहीं, बल्कि व्यवस्था में उस सजीव, बदलते, भूमिका-उतारते सहभागी के रूप में जो हम वास्तव में हैं। लम्बी संगति मित्रता का गहनतम उपहार है, और वह एक उपहार है जो खाता कभी न दे सकता, क्योंकि वह ठीक उस व्यक्ति के रूप में जाने और प्रेम किए जाने का उपहार है जिसे अंततः बिल्कुल लेखाबद्ध नहीं किया जा सकता।

## वह मित्र जिसने अंक रखा

एक व्यक्ति के दो मित्र हैं। पहला एक सावधान, अनकहा खाता रखता है: स्मरण रखता है कि अंतिम बार किसने पुकारा और किसकी बारी है, नोट करता है जब उसने प्राप्त से अधिक दिया है, एक शीतलता प्रवेश करने देता है जब शेष उसके विरुद्ध झुकता है, और मित्रता को उसके प्रतिफलों के अनुपात में नवीकृत करता है। यह ठीक मित्रता नहीं; यह एक गठबंधन है, निगरानी किए गए विनिमय का एक संबंध, और व्यक्ति अनुभव करता है, उसकी सतही गर्मी के नीचे, सदा रखी जाती एक बही का शांत दबाव। दूसरा मित्र बिल्कुल कोई खाता नहीं रखता — देता है जब देने को कुछ हो, माँगता है जब आवश्यकता हो, कभी नहीं गिनता, कभी नोट नहीं करता कि किसकी बारी है, और बस, स्वतंत्रता से, वहाँ है। पहले के साथ वह सावधान है; दूसरे के साथ वह सहज है।

अंतर इस अध्याय का समूचा अर्थ है। पहली मित्रता शेष से एक साथ थामी जाती है, और इसलिए वह सदा सशर्त है, सदा एक अप्रतिफलित उपकार ठंडा होने से दूर; दूसरी स्वयं के सिवा किसी वस्तु से एक साथ थामी जाती है, दो व्यक्तियों की स्वतंत्रता-से-दी-गई संगति जिन्होंने बही रख दी है, और इसलिए वह एकमात्र उस ढंग से बिना शर्त है जिससे एक मानवीय बंधन हो सकता है। जब व्यक्ति कठिन समय में गिरता है और एक लम्बी ऋतु के लिए कुछ वापस नहीं कर सकता, तो वह खोज लेता है कि उसके पास वास्तव में कौन मित्र है: वह जो खाता रखता है चुपचाप पीछे हट जाता है जैसे शेष अदत्त जाता है, और वह जो कोई खाता

नहीं रखता बस रुका रहता है, देता है, और एक बार भी किसी ऋण का उल्लेख नहीं करता — क्योंकि कोई खाता था ही नहीं, और इसलिए चूकने को कभी कुछ था ही नहीं।

## चुना गया, और फिर चुना गया

इस तथ्य में एक शांत सुंदरता है कि मित्रता, हमारे निकट बंधनों में अकेली, पूर्णतः चुनाव से नवीकृत होती है। परिवार जिसमें हम जन्मते हैं; रोमांटिक बंधन शपथ से मुहरबंद और हजार व्यावहारिक बंधनों से उलझा होता है; किंतु मित्र चुना जाता है, और फिर चुना जाता है, स्वतंत्रता से, हर बार जब हम पहुँचते हैं, हर बार जब हम समय निकालते हैं, हर बार जब हम एक बंधन नवीकृत करते हैं जिसे हमारे अपने स्वतंत्र चुनाव के सिवा कुछ बनाए नहीं रखता। यह कभी-कभी मित्रता की नाज़ुकता के रूप में अनुभव किया जाता है — वह बस लुप्त हो सकती है, किसी नाटकीय विच्छेद से अमिटित, मात्र चुनाव के थम जाने के माध्यम से — किंतु वह सत्य में उसकी गरिमा है, क्योंकि उसका अर्थ है कि एक मित्रता जो टिकती है सच्चे, दोहराए गए, अप्रवर्तित चुनाव से टिकती है, और दायित्व की जड़ता से नहीं।

किसी का मित्र होना, तो, एक ऐसे व्यक्ति द्वारा स्वतंत्रता से और दोहराकर चुना जाना है जो आपको चुनने के किसी दायित्व के अधीन नहीं — जो मूल्यवान समझे जाने का किसी भी ऐसे रूप से शुद्धतर रूप है जो दायित्व दे सकता है। परिवार का सदस्य कर्तव्यनिष्ठ हो सकता है; जीवनसाथी बँधा हो सकता है; किंतु मित्र स्वतंत्र है, और आपको फिर भी चुनता है, बार-बार, किसी कारण से नहीं सिवाय इसके कि वे चाहते हैं। और एक मित्र होना वही स्वतंत्र चुनाव बढ़ाना है — बंधन को इसलिए नहीं नवीकृत करना कि व्यक्ति को करना ही है बल्कि इसलिए कि वे चाहते हैं, वह स्वतंत्रता-से-दिया-गया समय और देखभाल देते हुए जिसे कोई अनुबंध बाध्य नहीं करता। लम्बी मित्रताएँ इस स्वतंत्र चुनाव के सिवा कुछ नहीं हैं, वर्षों भर दोहराया गया, दो व्यक्ति एक-दूसरे को बार-बार निर्वाचित करते हुए ऐसा करने के किसी दायित्व के बिना — यही कारण है कि, हमारे सब बंधनों में, मित्रता वह है जो सबसे शुद्ध रूप से प्रेम से बनी है, उसे एक साथ थामने को प्रेम के सिवा कुछ न होते हुए।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

मित्र वह नहीं जिसका आपके साथ खाता संतुलित हो, बल्कि वह जिसके साथ आपने खाता रखना बंद कर दिया हो। मित्रता, किसी अनुबंध और किसी दायित्व से एक साथ न थामी जाकर, पूर्णतः स्वतंत्रता-से-दिए-गए पर चलती है — और इसलिए इसकी सबसे स्पष्ट झलक देती है कि बही रख देने पर हर संबंध क्या हो सकता है।

ध्यान दीजिए कि क्या आप किसी मित्र के साथ कोई खाता रख रहे हैं — अंतिम बार किसने पुकारा, किसने अधिक दिया, क्या देय है। उसे रख दीजिए, और जो अगली वस्तु आप देते हैं उसे स्वतंत्रता से दीजिए, बिना गिनती के। और यदि आपके पास एक पुराना मित्र है जिसने आपको अनेक ऋतुओं के पार जाना है, तो लम्बी संगति का उपहार पहचानिए: अपनी सब उतारी भूमिकाओं के पार, उसके द्वारा जाना जाना जो आपको उनमें से किसी पर नहीं थामता।

## निराशा और इसकी कहानी कि यह कैसे होना चाहिए था

---

निराशा उस घटना के बीच का अंतराल है जो हुई और उस की कहानी के बीच जो होनी चाहिए थी। अंतराल को कहानी छोड़कर पाटिए, घटना को फिर लिखकर नहीं।

— अपेक्षा पर टिप्पणी

निराशा इतनी साधारण है कि हम विरले ही उसे जाँचते हैं, और फिर भी वह कार्य पर व्यक्तिगत खाते का एक सटीक और शिक्षाप्रद उदाहरण है। क्योंकि निराशा केवल एक अवांछित घटना का अनुभव नहीं; वह एक अपेक्षित घटना के विरुद्ध मापी गई एक अवांछित घटना का अनुभव है — जो हुआ उसके और उसकी कहानी के बीच का अंतराल जो हमने लिखी थी कि यह कैसे होना चाहिए था। और वह कहानी, वह अपेक्षित भविष्य जिसे हमने रचा और आधा-विश्वास किया, स्वयं स्वामित्व का एक रूप है: एक ऐसे परिणाम पर स्वामी का दावा जिसने अभी अपना क्षितिज पार नहीं किया था, ऐसे बरता गया मानो वह पहले से देय हो।

यही कारण है कि दो व्यक्ति अभिन्न घटना से मिल सकते हैं — वही परिणाम, वही बाह्य तथ्य — और एक कटु रूप से निराश जबकि दूसरा नहीं: अंतर घटना नहीं बल्कि वह कहानी है जो प्रत्येक ने लिखी थी कि यह कैसे होना चाहिए था, वह अपेक्षित भविष्य जिसके विरुद्ध वास्तविक घटना मापी जाती है। निराशा पूर्णतः दोनों के बीच के अंतराल में जीती है, और अंतराल को किसी भी ओर से पाटा जा सकता है — किंतु दोनों में से केवल एक ओर वास्तव में हमें उपलब्ध है।

### वह अपेक्षित भविष्य जिसे हम पहले ही खर्च कर चुके

ध्यान दीजिए कि निराशा को एक अपेक्षित भविष्य चाहिए — एक कहानी, बहुधा मुश्किल से सचेत, कि घटना कैसे सुलझेगी और सुलझनी चाहिए, जिसमें हम पहले ही आधा-जी चुके,



पहले ही गिन चुके, पहले ही खर्च कर चुके। वह पदोन्नति जिसके हम निश्चित थे, वह यात्रा जिसे हमने चित्रित किया, वह प्रत्युत्तर जिसकी हमने अपेक्षा की, वह ढंग जिससे सायं को होना था — हम इन अपेक्षित भविष्यों को निरंतर रचते हैं, उन्हें लगभग वास्तविक बरतते हैं, और फिर वास्तविक घटना को उनके विरुद्ध मापते हैं, अंतराल भोगते हुए जब वास्तविकता अन्यथा सुलझती है। और अपेक्षित भविष्य स्वामित्व का एक रूप है: स्वामी क्षितिज के आर-पार एक अनसुलझे परिणाम का दावा करने को पहुँचता हुआ, अनसुलझे को ऐसे बरतता हुआ मानो वह पहले से देय हो, ताकि जब घटना अन्यथा सुलझती है तो वह केवल अवांछित नहीं बल्कि चुराई हुई-सी लगती है — मानो कोई वस्तु जो हम पहले से रखते थे ले ली गई हो।

किंतु अपेक्षित भविष्य कभी रखा गया था ही नहीं, क्योंकि उसने कभी अपना क्षितिज पार नहीं किया; वह एक कहानी थी जो हमने एक ऐसी घटना के विषय में रची जिसे समग्र ने अभी बैठाया नहीं था, और घटना सदा हमारी उसकी कहानी के बजाय समग्र से सुलझने ही वाली थी। निराशा, तो, एक ऐसे स्वामी का दुःख है जिसने एक ऐसे परिणाम का दावा किया था जो कभी उसका दावा करने को था ही नहीं, और जो वास्तविक समाधान को एक ऐसी वस्तु की चोरी के रूप में अनुभव करता है जो उसके पास वास्तव में कभी थी ही नहीं। इसे देखना निराशा को सटीकता से स्थित करना है: घटना में नहीं, जो बस वैसे सुलझी जैसे घटनाएँ सुलझती हैं, बल्कि उस घटना और उस कहानी के बीच के अंतराल में जो हमने लिखी और आधा-खर्च की थी — एक ऐसी कहानी जो कभी एक संपत्ति थी ही नहीं, चाहे हमने उसे कितना ही वास्तविक होने दिया हो।

## **कहानी छोड़ना, घटना को फिर लिखना नहीं**

वह अंतराल जो निराशा है, सिद्धांततः, किसी भी ओर से पाटा जा सकता है: घटना को कहानी से मेल कराने को फिर लिखकर, या कहानी को घटना से मेल कराने को छोड़कर। पहला अधिकतर अनुपलब्ध है — घटना अपना क्षितिज पार कर सुलझ चुकी, बंद और अपरिवर्तनीय, और कितनी भी निराशा उसे फिर नहीं लिखेगी। हम प्रयास करते हैं, अवश्य; हम घटना फिर चलाते हैं, उसका विरोध करते हैं, आग्रह करते हैं कि उसे अन्यथा जाना चाहिए था, उसे कहानी से मेल कराने को बंद क्षितिज के आर-पार पीछे पहुँचते हैं — और हम दुःख भोगते हैं, क्योंकि घटना फिर नहीं लिखी जाएगी और कहानी संतुष्ट नहीं होगी। निराशा की समूची ऊर्जा अंतराल के उस एक ओर जाती है जिसे बदला नहीं जा सकता।

उपलब्ध चाल दूसरी है: कहानी छोड़ना। वह अपेक्षित भविष्य जिसे हमने रचा और आधा-खर्च किया रखा जा सकता है — एक ऐसी कहानी के रूप में पहचाना जिसे हमने एक ऐसे परिणाम के विषय में लिखा जो कभी हमारा दावा करने को था ही नहीं, और अब छोड़ा गया जब घटना अन्यथा सुलझ चुकी। यह कभी आशा न करने, कभी योजना न बनाने, कभी एक भविष्य न चित्रित करने के समान नहीं; यह वह इच्छा है, जब घटना हमारी कहानी के विरुद्ध सुलझती है, कि कहानी को जाने दें बजाय वास्तविक घटना को एक ऐसे भविष्य के विरुद्ध मापते रहने के जो हुआ नहीं और वास्तविकता को अंतराल के लिए उलाहना देने के। घटना वैसे सुलझी जैसे वह सुलझी, समग्र से, जैसे घटनाएँ करती हैं। निराशा उस कहानी में जीती है जिसके विरुद्ध हम उसे थामते रहते हैं — और कहानी, घटना के विपरीत, हमारी छोड़ने को है। घटना को उलाहना देने के बजाय कहानी छोड़कर अंतराल पाटना निराशा से मिलने का समूचा है: यह दिखावा करके नहीं कि परिणाम चाहा गया था, बल्कि उस अपेक्षित भविष्य को रखकर जिसका हमने दावा किया और कभी स्वामित्व नहीं किया, और वास्तविक घटना से, अंततः, उस वस्तु के रूप में मिलकर जो वास्तव में हुई बजाय एक ऐसी वस्तु की चोरी के जो कभी हुई ही नहीं।

## वही पत्र, दो पाठ

दो अभ्यर्थी एक ही पद के लिए एक ही दिन एक ही अस्वीकृति-पत्र प्राप्त करते हैं। पहला विध्वस्त है, और विध्वंस वास्तविक है — किंतु उसके स्रोत पर ध्यान दीजिए। उसने, पहले से, एक विस्तृत कहानी लिखी थी कि यह कैसे होगा: प्रस्ताव, उत्सव, वह नया जीवन जो उसके पीछे आएगा, एक अपेक्षित भविष्य जिसे वह पहले ही आधा-जी चुका और गिन चुका था। पत्र उसे केवल एक नौकरी से वंचित नहीं करता; वह एक ऐसे भविष्य को गिरा देता है जिसे उसने बनाया और बसाया था, और वह हानि को एक अनिश्चितता के समाधान के रूप में नहीं बल्कि किसी ऐसी वस्तु की चोरी के रूप में अनुभव करता है जो वह पहले से रखता था। निराशा विशाल है क्योंकि कहानी विस्तृत थी।

दूसरी अभ्यर्थी अभिन्न पत्र प्राप्त करती है और उससे एक सच्ची अनिश्चितता के समाधान के रूप में मिलती है — निराशाजनक, हाँ, किंतु विध्वंसकारी नहीं, क्योंकि उसने उसे मापने को एक विस्तृत अपेक्षित भविष्य रचा और बसाया नहीं था। उसने आशा की थी, और आशा की ओर पूर्णतः कर्म किया था, किंतु उसने परिणाम को पहले से खर्च नहीं कर लिया था, भविष्य को घटना के अपना क्षितिज पार करने से पहले बनाकर उसमें स्थानांतरित नहीं हो गई थी। पत्र

वही है; खोया पद वही है; किंतु निराशा विशाल रूप से भिन्न है, और अंतर पूर्णतः कहानी है — पहली में विस्तृत, दूसरी में हल्की। घटना अभिन्न रूप से सुलझी। उनमें से केवल एक ने पहले ही एक ऐसा भविष्य खर्च कर लिया था जो कभी उसका खर्च करने को था ही नहीं।

## खर्च किए भविष्य के बिना आशा

यहाँ एक प्रश्न दबाता है: यदि निराशा एक अपेक्षित भविष्य रचने और घटना को उसके विरुद्ध मापने से आती है, तो क्या हमें फिर बिल्कुल आशा करना बंद कर देना चाहिए, हर परिणाम से बिना किसी वरीयता मिलते हुए, एक धूसर समता में जो कुछ नहीं चाहती? यह दोनों असंभव और दरिद्र करने वाला होगा, और यह वह नहीं जो यह अध्याय माँगता है। आशा और खर्च किए भविष्य के बीच एक अंतर है। आशा एक चाहे-गए परिणाम की ओर खुला अभिविन्यास है, हल्के से थामा गया, जबकि घटना सचमुच अनिश्चित बनी रहती है; खर्च किया भविष्य वह विस्तृत कहानी है कि वह कैसे होगा और होना ही चाहिए, पहले से रची, आधा-जी गई, और ऐसे गिनी गई मानो पहले से रखी हो। व्यक्ति पूर्णतः आशा कर सकता है जबकि भविष्य को पहले से खर्च करने से इनकार करते हुए।

यह भेद इसके लिए सब कुछ है कि निराशा से कैसे मिला जाता है। खर्च किए भविष्य के बिना आशा करना परिणाम को चाहना, उसकी ओर पूर्णतः कर्म करना, उसे चित्रित तक करना है — जबकि चित्र को हल्के से थामते हुए, यह जानते हुए कि वह एक इच्छा है और एक संपत्ति नहीं, घटना को सचमुच खुला छोड़ते हुए बजाय चाहे-गए समाधान को पहले से देय बरतने के। जब घटना फिर अन्यथा सुलझती है, तो एक अवास्तविक आशा की स्वच्छ निराशा है, जो बीत जाती है — किंतु एक गिराए गए भविष्य का विध्वंस नहीं, क्योंकि कोई भविष्य रचा और बसाया और वास्तविक के रूप में गिना नहीं गया था। यही ढंग है जिससे व्यक्ति स्वयं को गहरे दुःख के लिए स्थापित किए बिना आशा करता है: पूर्णतः, गर्मजोशी से, सक्रिय रूप से — किंतु खुले हाथ से, चाहे-गए परिणाम को एक संपत्ति के बजाय एक आशा के रूप में थामते हुए, ताकि जब घटना समग्र से सुलझती है, जैसे वह करेगी, तो छोड़ने को एक कहानी हो, हल्के से, बजाय बेदखल किए जाने को एक देश के।

\*  
\*\*

## एक चिंतन

निराशा उस घटना के बीच का अंतराल है जो हुई और उस की कहानी के बीच जो होनी चाहिए थी। वह अपेक्षित भविष्य जिसे आपने रचा और आधा-खर्च किया कभी एक संपत्ति थी ही नहीं, क्योंकि उसने कभी अपना क्षितिज पार नहीं किया। घटना समग्र से सुलझी, जैसे घटनाएँ करती हैं; निराशा उस कहानी में जीती है जिसके विरुद्ध आप उसे थामते रहते हैं।

एक निराशा लीजिए जिसे आप ढो रहे हैं और उसे सटीकता से स्थित कीजिए: घटना में नहीं, जो सुलझ और बंद हो चुकी, बल्कि उस घटना और उस कहानी के बीच के अंतराल में जो आपने लिखी थी कि यह कैसे होना चाहिए था। फिर अंतराल को एकमात्र उपलब्ध ओर से पाटिए — कहानी छोड़िए, वह अपेक्षित भविष्य जिसका आपने दावा किया और कभी स्वामित्व नहीं किया, और वास्तविक घटना से उस वस्तु के रूप में मिलिए जो हुई बजाय एक ऐसी वस्तु की चोरी के जो कभी हुई ही नहीं।

## स्मृति-राग और संपादित अतीत

वह स्वर्णिम अतीत जिसके लिए आप तरसते हैं उसी ने संपादित किया जो तरस रहा है। आप एक ऐसे देश के लिए विरही हैं जो कभी पूरी तरह अस्तित्व में था ही नहीं।

— स्मृति पर टिप्पणी

स्मृति-राग सबसे कोमल दुःखों में से है, और सबसे भ्रामक में से एक, क्योंकि वह बिल्कुल दुःख-सा अनुभव नहीं होता बल्कि प्रेम-सा — एक बीते समय के लिए, एक खोए स्थान के लिए, एक स्वर्णिम ऋतु के लिए एक कोमल तरस जिस पर हम स्मृति में लौटते हैं और हर बार जब हम जाते हैं उसे अधिक सुंदर पाते हैं। फिर भी स्मृति-राग, इस पुस्तक के प्रकाश में जाँचा गया, पीछे की ओर पहुँचते व्यक्तिगत खाते का एक रूप सिद्ध होता है: एक संपादित अतीत का स्वामित्व, एक पूर्ण हुई घटना के पीछे की पकड़ जिसे हमने चुपचाप उससे बेहतर किसी वस्तु में फिर लिख दिया जो वह थी, और वर्तमान को एक ऐसे अतीत के विरुद्ध मापने का दुःख जो कभी पूरी तरह अस्तित्व में था ही नहीं।

मेरा अर्थ यह नहीं कि स्मरण किए गए अच्छे समय अच्छे नहीं थे, या कि स्नेहपूर्ण स्मृति एक दोष है। अतीत ने वास्तविक आनंद थामे, और उन्हें गर्मजोशी से स्मरण करना एक पूर्ण जीवन का अंग है। यह पुस्तक जिस पर प्रश्न करती है वह स्मृति-राग की विशेष पीड़ा है — एक बीते समय के लिए विरह जो वर्तमान से बेहतर माना जाता है, वह स्वर्णिम बीता देश जिसे हम लौटने को तरसते हैं — क्योंकि वह देश उसी ने संपादित किया जो उसके लिए तरसता है, और तरस एक वास्तविक वर्तमान को एक आदर्शीकृत अतीत के विरुद्ध मापता है जिसे स्मृति ने चुपचाप सुधार दिया है।

**स्मृति एक संपादक है, अभिलेखक नहीं**

हम स्मृति की कल्पना एक अभिलेखन के रूप में करते हैं — इसका एक निष्ठावान अभिग्रहण कि वस्तुएँ कैसी थीं, संग्रहीत और फिर बजाया गया। वह इस प्रकार की कुछ नहीं। स्मृति एक

संपादक है: वह चयन करती, संपीडित करती, चिकना करती, और फिर लिखती है, उबाऊपन और घर्षण को गिराती हुई, आनंदों को बढ़ाती हुई, और हर बार जब हम स्मरण करते हैं फिर रचती है बजाय एक स्थिर अभिलेख को फिर बजाने के। वह स्वर्णिम ग्रीष्म जिसके लिए हम तरसते हैं वर्षों भर उससे बेहतर किसी वस्तु में संपादित कर दी गई है जो वास्तविक ग्रीष्म थी, जिसके पास, हर ऋतु की भाँति, अपना उबाऊपन और अपने झगड़े और अपने साधारण धूसर घंटे थे; वह खोया समय जिसके लिए हम विरही हैं एक पुनर्रचना है, स्मृति के संपादन द्वारा एक ऐसे देश में सुधारा गया जो उससे सुंदरतर है जिसमें हम वास्तव में किए। हम, स्मृति-राग में, अतीत में नहीं लौट रहे; हम उसके एक संपादित संस्करण को देख रहे हैं, और एक ऐसे स्थान के लिए तरस रहे हैं जो उस रूप में कभी पूरी तरह अस्तित्व में था ही नहीं जिसमें हम उसे चूकते हैं।

यही कारण है कि स्मृति-राग संरचनात्मक रूप से अतृप्त और संरचनात्मक रूप से वर्तमान के प्रति अनुचित है। वह वास्तविक वर्तमान को — अपने सब वास्तविक घर्षण और उबाऊपन और साधारण धूसर घंटों के साथ उपस्थित और दृश्य — एक संपादित अतीत के विरुद्ध मापता है जिससे सब घर्षण और उबाऊपन चुपचाप हटा दिए गए हैं, और वर्तमान वह तुलना जीत नहीं सकता, क्योंकि उसे एक ऐसे देश के विरुद्ध मापा जा रहा है जिसे स्मृति ने सुधारा और जिसे वर्तमान को अभी संपादित करने का समय नहीं मिला। वह स्वर्णिम अतीत कभी एक साधारण वर्तमान था, अपने ही असंतोषों के साथ, बहुत संभवतः एक पहले के स्वर्णिम अतीत के लिए स्मृति-रागी होते हुए बिताया गया; और यह वर्तमान, एक दिन, वह संपादित स्वर्णिम अतीत होगा जिसके लिए कोई भविष्य स्व तरसेगा। जो तुलना स्मृति-राग चलाता है वह आरम्भ से ही धाँधलीबाज़ है, क्योंकि उसके दोनों पदों में से केवल एक संपादित किया गया है।

## पीछे की ओर जीना

स्मृति-राग की कोमल पीड़ा से परे उसकी एक वास्तविक क्रीमत है, और वह पीछे की ओर जीने की क्रीमत है — वास्तविक वर्तमान के बजाय एक संपादित अतीत की ओर अभिमुख होने की, वर्तमान को एक बीते समय के लिए विरह में बिताने की बजाय एकमात्र उस स्थान में जहाँ व्यक्ति वास्तव में जी सकता है। स्मृति-रागी व्यक्ति, एक अर्थ में, पूर्णतः यहाँ नहीं; उनका एक भाग सदा संपादित स्वर्णिम देश में है, वर्तमान को उसके विरुद्ध मापता और वर्तमान को कम पाता, वास्तविक वर्तमान को एक ऐसे अतीत की पुनर्रचना के पक्ष में चूकता हुआ जो, जब

वह जीया गया, बस एक और साधारण वर्तमान था। पीछे की ओर जीना वर्तमान को एक संपादित अतीत को त्यागना है — और त्यागा गया वर्तमान एकमात्र जीवन है जो वास्तव में है।

अतीत से ठीक मिलना उसे एक पूर्ण हुई घटना होने देना है — वास्तविक, गर्मजोशी से थामी गई, किंतु पूर्ण और विलीन, न कि एक संपादित देश जिसकी ओर तरसों और वर्तमान को उसके विरुद्ध मापें। आनंद वास्तविक थे और कृतज्ञता से स्मरण किए जा सकते हैं; किंतु वे पूर्ण हो चुके, जैसे सब घटनाएँ पूर्ण होती हैं, और उनके पीछे पकड़ना, उन्हें एक स्वर्णिम देश में फिर लिखना और उसके लिए विरही जीना, उनकी पूर्णता का इनकार करना और वर्तमान को एक संपादित पुनर्रचना के पक्ष में त्यागना है। अतीत कभी एक वर्तमान था, मिला या चूका; यह अभी वर्तमान है, एकमात्र स्थान जहाँ किसी ने कभी जीवन जिया है; और संपादित स्वर्णिम देश को छोड़ना — एक ऐसे स्थान की ओर पीछे तरसना बंद करना जो कभी पूरी तरह अस्तित्व में था ही नहीं — वर्तमान को लौटना है, जो स्वर्णिम अतीत से बदतर नहीं बल्कि बस असंपादित है, वास्तविक जीवन, यहाँ, अभी, इससे पहले कि स्मृति ने उसे एक ऐसी वस्तु में सुधारने का अवसर पाया हो जिसके लिए विरही हुआ जाए।

## पुराना घर

एक स्त्री, तीस वर्ष बाद, उस घर लौटती है जिसमें वह बड़ी हुई, उस स्वर्णिम बचपन का स्थल जिसकी ओर वह तीन दशकों के स्मृति-राग के पार तरसती रही है। और वह उससे छोटा है जितना उसने स्मरण किया, सादा, कमरे साधारण, बगीचा मामूली, समूचा स्थान हठपूर्वक उसकी स्मृति के प्रकाशमान देश से मेल खाने में असफल। वह क्षण-भर विचलित, निराश तक है — और फिर, यदि वह ध्यान दे रही है, तो वह समझ जाती है: घर सिकुड़ा नहीं; उसकी स्मृति ने उसे बढ़ाया, संपादित किया, स्मरण के तीस वर्षों भर उसे एक स्वर्णिम देश में मढ़ दिया जो वास्तविक घर, उसके सामने सादगी से बैठा, कभी था ही नहीं।

यही है जो संपादित अतीत की हर वापसी अंततः सिखाती है, यदि हम उसे होने दें। वह स्वर्णिम बीता समय जिसकी ओर हम तरसते हैं कभी एक साधारण वर्तमान था, अपने ही सादे कमरों और मामूली बगीचों और धूसर अपराह्नों के साथ, केवल स्मृति के लम्बे कार्य द्वारा सोने में संपादित, जो उबारूपन को गिराती और आनंदों को मढ़ती है जब तक स्मरण किया देश एक ऐसे प्रकाश से दमकता है जो जीया गया कभी न रखता था। स्त्री ने एक स्वर्णिम बचपन नहीं

खोया; उसका एक साधारण था, हर किसी की भाँति, जिसे स्मृति ने उस देश में सुधार दिया जिसके लिए वह विरही थी। और सादे वास्तविक कमरों में खड़ी, उसे संपादित देश को छोड़ने और वास्तविक अतीत से मिलने का अवसर दिया जाता है — साधारण, पूर्ण, विलीन — और लौटने का, हल्की, उस वर्तमान को जिसे वह एक ऐसे स्थान को त्याग रही थी जो कभी पूरी तरह अस्तित्व में था ही नहीं।

### **वह स्मृति-राग जो हम अभी बना रहे हैं**

यहाँ एक विचार है जो स्मृति-राग को उलटा-भीतर कर देता है और वर्तमान को हमें वापस सौंप देता है। यह साधारण वर्तमान क्षण — अनुल्लेखनीय, शायद हल्का असंतोषजनक, हमारे द्वारा किसी संपादित स्वर्णिम अतीत के विरुद्ध मापा और कम पाया गया — वही क्षण है जिसे कोई भविष्य स्व एक दिन एक स्वर्णिम समय के रूप में स्मरण करेगा। वह वर्तमान जिसे आप आधा-चूक रहे हैं, विचलित, हलके में लेते हुए, स्मृति द्वारा आने वाले वर्षों भर ठीक उसी प्रकार के प्रकाशमान बीते देश में संपादित किया जाएगा जिसकी ओर आप वर्तमान में तरसते हैं; आप जी रहे हैं, अभी, एक भविष्य के स्मृति-राग की कच्ची सामग्री में, उन भले पुराने दिनों में जिनकी ओर एक बाद का स्व लौटने को तरसेगा और नहीं सकता।

इसे देखना वर्तमान को एक नई तात्कालिकता के साथ सौंपा जाना है, चिंता की नहीं बल्कि उपस्थिति की। यदि यह साधारण क्षण एक दिन स्वर्णिम के रूप में स्मरण किया जाएगा, तो सोना सदा यहाँ था, साधारण वर्तमान में, और केवल स्मृति के संपादन ने अतीत को एक ऐसी प्रकाशमानता धारण करता-सा बनाया जिसकी वर्तमान में कमी थी। स्मृति-राग का उपचार इसलिए अतीत की ओर अधिक कुशलता से तरसना नहीं बल्कि अभी उपस्थित होना है, उस क्षण के प्रति जो वर्तमान में जीया जा रहा है और वर्तमान में वह अतीत बन जाएगा जो चूका जाता है — भले पुराने दिनों से मिलना जब वे अभी भी साधारण वर्तमान हैं, इससे पहले कि स्मृति ने उन्हें मढ़ा हो और समय ने उन्हें बंद किया हो। स्वर्णिम देश आपके पीछे नहीं है। वह वर्तमान है, अभी संपादित नहीं, चूके जाने से पहले जिए जाने की प्रतीक्षा करता हुआ।

\*  
\*\*



## एक चिंतन

वह स्वर्णिम अतीत जिसके लिए आप तरसते हैं उसी ने संपादित किया जो तरस रहा है — स्मरण के वर्षों भर बढ़ाया और एक ऐसे देश में मढ़ा गया जो उस रूप में कभी पूरी तरह अस्तित्व में था ही नहीं जिसमें आप उसे चूकते हैं। स्मृति-राग एक असंपादित वर्तमान को एक संपादित अतीत के विरुद्ध मापता है, एक आरम्भ से धाँधलीबाज़ तुलना, और एकमात्र जीवन को जो है एक ऐसे स्थान को त्याग देता है जो, जब जीया गया, बस एक और साधारण वर्तमान था।

एक स्मृति-राग पर ध्यान दीजिए जिसे आप ढोते हैं — एक स्वर्णिम बीता समय जिसकी ओर आप तरसते हैं — और स्मरण कीजिए, ईमानदारी से, वह उबाऊपन और घर्षण और धूसर घंटे जो उस समय ने भी थामे, जिन्हें स्मृति ने चुपचाप संपादित कर बाहर कर दिया है। अतीत को एक पूर्ण हुई घटना होने दीजिए, गर्मजोशी से थामी गई किंतु विलीन, और अपना ध्यान वर्तमान को लौटाइए, जो स्वर्णिम अतीत से बदतर नहीं, केवल असंपादित है — वास्तविक जीवन, यहाँ, इससे पहले कि स्मृति उसे सुधारे।

## स्वयं को क्षमा करना और आत्म-खाता

*सबसे कठोर ऋणदाता जिससे हममें से अधिकांश कभी मिलेंगे वह दर्पण में है, जो एक ऐसी बही रखता है जिसे कोई और देख नहीं सकता और कुछ भी क्षमा नहीं करता।*

— आत्म-क्षमा पर टिप्पणी

हमने इस पुस्तक भर व्यक्तिगत खाते की बात की है — अपने विरुद्ध रखी गई प्राप्य की बही — और हम अब उस पर लौटते हैं उसके सबसे घनिष्ठ और सबसे निर्मम रूप में: वह खाता जो हम अपने ही बीते स्वों के विरुद्ध रखते हैं, हमारी असफलताओं और अन्यायों और लज्जाओं की वह सूची जिसे हम ढोते, परामर्शित करते, और क्षमा करने से इनकार करते हैं। अनेक लोगों के लिए, सबसे कठोर ऋणदाता जिससे वे कभी मिलेंगे वह स्वयं हैं; आंतरिक न्यायाधीश किसी भी बाह्य से अधिक अक्षम्य है, आत्म-खाता किसी भी ऐसी बही से अधिक सावधानी से रखा और अधिक निर्ममता से प्रवर्तित जिसे कोई दूसरा उनके विरुद्ध थाम सके। और आत्म-क्षमा, ठीक से समझी जाए तो, इस आत्म-खाते का विलयन है — वास्तविक अन्यायों का भोगवादी बहाना नहीं, बल्कि उस निर्मम आंतरिक ऋणदाता का विमोचन जो कुछ भी क्षमा नहीं करता और सब कुछ रखता है।

यह, एक अर्थ में, वह स्थान है जहाँ अपराध-बोध के विषय में समूची पुस्तक की शिक्षा घर आती है। हमने आरम्भ में देखा कि अपराध-बोध स्व के विरुद्ध मोड़ा गया व्यक्तिगत खाता है; यहाँ हम दीर्घकालिक परिणाम से मिलते हैं — एक जीवन-भर का संचित आत्म-खाता, दशकों ढोई गई पुरानी लज्जाओं की सूची, वह आंतरिक ऋणदाता जो एक ऐसा ऋण नहीं छोड़ेगा जो, उस ढंग से जिस पर खाता आग्रह करता है, कभी वास्तव में देय था ही नहीं।

### वह बही जिसे कोई और देख नहीं सकता

आत्म-खाते के विचित्र और निजी दुःख को विचारिए। ऐसे लोग हैं जिन्हें हर उस व्यक्ति ने क्षमा कर दिया जिसके साथ उन्होंने अन्याय किया, जिन्होंने प्रायश्चित किया, जिनके शिकार उन्हें

बहुत पहले मुक्त कर चुके — और जो, वर्ष दर वर्ष, पुराने अन्याय के लिए स्वयं पर अभियोग चलाते रहते हैं, एक ऐसी बही रखते जिसे कोई और देख नहीं सकता और कोई और अब नहीं थामता, एक ऐसे ऋण के एकमात्र शेष ऋणदाता जिसे हर कोई और क्षमा कर चुका है। बाह्य खाते बंद हो चुके; आंतरिक एक खुला रहता है, अँधेरी घड़ियों में परामर्शित, एक ऐसी निर्ममता से प्रवर्तित जिसे व्यक्ति कभी किसी और पर लागू न करता। यह आत्म-खाता अपने शुद्धतम और सबसे पीड़ादायी रूप में है: एक निजी बही, सबके लिए अदृश्य, एक आंतरिक ऋणदाता द्वारा रखी जो कुछ भी क्षमा नहीं करता, एक ऐसे स्व के विरुद्ध जो उसे बंद करने को कभी पर्याप्त नहीं चुका सकता।

और हर व्यक्तिगत खाते की भाँति, यह भी संप्रभु रचयिता की कल्पना पर टिका है। आत्म-खाता बीते स्व पर ऐसे अभियोग चलाता है मानो वह एक स्वतंत्र संप्रभु कर्ता हो जो एक स्पष्ट चुनाव की स्थिति से अन्यथा कर सकता था, और जो इसलिए अंतहीन अभियोग का पात्र है। किंतु बीता स्व, हर उस कर्ता की भाँति जिसे इस पुस्तक ने जाँचा, उन घटनाओं में एक सहभागी था जिन्होंने एक समूचे में से अपने क्षितिज पार किए — अनुकूलनता, परिस्थितियाँ, सीमाएँ, भय, वह समूचा विन्यास जिसे बीते स्व ने उतना ही नहीं रचा जितना आप वर्तमान को रचते हैं। अन्याय वास्तविक था; हानि वास्तविक रही हो सकती है; किंतु वह संप्रभु रचयिता जो अंतहीन अभियोग का पात्र है वही कल्पना है जिसे हमने पूरे समय घुलाया है, अब किसी के अपने अतीत का चेहरा पहने।

## आप भी एक सहभागी थे

यहाँ वह पहचान है जो आत्म-खाते को घुला देती है, और वह वही पहचान है जो क्रोध के अध्याय में औरों पर लागू हुई, अब भीतर मोड़ी गई। आपका बीता स्व, उस अन्याय में जिसे आप क्षमा नहीं कर सकते, एक ऐसी घटना में एक सहभागी था जिसने उस समय आपके समूचे क्षेत्र में से अपना क्षितिज पार किया — आपकी अनुकूलनता, आपका भय, आपकी सीमा, आपकी परिस्थितियाँ, यह समूचा विन्यास कि आप कौन थे और किसका सामना कर रहे थे, जिसमें से कुछ भी आपने बाहर से संप्रभुता से नहीं रचा। यह हानि का बहाना नहीं देता या उसका इनकार नहीं करता; अन्याय का स्पष्ट देखना बना रहता है, और प्रायश्चित्त, जहाँ वे संभव हैं, बने रहते हैं। किंतु यह उस चित्र को घुला देता है जिस पर निर्मम आत्म-खाता निर्भर है: एक

स्वतंत्र संप्रभु स्व का चित्र जिसने स्पष्ट दुर्भाव से अन्याय चुना और इसलिए उस अंतहीन अभियोग का पात्र है जो आप वर्षों से प्रशासित करते रहे हैं।

स्वयं को क्षमा करना, तो, अन्याय का बहाना देना या यह दिखावा करना नहीं कि वह हुआ ही नहीं; यह आत्म-खाते का विमोचन है — एक ऐसे बीते स्व पर अभियोग चलाना बंद करना जो एक संप्रभु रचयिता के बजाय एक सहभागी था, पूर्ण हुई घटना को पूर्ण होने देना, उस निजी बही को बंद करना जिसे कोई और अब नहीं थामता। हानि वास्तविक थी; आप उसके लिए स्पष्ट पश्चात्ताप वहन कर सकते हैं, और उस पश्चात्ताप को आपको उसे सुधारने को प्रेरित करने दे सकते हैं जो सुधारा जा सकता है; किंतु निर्मम आंतरिक ऋणदाता, एक संप्रभु स्व पर अभियोग चलाता हुआ जो कभी अस्तित्व में था ही नहीं, मुक्त किया जा सकता है, जैसे आप किसी और के उसी निर्मम अभियोग को मुक्त करते जिसके कृत्य को आप समझते कि वह एक ऐसे समूचे में से अपना क्षितिज पार कर गया जिसे उन्होंने नहीं रचा। आप भी एक सहभागी थे। वह बीता स्व जिसे आप क्षमा नहीं कर सकते उसके अन्याय का संप्रभु रचयिता उससे अधिक नहीं था जितना वह जिसने आपके साथ अन्याय किया अपने का था — और वही समझ जो आपको दूसरे को क्षमा करने को मुक्त करती है आपको, अंततः, स्वयं को क्षमा करने को मुक्त करती है।

### स्वयं को कुछ ऋणी न होना

स्वयं को कुछ ऋणी न होने की राहत की कल्पना कीजिए — निजी बही को बंद करना, आंतरिक ऋणदाता को मुक्त करना, और अपने ही अतीत से अंतहीन अभियोग चलाए जाने को ऋणों की एक सूची के रूप में नहीं बल्कि पूर्ण हुई घटनाओं की एक शृंखला के रूप में मिलना, जहाँ पश्चात्ताप उचित हो वहाँ स्पष्ट पश्चात्ताप से मिली और उस निर्मम खाते से मुक्त की गई जिसने किसी की सहायता नहीं की और कुछ नहीं भरा। यह वह आत्म-भोग नहीं जिससे आंतरिक न्यायाधीश डरता है, वह लापरवाह बहाना जो कुछ नहीं सीखता और कुछ नहीं बदलता; किसी के अन्यायों का स्पष्ट देखना, और जिन प्रायश्चित्तों के लिए वे पुकारते हैं, बने रहते हैं। यह उस आत्म-अभियोग का विमोचन है जो कभी न्याय नहीं बल्कि केवल दुःख था — एक संप्रभु स्व के विरुद्ध एक ऋण का अंतहीन प्रवर्तन जो कभी अस्तित्व में था ही नहीं, एक आंतरिक ऋणदाता द्वारा रखा गया किसी भी अन्य से अधिक निर्मम जिससे आप कभी मिलेंगे।

और इस पुस्तक के अंत के निकट आत्म-क्षमा के आने में एक विशेष उपयुक्तता है, क्योंकि वह स्व जिस पर आप इन सब वर्षों अभियोग चलाते रहे हैं ठीक वह व्यक्तिगत स्व है जिसके विलय की ओर यह समूची पुस्तक संकेत करती रही है। निर्मम आंतरिक ऋणदाता और अभियुक्त बीता स्व उसी व्यक्तिगत खाते के दो चेहरे हैं, संप्रभु स्वामी की वही कल्पना, अब एक अंतहीन निजी मुक्रदमे में स्वयं पर मुड़ी हुई। आत्म-खाते को मुक्त करना उस भार के सबसे भारी रूपों में से एक रख देना है जिसे यह पुस्तक आपको पूरे समय रख देने में सहायता करती रही है — और खोज लेना, विमोचन में, कि वह स्व जिसे आप क्षमा नहीं कर सके वह संप्रभु रचयिता कभी था ही नहीं जिस पर आप अभियोग चला रहे थे, कि घटनाएँ बहुत पहले पूर्ण हो गईं, और कि वह आंतरिक ऋणदाता, जिसने कुछ क्षमा नहीं किया, उस स्वामी का अंतिम और सबसे घनिष्ठ वेश था जिसे आपको सदा, अंततः, रख देने को आमंत्रित किया गया था।

### दशकों लम्बा मुक्रदमा

एक स्त्री ने, दशकों पहले, कुछ ऐसा किया जिसके लिए उसने स्वयं को कभी क्षमा नहीं किया। जिस व्यक्ति के साथ उसने अन्याय किया उसने उसे बहुत पहले क्षमा कर दिया; उनमें से कुछ अब भी उसके प्रति कोई द्वेष न रखते मर गए हैं; संसार पूर्णतः भूल चुका है। वह अकेली मामले को खुला रखती है, अँधेरी घड़ियों में उस पर लौटती हुई, अपने बहुत-पहले के स्व पर एक ऐसी निर्ममता से अभियोग चलाती हुई जिसे वह किसी और पर लागू किए जाने पर राक्षसी समझती, एक ऐसे ऋण की एकमात्र शेष ऋणदाता जिसे हर अन्य पक्ष ने वर्षों पहले बंद कर दिया। उसने, निजी दुःख में, जो भी क्रीमत उस अन्याय की कही जा सकती थी उससे अनेक गुना चुकाई है — और आंतरिक ऋणदाता किसी भुगतान को अंतिम स्वीकार नहीं करता, क्योंकि मुक्रदमा कभी वास्तव में एक ऋण निपटाने के विषय में था ही नहीं। वह एक ऐसे स्व के विषय में था जो स्वयं को मुक्त नहीं कर सका।

यदि वह कभी मुक्त होने को है, तो वह अधिक चुकाकर नहीं होगा — उसने दशकों चुकाया है और बही बंद नहीं हुई — बल्कि वह देखकर जो इस समूची पुस्तक ने दिखाया है: कि उसका बहुत-पहले का स्व एक ऐसी घटना में एक सहभागी था जिसने एक ऐसे समूचे में से अपना क्षितिज पार किया जिसे उसने नहीं रचा, अंतहीन अभियोग का पात्र एक स्वतंत्र संप्रभु कर्ता नहीं; कि घटना बहुत पहले पूर्ण हुई; और कि निर्मम आंतरिक ऋणदाता, एक संप्रभु स्व पर अभियोग चलाता हुआ जो कभी अस्तित्व में था ही नहीं, ठीक वैसे मुक्त किया जा सकता है

जैसे वह किसी और के उसी निर्मम अभियोग को मुक्त करती जिसके कृत्य को वह समझती। वह अन्याय का बहाना नहीं देती; वह अपना पश्चात्ताप वहन करती है और बहुत पहले जो प्रायश्चित्त वह कर सकती थी कर चुकी है। वह बस, अंततः, उस निजी बही को बंद कर देती है जिसे कोई और अब नहीं थामता — और खोज लेती है कि सबसे कठिन क्षमा जो उसने कभी रोकी वह वही थी जिसकी वह, स्वयं द्वारा, पूरे समय ऋणी थी।

## वह पश्चात्ताप जो सुधारता है

आत्म-खाते को मुक्त करने में, यह आवश्यक है कि भेद किया जाए कि क्या मुक्त किया जाता है और क्या रखा जाता है, ठीक वैसे जैसे हमने इस पुस्तक में आरम्भ में अपराध-बोध को पश्चात्ताप से भेदा। जो मुक्त किया जाता है वह निर्मम आत्म-अभियोग है — एक बीते स्व का एक अन्याय का संप्रभु रचयिता होने के लिए अंतहीन दंड जिस पर वह कभी संप्रभु था ही नहीं, वह निजी बही दशकों एक ऐसे ऋण के विरुद्ध प्रवर्तित जो उस रूप में कभी देय था ही नहीं जिस पर खाता आग्रह करता है। जो रखा जाता है वह स्वच्छ पश्चात्ताप है: यह स्पष्ट देखना कि किसी की क्रिया ने हानि पहुँचाई, जो किसी को उसे सुधारने को प्रेरित कर सकता है जो सुधारा जा सकता है और आगे भिन्न ढंग से कर्म करने को। आत्म-खाता दंड देता है; पश्चात्ताप सुधारता है। पहला किसी की सहायता नहीं करता; दूसरा हर सच्चे प्रायश्चित्त का इंजन है।

यह भेद आत्म-क्षमा को उस आत्म-भोग से बचाता है जिससे आंतरिक न्यायाधीश डरता है। स्वयं को क्षमा करना अन्याय का बहाना देना, हानि से दूर देखना, उस पश्चात्ताप को त्यागना नहीं जो ठीक ही किसी को मरम्मत को प्रेरित करता है; यह निर्मम अभियोग को मुक्त करते हुए स्वच्छ पश्चात्ताप रखना है, दंडित करती बही को बंद करते हुए हानि का सम्मान अंतहीन आत्म-दंड के बजाय प्रायश्चित्त से करना है। वह व्यक्ति जिसने सचमुच स्वयं को क्षमा किया है वह नहीं जिसने तय कर लिया कि उसका अन्याय मायने नहीं रखता; वह वह है जिसने, स्पष्ट देखते हुए कि वह मायने रखता था, उस आत्म-अभियोग को रख दिया है जिसने कुछ नहीं सुधारा और इसके बजाय उस पश्चात्ताप को उठाया है जो सुधारता है — जो प्रायश्चित्त संभव हैं उन्हें करता हुआ, जहाँ वे कर सकते हैं भिन्न ढंग से कर्म करता हुआ, और उस आंतरिक ऋणदाता को मुक्त करता हुआ जो केवल दुःख में दुःख जोड़ रहा था, किसी की सहायता न करता, कुछ न भरता, एक संप्रभु स्व पर अभियोग चलाता हुआ जो कभी अस्तित्व में था ही नहीं एक ऐसे ऋण के लिए जो बहुत पहले, अनेक गुना, चुकाया गया था।

## एक चिंतन

सबसे कठोर ऋणदाता जिससे हममें से अधिकांश कभी मिलेंगे वह दर्पण में है, जो एक ऐसी निजी बही रखता है जिसे कोई और देख नहीं सकता और कुछ भी क्षमा नहीं करता। किंतु अभियुक्त किया जाता बीता स्व उन घटनाओं में एक सहभागी था जिन्होंने एक ऐसे समूचे में से अपना क्षितिज पार किया जिसे उन्होंने नहीं रचा — वह स्वतंत्र संप्रभु कर्ता नहीं जिस पर आत्म-खाता आग्रह करता है। स्वयं को क्षमा करना उस खाते को मुक्त करना है, अन्याय का बहाना देना नहीं।

एक वस्तु लीजिए जिसके लिए आपने स्वयं को क्षमा नहीं किया, और अपने बीते स्व पर वह समझ लागू कीजिए जो आप किसी और को बढ़ाते: कि उन्होंने एक समूचे में से कर्म किया — उनका भय, अनुकूलनता, और सीमा — जिसे उन्होंने संप्रभुता से नहीं रचा। जो भी स्पष्ट पश्चात्ताप उचित है उसे वहन कीजिए, और जो प्रायश्चित आप कर सकते हैं कीजिए; किंतु उस निजी बही को बंद कीजिए जिसे कोई और अब नहीं थामता, और निर्मम आंतरिक ऋणदाता को मुक्त होने दीजिए।

# समापन: घर पहुँचाया गया

---

पुस्तक रख दीजिए। "मेरा" शब्द रख दीजिए। और स्वयं को घर वहन किए जाने दीजिए।

— अंतिम शब्द

हमने एक रसोई की मेज़ पर आरम्भ किया, एक ऐसे व्यक्ति के साथ जो उस अपराध के लिए अपना अतीत खोज रहा था जिसने उनका दुःख अर्जित किया, मानवीय खातों में सबसे पुराना और सबसे भारी रखता हुआ। हम उस मेज़ से एक लम्बा रास्ता तय कर चुके हैं — व्यवस्था के अवतरण से नीचे, संभावना और क्रिया की संरचना से होकर, व्यक्तिगत खाते के ध्वंस और सीरेखण के पथ में, और बाहर उन साधारण कमरों में जहाँ एक ही विचार को अंततः जीया जाना ही है। और अब, अंत में, हम वहीं लौटते हैं जहाँ हमने आरम्भ किया, यह पाने को कि मेज़ वही है और हर वस्तु भिन्न है।

न कोई आपका कर्म है और न कोई मेरा कर्म। केवल कर्म है — एक ब्रह्मांडीय व्यवस्था, स्वयं को सम्पन्न करती हुई, यहाँ, अभी, उन असंख्य स्थलों के माध्यम से जो हम हैं। यह समूचा वही रहा है, वह एकल वाक्य जिसे समूची पुस्तक पलटती रही है, और उसे एक क्षण में समझा जा सकता है और उसे बसाने में एक जीवन-भर लग सकता है। आप यह पुस्तक बंद करेंगे और सप्ताह के भीतर उसका हर शब्द भूल जाएँगे। व्यक्तिगत खाता अगले कठिन घंटे तक फिर खुल जाएगा। जो भार आपने रखा, इन पन्नों को पढ़ते हुए, फिर उठाया जाएगा, दस हजार बार। यह असफलता नहीं। यह पथ अपना एकमात्र संभव आकार लेता हुआ है।

क्योंकि पथ समाप्त नहीं होता, और पहुँचने को कहीं नहीं। केवल गहराना है, सदा-कोमलतर लौटना, ध्यान देना — हर बार थोड़ा पहले — कि आपने भार उठा लिया है, और उसे रख देना, थोड़ा अधिक हल्के से, एक बार फिर। जिसने इस ढंग से चालीस वर्ष चला है वह अब भी भूलता है, अब भी सिकुड़ता है, अब भी खाते को फिर खुलते पकड़ता है, और बस उसे देखने में तेज़ और दयालु, और उसे फिर रख देने में हल्का हो गया है। स्वतंत्रता का समूचा इस श्वास



में उपलब्ध है, अगली में खोया, और फिर उपलब्ध, सदा, उसके बाद वाली में, जब तक आप जीते हैं, जो ठीक उतना ही लम्बा है जितनी आपको उसकी आवश्यकता होगी।

और श्वास अभी आ रही है, जैसे आप यह पढ़ते हैं, स्वयं ही, एक ऐसी व्यवस्था द्वारा खींची गई जिसे आपने कभी नहीं रचा और जिसे बनाए रखने की आवश्यकता नहीं। हृदय अपना ताल रख रहा है, जिसे आपने कभी आरम्भ नहीं किया और आदेश नहीं देते। रक्त अपना मार्ग खोज रहा है, खरबों शांत सहयोग आगे बढ़ रहे हैं, शरीर उसी व्यवस्था द्वारा जीया जा रहा है जो आकाशगंगाओं को घुमाती और श्याम पदार्थ को प्रवाहित करती और तारों को उनकी कक्षाओं में थामती है — और उसमें से कुछ भी आपका नहीं, और उसमें से कुछ भी कभी था ही नहीं, और वह एक हानि नहीं बल्कि सबसे गहरी राहत है जो हो सकती है। आप कभी कर्ता नहीं थे। आप कभी स्वामी नहीं थे। आप कभी समग्र से पृथक खड़े एक निजी खाते के रखवाले नहीं थे। आप सदा उसके क्षणिक आकारों में से एक थे, एक लहर जिसे उसने क्षण-भर उठाया, एक भूमिका जिसे उसने क्षण-भर निर्धारित किया, ब्रह्मांड क्षण-भर के लिए एक जोड़ी आँखों से बाहर देखता और स्वयं को आपके नाम से पुकारता हुआ।

रसोई की मेज़ पर उस स्त्री को अपना अपराध खोजने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि कोई अपराध और कोई न्यायालय और कोई दंडादेश था ही नहीं — केवल एक घटना, विशाल और निर्वैयक्तिक और उसकी नहीं, जिसे उसे व्यक्तिगत रूप से लेना सिखाया गया था, और जिसे वह, अभ्यास से, ठीक वैसा ही छोड़ सकती थी जैसा वह थी जबकि उस एक शब्द को रख देती जिसने उसे एक घाव बना दिया। यह समूचा वही है जो इस पुस्तक के पास देने को था: घटनाओं को बदलने का एक ढंग नहीं, जो वैसे आती हैं जैसे वे आती हैं, बल्कि उस शब्द को रख देने का एक ढंग जिसने उन्हें एक निजी भार में बदल दिया — घटना को छोड़ना, और "मेरा" को विमोचित करना, और खोजना कि क्या शेष रहता है जब वह एक वस्तु जिसे आप सदा जोड़ रहे थे अब नहीं जोड़ी जाती।

जो शेष रहता है वह यह है — साधारण क्षण, बिना भिंचन मिला; श्वास, स्वयं आती हुई; व्यवस्था, स्वयं को आपके और हर वस्तु के रूप में सम्पन्न करती हुई, कुछ न माँगती, कुछ न ऋणी, किसी वस्तु का अभाव न रखती। वह सदा आधार-भूमि थी। वह कभी अन्यत्र नहीं थी। द्वार कभी बंद था ही नहीं, और जाने को कभी कहीं था ही नहीं, और कभी कोई पृथक नहीं था जिसे वहाँ पहुँचने की आवश्यकता थी। केवल कभी वह एक व्यवस्था थी, उन असंख्य स्थलों

के माध्यम से गति करती हुई जो वह है, क्षण-भर एक लहर उठाती हुई जिसने स्वयं को एक पृथक वस्तु समझा और तदनुसार दुःख भोगा, और फिर — कोमलता से, अपने ही समय में, उसी व्यवस्था द्वारा जिसने उसे उठाया — लहर को समुद्र स्मरण करने देती हुई।

सो अब पुस्तक रख दीजिए। "मेरा" शब्द रख दीजिए। और स्वयं को वहन किए जाने दीजिए — जैसे आप सदा थे, जैसे आप होने से रुक न सके, जैसे पत्ता नदी द्वारा और तारा समग्र के घूमने द्वारा वहन किया जाता है — घर, उस व्यवस्था को जिसे आपने कभी नहीं छोड़ा, जो समूचे समय स्वयं को आपके रूप में सम्पन्न कर रही थी, और जो स्वयं को आपके रूप में सम्पन्न कर रही है, अब भी, इसी श्वास में, अभी आती हुई, स्वयं ही, आपको घर वहन करती हुई।

## उपसंहार

---

मैं एक तर्क के साथ नहीं बल्कि एक स्वीकारोक्ति के साथ समाप्त करना चाहता हूँ, क्योंकि एक पुस्तक जिसने व्यक्तिगत स्व को ध्वस्त करने में इतने पन्ने बिताए हैं उस व्यक्ति के विषय में ईमानदार होनी चाहिए जिसने उसे लिखा।

मैं इसमें से किसी पर एक बैठी हुई ऊँचाई से नहीं पहुँचा। मैं उस पर उसी ढंग से पहुँचा जिससे अधिकांश लोग उन वस्तुओं पर पहुँचते हैं जिनकी उन्हें सबसे अधिक आवश्यकता है: विकल्प को एक लम्बे समय तक भोगकर। वर्षों में मैंने अपना ही कर्म उसी ढंग से ढोया जिस ढंग से मैंने इन पन्नों में वर्णित लोग अपना ढोते हैं — एक निजी खाते के रूप में, रात्रि-रात्रि लेखा-परीक्षित, जिसमें मेरी असफलताएँ ऋण थीं और मेरी हानियाँ निर्णय और मेरी चिंताएँ एक ऐसे कर्ज पर चक्रवृद्धि होता ब्याज जिसे मैं नाम नहीं दे सकता था। मैं विश्वास करता था, जैसे लगभग हर कोई विश्वास करता है, कि यह भार एक गंभीर और उत्तरदायी व्यक्ति होने की कीमत थी, और कि उसे रख देना लापरवाह, उथला, अनासक्त बन जाना होगा। मैं उसके विषय में ग़लत था, जैसा प्रकट हुआ, हर विवरण में।

जो मैंने यहाँ लिखा है वह कोई सिद्धांत नहीं जिसके विषय में मैं निश्चित हूँ बल्कि एक दिशा है जिसे मैंने सच पाया है, बार-बार, उस एकमात्र प्रयोगशाला में जो हममें से किसी के पास है — एक वास्तविक जीवन का पोट, पहले एक ढंग से और फिर दूसरे से मिला। जब मैं व्यक्तिगत कर्म ढोता हूँ, मैं दुःख भोगता हूँ, और मैं बदतर कर्म करता हूँ। जब मैं उसे रख देता हूँ, संक्षेप में भी, दुःख सहज होता है और क्रिया सुधरती है। मैंने इसे दस हजार बार परखा है, और परिणाम बदलता नहीं। यह इन पन्नों की तत्त्वमीमांसा का प्रमाण नहीं; एक वस्तु अंततः सत्य हुए बिना उपयोगी हो सकती है, और मैं इस पुस्तक के ब्रह्मांड-विज्ञान को उसके अभ्यास से अधिक हल्के थामता हूँ किंतु अभ्यास पर मैं बहुत कुछ दाँव पर लगाऊँगा, क्योंकि मैंने उसे काम करते देखा है, स्वयं में और औरों में, एक ऐसी विश्वसनीयता से जिसे दर्शन के भव्य दावे विरले ही प्राप्त करते हैं।

यदि आप इन पन्नों से कुछ और न लें, तो वह एक छोटा प्रयोग लीजिए जिस तक समूची पुस्तक अंततः घट जाती है। जब अगली कठिन वस्तु आए — और वह आएगी, क्योंकि घटनाएँ जीवित होने का पोत हैं — घटना को ठीक वैसा ही छोड़िए जैसी वह है, वास्तविक और कठिन और अपरिवर्तित, और उस एकल शब्द "मेरा" को रख दीजिए। देखिए कि भार का क्या होता है जब स्वामित्व चला जाता है किंतु घटना बनी रहती है। आप मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे कि आप वहाँ क्या पाते हैं। आपको मुझ पर विश्वास नहीं करना चाहिए। आपको देखना चाहिए। देखना ही उसका समूचा है, और उसे आरम्भ करने को कभी मेरी, या किसी की, अनुमति की आवश्यकता नहीं पड़ी।

श्वास आ रही है जैसे आप यह पढ़ते हैं, स्वयं ही, जैसे वह आपके समूचे जीवन आती रही है, एक ऐसी व्यवस्था द्वारा वहन की हुई जिसे आपने कभी नहीं रचा और जिसे बनाए रखने की आवश्यकता नहीं। हृदय अपना ताल रख रहा है। आकाशगंगाएँ महा-आकर्षक की ओर अपने विशाल और मौन प्रवास में प्रवाहित हो रही हैं, और आप उस सब में वहन किए जा रहे हैं, ठीक जैसे आप सदा थे। करने को कभी कुछ था ही नहीं सिवाय इसके: गति के विरुद्ध भिंचना बंद करना, हाथ खोलना, उस कर्म को विमोचित करना जो कभी आपका था ही नहीं, और स्वयं को घर वहन किए जाने देना।

## परिशिष्ट क: विज्ञान पर एक टिप्पणी

---

इस पुस्तक भर मैंने आधुनिक भौतिकी और ब्रह्मांड-विज्ञान के विचारों पर आधार लिया है — क्वांटम अध्यारोपण, अंतर्ग्रथन, द्रष्टा की भूमिका, श्याम पदार्थ और श्याम ऊर्जा, महा-आकर्षक, एक बहुविश्व की संभावना। क्योंकि ऐसे उधार इतनी बार दुरुपयोग किए जाते हैं, मैं एक स्थान पर ठीक-ठीक एकत्र करना चाहता हूँ कि मैंने क्या दावा किया है और, अधिक महत्वपूर्ण, क्या नहीं किया।

जो मैंने दावा नहीं किया वह यह है कि भौतिकी इस पुस्तक की आध्यात्मिक दृष्टि सिद्ध करती है। वह नहीं करती। क्वांटम यांत्रिकी में कुछ भी यह प्रदर्शित नहीं करता कि कोई व्यक्तिगत कर्ता नहीं, कि घटनाएँ भूमिकाएँ निर्धारित और विलीन करती हैं, या कि साक्षी शोक का अंत है। ये विज्ञान के निष्कर्ष नहीं, और कोई भी पुस्तक जो आपको अन्यथा बताती है — कि नई भौतिकी ने प्राचीन प्रज्ञा की पुष्टि कर दी है — आपको एक चापलूसी करती जाली बेच रही है। इस पुस्तक के चिंतनशील दावे चिंतनशील आधारों पर खड़े होते या गिरते हैं: इस पर कि क्या, जब आप अपने ही अनुभव को ईमानदारी से देखते हैं, वे सच सिद्ध होते हैं। उन्हें उन्हें आधार देने को भौतिकी की आवश्यकता नहीं, और उन्हें उसके द्वारा आधार नहीं दिया जा सकता।

जो मैंने दावा किया वह कुछ कहीं अधिक विनम्र है। वह यह है कि भौतिक संसार वास्तव में कैसे व्यवहार करता है इसके हमारे सबसे सटीक चित्र — माप द्वारा पहुँचे चित्र, ध्यान द्वारा नहीं — उससे तुक मिलाते प्रकट होते हैं, कभी-कभी चौंकाने वाले ढंग से, जो चिंतकों ने हज़ारों वर्षों से भीतर से सूचित किया है। अपने आधार पर वास्तविकता संभावना के एक थामे-खुले क्षेत्र द्वारा वर्णित है जो निश्चित परिणामों में सुलझता है। एक अंतर्ग्रथित तंत्र के भाग समग्र से अलग कोई पूर्णतः स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रखते। अवलोकन का कृत्य उससे अंतर्ग्रथित है जो अवलोकिता किया जाता है ऐसे ढंगों में जिन्हें भौतिक-विज्ञानी अब भी पूर्णतः समझा नहीं सकते। ब्रह्मांड का अत्यधिक बहुमत हमारे लिए अदृश्य है और शेष का अनदेखे संचालन करता है। ये रहस्यमय अभिकथन नहीं; वे, अपने उचित तकनीकी रूप में, हमारे सर्वोत्तम ज्ञान की

वर्तमान स्थिति हैं। और वे उन विचारों के लिए अप्रत्याशित रूप से अच्छी छवियाँ बनाते हैं जिन्हें अन्यथा मन में थामना कठिन है।

एक छवि एक तर्क नहीं है। एक सेतु पार करने के लिए है, उस पर एक घर बनाने के लिए नहीं। जहाँ इन वैज्ञानिक छवियों में से एक आपको एक कठिन चिंतनशील बिंदु समझने में सहायता करती है, उसे कृतज्ञता से उपयोग कीजिए। जहाँ वह इस दावे में कठोर होने लगती है कि विज्ञान ने आध्यात्मिक प्रश्न का निपटारा कर दिया है, उसे तुरंत रख दीजिए, क्योंकि उसने उस प्रकार का कुछ भी निपटारा नहीं किया। मैंने प्रयास किया है, हर उधार पर, सेतु को एक सेतु के रूप में नाम देने का। यदि कहीं मैं असफल रहा हूँ, और एक छवि एक प्रमाण का स्वाँग करती-सी लगी है, तो मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि पुस्तक को अपने ही पठन में सुधारें, और भौतिकी को उतना ही हल्के थामें जितना मैंने प्रयास किया है: एक दिशा से अनुनादी चित्रों के एक समुच्चय के रूप में, दूसरी से चिंतकों के प्रतिवेदनों के साथ दिया गया, उस सत्य के साथ जिसकी ओर वे दोनों संकेत करते हैं दोनों में से किसी की सिद्ध करने की पहुँच से परे स्थित।

मुझे जोड़ना चाहिए कि स्वयं विज्ञान अपूर्ण है और बदलेगा। क्वांटम यांत्रिकी की व्याख्या सचमुच अबैठी है; श्याम पदार्थ और श्याम ऊर्जा उन वस्तुओं के नाम हैं जिन्हें हम अभी नहीं समझते और किसी दिन प्रतिस्थापित कर सकते हैं; बहुविध उसके किनारे पर अटकल है जिसे परखा जा सकता है। मैंने केवल उन विशेषताओं पर टेक ली है जिनके पलटे जाने की संभावना सबसे कम है — विवादित व्याख्याओं के बजाय औपचारिक संरचनाएँ — किंतु एक बाद के दशक के पाठक को यहाँ हर वैज्ञानिक दावे को अस्थायी मानना चाहिए, और मानने को प्रसन्न होना चाहिए, क्योंकि एक प्रज्ञा जिसे सच बने रहने को भौतिकी की एक विशेष स्थिति की आवश्यकता थी वह बिल्कुल प्रज्ञा न होती। श्वास वही सिखा रही थी जो यह पुस्तक सिखाती है किसी भी वस्तु के विज्ञान के होने से बहुत पहले, और वह उसे सिखाती रहेगी हमारी वर्तमान भौतिकी के पहचान से परे संशोधित होने के बहुत बाद।

## परिशिष्ट ख: प्रश्न और उत्तर

---

**क्या यह बुरे व्यवहार का बहाना नहीं देता? यदि कोई वास्तव में कर्ता नहीं, तो कुछ भी क्यों न करें?**

यह पहला आक्षेप है जो हर कोई उठाता है, और वह एक ऐसी गलतफ़हमी पर टिका है जिसे सावधानी से सुधारना सार्थक है। यह कहना कि कोई पृथक् कर्ता नहीं जो क्रिया का स्वामित्व रखता है यह कहना नहीं कि क्रियाओं के कोई परिणाम नहीं, या कि जो किया जाता है वह मायने नहीं रखता। वह अत्यधिक मायने रखता है। ब्रह्मांड उत्कृष्टता से जुड़ा है; हर क्रिया उसे अनुकूलित करती है जो अनुसरण करता है, पूर्ण विश्वसनीयता से। क्रूरता अब भी घायल करती है, छल अब भी विश्वास नष्ट करता है, हानि अब भी हानि पहुँचाती है — उसमें से कुछ भी इस पहचान से नहीं छुआ जाता कि कृत्य के पीछे कोई प्रेत स्वामी खड़ा नहीं।

जो बदलता है वह यह नहीं कि क्रिया मायने रखती है या नहीं बल्कि स्वयं क्रिया की गुणवत्ता है। ध्यान दीजिए कि जो लोग सबसे लापरवाह हानि करते हैं वे वे नहीं जिन्होंने व्यक्तिगत अहं को विमोचित किया है बल्कि वे सबसे दृढ़ता से उसके द्वारा पकड़े हुए — पकड़ते, रक्षा करते, और औरों की क्रीम पर एक स्व को आगे बढ़ाते। कर्ता का विलय आपको हानि करने को मुक्त नहीं करता; वह उसी वस्तु को — चिंतित, पकड़ता, स्व-सेवी अहं — हटाता है जिससे अधिकांश हानि बहती है। वह व्यक्ति जिसने सचमुच व्यक्तिगत खाता रख दिया है अधिक खतरनाक नहीं बनता। वे उसके प्रति अधिक प्रत्युत्तरशील बनते हैं जो हर स्थिति वास्तव में अपेक्षित करती है, क्योंकि वे अब हर स्थिति को इस लेंस से विकृत नहीं कर रहे कि उसका उनके लिए क्या अर्थ है। व्यवहार में, भय ठीक उल्टा है: यह स्वामित्व है, उसका विमोचन नहीं, जो बुरे व्यवहार का बहाना देता है, क्योंकि स्वामित्व सदा स्वयं को न्यायोचित ठहराता रहता है।

## न्याय का क्या? यदि कर्म व्यक्तिगत नहीं, तो क्या अपराधी बस बच निकलते हैं?

न्याय मानव-संसार का है, और यह पुस्तक उसका उन्मूलन नहीं करती। मानव-समाज के क्षेत्र के भीतर, हम ठीक ही लोगों को उत्तरदायी ठहराते हैं, न्यायालय बनाते हैं, क़ानून प्रवर्तित करते हैं, और दुर्बल को हानि से बचाते हैं। प्राप्य का व्याकरण — किसने क्या किया, कौन क्या ऋणी है — एक आवश्यक और मूल्यवान मानवीय संस्था है, और इन पन्नों में कुछ भी उसके ध्वंस का तर्क नहीं देता। एक न्यायाधीश एक हिंसक अपराधी को दंड सुनाते हुए उचित क्षेत्र के भीतर ठीक सही वस्तु कर रहा है।

यह पुस्तक जिस पर प्रश्न करती है वह मानवीय न्याय नहीं बल्कि ब्रह्मांडीय बही-खाता है — यह विश्वास कि मानव न्यायालयों से परे और ऊपर एक तत्त्वमीमांसीय लेखाकार है जो हर आत्मा के कृत्यों को अनुरेखित करता और हर आत्मा का भाग्य प्रशासित करता है। वह विश्वास हमें अधिक न्यायी नहीं बनाता; वह हमें अधिक क्रूर बनाता है, क्योंकि वह हमें हर दुर्भाग्य को एक अर्जित दंडादेश और हर दुःखी को एक गुप्त अपराधी के रूप में पढ़ने का लाइसेंस देता है। कैंसर रोगी ने अपना कैंसर अर्जित नहीं किया। युद्ध में जन्मा बच्चा उसे अर्जित नहीं किया। एक ब्रह्मांडीय बही की कल्पना त्यागना न्याय त्यागना नहीं; वह ब्रह्मांड के शिकारों को यह आग्रह करके बदनाम करना बंद करना है कि उन्होंने अवश्य अपना दुःख योग्य किया होगा। मानवीय न्याय रखिए, तीक्ष्ण और करुणामय। ब्रह्मांडीय लेखाकार को विमोचित कीजिए, जो कभी अस्तित्व में था ही नहीं, और जिसके कल्पित निर्णयों ने उससे अधिक क्रूरता उत्पन्न की जितनी उन्होंने कभी सुधारी।

## क्या यह केवल नियतिवाद नहीं है? यदि मैं अपने परिणामों का रचयिता नहीं, तो बिल्कुल प्रयास क्यों करूँ?

नियतिवाद और अकर्तृत्व सतही रूप से अभिन्न दिखते हैं और वस्तुतः विपरीत हैं। नियतिवादी कहता है: मैं जो करता हूँ कुछ मायने नहीं रखता, इसलिए मैं कुछ नहीं करूँगा — और ऐसा कहने में उधाड़ देता है कि वह अब भी कर्ता में विश्वास करता है; उसने बस कर्ता को चिंतित के बजाय निराश बना दिया है। वह क्रिया से पीछे हटता है क्योंकि उसने निष्कर्ष निकाला है कि उसकी क्रिया निष्फल है।



अकर्तृत्व स्वामित्व के मिथ्या दावे के सिवा कुछ नहीं हटाता। वह कहता है: हर वस्तु घटित होती है, पूर्णतः और परिणामपूर्ण रूप से, एक ऐसे क्षेत्र के माध्यम से जिसके आप एक वास्तविक और सक्रिय अंश हैं — सो कर्म कीजिए, पूर्णतः, अपने सब कौशल से, कुछ रोककर नहीं। ज़ोन में खिलाड़ी, ऑपरेशन में लीन शल्य-चिकित्सक, संगीत को सौंपा गया संगीतकार: ये अकर्तृत्व की छवियाँ हैं, और उनमें से एक भी निष्क्रिय नहीं। वे सबसे पूर्ण रूप से संलग्न अवस्थाएँ हैं जिनमें एक मनुष्य समर्थ है। जो प्रस्थान कर चुका वह क्रिया नहीं बल्कि वह चिंतित स्वामी है जो उसके पीछे घसीट रहा था। प्रयास करना बंद करने की सलाह से कोसों दूर, यह स्वयं को क्रिया में उससे अधिक पूर्णता से उँडेलने की सलाह है जितना पकड़ता स्व कभी कर सकता था — और केवल उस एक वस्तु को विमोचित करने की जो कभी सहायता नहीं कर रही थी: एक ऐसे नतीजे का भिंचा स्वामित्व जो वैसे भी सदा समग्र द्वारा बैठाया जाने ही वाला था।

### यदि मैं कर्ता नहीं, तो मेरे जीवन के लिए कौन उत्तरदायी है?

"उत्तरदायी" शब्द दो अत्यंत भिन्न अर्थ छिपाता है, और उन्हें सुलझाना प्रश्न को घुला देता है। एक अर्थ अपराध है — एक परिणाम का दोषारोपण-योग्य रचयिता होना, कठघरे में अभियुक्त। दूसरा प्रत्युत्तरशीलता है — उसके प्रति प्रत्युत्तर देने की सामर्थ्य और तत्परता जो एक स्थिति अपेक्षित करती है। यह पुस्तक पहले को विमोचित करती और दूसरे को तीव्र करती है।

आप अपने जीवन के दोषारोपण-योग्य रचयिता उस अर्थ में नहीं जिसमें चिंतित स्व कल्पना करता है — एकमात्र संप्रभु कारण, उन परिणामों के लिए श्रेय और दोष के पात्र जो सत्य में आपसे कहीं परे पहुँचते एक क्षेत्र द्वारा संचालित थे। किंतु आप दूसरे अर्थ में गहराई से उत्तरदायी हैं: आप वह स्थल हैं जिस पर प्रत्युत्तर घटित होता है, और उस प्रत्युत्तर की गुणवत्ता आपकी सहभागिता का समूचा है। अपराध को विमोचित करना आपको कम प्रत्युत्तरशील नहीं बनाता; वह आपको अधिक बनाता है, क्योंकि वह ऊर्जा जो स्व की रक्षा और अभियोग पर खर्च हो रही थी प्रत्युत्तर देने के वास्तविक कार्य के लिए मुक्त हो जाती है। वह व्यक्ति जिसने ब्रह्मांडीय कर्तृत्व का भार रख दिया है जीवन से होकर अनुत्तरदायी नहीं बहता। वे पहले से अधिक पूर्णता से उपस्थित होते हैं, अधिक स्वच्छता से प्रत्युत्तर देते हैं, अधिक तत्परता से मरम्मत करते हैं — एकमात्र उस अर्थ में उत्तरदायी जिसने कभी किसी की सहायता की।

## क्या यह स्वतंत्र इच्छा का खंडन नहीं करता?

यह पूर्णतः उस पर निर्भर है कि स्वतंत्र इच्छा से क्या अर्थ है। यदि स्वतंत्र इच्छा का अर्थ है कि एक पृथक संप्रभु स्व दशाओं के समूचे जाल के बाहर खड़ा है और अपने चुनावों को अकारण रचने को भीतर पहुँचता है, तो हाँ, यह पुस्तक उस पर प्रश्न करती है — जैसे, भिन्न कारणों से, अधिकांश दार्शनिक और अधिकांश तंत्रिका-वैज्ञानिक करते हैं जिन्होंने मामले को निकट से जाँचा है। उस संप्रभु अकारण चयनकर्ता को अपने ही अनुभव में खोजिए और आप उसे नहीं पाएँगे; आप केवल निर्णय करने की प्रक्रिया पाएँगे, उस समूचे से उठती हुई जो आप हैं।

किंतु यह उससे कहीं कम चिंताजनक है जितना यह लगता है, क्योंकि वह स्वतंत्रता जो एक मानव-जीवन के लिए वास्तव में मायने रखती है उससे बिल्कुल खतरे में नहीं। स्पष्ट जागरूकता से कर्म करने और अंध बाध्यता से कर्म करने के बीच, व्यापक दृष्टि और संकीर्ण ऐंठन के बीच, प्रत्युत्तर और प्रतिक्रिया के बीच जिया गया अंतर बना रहता है। वह अंतर वास्तविक है, वह उपलब्ध है, और उसे संवर्धित करना इस पुस्तक का समूचा अभ्यास है। उसे स्वतंत्रता कहिए यदि आप चाहें — अंतराल की स्वतंत्रता, एक घटना से एक सहभागी के रूप में उसमें डूबने के बजाय साक्षी से मिलने की स्वतंत्रता। उसे एक संप्रभु अकारण चयनकर्ता की आवश्यकता नहीं, और वह उस तत्त्वमीमांसीय स्वतंत्र इच्छा से अतुलनीय रूप से अधिक मूल्यवान है जिस पर वह निर्भर नहीं।

## यह "आप अपनी वास्तविकता स्वयं रचते हैं" और आकर्षण के नियम से कैसे भिन्न है?

यह ठीक विपरीत है, यद्यपि दोनों एक लापरवाह कान को अभिन्न लग सकते हैं। आकर्षण का नियम, और यह व्यापक सुसमाचार कि आप अपनी वास्तविकता स्वयं रचते हैं, उस ग़लतफ़हमी का सबसे शुद्ध संभव रूप है जिसे पूर्ववत करने को यह पुस्तक अस्तित्व में है। वह आपको अपने परिणामों का रचयिता बनाता है — आपके विचार, आपका कम्पन, आपकी मनोदशा आपकी परिस्थितियों को व्यक्त करती हुई — जो ठीक अपने सबसे संकेंद्रित आधुनिक रूप में कर्म का स्वामित्व है। वह स्वस्थ की चापलूसी करता और रोगी को कुचलता है; वह समृद्ध को बताता है कि उन्होंने अपना सौभाग्य सही सोच से अर्जित किया और दुःखी को कि उन्होंने अपना दुर्भाग्य ग़लत सोच से व्यक्त किया।

यह पुस्तक हर बिंदु पर विपरीत तर्क देती है। आप अपनी वास्तविकता नहीं रचते; आप एक एकीकृत ब्रह्मांडीय व्यवस्था में सहभागी होते हैं जो अत्यधिक रूप से आपके द्वारा रची नहीं। जो विमोचन वह देती है वह बेहतर आंतरिक अवस्थाओं के माध्यम से परिणामों पर अधिक नियंत्रण नहीं, बल्कि उस थकाऊ और मिथ्या विश्वास से स्वतंत्रता है कि परिणाम कभी आपके रचने को थे ही। जहाँ आकर्षण का नियम कर्तृत्व का सबसे भारी संभव भार जोड़ता और उसे सशक्तिकरण कहता है, यह पुस्तक उस भार को हटाती और उसे वही कहती है जो वह है: राहत। यदि आप इन पन्नों पर उन परिणामों को व्यक्त करना सीखने की आशा में आए जो आप चाहते हैं, तो आपने इसके बजाय एक तर्क पाया है कि व्यक्त-करना-चाहना ही दुःख का स्रोत था। यह एक छोटी शिक्षा नहीं। यह एक दयालुतर और एक सच्चतर है।

**क्या "मेरा कर्म" विमोचित करने का अर्थ है कि मुझे परवाह करना बंद कर देना चाहिए, और हर किसी और हर वस्तु से विरक्त हो जाना चाहिए?**

नहीं — और यह वह ग़लत-पठन है जो सबसे निष्कपट लोगों के लिए शिक्षा को बर्बाद कर देता है। यह पुस्तक जिस विरक्ति की ओर संकेत करती है वह शीतलता नहीं, जीवन से एक अनुभूति-रहित दूरी में पीछे हटना नहीं। वह साक्षी नहीं; वह साक्षी के वस्त्र पहने एक रक्षा-तंत्र है, और वह स्वतंत्रता नहीं बल्कि एक मृत-सा अर्ध-जीवन उत्पन्न करता है।

सच्ची स्वतंत्रता कम संलग्नता नहीं बल्कि अधिक है — शोक को पूर्णतः अनुभव करना, आनंद को पूर्णतः चखना, अपने सामने के लोगों और कार्य को पूर्णतः सौंपा गया — जबकि अब इस विश्वास में सिकुड़ा नहीं कि उसमें से कुछ भी एक निजी संपत्ति है जिसका परिणाम आपके मूल्य पर एक निर्णय है। वह व्यक्ति जिसने व्यक्तिगत खाता रख दिया है कम प्रेम नहीं करता; वे अधिक स्वतंत्रता से प्रेम करते हैं, क्योंकि उनका प्रेम अब उनके बही-खाते से उलझा नहीं। वे जीवन से विरक्त नहीं। वे केवल भिंचन से विरक्त हैं — वह पकड़ता स्वामित्व जो आरम्भ में कभी प्रेम था ही नहीं, बल्कि केवल प्रेम का चेहरा पहने भया उसे विमोचित कीजिए, और जो शेष रहता है वह उदासीनता नहीं बल्कि सबसे पूर्ण-हृदय सहभागिता है जिसमें एक व्यक्ति समर्थ है: पूर्णतः परवाह करना, और कुछ भी स्वामित्व में न लेना।

**यह स्वीकारने को बहुत कुछ है। एक व्यक्ति वास्तव में कहाँ से आरम्भ करता है?**

आप छोटे से आरम्भ करते हैं, और आप दर्शन के बजाय अभ्यास से आरम्भ करते हैं, क्योंकि दर्शन पर सदा तर्क किया जा सकता है जबकि अभ्यास को बस परखा जा सकता है। वह एकल प्रयोग लीजिए जिस तक यह समूची पुस्तक घट जाती है: अगली बार जब एक कठिन घटना आए, उसे ठीक वैसा ही छोड़िए जैसी वह है — वास्तविक, कठिन, अपरिवर्तित — और तीन श्वासों के अवकाश के लिए "मेरा" शब्द रख दीजिए। घटना को दूर न धकेलिए। यह दिखावा न कीजिए कि वह ठीक है। बस स्वामित्व गिरा दीजिए और देखिए कि भार का क्या होता है।

फिर, धीरे-धीरे, जो भी आप वहाँ पाते हैं उस पर निर्माण कीजिए। प्रतिक्रिया की दहलीज़ पर ठहराव जोड़िए — वह छोटा अंतराल जिसमें एक प्रत्युत्तर ने अभी प्रतिबद्धता नहीं की। दिन की पूर्ण हुई घटनाओं का सान्ध्य रख-देना जोड़िए। एक साधारण क्षण के मध्य में साक्षी का ध्यान-देना जोड़िए। इसमें से कुछ भी एक साथ प्राप्त नहीं होता; वह स्मरण किया, खोया, और फिर स्मरण किया जाता है, दस हजार बार, एकमात्र वास्तविक प्रगति लौटने में कोमलता की धीमी वृद्धि होते हुए। आपको आरम्भ करने को ब्रह्मांड-विज्ञान स्वीकारने की आवश्यकता नहीं। आपको केवल प्रयोग को, ईमानदारी से, चलाना है और अपने ही अनुभव को न्यायाधीश होने देना है। देखना ही उसका समूचा है, और उसे आरम्भ करने को कभी किसी की अनुमति की आवश्यकता नहीं पड़ी।

# परिशिष्ट ग: एक ही विचार के साथ तीस दिन

---

इस पुस्तक की समझ सहमत हुए जाने से नहीं बल्कि जीए जाने से गहराती है, और उसे जीना एक एकल भव्य संकल्प के बजाय छोटे, दोहराए गए प्रयोगों का विषय है। जो अनुसरण करता है वह आरम्भ करने का एक संभव ढंग है: तीस दिन, प्रत्येक पुस्तक से खींचे गए एक एकल छोटे अभ्यास के साथ, प्रत्येक एक गंभीर व्यायाम के रूप में किए जाने के बजाय एक साधारण दिन भर हल्के से वहन किए जाने को अभिप्रेत।

क्रम या संख्या के विषय में कुछ पवित्र नहीं; उन्हें पुनर्व्यवस्थित कीजिए, उन्हें दोहराइए जो लगते हैं, उन्हें छोड़िए जो नहीं। एकमात्र निर्देश जो मायने रखता है वही है जिस तक यह समूची पुस्तक घट जाती है: किसी वस्तु पर विश्वास करने का प्रयास न कीजिए। बस प्रयोग चलाइए, देखिए कि आपके अपने अनुभव में क्या होता है, और जो आप पाते हैं उसे शिक्षक होने दीजिए। तीस दिन कुछ समाप्त नहीं करेंगे — कुछ कभी समाप्त नहीं होता, केवल गहराता है — किंतु वे भीतर से, व्यक्तिगत खाता ढोने और उसे रख देने के बीच के अंतर को अनुभव करना आरम्भ करने को पर्याप्त हैं।

## दिन 1. शब्द गिराइए

आज एक बार, जब कुछ कठिन हो, घटना को ठीक वैसा ही छोड़िए जैसी वह है और चुपचाप उसके अपने वर्णन से "मेरा" शब्द गिरा दीजिए। मेरी समस्या नहीं, मेरा दोष नहीं, मेरा दुर्भाग्य नहीं — बस घटना, स्वामी-रहित, तीन श्वासों के लिए। ध्यान दीजिए कि भार का क्या होता है।

## दिन 2. प्रश्न को बनते देखिए

अगली बार ध्यान दीजिए जब आपका मन एक कठिनाई को "मैंने यह भोगने को क्या किया" में मोड़ता है। उसका उत्तर न दीजिए। बस प्रश्न को स्वयं को जमाते देखिए, और उसके केंद्र में उस छोटे स्वामित्व को कार्य करते देखिए।

## दिन 3. वह धड़कन जिसे आपने कभी नहीं रचा

अपनी छाती पर एक हाथ रखिए और, एक मिनट के लिए, उस धड़कन को अनुभव कीजिए जिसे आपने आरम्भ नहीं किया और आदेश नहीं देते। उसे उस व्यवस्था का एक छोटा दैनिक स्मरण होने दीजिए जो आपमें पहले से चल रही है, अनायास, आपकी अनुमति के बिना।

## दिन 4. साक्षी को खोजिए

आज तीन बार, किसी भी वस्तु के मध्य में, न केवल उस पर ध्यान दीजिए जो आप अनुभव कर रहे हैं बल्कि उस जागरूकता पर भी जिसमें वह प्रकट होती है। लीन होने से स्वयं जागरूकता के रूप में विश्राम करने की ओर वह छोटा खिसकाव अनुभव कीजिए।

## दिन 5. श्वास एक कब्जे के रूप में

दस श्वासों के लिए, हवा को अंतःश्वास पर अपना अंश बनते और निःश्वास पर निराकार परिवेश को लौटते देखिए। व्यक्त और अव्यक्त को आपमें स्वयं को विनिमय करते अनुभव कीजिए, आपके उसे किए बिना।

## दिन 6. श्रेणीकरण पर ध्यान दीजिए

एक घंटे के लिए, बस गिनिए कि आपका मन कितनी बार एक निर्णय जारी करता है — अच्छा, बुरा, बेहतर, बदतर। आपको निर्णयों को रोकना नहीं है। बस ध्यान दीजिए कि अंक-पट्ट कितनी अथकता से चलता है।

## दिन 7. करने की परवाह कीजिए

आज एक कार्य चुनिए और स्वयं को करने की गुणवत्ता में पूर्णतः उँडेल दीजिए जबकि इस प्रश्न को पूर्णतः विमोचित कीजिए कि वह आप पर कैसा झलकता है। ध्यान दीजिए कि क्या वह बेहतर चलता है, बदतर नहीं।

## दिन 8. अंतराल

आज एक बार, एक घटना के आने और उसके प्रति आपकी प्रतिक्रिया के बीच के छोटे अंतराल को खोजिए। आप उसे अधिकतर चूकेंगे। यदि आप उसे एक बार भी पकड़ते हैं, तो प्रतिक्रिया के कठोर होने से पहले व्यापक दृष्टि को लौटने दीजिए।

## दिन 9. एक पूर्ण हुई घटना

एक घटना खोजिए जिसे आप अब भी फिर चला रहे हैं — एक पुराना अपमान, एक बीती असफलता। ध्यान दीजिए कि उसका दृश्य बहुत पहले बंद हो गया, और देखिए कि क्या आप उस भूमिका को जिसे आप अब भी उसमें निभा रहे हैं चुपचाप रख सकते हैं।

## दिन 10. खुला हाथ

आज एक श्वास अपनी हथेली खुली और ऊपर की ओर लेकर लीजिए, और निःश्वास पर एक परिणाम पर पकड़ विमोचित कीजिए जिसे आप जकड़े हुए थे। परवाह नहीं — केवल जकड़ना।

## दिन 11. दो परतें

आज एक कठिनाई में, दोनों परतों को अलग-अलग अनुभव कीजिए: मिलने को वास्तविक समस्या, और उसके तथ्य के विरुद्ध आपका आंतरिक युद्ध। पहली से मिलिए; दूसरी को रख दीजिए, एक क्षण के लिए भी।

## दिन 12. पंचानवे प्रतिशत

एक वस्तु लीजिए जिसके लिए आप स्वयं को श्रेय या दोष देते हैं, और अपने पीछे उस विशाल छिपे संचालन को चित्रित कीजिए — हर दशा, हर कारण — जिसने वास्तव में उसे उत्पन्न किया। झाग होने की, ज्वार नहीं, राहत अनुभव कीजिए।

## दिन 13. एक वेशभूषा, त्वचा नहीं

आज उस भूमिका पर ध्यान दीजिए जिसे आप सबसे कसकर पहन रहे हैं। उसे एक वेशभूषा के रूप में अनुभव करने का प्रयास कीजिए — पूर्णतः पहनी, पूर्णतः निभाई — बजाय इसके कि आप जो हैं उसके द्रव्य के रूप में।

## दिन 14. एक निर्णय को आते देखिए

आज एक छोटे निर्णय को घटित होते देखिए। उस पृथक चयनकर्ता को खोजिए जो चुनता है; ध्यान दीजिए कि आप केवल प्रक्रिया पाते हैं — विकल्प उठते, एक झुकाव बनता, निर्णय स्वयं बैठता हुआ।

## दिन 15. उसे सुलझने दीजिए

आज एक कम-दाँव वाली अनिश्चितता के साथ, निर्णय को बल देने का प्रयास बंद कीजिए। शांत हो जाइए, ईमानदारी से ध्यान दीजिए, और सही चाल को समूचे से अवक्षेपित होने दीजिए। ध्यान दीजिए कि जब आप तंत्र को जाम करना बंद करते हैं तो क्या आता है।

## दिन 16. अपराध-बोध के बिना पश्चात्ताप

एक अपराध-बोध लीजिए जिसे आप ढोते हैं। हानि के स्पष्ट देखने को, जो आपको मरम्मत को प्रेरित कर सकता है, आत्म-दंड से अलग कीजिए, जो किसी की सहायता नहीं करता। पहले को रखिए; दूसरे को रख दीजिए।

## दिन 17. विरासत में मिला भार

ध्यान दीजिए कि क्या आपके द्वारा ढोया गया कोई भार आपको सौंपा गया था बजाय आपके द्वारा अर्जित किए — एक पारिवारिक लज्जा, एक पैतृक ऋण। उसे विरासत में मिला देखिए, और विचारिए कि शृंखला आप पर समाप्त हो सकती है।

## दिन 18. तुलना बंद कीजिए

आज स्वयं को अपने जीवन को किसी और के विरुद्ध मापते पकड़िए। ध्यान दीजिए कि तुलना को श्रेणीबद्ध करने को पृथक खारों की आवश्यकता है — और कि दूसरे का फलना-फूलना वही व्यवस्था गति में है जो आपके अपने को गति देती है।

## दिन 19. "मैंने किया," हल्के से

ध्यान दीजिए कि आप कितनी बार कहते हैं मैंने किया, मैंने चुना, मैंने बनाया। आपको अपनी वाणी बदलने की आवश्यकता नहीं। बस प्रथम पुरुष को हल्के से थामिए, एक उपयोगी संक्षिप्त-रूप के रूप में, एक खोजे गए स्वामी के रूप में नहीं।



## दिन 20. पूर्णतः विश्राम कीजिए

आज जब आप विश्राम करें, पूर्णतः विश्राम कीजिए — कार्य को पूर्णतः रख दीजिए, असफलता के रूप में नहीं बल्कि उसकी लय के अंग के रूप में। ध्यान दीजिए कि क्या परिणामों का स्वामी आपको देगा, और रुकना कैसा अनुभव होता है।

## दिन 21. एक छोटा समर्पण

आज एक गौण परिणाम पर पकड़ विमोचित कीजिए और देखिए कि क्या होता है। परिणाम को — झेलने योग्य, शायद मुक्तिदायी तक — अपने उस बढ़ते प्रमाण में जोड़िए कि खुला हाथ सुरक्षित है।

## दिन 22. प्रयास अपनी ऋतु में

एक कौशल पर ध्यान दीजिए जिसे आपने साध लिया है, और अनुभव कीजिए कि वह अब उस सचेत नियंत्रण के बिना बहता है जिसकी नौसिखिए को आवश्यकता थी। फिर ध्यान दीजिए कि आप कहाँ अब भी किसी ऐसी वस्तु का नियंत्रण पकड़े हैं जिसे आपने बहुत पहले सीख लिया।

## दिन 23. जाल, शृंखला नहीं

एक घटना लीजिए जिसे आप एक एकल कारण पर दोष देते हैं। कारण को ईमानदारी से बाहर अनुरेखित कीजिए और उसे असंख्य दशाओं में शाखाएँ फैलाते देखिए। एकल दोषी को समूचे में विलीन होते अनुभव कीजिए।

## दिन 24. नींद के पार जागरूकता

आज रात, जैसे आप सोने जाते हैं, ध्यान दीजिए कि स्व पूर्णतः विलीन होने को है — और कि कल आप सोया होने की सूचना देंगे। रात्रिकालीन विलय को उसका एक छोटा स्मरण होने दीजिए जो विलीन नहीं होता।

## दिन 25. आकाश का पैमाना

आज रात ऊपर देखिए, यदि आकाश स्वच्छ हो, और आज की सबसे बड़ी चिंता को तारों के मौन प्रवास के बगल में रखिए। उसे शून्य तक सिकोड़ने को नहीं, बल्कि उसे उसका सच्चा अनुपात देने को।

## दिन 26. एक अभिंची उपस्थिति

आज एक तनावपूर्ण क्षण में — एक बैठक, एक असहमति — वह बनिए जो परिणाम को नहीं पकड़ रहा। ध्यान दीजिए कि क्या कमरा खिसकता है, थोड़ा भी, एक ऐसी उपस्थिति के चारों ओर जिसने भिंचन संचारित करना बंद कर दिया है।

## दिन 27. न ली गई राह

आज एक पश्चात्ताप पकड़िए — न ली गई एक राह का एक शोक। स्मरण कीजिए कि वह चुनाव आपके और उस क्षण के समूचे से अवक्षेपित हुआ, कि कोई संप्रभु चयनकर्ता अन्यथा चुनने को स्वतंत्र खड़ा नहीं था। वैकल्पिक जीवनो के कब्रिस्तान को विश्राम करने दीजिए।

## दिन 28. जैसा ऊपर, आपके शरीर में

एक मिनट उस संरेखण को अनुभव करने में बिताइए जो आपमें पहले से चल रहा है — श्वास, धड़कन, खरबों शांत सहयोग — और उस एक संकीर्ण स्थान पर ध्यान दीजिए जहाँ आप प्रतिरोध जोड़ते हैं। एक श्वास के लिए, उसे जोड़ना बंद कीजिए।

## दिन 29. जोड़ने को कुछ नहीं

दो मिनट इस साधारण क्षण के साथ ठीक वैसे बैठिए जैसा वह है, कुछ न जोड़ते — कोई निर्णय नहीं, कोई माँगा गया परिणाम नहीं, कोई निपटाने को खाता नहीं। उस शांत ठीकता पर ध्यान दीजिए जो भिंचन के छूटने पर प्रकट होती है।

## दिन 30. फिर आरम्भ कीजिए

आज, ध्यान दीजिए कि आप इस सबको कितनी बार भूले — सिकुड़े, स्वामित्व लिया, अंक रखा। हर भूलने से बिना एक नए निर्णय के मिलिए, और बस फिर आरम्भ कीजिए, कोमलता से। यह लौटना, कोई आगमन नहीं, अभ्यास का समूचा है।

# परिशिष्ट घ: चिंतन और चर्चा के लिए प्रश्न

---

## भाग एक — ब्रह्मांडीय व्यवस्था से कर्म तक

- अपने ही जीवन में आपने सबसे अधिक बार कहाँ पूछा है "मैंने यह भोगने को क्या किया?" — और जब आपने पूछा तब आप वास्तव में क्या माँग रहे थे?
- तीन भूखों में से — नियंत्रण, अर्थ, या महत्ता — आपका अपना व्यक्तिगत खाता किसे सबसे अधिक पोषित करता है?
- क्या आप, अपने ही अनुभव में, एक नियम और एक बही के बीच का अंतर पा सकते हैं — कि वस्तुएँ कैसे गति करती हैं और वे कथित रूप से कैसे देय हैं इसके बीच?
- आप अपने धर्म को अपने स्वभाव की अनायास अभिव्यक्ति के बजाय एक भारी कर्तव्य के रूप में कहाँ अनुभव करते हैं, और क्या अंतर बनाता है?

## भाग दो — संभावना की संरचना

- एक समय स्मरण कीजिए जब आपने किसी अभी-अनिर्णीत वस्तु की प्रतीक्षा की। क्या आप स्वयं खुलेपन को स्मरण कर सकते हैं, चिंता से पहले, जब परिणाम अभी किसी का नहीं था?
- एक घटना में आप सामान्यतः स्वयं को कहाँ स्थित करते हैं — प्रेरक में, भूमिका-निर्धारण में, अभिनय में, या विलय में? आप किन चरणों के प्रति अंधे हैं?
- क्या आपने कभी एक प्रबल भावना के मध्य में साक्षी को पाया है — वह जागरूकता जो देख रही थी और स्वयं अशांत नहीं थी?
- यह विचारना वस्तुओं को कैसे बदलता है कि दृश्य कर्ता किसी भी घटना का केवल पाँच प्रतिशत है?

## भाग तीन — क्रिया की संरचना

- किस भूमिका को त्वचा के बजाय एक वेशभूषा के रूप में देखने का आप सबसे अधिक प्रतिरोध करते हैं? उसे अधिक हल्के से थामना आपको क्या कीमत देता?
- किस पूर्ण हुई घटना को आप उसकी भूमिका को विलीन होने देने से इनकार करके अब भी जीवित रखे हैं?
- जब आप एक वर्तमान शिकायत को गहन काल के पैमाने और प्रवाहित आकाशगंगाओं के विरुद्ध रखते हैं, तो क्या खिसकता है — और क्या शेष रहता है?
- अपने शरीर या अपने जीवन में आप उस संरेखण को कहाँ अनुभव कर सकते हैं जो पहले से चल रहा है, अनायास, आपके आदेश के बिना?

## भाग चार — व्यक्तिगत कर्म का अंत

- आपने कौन-सा अपराध-बोध सबसे लम्बा ढोया है, और वह आपके लिए क्या खरीद रहा था जिसे खोने को आप अनिच्छुक थे?
- आपका श्रेणीकरण करता मन आपको सबसे अधिक दुःख कहाँ देता है — आत्म-निर्णय में, तुलना में, अपने दिनों के अंकन में?
- अपनी सर्वोत्तम क्रिया का एक क्षण स्मरण कीजिए। क्या स्व उपस्थित था और उसे प्रबंधित कर रहा था, या वह शांत हो गया था?
- एक परिणाम के विषय में चिंता ठीक उसी वस्तु को कहाँ तोड़ देती है जिसके विषय में आप चिंतित हैं?

## भाग पाँच — संरेखण का पथ

- आप अब भी कहाँ एक ऐसे निर्णय को बल देने का प्रयास कर रहे हैं जो शायद बेहतर सुलझे यदि आप शांत हो जाएँ और उसे आने दें?
- किन छोटे समर्पणों ने आपको पहले ही सिखा दिया है कि खुला हाथ सुरक्षित है?
- किस कठिनाई में आप दूसरी परत — तथ्य के विरुद्ध युद्ध — को रख सकते थे जबकि पहली से अब भी पूर्णतः मिलते हुए?
- जिन कमरों में आप प्रवेश करते हैं उनमें क्या बदलता यदि आप वह होते जिसने अंक रखना बंद कर दिया है?

## शब्दावली

---

**आनंद.** परमानंद; स्वयं में विश्राम करती जागरूकता की स्थिर, स्व-विद्यमान ठीकता। जो चाहा जाए उसे पाने का सुख नहीं, बल्कि उस साक्षी की स्वाभाविक दशा जो एक भूमिका में सिकुड़ा नहीं।

**आत्मन्.** बड़े "स" वाला स्व; शुद्ध जागरूकता; वह साक्षी जो कर्म, स्वामित्व, या विलय नहीं करता, और जिसे परंपराएँ वह मानती हैं जो व्यक्ति सबसे सच्चाई से है।

**अव्यक्त.** अनव्यक्त; वह निराकार आधार-भूमि जिससे दृश्य संसार उठता है और जिसमें वह लौटता है। व्यक्त, अनव्यक्तीकृत के विपरीत।

**भूमिका-निर्धारण.** इस पुस्तक में, एक घटना का वह चरण जिसमें समस्त संभावनाओं का क्षेत्र सुलझता है और सहभागियों को भूमिकाएँ सौंपता है — एक समाधान, एक चुनाव नहीं।

**श्याम ऊर्जा.** वह अज्ञात प्रभाव, ब्रह्मांड का लगभग अड़सठ प्रतिशत, जो अंतरिक्ष के त्वरित विस्तार को चलाता है। यहाँ अव्यक्त विस्तार की एक छवि के रूप में प्रयुक्त।

**श्याम पदार्थ.** अदृश्य द्रव्यमान, ब्रह्मांड का लगभग सत्ताईस प्रतिशत, केवल अपने गुरुत्व से पता लगाया गया, जो आकाशगंगाओं को एक साथ थामता है। यहाँ अव्यक्त मचान की एक छवि के रूप में प्रयुक्त।

**धर्म.** दृश्य बनाई गई ब्रह्मांडीय व्यवस्था; अपने स्वभाव के अनुसार हर वस्तु का उचित कार्य; ऋतु संसार में अपना चेहरा दिखाता हुआ। अग्नि का धर्म जलना है; नदी का, समुद्र तक पहुँचना।

**विलय.** एक घटना का अंतिम चरण, जिसमें भूमिका समाप्त होती है और वह स्व जो उसे निभाने को निर्धारित किया गया था रुक जाता है, जबकि वह साक्षी जिसमें वह प्रकट हुआ बना रहता है।

**कर्ता.** एक क्रिया का प्रत्यक्ष रचयिता; इस पुस्तक में, एक भूमिका जिसे घटना बुलाती और विलीन करती है, एक स्थायी स्वामी नहीं। अकर्तृत्व देखिए।

**अनायास कर्म.** स्वामित्व के घर्षण से मुक्त क्रिया; उस स्थल के माध्यम से ब्रह्मांड के कर्म करने का अनुभूत अनुभव जो व्यक्ति है। वू वेई और प्रवाह के सजातीय।

**अंतर्ग्रथन.** वह क्वांटम परिघटना जिसमें एक तंत्र के भाग समग्र से अलग कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रखते, किसी भी दूरी के पार सहसंबंधित रहते हुए। उस अविभाज्य क्षेत्र की एक छवि के रूप में प्रयुक्त जो भूमिकाएँ निर्धारित करता है।

**घटना-क्षितिज.** श्याम-विवर भौतिकी से उधार लिया गया; यहाँ, वह दहलीज़ जिस पर एक संभावना एक वास्तविक घटना में पलट जाती है — वह किनारा जहाँ क्षेत्र सुलझता है।

**समस्त संभावनाओं का क्षेत्र.** क्वांटम अध्यारोपण से खींची गई छवि, एक घटना की उसके सुलझने से पहले: हर परिणाम और हर भूमिका को एक साथ थामे-खुले, अंतर्ग्रथित और अविभाज्य।

**महा-आकर्षक.** द्रव्यमान का एक विशाल, अंशतः छिपा संकेंद्रण जो हमारी आकाशगंगा और हज़ारों औरों को अपनी ओर खींचता है; यहाँ संचालन के उच्चतम पैमाने की एक छवि के रूप में प्रयुक्त।

**अपराध-बोध.** यह पीछे-मुख, स्व-दंडित करता आग्रह कि एक पृथक स्व ने अन्याय किया और एक खाता संतुलित करने को दुःख भोगना ही चाहिए। पश्चात्ताप से भिन्न।

**जीवन्मुक्त.** वह जो जीते-जी मुक्त है; जीवन के नाटक में पूर्णतः और उससे पूर्णतः स्वतंत्र; शरीर के अपनी भूमिका निभाते समय भी बना रहता साक्षी।

**कर्म.** मूल कृ से, करना या बनाना: क्रिया स्वयं। इस पुस्तक में, धर्म क्रिया में — ब्रह्मांडीय व्यवस्था स्वयं को घटनाओं में सम्पन्न करती हुई। सार्वभौमिक और एकीकृत माना गया, कभी व्यक्तिगत नहीं।

**व्यक्त.** व्यक्त देखिए (अव्यक्त के विपरीत)। दृश्य, गठित संसार; ब्रह्मांड-विज्ञान में, ब्रह्मांड का लगभग पाँच प्रतिशत जो साधारण पदार्थ है।

**अकर्तृत्व.** एक कर्ता के मिथ्या जोड़ के बिना कर्म करना जो क्रिया का स्वामित्व रखता है; स्वामित्व के पद को घटाकर साधारण क्रिया, कृत्य को अक्षत और मुक्त छोड़ती हुई।

**द्रष्टा / साक्षी.** वह जो अनुभव के प्रति जागरूक है बिना उसमें प्रवेश किए; साक्षी; वह जो कर्म, स्वामित्व, या विलय नहीं करता। सहभागी के विपरीत।

**सहभागी.** वह स्व जो एक भूमिका में सिकुड़ता है, परिणाम को पकड़ता है, और दावा करता है "मैंने यह किया" — और इस प्रकार विभाजित होता है, और दुःख भोगता है। साक्षी के विपरीत।

**ध्रुव तारा.** ध्रुव तारा, जिसके निकट पृथ्वी की धुरी वर्तमान में इंगित करती है; वह स्थिर संदर्भ जिसके चारों ओर आकाश घूमता-सा प्रतीत होता है। ऋत, अपरिवर्तनीय व्यवस्था की एक छवि।

**पश्चात्ताप.** यह स्पष्ट देखना कि एक क्रिया ने हानि पहुँचाई, मरम्मत और पुनः-संरक्षण के सजीव आवेग के साथ। आगे-मुख और निर्वैयक्तिक; अपराध-बोध से भिन्ना।

**ऋत.** गहनतम ब्रह्मांडीय व्यवस्था; वह मौन नियम जो समस्त गति को थामता है; सब आदेश से पूर्व सत्य और व्यवस्था। अवतरण का शीर्ष ऋत → धर्म → कर्म।

**साक्षिन्.** साक्षी; वह जो बस देखता है; वह जागरूकता जिसमें समूचा नाटक प्रकट होता है किंतु जो स्वयं कभी नाटक में प्रवेश नहीं करती।

**अध्यारोपण.** वह क्वांटम दशा जिसमें एक तंत्र सब संभव परिणामों को एक साथ थामता है जब तक वह सुलझ न जाए। समस्त संभावनाओं के क्षेत्र का तकनीकी मर्म।

**समर्पण.** पराजय नहीं बल्कि कर्तृत्व के भ्रम का सोद्देश्य विमोचन; खुला हाथ; समझ का पका फल। यहाँ एक प्रौद्योगिकी के रूप में बरता गया।

**व्यक्त (वैयक्त).** व्यक्त; वह संसार जो दृश्य रूप में आ चुका है। अव्यक्त, अनव्यक्तीकृत के विपरीत।

**वू वेई.** अनायास कर्म का ताओवादी सिद्धांत, अकर्म में क्रिया; उसके विरुद्ध धकेलने के बजाय धारा से संरेखित होना।

**जैसा ऊपर, वैसा नीचे.** यह पहचान कि वही व्यवस्था हर पैमाने पर संचालित होती है, ताकि ब्रह्मांड और व्यक्ति एक संरचना साझा करें; यहाँ कविता के रूप में नहीं बल्कि संरचनात्मक तादात्म्य के एक दावे के रूप में समझा गया।

**सेतु.** एक चिंतनशील विचार के लिए एक छवि के रूप में प्रयुक्त विज्ञान से एक उधार के लिए लेखक का पद — पार करने को दिया गया, कभी प्रमाण के रूप में नहीं, और हर उपयोग पर ऐसा नामित।

**वेशभूषा, त्वचा नहीं.** एक भूमिका के लिए छवि: कुछ जो पूर्णतः पहना और पूर्णतः निभाया जाता है, फिर भी कभी उसका द्रव्य नहीं जो उसे पहनता है, और उसका दृश्य पूर्ण होने पर बिना चोट रख दिया जाता है।

**गहन काल.** ब्रह्मांडीय और भूगर्भीय इतिहास का विशाल कालमान, जिसके विरुद्ध एक मानव-जीवन ब्रह्मांडीय पंचांग के अंतिम क्षण पर अधिकार करता है; व्यक्तिगत खाते को उसका सच्चा अनुपात देने को प्रयुक्त।

**अधोमुखी कारणता.** वह ढंग जिससे एक समग्र अपने भागों को अनुकूलित करता है — जीव कोशिका को आकार देता, घटना सहभागी को आकार देती — इस पूर्व-धारणा को उलटता हुआ कि कर्तृत्व भाग से समग्र की ओर ऊपर चलता है।

**उद्भव.** एक समग्र में, उन गुणों का प्रकट होना जो उसके भागों में उपस्थित या उनसे पूर्वानुमेय नहीं; वह कारण कि कर्ता स्वयं से बड़ी एक घटना का रचयिता नहीं हो सकता।

**क्षेत्र, भारित.** यह पहचान कि समस्त संभावनाओं का क्षेत्र समतल नहीं बल्कि संरचित है, कुछ समाधानों की ओर औरों से अधिक प्रवृत्त, ताकि समाधान नियमबद्ध हो यद्यपि किसी के द्वारा रचा नहीं।

**चार चरण.** एक घटना का चाप: क्षितिज पर प्रेरक, भूमिकाओं का निर्धारण, अभिनय, और पूर्णता पर विलय। व्यक्तिगत गलतफ़हमी केवल अभिनय देखती है।

**अंतराल.** एक घटना के आने और उसमें अपने अपना कहकर संकुचन के बीच की संक्षिप्त, उपलब्ध दहलीज़; वह स्थान जहाँ व्यापक दृष्टि लौट सकती है और स्वतंत्रता जीती है।



**अनुग्रह.** यहाँ उधार लिए अर्थ में, एक भला जो प्रयास द्वारा निर्मित होने के बजाय एक तैयार उपकरण के माध्यम से आता है; वह फूलना जिसे प्रयास तैयार करता है किंतु बल नहीं देता।

**गृहस्थ का पथ.** यह विश्वास कि यहाँ वर्णित स्वतंत्रता संसार से प्रत्याहार की अपेक्षा रखने के बजाय साधारण जीवन — कार्य, परिवार, दायित्व — के भीतर अभ्यस्त की जानी है।

**अनित्यता.** घटनाओं का अनवरत पूर्ण होना; यहाँ न केवल उस चोर के रूप में समझा गया जो भले को लेता है बल्कि उस दया के रूप में भी जो बुरे को विमोचित करती और समग्र को जीवित रखती है।

**अप्रतिवर्तनीयता.** घटनाओं का एकमुखी स्वभाव एक बार जब वे अपना क्षितिज पार कर लें; सुलझे अतीत को अ-घटित करने के प्रयास की निष्फलता, और खुले वर्तमान में आगे जीने का आह्वान।

**बही.** गलत समझे गए कर्म की छवि: रखे और निपटाए गए व्यक्तिगत ऋणों का एक अभिलेख, एक लेखाकार और प्राप्य की एक धारणा की अपेक्षा करता हुआ — पूरे समय एक नियम के विपरीत।

**स्वामित्व ("मेरा").** कर्म, कृत्य, दोष, या भाग्य के आगे रखा स्वामित्व का छोटा व्याकरणिक कृत्य; यहाँ वह एकल जोड़ पहचाना गया जो एक निवैयक्तिक नियम को एक व्यक्तिगत दंडादेश में बदल देता है।

**सत्य.** सत्य, वस्तुओं की व्यवस्था से संरेखण के पुराने वैदिक अर्थ में; ऋत का मानवीय चेहरा, वास्तविकता वास्तव में कैसी है उसके अनुसार जीना।

**कारणता का जाल.** कारण की छवि एक एकल अनुरेखणीय दोषी वाली शृंखला के बजाय असंख्य अभिसरित दशाओं के एक जाल के रूप में; वह संरचनात्मक कारण कि किसी घटना का एकमात्र रचयिता नहीं।

**चिंतित स्वामी.** वह स्व जिसने अपना मूल्य उन परिणामों पर दाँव पर लगाया है जिन्हें वह नियंत्रित नहीं कर सकता, और इसलिए एक चिरकालिक नीची चिंता में जीता है, रक्षा करता, निगरानी करता, और निर्णय से डरता; कार्य और प्रयास में व्यक्तिगत खाते का रूप।

**समग्र की संगति.** समग्र से वह जुड़ाव जो अन्य लोगों की उपस्थिति पर निर्भर नहीं; एकांत में उपलब्ध यह पहचान कि व्यक्ति कभी वास्तव में पृथक था ही नहीं, जो अकेलेपन को उसकी जड़ में घुला देती है।

**पर्याप्त (कोई राशि नहीं).** यह पहचान कि अभाव का भय किसी आँकड़े का प्रकार्य होने के बजाय खुले भविष्य के साथ एक संबंध है, और इसलिए अर्जन से ठीक नहीं किया जा सकता बल्कि केवल भविष्य का स्वामित्व विमोचित करके।

**घटना और निर्णय.** असफलता और रोग के हृदय में स्थित भेद: पूर्ण हुई घटना वास्तविक और मिलने को है, जबकि किसी के मूल्य पर निर्णय स्वामी द्वारा जोड़ा जाता है और वैकल्पिक है। लगभग समूचा दुःख निर्णय में जीता है।

**माली और अभियंता.** एक बच्चे के पालन-पोषण, या स्वयं को बदलने के प्रति दो मुद्राएँ: अभियंता विशिष्टता के अनुसार एक परिणाम रचता है; माली दशाओं को संभालती है और जीवन पर विश्वास करती है कि वह एक ऐसे स्वभाव के अनुसार उद्धाटित होगा जिसे उसने अभिकल्पित नहीं किया।

**बही (प्रेम में).** योगदानों और ऋणों, त्यागों और अपमानों का चालू खाता, उनके साथ सबसे सूक्ष्मता से रखा जिनसे हम सबसे अधिक प्रेम करते हैं, भक्ति समझ लिया गया, और घनिष्ठता को धीरे-धीरे विषाक्त करता हुआ जब तक वह रख न दी जाए।

**आगे बढ़ जाना.** वह ढंग जिससे गहरा परिवर्तन वास्तव में घटित होता है — इच्छा द्वारा एक आदत को परास्त करके (कर्ता का कर्ता से लड़ना) नहीं बल्कि दशाओं और समझ के पकने से जब तक पुरानी भूमिका अब फिट न बैठे और स्वयं ही गिर जाए।

**पूर्णता से चाहना.** पृथक स्व के अनुभूत अभाव से मुक्त इच्छा; एक ऐसी समग्रता से पीछा करना, रचना, और प्रेम करना जो कभी छूटी नहीं थी, बजाय उस तृष्णा से जिसे कोई अर्जन संतुष्ट नहीं कर सकता।

**आहत वाला.** क्रोध और शिकायत में जब्त की गई भूमिका, जो एक जाली धार्मिकता प्रदान करती और दूसरे के विरुद्ध खाता खुला रखती है; हानि का अनुमोदन करके नहीं बल्कि भूमिका को विलीन होने देकर विमोचित।

**संपादित अतीत.** स्मृति एक बीते समय की जो पुनर्चना करती है — उसे चुनती, मढ़ती, और एक स्वर्णिम देश में सुधारती जो कभी पूरी तरह अस्तित्व में था ही नहीं; स्मृति-राग का विषय, एक असंपादित वर्तमान के विरुद्ध अनुचित रूप से मापा गया।

**अपेक्षित भविष्य.** वह कहानी जो हम रचते हैं कि एक घटना कैसे सुलझेगी और सुलझनी चाहिए, उसके अपना क्षितिज पार करने से पहले आधा-जी गई और गिनी गई; वह अस्वामित्व दावा जिसकी वास्तविक घटना से टक्कर निराशा उत्पन्न करती है।

**लम्बी संगति.** उस मित्र का उपहार जिसने हमें दशकों और अनेक उतारी भूमिकाओं के पार जाना है, एक स्थिर स्व की संगति में नहीं बल्कि उस जागरूकता की जिसने उन सबको पहना।

**आत्म-खाता.** अपने ही बीते स्वों के विरुद्ध रखा गया व्यक्तिगत खाता; किसी की असफलताओं और लज्जाओं की निजी बही, किसी भी बाह्य से अधिक निर्मम एक आंतरिक ऋणदाता द्वारा प्रवर्तित, और सच्ची आत्म-क्षमा से विलीन।

**तेज़ की निरंकुशता.** एक ऐसी सभ्यता का दुःख जिसने गति को अपना ईश्वर बनाया है और हर अ-त्वरण-योग्य वस्तु — शोक, निपुणता, पकती समझ — से एक ऐसी अधीरता से मिलती है जो गति बदले बिना घर्षण जोड़ती है।

## संदर्भ-ग्रंथ

---

Aspect, Alain. “Bell’s Theorem: The Naive View of an Experimentalist.” In Quantum [Un]speakables, edited by R. A. Bertlmann and A. Zeilinger. Berlin: Springer, 2002.

Bohm, David. Wholeness and the Implicate Order. London: Routledge & Kegan Paul, 1980.

Capra, Fritjof. The Tao of Physics. Berkeley: Shambhala, 1975.

Easwaran, Eknath, trans. The Bhagavad Gita. Tomales, CA: Nilgiri Press, 1985.

Easwaran, Eknath, trans. The Upanishads. Tomales, CA: Nilgiri Press, 1987.

Einstein, Albert, Boris Podolsky, and Nathan Rosen. “Can Quantum-Mechanical Description of Physical Reality Be Considered Complete?” Physical Review 47 (1935): 777–780.

Greene, Brian. The Fabric of the Cosmos: Space, Time, and the Texture of Reality. New York: Alfred A. Knopf, 2004.

Heisenberg, Werner. Physics and Philosophy: The Revolution in Modern Science. New York: Harper & Row, 1958.

Krishnamurti, Jiddu. The First and Last Freedom. London: Victor Gollancz, 1954.

- Lao Tzu. *Tao Te Ching*. Translated by D. C. Lau. Harmondsworth: Penguin, 1963.
- Maharaj, Nisargadatta. *I Am That: Talks with Sri Nisargadatta Maharaj*. Translated by Maurice Frydman. Bombay: Chetana, 1973.
- Maharshi, Ramana. *Talks with Sri Ramana Maharshi*. Tiruvannamalai: Sri Ramanasramam, 1955.
- Penrose, Roger. *The Road to Reality: A Complete Guide to the Laws of the Universe*. London: Jonathan Cape, 2004.
- Planck Collaboration. “Planck 2018 Results. VI. Cosmological Parameters.” *Astronomy & Astrophysics* 641 (2020): A6.
- Radhakrishnan, Sarvepalli. *Indian Philosophy*. 2 vols. London: George Allen & Unwin, 1923–1927.
- Rovelli, Carlo. *Helgoland: Making Sense of the Quantum Revolution*. New York: Riverhead Books, 2021.
- Schrödinger, Erwin. *What Is Life? With Mind and Matter*. Cambridge: Cambridge University Press, 1944.
- Suzuki, Shunryu. *Zen Mind, Beginner’s Mind*. New York: Weatherhill, 1970.
- Tagore, Rabindranath. *Sadhana: The Realisation of Life*. London: Macmillan, 1913.
- Wheeler, John Archibald, and Wojciech H. Zurek, eds. *Quantum Theory and Measurement*. Princeton: Princeton University Press, 1983.
- Zeilinger, Anton. *Dance of the Photons: From Einstein to Quantum Teleportation*. New York: Farrar, Straus and Giroux, 2010.

Aurelius, Marcus. *Meditations*. Translated by Gregory Hays. New York: Modern Library, 2002.

Chuang Tzu. *The Complete Works of Chuang Tzu*. Translated by Burton Watson. New York: Columbia University Press, 1968.

Frankl, Viktor E. *Man's Search for Meaning*. Boston: Beacon Press, 1959.

Kabat-Zinn, Jon. *Wherever You Go, There You Are: Mindfulness Meditation in Everyday Life*. New York: Hyperion, 1994.

Krishnamurti, J. *Freedom from the Known*. New York: Harper & Row, 1969.

Patanjali. *The Yoga Sutras of Patanjali*. Translated by Sri Swami Satchidananda. Yogaville, VA: Integral Yoga Publications, 1990.

Prigogine, Ilya, and Isabelle Stengers. *Order Out of Chaos: Man's New Dialogue with Nature*. New York: Bantam Books, 1984.

Sagan, Carl. *Cosmos*. New York: Random House, 1980.

Tolle, Eckhart. *The Power of Now: A Guide to Spiritual Enlightenment*. Novato, CA: New World Library, 1997.

Tzu, Lao. *Tao Te Ching*. Translated by Stephen Mitchell. New York: Harper & Row, 1988.

Watts, Alan. *The Book: On the Taboo Against Knowing Who You Are*. New York: Pantheon Books, 1966.

Weinberg, Steven. *The First Three Minutes: A Modern View of the Origin of the Universe*. New York: Basic Books, 1977.

Wilczek, Frank. *A Beautiful Question: Finding Nature's Deep Design*. New York: Penguin Press, 2015.

## सामान्य अनुक्रमणिका

---

- संदर्भ अध्याय-संख्याओं के हैं।
- अकर्तृत्व, का गणित. 14, 18
- अकेलापन, और पृथक् स्व. 36
- अध्यारोपण. 4, 6
- अनायास कर्म. 15, 18
- अनुमोदन, की भूख. 39
- अपराध-बोध, का ध्वंस. 2, 12
- अपेक्षित भविष्य, और निराशा. 45
- अव्यक्त (अनव्यक्त). 7
- अनित्यता. — (देखिए विलय)
- आत्मन् (स्व). 9, 20
- आदत, स्वचालित हुई भूमिका के रूप में. 37
- आनंद (परमानंद). 6, 20
- उत्कृष्टता. 8, 14, 15
- उद्भव. — (देखिए कर्ता का विलय)
- ऊब, वर्तमान के इनकार के रूप में. 40
- ऋत (ब्रह्मांडीय व्यवस्था). 1, 3, 11

एकीकृत कर्म. 1, 20  
 कर्ता का विलय. 5, 9, 12  
 कर्तृत्व, का भ्रम. 8, 14  
 कर्म, अव्यक्तिगत के रूप में. 1, 3, 5, 12  
 कर्म, शब्द का अर्थ. 2, 3  
 कारणता का जाल. — (देखिए कारण)  
 कृतज्ञता, और अनर्जित. 43  
 क्रोध, और आहत स्व. 27  
 खुला हाथ. 16, 17  
 गहन काल. — (देखिए पैमाने)  
 गुरुत्व-केंद्र (आकाशगंगा). 10, 11  
 घटना और निर्णय (असफलता). 31  
 घटना-क्षितिज. 5, 8  
 घटनाओं का प्रेरक. 5, 8  
 चिंता, उत्कृष्टता की तोड़क के रूप में. 15  
 चिंतित स्वामी (कार्य पर). 21  
 चुनाव, का विमोचन. 16  
 जीवन्मुक्त. 6  
 ज्ञोन, द. 14, 15  
 तृष्णा, की संरचना. 38  
 तेज की निरंकुशता. — (देखिए धैर्य)  
 ताओ / वू वेई. 18



धन, और अभाव का भय. 22  
 धर्म. 1, 3  
 ध्रुव तारा. 11  
 धैर्य, और पकने की गति. 42  
 ध्रुव तारा (देखिए ध्रुव तारा). 11  
 नियंत्रण के बिना विवेक. 13, 16  
 निराशा, और अपेक्षित भविष्य. 45  
 नेतृत्व, बैठा बनाम चिंतित. 32  
 पंचानवे प्रतिशत (पैमाने). 10  
 पश्चात्ताप बनाम अपराध-बोध. 12  
 पालन-पोषण (माली और अभियंता). 34  
 पूर्णता से चाहना. 38  
 प्रशंसा और निंदा, एक ही काँटा. 39  
 प्रवाह (ज़ोन). 14, 18  
 बही, प्रेम में. 23  
 भय, भविष्य के स्वामित्व के रूप में. 26  
 भूमिकाएँ, वास्तविक किंतु अस्वामित्वित. 4, 8, 13  
 भूमिका-निर्धारण. 4, 5, 8  
 मित्रता, और लम्बी संगति. 44  
 महा-आकर्षक. 10, 20  
 मृत्यु, सबसे बड़े विलय के रूप में. 9  
 मृत्यु, सबसे बड़े घटना-क्षितिज के रूप में. 25

व्यक्त और अव्यक्त. 7  
 व्याकरण, भ्रम के इंजन के रूप में. 2, 3  
 व्यवसाय, खोजा गया चुना नहीं. 21  
 वृद्धावस्था, भूमिकाओं के विलय के रूप में. 25  
 शोक. 9, 10, 19  
 शोक, जो गति करता और जो जकड़ता. 28  
 श्याम ऊर्जा. 7  
 श्याम पदार्थ. 7  
 संघर्ष, और जीतने की आवश्यकता. 35  
 संरेखण, ब्रह्मांडीय. 11, 16, 17, 18  
 समग्र की संगति. 36  
 समर्पण, प्रौद्योगिकी के रूप में. 16, 17, 18  
 समस्त संभावनाओं का क्षेत्र. 4, 5, 8  
 समझ समर्पण में पकती. 17  
 साक्षिन् (साक्षी). 6  
 साक्षी, बना रहता. 6, 9, 20  
 साधारण दिन. 41  
 सहभागी बनाम साक्षी. 6  
 सूर्य, अपने ग्रहों को वहन करता. 11  
 स्मृति, और सतत स्व. 2, 9  
 स्मृति-राग, और संपादित अतीत. 46  
 स्वयं को क्षमा करना. 12, 47

स्व-खाता, द. 47  
 स्वामित्व, घर्षण के रूप में. 8, 14, 15  
 स्वयं आध्यात्मिक खोज, अहं का अंतिम खाता. 33  
 द्रष्टा (साक्षी). 6, 9  
 ध्यान, अविभाजित. 30  
 पर्याप्त, कोई राशि नहीं. 22  
 अंतर्ग्रथन, क्वांटम. 4  
 अभ्यास, दैनिक. 19  
 अहं, महत्ता की तृष्णा. 2, 10  
 अच्छा और बुरा, का श्रेणीकरण. 13  
 महत्ता, बड़ी और छोटी. 13  
 रोग, और "मैंने क्या किया". 24  
 उपनिषद्. 7, 9  
 भगवद्गीता. 18  
 न ली गई राह (पश्चात्ताप). — (देखिए चुनाव)  
 कार्य, और स्वामी के बिना उत्कृष्टता. 21

